श्री महावीर ग्रंथ अकादमी—पंचम पुष्प

बाई अजीतमति एवं उसके समकालीन कवि

[१६ वीं-१७ वीं शताब्दि के चर्चित, अज्ञात एवं अल्पचर्चित पांच कवियों—बाई अजीतमति, परिमल्ल, ब्रह्मपाल, भ० महेन्द्रकीर्ति एवं हेमराज के जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ उनकी सम्पूर्ण कृतियों के मूल पाठों का प्रथम बार संकलन प्रकाशित]

लेखक एवं सम्पादक
डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल
एम. ए., पी-एच. डी., शास्त्री

प्रकाशक
श्री महावीर ग्रंथ अकादमी जयपुर

प्रथम संस्करण : अप्रैल, १९८४

मूल्य ५०.००

सम्पादक —डा० हीरालाल माहेश्वरी एम.ए., डी०फिल, डी.लिट जयपुर
डा० राजाराम जैन, एम.ए. पी-एच.डी साहित्याचार्य आरा
डा० गंगाराम गर्ग, एम.ए.पी-एच.डी. भरतपुर

निदेशक एव प्रधान

सम्पादक— डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, जयपुर

प्रकाशक— श्री महावीर ग्रंथ अकादमी
८६७ अमृत कलश प्रतियाँ ११००
बरकत नगर, किसान मार्ग
टोंक फाटक, जयपुर–१५ मूल्य ५० रुपये

मुद्रक—मनोज प्रिन्टर्स, जयपुर–३ फोन—६७२६७

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी

प्रगति परिचय

श्री महावीर ग्रंथ अकादमी के प्रगति परिचय में मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि जिस उद्देश्य को लेकर अकादमी की स्थापना की गयी थी उसकी ओर वह निरन्तर आगे बढ़ रही है। प्रस्तुत पुष्प सहित अब तक उसके सात पुष्प निकल चुके हैं। इन सात पुष्पों में जिन कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रूप में मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है उनमें से अधिकांश कवि अब तक अचर्चित, अज्ञात अथवा अल्प चर्चित रहे हैं। कुछ कवि तो ऐसे हैं जिनके व्यक्तित्व को प्रकाश में लाने का एक मात्र श्रेय श्री महावीर ग्रंथ अकादमी को दिया जा सकता है।

अकादमी के छट्ठे पुष्प कविवर बुलाखीचन्द, बुलाकीदास एवं हेमराज का विमोचन तिजारा (राजस्थान) में पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के विशाल समारोह मे परमादरणीय महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी सा० ने अपने कर कमलों से किया था। यह संभवतः प्रथम अवसर है जब महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने किसी जैन विद्वान की पुस्तक का ऐसे विशालतम समारोह में विमोचन किया हो। इसलिये ऐसा गौरव प्राप्तकर लेखक एवं अकादमी दोनों माही गौरवान्वित हैं।

प्रस्तुत सप्तम पुष्प में हमने पांच कवियों का परिचय एवं उनकी कृतियों का संकलन किया है उनमें चार तो अब तक पूर्णतः अचर्चित एवं अज्ञात माने जाते रहे हैं। हिन्दी साहित्य में कवयित्रियों के नाम अंगुलियों पर गिने जा सकते हैं इसलिये बाई अजीतमति की उपलब्धि एक उल्लेखनीय खोज है। बाई अजीतमति के अतिरिक्त भगवान, ब्र० महेन्द्रकीर्ति एवं जैनेन्द्र सभी अचर्चित कवि हैं।

राजस्थान के शास्त्र भण्डारों में हिन्दी रचनाओं का विशाल भण्डार छिपा हुआ है। इन शास्त्र भण्डारों की जितनी अधिक खोजबीन की जाती है उतनी ही

नयी एवं अचर्चित कृतियों की उपलब्धि होती रहती है प्रस्तुत पुष्प में जिन चार कवियों का परिचय दिया गया है उनमें तीन कवियों की उपलब्धि अभी गत वर्ष १९८३ में की गयी खोज का सुखद परिणाम है।

अब तक प्रकाशित सात भागों में ८० से भी अधिक कवियों पर विस्तृत प्रकाश डाला जा चुका है। उनमें महत्त्वपूर्ण कवि, १ भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति, २ बूचराज, ३ छीहल, ४ ठक्कुरसी, ५ गारवदास, ६ चतुरुमल, ७ ब्रह्मजिनदास, ८ भट्टारक रत्नकीर्ति, ९ कुमुदचन्द्र, १० अभयचन्द्र, ११ शुभचन्द्र, १२ श्रीपाल, १३ संयमसागर, १४ धर्मसागर, १५ गणेश, १६ आचार्य सोमकीर्ति, १७ ब्रह्म यशोधर, १८ सांगु, १९ गुणकीर्ति, २० यशःकीर्ति, २१ बुलाखीचन्द, २२ बुलाकीदास, २३ हेमराज गोदीका, २४ हेमराज पांडे, २५ बाई अजीतमति, २६ जगपाल, २७ परिमल्ल, २८ ब्र० महेन्द्रकीर्ति, २९ देवेन्द्र, एवं ३० ब्रह्म रायमल्ल के नाम उल्लेखनीय है। प्रस्तुत भाग को मिलाकर अब तक २८५० पृष्ठों का विशाल मेटर उपलब्ध कराया जा चुका है जो अपने आप में एक रिकार्ड है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी के जैन कवियों का जैसे-जैसे परिचय, मूल्यांकन एवं उनकी कृतियों का संकलन हिन्दी के विद्वानों के पास पहुंचेगा, जैन कवियों के प्रति उनकी उपेक्षा की भावना उतनी ही तेजी से दूर हो सकेगी और जैन कवियों को भी हिन्दी की मुख्य धारा में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सकेगा।

सहयोग

अकादमी को समाज का जितना सहयोग अपेक्षित है उतना सहयोग अभी तक प्राप्त नहीं हो सका है। हम चाहते हैं कि अकादमी के प्रत्येक ग्राम एवं नगर में सदस्य हों जिससे इसके द्वारा प्रकाशित सभी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें साहित्य प्रेमियों के हाथों में पहुंच सकें। फिर भी जितना सहयोग हमें अब तक मिला है उसके लिये हम उन सभी महानुभावों के आभारी हैं जिन्होंने अकादमी का सदस्य बन कर साहित्य प्रकाशन की योजना को मूर्त रूप देने में सहयोग दिया है। हमारी हार्दिक भावना तो यही है कि अकादमी द्वारा प्रति वर्ष तीन प्रकाशन हों, एक सेमिनार का आयोजन एवं प्राचीन साहित्य की खोज के विभिन्न कार्यक्रम तीव्र गति से होते रहें। अकादमी के संरक्षक माननीय श्री निर्मलकुमार जी सा० सेठी लखनऊ की भी यही भावना है कि अकादमी की साहित्य प्रकाशन की योजनाओं पर अच्छी राशि खर्च हो। हम सेठी जी की भावनाओं के प्रति आभारी हैं। आपका अकादमी के प्रति सहज सहयोग प्रशंसनीय है। इसी तरह अकादमी के परम संरक्षक स्वामी श्री पंडिताचार्य भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज मूडबिद्री एवं डा० दरबारी लाल

श्री डा० कोठिया वाराणसी के सहयोग के लिये भी हम आभारी हैं। डा० कोठिया सा० से स्वयं का तो सहयोग मिलता ही रहता है, वे दूसरों को भी अकादमी का सदस्य बनाने की भी प्रेरणा देते रहते हैं।

अकादमी के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल जी सा० पहाड़िया मद्रास के आकस्मिक निधन से संस्था को गहरी क्षति पहुंची है। पहाड़िया सा० अच्छे समाज सेवी थे तथा दक्षिण भारत में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करते थे। वे अकादमी के प्रति पूर्ण सहयोग की भावना रखते थे। इस अवसर पर हम अकादमी की ओर से उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

नये संरक्षक सदस्यों का स्वागत

षष्ठ पुष्प प्रकाशन के पश्चात् माननीय श्री रतनचन्द जी सा० कटारिया एवं श्री डालचन्द जी सा० जैन सागर ने अकादमी के संरक्षक सदस्य बनने की स्वीकृति दी है। कटारिया सा० समाज सेवा एवं साहित्य प्रकाशन दोनों में पूर्ण रुचि लेते हैं तथा बिना किसी प्रदर्शन के अपनी सेवाओं से समाज को लाभान्वित करते रहते हैं। इसी तरह माननीय श्री डालचन्द जी सा० जैन मध्यप्रदेश में ही नहीं किन्तु पूरे देश में अपने सेवा भावी जीवन के लिये प्रसिद्ध हैं। आप देश के जाने माने उद्योगपति हैं तथा अपनी उदारता एवं सरल स्वभाव के लिये सभी ओर लोकप्रिय हैं। हम दोनों ही महानुभावों का हार्दिक स्वागत करते हैं।

नये अध्यक्ष का का स्वागत

कलकत्ता निवासी श्री शांतिलाल जी सा० जैन ने अकादमी के अध्यक्ष पद की स्वीकृति देकर अपने सहयोगी भावना का परिचय दिया है। आप एक युवा व्यवसायी हैं तथा धार्मिक लगन वाले व्यक्ति हैं। आपने अभी इसी वर्ष श्री महावीर जी में सम्पन्न पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सौधर्म इन्द्र का यशस्वी स्थान लेकर अपनी धार्मिक रुचि का परिचय दिया था। अकादमी की ओर से हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

वर्ष १९८३ में जिन महानुभावों ने अकादमी का उपाध्यक्ष बन कर संस्था को सहयोग दिया है उसके लिये हम सभी के हार्दिक आभारी हैं। वे महानुभाव हैं जयपुर के सर्व श्री पूरणचन्दजी पांड्या, शरतकुमारसिंह जी पाटोदी, एवं श्री मोहन लाल जी कासलीवाल, वाराणसी की श्रीमती चमेलीदेवीजी कोठिया, देहली के श्रीकांति प्रसाद जी जैन एवं उज्जैन के श्री अजितकुमार जी जैन। श्री पूरणचन्द जी पांड्या युवा व्यवसायी हैं तथा सभी के प्रति सहयोग की भावना रखते हैं। धार्मिक

कार्यों में अपना अच्छा योगदान देते रहते हैं। श्री भरतकुमार सिंह जी पूर्णतः धार्मिक जीवन जीने वाले व्यक्ति हैं। व्रत उपवास पूजा पाठ जिनका प्रति दिन का नियम है। संस्थाओं को आर्थिक सहयोग देने की भावना रखते हैं। श्री मोहन लाल जी सा० काला अग्रवाल जयपुर के जाने माने चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट हैं। धार्मिक लगन एवं समाज सेवा की भावना रखते हैं। साहित्य प्रकाशन में अत्यधिक रुचि लेते हैं। श्रीमती कमलीदेवीजी कोठिया समाज के यशस्वी मनीषी डा० दरबारीलालजी कोठिया की धर्मपत्नी हैं। हमारे उपाध्यक्षों में आप एक मात्र महिला सदस्या हैं। अकादमी के कार्यों में आप विशेष रुचि रखती हैं। हम आपकी भावनाओं का हार्दिक स्वागत करते हैं। देहली के श्री शांतिप्रसाद जी सा० जैन स्वयं बड़े भारी पुस्तक व्यवसायी हैं। आपकी धार्मिक एवं साहित्यिक लगन देखते ही बनती है। बिना किसी प्रदर्शन एवं यश लिप्सा के आप सभी को अपना आर्थिक सहयोग देते रहते हैं। इसी तरह श्री ललितकुमार जी जैन उज्जैन के प्रतिष्ठित युवा समाज सेवी एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं तथा मालवा में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। हम आप सबका हार्दिक स्वागत करते हैं।

इसी तरह कलकत्ता के श्री दुलीचन्द जी सरावगी, बम्बई के श्री राजमल जी जवेरी, सागर के श्री महेन्द्र कुमार जी मलैय्या, जयपुर के श्री गणपतराय जी सरावगी एवं भावनगर के श्री भंवरलाल जी सा० अजमेरा ने अकादमी का सम्माननीय सदस्य बन कर जो सहयोग दिया है इसके लिये हम सभी महानुभावों के आभारी हैं।

सम्पादन में सहयोग

प्रस्तुत पुष्प के सम्पादन मे राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ० हीरालाल जी माहेश्वरी, आरा कालेज के प्रोफेसर डॉ० राजाराम जी जैन एवं भरतपुर राज्यकीय महाविद्यालय के व्याख्याता डा० गंगारामजी गर्ग ने जो सहयोग एवं मार्ग दर्शन दिया है इसके लिये हम तीनों ही विद्वानो के आभारी हैं। डॉ० माहेश्वरी सा० ने तो विद्वतापूर्ण सम्पादकीय भी लिखा है जिसके लिये हम उनके विशेष आभारी हैं।

विद्वानों का स्वागत

अमृत कलश स्थित अकादमी कार्यालय में देश विदेश के विद्वानों का स्वागत करने का अवसर मिलता रहता है। इस वर्ष जिन विद्वानों ने विशेष रूप से अमृत कलश में पधार कर अकादमी के कार्यों को देखा, परखा एवं अपना आशीर्वाद

प्रदान किया उनमें डॉ० भागचन्द भागेन्दु दमोह, श्रीमती राजकुमारी दीवेशीय, कटनी, डॉ० जिनास्त कोलवाई प्राच्य विद्या विभाग, लुवेन विश्वविद्यालय बेल्जियम, डॉ० महेन्द्र सागर प्रचंडिया एवं डॉ० आदित्य प्रचंडिया अलीगढ, डॉ० भागचन्द भास्कर नागपुर एवं श्रीमती डॉ० पुष्पा जैन नागपुर, डॉ० प्रेमचन्द रावका मनोहरपुर के विशेष रूप से आभारी हैं। हम समाज के सभी विद्वानों का स्वागत करते हैं।

आगामी पुष्प

अकादमी का अष्टम पुष्प "मुनि सभाचन्द एवं उनका पद्मपुराण" का प्रकाशन कार्य भी मई ८४ तक पूर्ण हो जावेगा। इस भाग में हिन्दी में रचित प्रथम पद्मपुराण का पूरा पाठ एवं कवि के काव्य का मूल्यांकन किया गया है। जिसमें ५६० से भी अधिक पृष्ठ रहेंगे।

आभार

अन्त में मैं इन सभी महानुभावों का आभारी हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अकादमी को अपना सहयोग/आशीर्वाद तथा आर्थिक संबल प्रदान किया है।

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

निदेशक एवं प्रधान सम्पादक

संरक्षक की ओर से

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी के सप्तम पुष्प "बाई अजीतमति एवं उनके समकालीन कवि" को पाठकों को हाथों में देते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है। प्रस्तुत पुष्प में बाई अजीतमति, परिमल चौधरी, भ० महेन्द्रकीर्ति, बनपाल एवं देवेन्द्र कवि-इन पांच कवियों का जीवन परिचय एवं उनके काव्यों के विस्तृत अध्ययन के साथ उनकी मूल कृतियों को भी प्रकाशित किया गया है। यह प्रथम अवसर है जब योजनाबद्ध प्राचीन जैन कवियों की रचनाओं को सुसम्पादित करके साहित्यिक जगत के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। सप्तम पुष्प के पांच कवियों में से परिमल चौधरी को छोड़ कर शेष सभी चार कवि अब तक अज्ञात एवं अचर्चित रहे हैं। यही नहीं हिन्दी जगत के समक्ष एक महिला कवि बाई अजीतमति को खोज निकालने में भी डा० कासलीवाल जी को सफलता मिली है। बाई अजीतमति की कृतियो के अध्ययन के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है वह कि आध्यात्मिक कवयित्री थी तथा भक्ति परक पद रचना में पूर्ण रुचि लेती थी।

भ० महेन्द्रकीर्ति के सभी १५ पद उच्चस्तर के हैं जो अध्यात्म एवं भक्ति रस में ओत प्रोत हैं। बनपाल कवि ऐतिहासिक पदों के लिखने में रुचि लेते थे। वे पहले कवि हैं जिन्होंने केशोराय पाटन में स्थित भगवान मुनिसुव्रतनाथ, आमेर (जयपुर) में स्थित भगवान नेमिनाथ, टोडारायसिंह में स्थित भगवान आदिनाथ एवं सांगानेर में स्थित भगवान महावीर की अतिशययुक्त प्रतिमाओं के स्तवन के रूप में पद लिखे हैं। इसी तरह देवेन्द्र कवि हैं जिन्होंने संवत १६३८ में यशोधर रास को महुआ नगर (गुजरात) में निबद्ध किया था। यशोधर रास १६वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण कृति है जिसका भी प्रथम बार प्रकाशन किया गया है। इसी पुष्प में १७वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण कवि परिमल चौधरी का गहन अध्ययन किया गया है। कवि परिमल अपने युग में ही नहीं किन्तु उसके पश्चात् भी शताब्दियों तक

अत्यधिक लोकप्रिय रहे हैं इसीलिए उनकी "श्रीपाल चरित्र" कृति की पचासों पाण्डुलिपियां जैन ग्रन्थागारों में उपलब्ध होती हैं। डा० कासलीवाल ने ऐसी महत्व-पूर्ण कवियों एवं उनकी कृतियों को खोज निकालने में जो अथक परिश्रम किया है और उसमें सफलता प्राप्त की है उसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। साहित्यिक जगत उनकी इस महान् सेवा के लिए चिरऋणी रहेगा।

श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी साहित्य सेवी संस्था है जिसकी स्थापना समस्त हिन्दी जैन साहित्य को योजनाबद्ध बीस भागों में प्रकाशित करने के लिए की गई है। यह उसका सप्तम पुष्प है इसके पूर्व छह पुष्पों में, ब्रह्म रायमल्ल, बूचराज, छीहल, गारवदास, ठक्कुरसी, ब्रह्मजिनदास, भ० रत्नकीर्ति, भ० कुमुदचन्द्र, आचार्य सोमकीर्ति, सांगा, ब्रह्म यशोधर, बुलाखीचन्द, बुलाकीदास, पांडे हेमराज, हेमराज गोदीका जैसे कवियों पर उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रूप में बहुत सुन्दर प्रकाश डाला जा चुका है।

अकादमी के षष्टम पुष्प का विमोचन गत वर्ष मार्च में महामहिम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी ने तिजारा (राजस्थान) में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव में अपने कर कमलों से किया था। यह प्रथम अवसर था जबकि देश के महामहिम राष्ट्रपति जी ने किसी जैन विद्वान की कृति का विमोचन किया हो। इसके पूर्व के पुष्प भी स्व० डा० सत्येन्द्र, क्षुल्लकरत्न सिद्धसागर जी महाराज लाडनू वाले, भट्टारक चारुकीर्ति जी महाराज मूडबिद्री जैसे मनीषियों एवं सन्तों द्वारा विमोचित हो चुके हैं।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र की तरह साहित्यिक क्षेत्र में भी कार्य करते रहने की ओर निरंतर जागरूक है। वह यह भी चाहती है कि श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी जैसी साहित्यिक संस्था द्वारा जैन साहित्य के प्रकाशन का कार्य निरन्तर आगे बढ़ता रहे। मैं समाज के सभी महानुभावों से प्रार्थना करता हूं कि वे अकादमी के अधिक से अधिक से संख्या में सदस्य बन कर जैन साहित्य के प्रकाशन में अपना पूर्ण योगदान देवें।

निर्मल कुमार जैन

दो शब्द

(डॉ० हीरालाल माहेश्वरी, एम.ए., एल्-एल्. बी., डी. फिल्., डी. लिट्)

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं—विशेषत: हिन्दी, गुजराती और राजस्थानी के साहित्येतिहासों में जैन काव्य धारा का महत्वपूर्ण स्थान है। वह धारा बड़ी व्यापक है। जैन काव्य की गणना धार्मिक काव्य के अन्तर्गत है। जिन जैन कवियो ने लौकिक प्रेम कहानियो और इतिहास को आधार बनाया है, उन्होंने भी धार्मिक रचनाएँ तो लिखी ही हैं।

मध्य युग में मुख्यतः तीन तत्व जनभावना को प्रेरित करते थे—राजा, धर्म और परम्परा। धार्मिक प्रेरणा से ही हमारी अधिकांश सांस्कृतिक और साहित्यिक थाती सुरक्षित रह गई है। जैन काव्य का निर्माण, संरक्षण और प्रचार–प्रसार इस प्रेरणा के फलस्वरूप हुआ है। आत्मिक उत्थान उसका लक्ष्य है। माध्यम है—तद्–तद् कालीन क्षेत्र–विशेष मे प्रचलित सरल भाषा और कथ्य है—(1) परम्परागत और पौराणिक कथाएँ तथा (2) स्वानुभव और भावपूर्ण उद्गार। साहित्यिक दृष्टि से सर्वाधिक आकर्षक है—जैन कथा और चरित काव्य। ऐसे काव्यों में स्थान–स्थान पर मनोवृत्तियों और दशाओं, विभिन्न वस्तुओं, त्योहारो, अवसरों, प्रकृति आदि के भाव–भीने चित्रण मिलते हैं। कथा मे वर्णित समाज की युग–युगीन झांकी के भी दर्शन होते हैं। इन काव्यों की विशिष्ट शब्दावली का सांस्कृतिक महत्व है। इस महत्व को भलीभांति दर्शाना अध्ययन का एक पृथक् पहलू है। इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

यद्यपि भारतीय साहित्य भिन्न–भिन्न भाषाओं मे लिखा गया है तथापि वह मूलत: एक है। देश, काल, युगीन मान्यताओं, विचारों और परम्पराओं के कारण उसमें अलग–अलग रंगत दिखाई देती है। भारतीय साहित्य वाटिका में भिन्न–भिन्न भाषा–साहित्यो के फूलों की यह रंगत भी उसका विशिष्ट सौन्दर्य है।

ऐसी ही एक संपत्त जैन काव्य की है। यह हमारी गौरवपूर्ण धरोहर है जिस पर गर्व होना उचित ही है।

इस धरोहर की कुछ बानगी डॉ० कस्तूरचंद कासलीवाल ने दिखाई है– प्रस्तुत ग्रंथ में और इससे पूर्व प्रकाशित ६ अन्य ग्रंथों में। प्रेमी पाठकों और अध्येताओं के लिए यह ग्रंथमाला अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगी, इसमें संदेह नहीं ऐसा कार्य कितना कठिन, श्रम और व्यय–साध्य है, यह भुक्तभोगी ही जान सकता है, और इसके लिए साहित्य जगत की ओर से डॉ० कासलीवाल बधाई के पात्र हैं।

यह खेद की बात है कि अभी तक भी जैन काव्य का साहित्येतिहासों में सम्यक् आकलन और विवेचन नहीं हो सका है। इसका कारण साहित्येतिहासकार उतने नहीं जितने स्वयं जैन काव्य प्रेमी हैं। जैन काव्य–कृतियां इस काव्य के जैनेतर अध्येताओं और इतिहासकारों को भी सुलभ नहीं हो पाती, साधारण पाठक की तो बात ही क्या है। उसकी यह किंचित चर्चा जैन समाज तक ही अधिकांशतः सीमित है। दूसरे, जैन दर्शन और चिन्तन की पगडंडियों में जैन काव्य खो गया है यद्यपि यह विचित्र बात है कि साधारण जिज्ञासु और पाठक के लिए जैन काव्य ही उसके दर्शन और चिन्तन के प्रसार का सुदृढ आधार है। विभिन्न जैन–संस्थाएँ इन बातों की ओर किंचित् ध्यान दे सकें, तो साहित्य का बड़ा उपकार होगा। तब जैन काव्य जैनेतर समाज मे भी और अधिक चर्चा–परिचर्चा का विषय बन सकेगा जिसके फलस्वरूप उसके अनेक पक्षों के अतिरिक्त उसकी आज की प्रासंगिकता भी उजागर होगी। प्रस्तुत कार्य और अन्य ऐसे कार्यों को प्रोत्साहन देना और उनका प्रचार–प्रसार करना ही इसका एक मात्र उपाय है। विश्वास है जैन समाज इस ओर ध्यान देगा।

विनीत

हीरालाल माहेश्वरी

लेखक की ओर से

देश में हिन्दी भाषा का विशाल साहित्य विद्यमान है। विगत सात शताब्दियों से कवियों एवं लेखकों ने हिन्दी साहित्य के भण्डार को इतना अधिक आप्लावित किया है कि उसकी थाह पाना किसी नये द्वीप की खोज करने के समान है। हम किसी भी गांव/शहर में स्थित शास्त्र भण्डारो अथवा व्यक्तिगत संग्रहों की खोज में निकल जावें तो कभी २ कुछ ऐसी कृतियां उपलब्ध हो जाती है जिनके बारे मे हमने अब तक सुना भी नहीं होगा। इसलिये हिन्दी साहित्य के विशाल भण्डार को इतिहास के रूप मे बांधना किसी एक विद्वान के लिये सभव नहीं है। अब तक हिन्दी साहित्य के जो इतिहास निकले है वे सब किसी न किसी प्रकार अपूर्ण है क्योंकि उनमें समग्र हिन्दी साहित्य का प्रतिनिधित्व नहीं हो पाया है। उदाहरण के लिये हम जैन कवियों द्वारा स्थित हिन्दी साहित्य को ही लें। इस साहित्य को किसी भी विद्वान् ने उचित स्थान प्रदान नहीं किया। अब तो प्राचीन कवियो को इतिहास में स्थान मिलना ही बन्द सा हो गया है। जैन कवियो एवं उनकी काव्य कृतियो के बारे मे अभी तक जो कुछ भी सामग्री सामने आई है उसे केवल सेम्पिल सर्वे (Sample Survey) कह सकते है। यही कारण है कि जैसे-जैसे अकादमी के प्रकाशनों की सख्या बढ़ रही है वैसे ही अज्ञात एवं अचर्चित कवियों की सख्या में आशातीत वृद्धि हो रही है। अब तक हम ऐसे ३० हिन्दी जैन कवियों को प्रकाश में लाने में सफलता प्राप्त कर चुके हैं जिनके बारे में हम अब तक पूर्णतः अन्धकार में थे। प्रस्तुत सप्तम पुष्प मे चार कवि पूर्णतः अज्ञात एवं अचर्चित है तथा एक कवि अल्प चर्चित है।

में इन पांच कवियों मे एक कवयित्री अजीतमति है जो १७ वीं शताब्दि मे अपनी कविताओं से श्रोताओं को आनन्दित किया करती थी। अजीतमति प्रथम जैन कवयित्री के रूप में हिन्दी जगत् के सामने आयी है। इसकी उपलब्धि की कहानी भी अत्यधिक रोचक है। जिस पोथी में कवयित्री की कृतियों का संकलन

है इसकी दशा जीर्ण शीर्ण होने से वह उपेक्षित रही और उसके [illegible] एक पाठ नहीं देखे जा सके। करीब ६-७ महिने पूर्व वह पोथी पुनः देखने में आयी और जब उसका एक २ पृष्ठ देखते २ आगे बढ़ने लगा तो एक पत्र पर बाई अजीतमति का नाम पढ़ने में आया। एक महिला कवि बाई अजीतमति का नाम पढ़कर उसकी कृति को पूरा पढ़ने की ओर भी उत्सुकता बढ़ी तथा धीरे २ पूरी पोथी के एक २ पृष्ठ को ध्यान से देखने पर अजीतमति की अच्छी सामग्री प्राप्त हो गयी। साथ में उसके स्वयं के द्वारा लिखा हुआ वह पत्र जिसमें संवत् १६५० अंकित है। इतनी प्राचीन कवयित्री की उपलब्धि अत्यधिक प्रसन्नता की बात है। अजीतमति मीराबाई की समकालीन थी। मीरा का जन्म सं० १५५५-१५७१ के मध्य माना जाता है तथा उसकी मृत्यु १६०३-१६०४ के मध्य मानी जाती है इसी तरह बाई अजीतमति का जन्म हमने सन्१५५० के आसपास एवं मृत्यु सन्१६१० के आस पास मानी है। जैसे मीरा ने भक्ति परक पद लिखे उसी प्रकार अजीतमति ने भी आध्यात्मिक पद लिखे हैं। यही नहीं संवत् १६५० (सन् १५९३) में प्रयुक्त हिन्दी गद्य के प्रयोग का भी एक गद्यांश मिला है जो भाषा साहित्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत पुष्प के दूसरे कवि परिमल चौधरी है जिनके बारे में डॉ० प्रेम सागर, डॉ० नेमिचन्द शास्त्री एवं पं० परमानन्द शास्त्री ने संक्षिप्त प्रकाश डाला है। कवि की एक मात्र रचना श्रीपाल चरित्र ४०-४५ वर्ष पहिले प्रकाशित हुई थी जो अनुपलब्ध मानी जाती है। परिमल्ल कवि उच्च स्तरीय कवि थे। उनके कवि श्रीपाल चरित्र में श्रीपाल की घटनाओं का बहुत विशद रूप से वर्णन मिलता है। कवि की भाषा में लालित्य एवं शब्दों में मधुरता है। कवि ने श्रीपाल के चरित्र का इतना सुन्दर एवं आकर्षक वर्णन किया है कि पूरा काव्य रोचक बन हो गया है। उसके वर्णनों में सजीवता एवं हृदय पुलकित करने को भरपूर क्षमता है। इसलिये कोई भी पाठक श्रीपाल चरित्र को एक बार प्रारम्भ करने के बाद उसे पूरा करने के बाद ही छोड़ता है। प्रस्तुत भाग में काव्य का प्रारम्भिक एवं अन्तिम अंश दिया गया है वह काव्य का प्रमुख अंश है।

तीसरे कवि धनपाल है। जिनकी चर्चा भी साहित्यिक जगत् के समक्ष प्रथम बार की जा रही है। धनपाल घेल्ह कवि के द्वितीय पुत्र थे। पिता का कवि होना और उनके दोनों पुत्रों का भी कवि होना अत्यधिक उल्लेखनीय है संयोग है। धनपाल की अभी तक कुल कोई बड़ी कृति नहीं खोज सके हैं लेकिन उनके जो चार पद मिले हैं वे चारों ही इतिहास परक हैं। फिरोजाबादपाटन, आमेर, सांगानेर एवं टोडारायसिंह के मुनिसुव्रतनाथ, नेमिनाथ, महावीर एवं आदिनाथ स्वामी की

प्रतिमाओं का इन पदों में उल्लेख किया गया है। जैन कवियों ने इस प्रकार के बहुत कम पद लिखे हैं।

प्रस्तुत भाग के चतुर्थ कवि भट्टारक महेन्द्रकीर्ति हैं जो अजमेर की भट्टारक गादी के सन्त थे। महेन्द्रकीर्ति के पदों का प्रकाशन भी प्रथम बार हो रहा है। डिग्गी ग्राम के दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संगृहीत एक गुटके मे इनके पदों का संग्रह मिला है। भ० महेन्द्रकीर्ति पूर्णतः आध्यात्मिक सन्त थे। उनके पदो के अध्ययन से पता चलता है कि जैसे अध्यात्म उनके जीवन का प्रमुख अंग था। कवि के सभी पद एक से बढ़ कर हैं। सरल एवं ललित भाषा में निबद्ध हैं। चेतन काहे ,भरम भुलानो एवं चेतन चेतत क्यू नहि मन में जैसे पद कविवर भूधर दास, बनारसी दास, रूपचन्द द्वारा लिखे हुए पदों के समान है।

देवेन्द्रकीर्ति इस पुष्प के अन्तिम कवि है जिन्हें महाकवि की उपाधि से भी सम्बोधित किया जा सकता है। देवेन्द्रकीर्ति १६वीं एवं १७वीं शताब्दि के एक सशक्त कवि थे जिनका एक मात्र रास काव्य यशोधर रास अपने युग का महाकाव्य है। यद्यपि काव्य की भाषा जटिल एवं दुरूह अवश्य है लेकिन जब रास का गहराई से अध्ययन किया जाता है तो कवि के काव्य कौशल को देख कर मन झूमने लगता है। एक महाकाव्य के लिये जो आवश्यक तथ्य स्वीकृत किये गये है वे सब इस रास काव्य मे है। यशोधर रास की कथा मे पूर्व कवियो द्वारा प्रतिपादित कथा ग्रहण करने के पश्चात् भी कवि ने प्रत्येक घटना का वर्णन जितना गहन, रोमाञ्चक एव अलंकारिक किया है वह अपने ढंग का अनूठा है। कवि ने राजगृह नगर, राजपीर नगर एवं अवन्ती एव उज्जयिनी नगर चारों का बहुत विस्तृत वर्णन किया है। अवन्ती की शोभा का तो पूरे ४० पद्यों में वर्णन हुआ है नगर के वैभव एव समृद्धि का वर्णन करते हुए उसे इन्द्रपुरी से भी उत्तम नगर सिद्ध किया है।

धनद तिहां एक अहीं अनेक, इन्द्र घणा नर आहां सुविवेक
चतुर घणा नर सुर गुरु समा, घणी घणी भोम तिलोत्तमा ॥४०॥

सवे नार भर्त्ता उर्वसी, घिर घिर नार सुकेसी जी।
रंभा जणी ऊर घणी मानमी, रंभा वन मंडित अवनी ॥४१॥

इसी तरह कवि उज्जयिनी के वर्णन में इतना डूब गया कि उसका वर्णन ५१ छन्दों मे भी कठिनता से पूर्ण हो पाया है। कवि ने चीन देश की स्त्रियों का उल्लेख किया है। एक वर्णन मे कवि ने लिखा है कि वहां स्फटिक के ऊंचे भवन थे इसलिये जब जाली में से चन्द्रकिरण आती थी तो चीनी कुमारियां उसे चन्द्रहार समझ कर ढूंढने लगती थी। जब कभी चन्द्रमुखी ऊंचे प्रासाद पर रात्रि को बैठ

आया करती थी तो लोग उसे पूर्णिमा का चन्द्र समझ कर आकाश में देखने लगते थे। कवि के वैसे तो सभी वर्णन एक से एक बढ़ कर है लेकिन इनमें यशोधर की रानी अमृतमती के सौन्दर्य एवं उसके विवाह का वर्णन बहुत अच्छा हुआ है। प्रत्येक रीतिरिवाज का बड़ी सूक्ष्मता से वर्णन किया गया है। बारात की पहरावणी होना एक महत्वपूर्ण रिवाज माना जाता है कवि ने लिखा है कि पहरावणी के लिये परिवार के सभी सदस्य एकत्रित हो गये हैं। राजा यशोधर अपनी रानी अमृतमती के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध था। रात्रि को जब वह अमृतमती के महल में गया तो उसका एक २ मंजिल पर जितना स्वागत हुआ कवि ने उसका बहुत सूक्ष्म वर्णन किया है उसने अपने जीवन में उसे अमृत के समान समझा। यशोमती रानी का बसन्त क्रीड़ा का वर्णन भी अनूठा हुआ है। इन सबके अतिरिक्त मुनि सुदत्ताचार्य द्वारा धर्मोपदेश का भी कवि ने १३१ पद्यो में वर्णन किया है। पूरा रास काव्य ६ अधिकारों में विभक्त है जो किसी काव्य के लिये पर्याप्त कहे जा सकते हैं।

इस भाग मे परिमल्ल चौधरी के श्रीपाल चरित्र का एक भाग ही दिया जा सका है शेष अभी कवियो की सभी रचनाओं के पूरे भाग इस में दिये गये हैं। यशोधर रास स्वयं ही एक काव्य है, इसके अतिरिक्त बाई अजीतमति की ९ कृतियां, महेन्द्र कीर्ति के पूरे १५ पद एवं धनपाल के ४ गीत इस प्रकार ३० मूल कृतियों के पाठ भी दिये गये हैं।

सम्पादक मंडल :—

प्रस्तुत पुष्प के संपादक मंडल में माननीय डॉ० हीरालाल जी माहेश्वरी, डॉ० राजाराम जी जैन एवं डॉ० गंगाराम जी गर्ग हैं। डॉ० माहेश्वरी राजस्थान विश्वविद्यालय मे हिन्दी विभाग में रीडर हैं। आप राजस्थानी भाषा के जाने माने इतिहासज्ञ विद्वान एवं लेखक हैं। अकादमी पर आपकी विशेष कृपा रहती है आपने विद्वतापूर्ण "दो शब्द" व्याख्या लिखने की जो कृपा की है उसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। डॉ० राजाराम जैन मगध विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं अपभ्रंश के प्रोफेसर है समाज आपकी विद्वता से चिरपरिचित है। इसी तरह डॉ० गंगाराम जी गर्ग युवा पीढ़ी के विद्वान् है। जैन साहित्य पर शोध कार्य आपकी रुचि में शामिल है। पार्श्वदास निगोत्या पर आपने अच्छी खोज की है। तीनो ही विद्वानों के हम हृदय से आभारी हैं।

अकादमी के संरक्षक श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने "संरक्षक की ओर से दो शब्द" लिखने की महती कृपा की है। सेठी साहब उदार व्यक्तित्व के धनी

है तथा साहित्य प्रकाशन में बहुत रुचि लेते हैं। अकादमी को आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त है।

प्रस्तुत भाग के उपयोग के लिये श्रीपाल चरित्र की पाण्डुलिपि के लिये श्री पं० अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ एवं श्री राजमलजी संघी, नवीतमति की पाण्डुलिपि के लिये कैलाशचन्द जी सोगानी, धनपाल एवं महेन्द्र कीर्ति की पाण्डुलिपियों के लिये श्री माणक चन्द जी सेठी डिग्गी एवं यशोधर रास की पाण्डुलिपि के लिये श्री लक्ष्मीचन्दजी गांधी, प्रतापगढ़ का आभारी हूं जिन्होंने उदारता पूर्वक पाण्डुलिपियां देकर इस भाग के प्रकाशन में योगदान एवं सहयोग प्रदान किया है।

डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल

१०—६—८४

विषय-सूची

पूर्व पीठिका

१७वीं शताब्दी में जितने व्यापक रूप से हिन्दी कृतियां लिखी गयी उतनी कृतियां इसके पूर्व किसी शताब्दी में भी नहीं लिखी जा सकी। इस शताब्दी में देश के सभी प्रदेशों में हिन्दी रचनायें लोकप्रिय बन रही थीं। प्राकृत एवं संस्कृत ग्रन्थों के हिन्दीकरण का यह युग था। जैन कवियों का इस ओर विशेष ध्यान जा रहा था। पाण्डे रूपचन्द इसी शताब्दी के कवि थे जिन्होंने समयसार कलश पर हिन्दी टब्बा टीका लिखी थी। जैन कवि स्वतन्त्र रूप से भी काव्य रचना करते तथा गीत, रासो एवं काव्य की अन्य विधाओं के माध्यम से छोटी बड़ी रचनाएं लिखते रहते थे। इस शताब्दी में होने वाले ब्रह्म रायमल्ल, भ. प्रतापकीर्ति का अकादमी के प्रथम पुष्प में भट्टारक रत्नकीर्ति, कुमुदचन्द एवं उनके समकालीन ६८ अन्य कवियों का। चतुर्थ पुष्प मे बुलाखीचन्द, बुलाकीदास एवं हेमराज जैसे सुप्रसिद्ध कवियों का छठे भाग में परिचय दिया जा चुका है। इनके अतिरिक्त अभी और भी पचासो कवियों का परिचय अवशिष्ट है जिन्होंने हिन्दी साहित्य के विकास मे अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

इस शताब्दी में होने वाले कवियों मे कवयित्री 'अजीतमति' का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किसी जैन कवयित्री की यह उपलब्धि विगत ५०-६० वर्षों में की गयी सतत खोज के बाद हो सकी है। जैन हिन्दी कवयित्रियों में दिगम्बर समाज मे चम्पाबाई का नाम आता है जो करीब १०० वर्ष पूर्व टोंग्या परिवार में देहली में हुई थी और जिनकी एक मात्र कृति 'चम्पा शतक' का मैंने सम्पादन करके प्रकाशित करवाया था। श्वेताम्बर समाज की कवयत्रियों में हरकू बाई, (सं. १८२०) हुल साजी (सं. १८८७) सरूपा बाई, जड़ावजी एवं सूर सुन्दरी जैसे नाम और आते हैं लेकिन ये सब कवयित्रियां हरकूबाई एवं हुलसाजी के अतिरिक्त एक शताब्दी पूर्व ही हुई हैं। इसके अतिरिक्त जहां हिन्दी जैन कवियों की संख्या ४०० से कम नहीं होगी वहां महिला कवियों की यह संख्या एक दम नगण्य है इससे पता चलता है कि महिला समाज में कभी साहित्यिक चेतना नहीं रही या फिर उनके द्वारा निबद्ध साहित्य की उपेक्षा की गयी और उसको संग्रहणीय नहीं समझा गया। इसलिये १६वीं-१७वीं शताब्दी में होने वाली कवयित्री अजीतमति से हिन्दी साहित्य निःसंदेह गौरवान्वित हुआ है।

बाई अजीतमति

अजीतमति ने अपने आपको बाई अजीतमति लिखा है। वह भट्टारक वादिचन्द्र (१६वीं–१७वीं शताब्दी) की प्रमुख शिष्या थी। उन्ही के सघ मे ब्रह्मचारिणी साध्वी के रूप में रहती थी। वादिचन्द्र स्वय अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान् भट्टारक थे। जो मूलसंघ के भट्टारक ज्ञानभूषण के प्रशिष्य एवं प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। स्वयं वादिचन्द्र एक समर्थ साहित्यकार थे जिन्होने संस्कृत एवं हिन्दी मे कितनी ही रचनायें निबद्ध करने का श्रेय प्राप्त किया था। साध्वी अजीतमति ने इन्हीं के संघ में रहकर शिक्षा प्राप्त की थी।

कवयित्री अजीतमति हुंबड जाति के श्रावक कान्ह जी की पुत्री थी काह्नजी अपने समय के प्रभावशाली व्यक्ति थे। वे हूबड जाति के शिरोमणि थे। उनका निवास स्थान सम्भवतः सागवाडा था जिसका उन्होंने एक गीत मे निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

"सागवाडा नयरे छि बहु अवास, श्रीय सघनी पुरवो स्वामी आस"

इसके अतिरिक्त कवयित्री का जन्म कब हुआ, कहा हुआ इस सम्बन्ध मे कोई जानकारी नही मिलती लेकिन उसके स्वय का हाथ लिखा हुआ जो गुटका मिला है उसमे कवयित्री द्वारा रचित सभी पाठो का सग्रह है। गुटका का लेखनकाल सवत् १६ ५० (सन् १५९३) है इससे उसके जन्म काल का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त उसने गुटके मे जो पाठ लिखा है वह ऐतिहासिक तथ्यो से युक्त है इसलिये यदि उसकी आयु उस समय ४० वर्ष की भी होगी तो उसका जन्म संवत् १६१० (सन् १५५३) के आस पास हुआ होगा।

अजीतमति की शिक्षा दीक्षा के बारे में भी कोई जानकारी नही मिलती लेकिन क्योंकि उसके गुरु भ. वादिचन्द्र स्वय अच्छे विद्वान् थे, ग्रन्थो के निर्माता थे। संस्कृत, हिन्दी एव गुजराती मे ग्रन्थ रचना करने में प्रवीण थे। इसलिये अजीतमति की शिक्षा दीक्षा भी अच्छी होनी चाहिये। इसके अतिरिक्त जिस तरह की उसकी रचनायें मिली हैं उनसे भी पता चलता है कि उसने सभी रचनायें स्वान्तः सुखाय लिखी थी।

कवयित्री के जिस गुटके में उसकी रचनायें मिली हैं उसमें बीच-बीच मे ऐसे पाठ भी हैं जो अधिकांश गुटकों मे नहीं मिलते हैं। उसकी लिपि भी इतनी सुन्दर नहीं है जितनी एक महिला कवि की होनी चाहिये। फिर भी जैन समाज का यह सौभाग्य है कि उसमें ऐसी विदुषी कवयित्री ने जन्म लिया और अपनी रचनाओं से एक रिक्त स्थान की पूर्ति की। राजस्थान के अवशिष्ट शास्त्र भण्डारों की यदि सघन खोज की जावे तो सम्भवतः और भी कुछ कवयित्रियों के नाम एवं उनका साहित्य मिल सकता है।

कवयित्री अजीतमति द्वारा निर्मित तथा एक ही गुटके में संग्रहीत रचनाओं के नाम निम्न प्रकार है—

१. अध्यात्मिक छन्द
२. षट पद
३. भक्ति परक पद—७
४. इतिहास परक घटनाओ का वर्णन—

उक्त सभी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है—

अध्यात्मिक छन्द

आध्यात्मिक विषय पर प्रायः सभी जैन कवियों ने थोड़ा बहुत अवश्य लिखा है। यदि किसी कवि ने स्वतन्त्र रचना नही लिखी हो तो उसने अपनी अन्य कृतियो मे ही अध्यात्म विषय का वर्णन किया है। कवयित्री अजीतमति ने भी "अध्यात्मिक छन्द" निबद्ध करके अपनी आध्यात्मिकता का परिचय दिया है। इसमें केवल ३० पद्य हैं लेकिन सभी पद्यो मे आत्म रस भरा हुआ है जो मानव को अपनी आत्मा का ज्ञान कराते हैं। अपनी आत्मशक्ति की वास्तविकता को बतलाते हैं और उसे सचेत करते हैं। क्योकि यदि शुद्ध दृष्टि से अपने आपको देखा जावे तो अपने भीतर ही हमें आत्म प्रकाश मिल सकता है।

जो खरी दृष्टि करी निहालि, ज्ञान जोत घट भीतर बालि ॥२॥

कवयित्री अजीतमति ने आगे चलकर कहा है कि यदि "तुझे देखना ही है तो अपनी आत्मा को देख। दूसरे को देखने से आत्म ज्ञान की प्राप्ति अथवा आत्म दर्शन कभी नहीं हो सकता। क्योंकि दूसरों के कपड़ों को धोने से अपने कपड़े कभी नहीं धुल सकते अर्थात् अपने कपड़ों का मैल कभी साफ नहीं हो सकता—

जो जूझि तो अप्पा जूझि, पर कि जूझि ठाम न हुँति ।
पर का झगड़ा क्या तु ओदि, अपना मैल करि वही ओहोदि ।।७।।

बाई अजीतमती ने इसी अध्यात्म ग्रंथ मे आगे कहा है कि यदि तेरा मन झगड़ालू है तो दूसरो के झगड़ो मे जाकर क्यो पड़ता है। दूसरों के झगडों में तुझे किञ्चित् भी स्थान अर्थात् सद्गति प्राप्त होने वाली नहीं है क्योंकि तू अपना झगड़ा निपटाने अथवा शांत करने के स्थान पर दूसरो का झगड़ा शात करने में लगा हुआ है।[1]

यह बत्ती वाला दीपक सभी को देखता है किन्तु यदि उसमे बत्ती न हो उसे कोई नहीं देख सकता लेकिन यह आत्मा तो बिना बत्ती का ही दीपक है जो स्वय तो सबको देख लेता है और दूसरा इसे कोई नही देख पाता। वह स्वय ही अपने ज्ञान के द्वारा अपने को देख सकता है।[2] अपनी इसी बात को कवयित्री ने आगे के पद्य मे फिर दुहराया है और जो अधिक स्पष्ट है—

बाती दीपक सबको जाणि, बिण बाती कोई न पिछाणि ।
सो अप्पा सो अप्पसु ध्यावि, बिण बाती का दीपक पावि ।।२१।।

मानव का यह मन बहुत ही भटकता है स्थिर रहना तो मानो जानता ही नही। अधिक डोलने से वह अपना मार्ग ही भूल गया है। अनेक जातियो मे वह फिर चुका है जन्म ले चुका है लेकिन अभी तक उसे सद्बुद्धि नहीं आयी है क्योंकि वह आत्मा से परे रहता है और आत्म ज्ञान के बिना उसे सुख नहीं मिल सकता।

एह मन मेरो बोहोत डोलाल्यो, फरी फरी भी निजरो भुलाल्यो ।
बहु प्रकार ब्योहो गति करी आवि, अप्पा बिण कही सुख न पावि ।।२२।।

आत्म ज्ञान मानव के लिये आवश्यक है। जैसे सिद्धालय मे आत्मा निवास करती है उसी प्रकार शरीर मे भी आत्मा का निवास रहता है इस प्रकार जो

---

१. **जो झगड़ु मन होवि तेरा, पर कि झगडि जावि घणेरा ।**
पर कि झगडि छोडन पावि, अप्पार झोडी डर कुं ध्यावि ।। ।।

२. **आतम दीपक सबको देखे, बिण बाती कोइ नहीं देखे ।**
अप्पा अप्प ध्यान करि ध्यावा, बिण बाती का दीपक पावा ।।१७।।

आत्मा को जानता है। वही आत्म सुख का अनुभव कर सकता है और जन्म मृत्यु के बन्धनों से मुक्त हो सकता है।

इस प्रकार अध्यात्मिक ग्रंथ के सभी पद्य आत्म रस से ओत प्रोत है। इससे मालूम पड़ता है कि अजीतमति का जीवन पूर्ण वैराग्यमय था तथा आत्म चिन्तन मे उसकी अधिक रुचि थी।

इसमे ३० पद्य हैं। अन्तिम पद्य में कवयित्री ने अपने गुरु वादिचन्द्र को नमस्कार किया है। भाषा यद्यपि अधिक परिष्कृत नहीं है किन्तु कवयित्री के भावों को समझने के लिये पर्याप्त है। भाषा पर गुजराती का प्रभाव है।

२. षट पद—यह लघु कृति है जिसमें केवल पाच छंद है और प्रत्येक छन्द में पाच छह पंक्तियां हैं। विषय की दृष्टि से इसमें किसी एक विषय का वर्णन न होकर एक से अधिक पर चर्चा के रूप मे है। प्रथम छन्द में आत्म का वर्णन है तो दूसरे छन्द मे भगवान आदिनाथ के माता-पिता, शरीर प्रमाण एवं वंश का उल्लेख हुआ है। यह छन्द नमस्कार के रूप मे है।[1]

तीसरे पद्य मे भट्टारक वादिचन्द्र का परिचय दिया गया है। वादिचन्द्र ने बडिल वश मे जन्म लिया। उनके पिता का नाम विरा एवं माता का नाम उदया था जो रत्नाकर के समान थी। वे जब प्रवचन देते थे तब उनकी वाणी मेघ के समान गर्जना करती थी। वादिचन्द्र साधुओ के शिरोमणि थे।

चतुर्थ पद्य मे भी अपने गुरु वादिचन्द्र का ही और अधिक परिचय दिया गया है। वादिचन्द्र मूलगुणों एव उत्तरगुणों सभी का पालन करते थे। अपने समय के वे प्रसिद्ध साधु थे जिन्होने मोह एव काम दोनों पर विजय प्राप्त की थी। उनमें विद्वत्ता भी खूब थी इसलिये कुवादियों के लिये वे सिंह के समान थे। ये भट्टारक प्रभाचन्द्र के पट्ट पर विराजमान थे।

वसं बडिल विख्यात, ख्यात विरा सुत गुणकर
रूप कला चातुर्य, चतुर चारीमह अधिकरं
उदयी उदरि तास, तास जननी रत्नाकर
वाणी गाजि मेघ, मेघ जसु जन रत्नाकर
गुणाकर यतीश्वर जयो, श्री वादिचन्द्र वादीन्द्रवर
बाइ अजीतमती [illegible]

अन्तिम पद में पंच परमेष्ठी की शरण ही एक मात्र उत्तम शरण है इसी भाव को उसमें बतलाया गया है।

३. बाई अजीतमति ने कुछ पद भी लिखे थे जिनकी संख्या अभी तक सात है।

प्रथम पद मे चौबीस तीर्थंकरो को नमस्कार किया गया है लेकिन पद शैली में लिखा होने से "नेमजी तू मुझ महलाओ" स्थायी अन्तरा है। यद्यपि इसमें पद का कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें १३ अन्तरें हैं। भाषा एवं शैली दोनों ही सामान्य हैं। इस पद को सम्भवतः उजीलगढ में जो पर्वत शिखर पर स्थित था, लिखा गया था। कवयित्री ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

> उजीलगढ गिरिवर तणो नेमी जिनराय।
> कर जोड़ अजीतमती कहि, नित सेवु रे पाय ॥१३॥

दूसरे पद मे ऋषभदेव की स्तुति की गयी है। तीसरा पद मानव को चेतावनी के रूप मे है। चौथा पद नेमिनाथ स्तवन है जिसे कवयित्री ने सागवाडा नगर में निर्मित किया था। इसमे ६ अन्तरे हैं। पंचम पद मे धन यौवन पर हमने बहुत अभिमान किया इसका वर्णन किया गया है। छठा पद उपदेशी है तथा सातवा पद पार्श्वनाथ स्तवन के रूप मे हैं। भाषा एवं भावो की दृष्टि से सभी पद सामान्यत: अच्छे हैं।

४. ऐतिहासिक लेख

यह एक ऐतिहासिक लेख है जिसमे वृषभनाथ के पौत्र मारिचि द्वारा दूसरे मतो की स्थापना से प्रारम्भ होता है। भरत चक्रवर्ती के द्वारा ब्राह्मण मत की स्थापना की गयी। तीर्थंकर शीतलनाथ के पीछे यज्ञशालाओ की स्थापना हुई थी। भगवान पार्श्वनाथ के युग में पिहितास्रव के शिष्य बुधिकीर्ति द्वारा बुद्ध मत की स्थापना की गयी। जो मांस मद्य सेवन मे दोष नहीं मानते थे। विक्रमादित्य के पीछे सम्वत् १३० मे यत्याचार्य भद्रबाहु के शिष्य जिनचन्द्र ने श्वेताम्बर सम्प्रदाय की स्थापना की थी। जो स्त्री की मुक्ति, केवली कवलाहार, आहार और नीहार, गर्भापहरण, केवली उपसर्ग आदि मान्यताओं को मानने वाला है। ५२६ वर्ष पश्चात् पूज्यपाद के शिष्य वज्रनन्दि द्वारा द्राविड संघ की स्थापना, संवत् ७५३ में कुमारसेन द्वारा काष्ठा संघ की स्थापना, चमरो की पीछी का ग्रहण, इसी तरह विक्रम संवत् २००

के पीछे माथुर गच्छ की स्थापना। सवत् १८०० के पश्चात् लोग विपरीत क्रिया करने लगेंगे ऐसा भी लिखा है।

उक्त लेख स्वय अजीतमति द्वारा सवत् १६५० में लिपिबद्ध किया गया था।

इस तरह साध्वी अजीतमती ने यद्यपि लघु रचनाएं निबद्ध की हैं लेकिन वे उसकी काव्य शक्ति की परिचायक हैं। वे सभी रचनाएं एक ही गुटके में लिपिबद्ध हैं जो स्वय अजीतमति का था। हो सकता है अभी राजस्थान के शास्त्र भण्डारो मे कवयित्री की और भी रचनायें संग्रहीत हों। एक महिला कवि द्वारा इतनी सारी काव्य रचना करना प्रशंसनीय है।

कृतियो की भाषा गुजराती प्रभावित है। अलंकार शैली एवं भावों की दृष्टि से सभी रचनायें सामान्य हैं।

अध्यात्मिक छन्द

आर्या

परमाणंदं नत्वा अनिभारति देवी गुणं धरीवा ।
छंदो परमाणंदो प्राणंदो एहि गुणकंदो ॥

हवि छंद

आतम आपज दृष्टि जोवि, परम जोत घर भीतर होवि ।
जो खरी दृष्टि करी लिलावि, ज्ञान जोत घर भीतर पावि ॥१॥

गीत कवीत क्या लिलाया, गुणी छोडि निर्गुणी कु ध्याया ।
गध वरण रस उसका नाही, परम जोत सोहे घट माहि ॥२॥

घट छोडी उर क्या तु चाहि, घट मांहि न्यान पट सोहि ।
घट भूला तु फरे सायणा, घट मा सुता चतुर सुजाणा ॥३॥

नीर विकल्प तु काहे नही ध्यावि, विकल्प सेथि क्या लिलावि ।
एह विकल्प कि जीव का जाणा, परम जोत कु नही समाणा ॥४॥

रे आतम चित किहा फिरावि, जे न्या हालि सो घट मां पावि ।
एक समो जब कदि पेस्वे, ज्ञान जोत घर भीतर देख ॥५॥

न्यान छोडी जीव उर कु ध्यावि, वीतया सेथि चिन्ह चलावि ।
इसि मन कु तु अंतर ल्यावि, परम समाधी समिमां पावि ॥६॥

जो जूझि तो अप्पा जूयि, परकि जूयि ज्ञान न होयि ।
परका उजवल क्या तु धोवि, अपणा मैल कदि नही खोहोवि ॥७॥

जो झगडु मन होयि तेरा, पर कि झगडि जायि घणेरा ।
परकि झगडि ठोकन पावि, अतर छोडी उर कु ध्यावि ॥८॥

रे जीव ज्ञान काहा तु जोवि, जे जूयि सो घटमां होवि ,
सूता जे मन जाइ अमाया, मन मारी अपणे घरे आया ॥९॥

मन रूंधी करी कां नहि राखि, वीतया फल या फरी फरी चाखि ।
आप्या जब अपणे घरि मावि, तब होवी अमता नही आवि ॥१०॥

जो रे जीव मन [illegible] [illegible]।
एक [illegible] [illegible] ॥११॥

रे जीव [illegible] [illegible]।
एक [illegible] मन का [illegible] ॥१२॥

रे जीव [illegible] [illegible] हारि।
[illegible] बिन [illegible] भीतर [illegible] ॥१३॥

रे जीव [illegible] [illegible]।
[illegible] बिन [illegible] ॥१४॥

रे तला परम सुपिवें, जाणि काम बहुती न देवे।
एक समो [illegible] [illegible], अनंतकाल के बाद जमाया ॥१५॥

अनाद का थिर विकलप भाइ, थीर विकलप कु रहा समाइ।
थीर वीकलप कु जो मन लावि, निरविकलप [illegible] पावि ॥१६॥

आतम दीपक सबको पेखे, बिण बाती कोइ नहीं देखे।
अप्पा अप्प ध्यान करी ध्याया, बिण बाती का दीपक पाया ॥१७॥

रे जीव ध्यान धरो [illegible] [illegible] ।
जो पंथी [illegible] [illegible] ॥१८॥

घर की जोत न जाणि कोइ, अंग पढ्यां पण ध्यान न होइ।
रे जीव फरी फरी विकलप ध्यावि, विकलप ध्यानि ध्यान न पावि ॥१९॥

एह विकलप जे जीव का नांहि, निर विकलप कु कह्या न जाहि।
जेह जोगी जोगीश्वर जाण्या, उसका गुण मही मांहि बिखाण्या ॥२०॥

बाती दीपक सबको जाणि, बिण बाती कोइ न पिछाणि।
सो अप्पा सो अपसु ध्यावि, बिण बाती का दीपक पावि ॥२१॥

भूली रह्या जग मां सहु कोइ, पर की दृष्टि आनम होइ।
स्वकीय ज्ञान दृष्टि करी पेखे, पर की दृष्टि कुं सेहेजे देखे ॥२२॥

एह मन वैरी बोहोत डोलाणो, फरी फरी ओ विसरो भूलाणो।
बहु पकव [illegible] करी ध्यावि, अप्पा बिण कहीं सुख न पावि ॥२३॥

रे जीव [illegible] सवि [illegible], फरी फरी भमसि बहु दुःख पायो।
फरी फरी भमी [illegible] [illegible], अपणा घर बिणु ठोइ न पायो ॥२४॥

उपसम कु तु काहेनी बुधि, उपसम तेरे घट मा सुधि।
अपणा ज्ञाता जोति न जाण्या, पर का गुण सेहज वखाण्या ॥२५॥

साची दृष्टि करी कान नीहालि, जे चाहि सो नही देखालि।
साची दृष्टि करी अतर न्याहाल्या, करम कीटडणि तत क्षिण जाल्या ॥२६॥

राक दृष्टि करी काहे देखे, घर की अंतर काहे न पेखे।
घर घर जोत रहि घर भीतर, घर छोडी उर नहीं अतर ॥२७॥

शब्द ज्ञान सब कोइ जाणि, पडित ने नि शब्द पिछाणी।
तिस की बुधि क्या सहनाम्यु, अंतर छोडीउ रंकथा ध्याउ ॥२८॥

जेसो सीखालि तिसो देहालि, असो करी जे नर नीहालि।
अप्पा आतम सुख बहु पावि, जनम जरा उठा कु नही आवि ॥२९॥

इति कलस

सोहि जगमा तेह जेह अतर लिलावि
सोहि जगमा तेह,जेह सुन्य ध्यानि ध्यावि।
सोहि जगमा तेह, जेह अप्पा गुण गावि।
सोहि जगमा तेह जेह धरी सिव पद पावि॥
सोहि जगमा जतु काह्नि सुम बिना अनुभवहि।
वादीचंद्र नमी कहि अजितमती लब्ध बिना ते नवि लहि॥३०॥
इति अध्यात्मि छंद समाप्तः।



षट पद

गुरु नीरंजन एकअनेक आतम व्यवहारि
घट माहि सोहि एक, अनेक बहु विचारि
ध्यान धरे गुन एक, अनेक ध्यानह विस्तारी।
[illegible] [illegible] बंधु काहि, न [illegible] ध्या हम रहि।
बाइ अजितमति एवं वदति धर्म विना ति नवि लहि ॥1॥

अयोध्या नयरी नरेंद्र, नाभिनंदन हेम प्रभ।
मरुदेवी सुत वृषभ, वृषभसेन वंदति जिन वृषभ।
उन्नत धनुष सत पंच, पंच कल्याणक सुखाकर।
इक्ष्वाक वंस विख्यात, ख्यात उदये दीवाकर।
श्री आदीदेव आदि जयो श्री वादीचंद्र सेवे सदा।
बाइ अजीतमति एवं वदती, जनम जरा नाषि कदा ॥2॥

वर वढिल विख्यात, ख्यात पिता सुत सुन्दर।
रुप कला चातुर्य, चतुर चारीत्रह मंदिर।
उदयो उदरि वास, तास जननी रत्नाकर।
वाणी गाजि मेघ, मेघ सहु जन सुखाकर॥
सुखाकर जतीवर जयो, श्री वादीचंद्र वादिंद्र वर।
बाइ अजीतमती एवं वदती सकलसंघ आणंद कर ॥3॥

मूल उत्तरगुणसार सार कीया सुभ मंडित।
जग मां जतीवर एह, मयण मोहमद खंडित।
विद्वजन मां एह, एह सोहि गुण पंडित॥
कुवादी गज सिंघ सिंघ चउवीह करी वंदति।
श्री वादीचंद्र वादि निपूण श्री श्री प्रभाचन्द्र पट्टाभरण
बाइ अजीतमती एव वदती सकल संघ मंगल करण ॥4॥

पंच परम गुरु तेह, जेह पचमी गइ पामीय।
पंच परम गुरु तेह, जेह जन सहु जयकारीय।
पंच परम गुरु तेह, जेह गुणाली वर धामीय।
पंच परम गुरु एहवा जे [illegible] [illegible] [illegible] धपि।
बाइ अजितमती एवं वदती [illegible] [illegible] ते नर तरे ॥5॥

राग केदारो

तू तो वृषभ जिनेस्वर वृषभ जन सहु कृत
वृषभ लांछन सोवनमि कायो करी सोहि रायो
वृष मगट करी राजसहु परहरी मुगति रमणि सुति चित लायो ॥१॥

कुमार पदवी सलाख पूरबगयो, त्रिसिट लाख पूरब काल सुखमि हुयो।
एक लाख पूरब काल जब रह्यो, तब जिनवर वैराग भयो ॥२॥

लोकातिक देव जय जय करतु हि, जीव जीवतु नंद नंद।
तप कुठार करी कर्म कानन वन, तेह नी कीधो स्वामीतिनी कंद ॥३॥

नृत्य नीलंजसा देखी नी मीत करी, संजम श्री कुलिचित्त धरी।
कर जोडी बाइ अजीतमती कहि, मुगति रमणि जिन वेग वरी ॥४॥

राग केदारो

तू चेते चेतन चतुर नरा, मेरा कहा भूलो नही चित्त धीरा।
कर्म्म नो कर्म्म आवरणि कावावीयो, ते दुर सुख्ट तू जीत विरा ॥१॥

हृदय कमल सेज्यामि सुवतु हि, जागत ऐनस पास नाथि।
जनम जरा मरण दूरी करी, ते नर सिव पुरी पेवे जावि ॥२॥

दूष दमि जिम कांचन विराजतु हि, तेम देह मां देही तु परम देवा।
त्रिकाल जोग धीरी कर्म सहु नजिरी प्रगति रमणि तुझ करई सेवा ॥३॥

अतुल बल वीर्य पराक्रम पुरतु, तुझ सम नही कोइ परम जीया।
कर जोडी बाइ अजीतमती कहि, तुझ समरे मुनी सुगति गया ॥४॥

राग बसन्त

श्री सरसति देवी नमीय पाय, गाएसु गुण श्री नेमि जिनराय।
जेह नामि सौख्य अनंत थाय, भूरी पातिग भर दुरे पलाय ॥१॥

सीव नारी सु नेम रमि बसंत, मतिसि सर्वानि कीधो गुणवंत।
ग्यान सरोवर सांत रसि भरयू माहत, मुनी हंसी करी सरोवर सोहंत ॥२॥

समुद्र विजय सिवादेवी नंद, [illegible] सुन्दर वहि रे हुवो आणंद ।
सुं जनमि भाव्यो भवं कंद, सुभ मनोहर वहि देवना वृंद ॥३॥

हरिवंस कमलनी सुं भण्यो सूर, [illegible] सुं रे कमनुं पूर ।
मिले जोबन परिण तजि रानी दूर, मोह ममत्व राषिलो कीधा दूर ॥४॥

जाईल सुर सुभद्र कुंवर, सुन गगन मन माहि मलीय जाये ।
जन लावो तीतर पाससे पंथासि, त्याग मोह बहुत तेह उपाय ॥५॥

[illegible] नवदे ति बहु अभ्यास, कीय संयमी सुरखो स्वामी पास ।
सुभ असुभ कर्मनो करे विनास, [illegible] अजीतमती ए बोली [illegible] ॥६॥

पद

धन जोबन कुकरी बहुत फरी । तेह अतीत हुवे ।
तीन भुवनि के रायजलि मन सबहि अतीत भये ॥१॥ ।धन॥

चेतो चेतो रे तहिं आपु रे, लख चौरासि बहु लख आये ।
कबहि न ठाडे भये । धन जोबन ॥२॥

दरसन ज्ञान चरण तप बहुत बार लहे ।
मोह ममता राषि जब कोप्यो तब मुफ कु न रहे ॥धन॥३॥

हूं जिसको नहि को नहि मेरो जब, सुध ध्यान धरे ।
कर जोडी बाइ अजितमति कहे तेह के काज सरे ॥धन॥४॥

[illegible]

हु बलिहारी चितन की, जो चेतन सु चितलावे रे ।
वसुकर्मरज जि आवडाये तो ते सहु चिकाटी जाये रे ॥१॥

मोह फांस बलि कोडीमले, तेहु सु [illegible] रे ।
[illegible] अरुपी [illegible], ते कुन [illegible] रे ॥२॥हु॥

पे विलासि पदारथ दिसी ते उपरि बहु रंग रे ।
मोहलि कर मिहु लपटाणो, तो फरी फरी पम्यो [illegible] रे ॥हु॥३॥

आपु पयास बबहु सार वरी मुन सु वर सीहु जाय रे ।
कर जोडी बाइ अजितमति कहि, सुद्ध भाव बरो मन लाइ रे ॥हु॥४॥

राग सामरी

नमो नमो पास जिणंदह पाय
नील बरण शुभ सुंदर काय, पूजतां पातिग जाय ॥१॥

अश्वसेन वम्मादेवी नंदन वंदन, जन जन आधार ।
सुर नर फणीपती खगपती नमती करे जिन जय जयकार ॥२॥ नमो॥

नयर बणारसि जनम्यो एह प्रभु, सतगुरु सतसु आय ।
हस्ता नव सोहि उन्नत काय, इक्ष्वाकवंस को राय ॥३॥

घाति अघाति कर्म सब नीजंगी, पोहोतो मुगतीवास ।
कर जोडी बाह्‌ अजितमति कहि, पूरवो हमारी आस ॥४॥नमो॥

४. इतिहास परक घटनाओं का वर्णन

श्री वृषभनाथनिवाणी मरीचि अनेक दर्शन अनेक मतनी स्थापना कीधी । भरत चक्रवर्त्ति ब्राह्मणनी स्थापना कीधी । श्री सीतलनाथ पछि पर्वति यागनी स्थापना कीधी । पहिलि मुंडशालायणि दश कु दाननी स्थापना कीधी । श्री पार्श्वनाथनिवारि पहितास्रवस्य शिष्य बुधीकीर्ति ते णे बुद्धनी स्थापना कीधी । मास मद्यना दोष न मानि । श्रीमहावीरनिवारि मसक पूर्ण मुनीस्वरि तर्कनी स्थापना कीधी । राजा वीक्रम पछि वर्ष १३६ गते भद्रबाहु शिष्य यत्याचार्य तास शिष्य जिनचंद्रेण स्वेताम्बरनी स्थापना कीधी । स्त्रीनि मोक्ष ग्रहीनि मोक्ष । तीर्थंकर ने आहार न्याहार रोग वस्त्र केवलीनि उपसर्ग गर्भ संचार कहि । तीर्थंकरी करी कहि महावीर ब्राह्मणी गर्भ संचार कहि । मास मध गहे आहारनी छोतिनमानि । वर्ष २०५ जाते श्री कलसेन आचार्य आपुली गच्छनी स्थापना कीधी । पंछि वर्ष ५३६ गते श्री पुज्यवाद शिष्य वज्रनंदी द्राविड संघनी स्थापना कीधी । बीज अन्न पासी सचीत्त न मानि । क्षेत्रा दीसावद्य न मानि । वीक्रम पछि ७५३ विनयसेन शिष्य कुमारसेन सन्यास भग करीनि काष्ट संघनी स्थापना कीधी । पीछि कठण चमरनी लीधो । स्त्रीनि पुनरपी दीक्षा । क्षुलकनि वीरचरी । छहु अणुव्रत कहि । वीक्रय पछि २०० जाते मथुराया रामसेने माथुरा गच्छनी स्थापना कीधी । नपीछीया । दक्षण देसे विभ देसे पुष्कलावती नगरे वीरचंद्र मुनिना तेम करीष्यति भीलिसंघ । वीक्रम पछी वर्ष १८०० जाते कीया वीपरीत करीस्यती । संवत् १६५० दर्श पंचमी दिने लखीत बाई अजीतमती निज कर्मक्षयार्थ ॥

कविवर परिमल्ल

परिमल्ल १६वीं-१७वीं शताब्दी के कवि थे। उनका जन्म ग्वालियर में हुआ लेकिन उनकी जवानी एवं बुढ़ापा आगरा में व्यतीत हुआ। कवि का परिवार एवं पूर्वज अत्यधिक प्रतिष्ठित एवं राज्य द्वारा सम्मानित थे। उसने अपने पूर्वजों का निम्न प्रकार उल्लेख किया है—

चन्दन चौधरी
|
रामदास चौधरी
|
आसकरन चौधरी
|
परिमल्ल चौधरी

चन्दन चौधरी ग्वालियर के महाराजा मानसिंह द्वारा सम्मानित व्यक्ति थे। सम्भवतः वे मानसिंह के विश्वस्त उच्चाधिकारी अथवा नगर सेठ थे। उनका यश एवं ख्याति सारे देश मे व्याप्त थी। उनके पुत्र रामदास जो कवि के बाबा थे अपार सम्पत्ति के स्वामी थे। जीवन में उन्होंने अपार सुख प्राप्त किया। उनके पुत्र एवं परिमल्ल कवि के पिता आसकरन अपने कुल के दीपक थे और अपने परिवार की ख्याति एवं प्रतिष्ठा को पूर्ण रूप से बनाये रखा था।[1] ऐसे परिवार में जब परिमल्ल का जन्म हुआ तो चारों ओर प्रसन्नता छा गयी। परिवार एवं माता-पिता का उन्हें पूरा लाड प्यार मिला। ग्वालियर में ही उनकी शिक्षा दीक्षा हुई और यहीं अपने पिता की छत्रछाया में उनका बाल्यकाल समाप्त हुआ।

कवि दिगम्बर जैन बरहिया जाति के श्रावक थे। उस समय ग्वालियर में बरहिया जाति के अच्छी संख्या में घर थे। सभी वैभव सम्पन्न मर्यादा पूर्ण एवं यशस्वी थे। लेकिन कवि के पूर्व होने वाले महाकवि रइधू ने बरहिया जाति का

गोपगिरि गिरि गढ़ उत्तिम थांन, सूरवीर जहाँ राजा मान।
ता आगें चंदन चौधरी, कीरति सब जग में विस्तरी ॥१५॥
जाति बरहिया गुन गंभीर, अति प्रताप कुल रंजन धीर।
ता सुत रामदास परवीन, नंदन आसकरन गुन लीन ॥१६॥
ता सुत [illegible] नंदन परिमल्ल, [illegible] में [illegible]।

कोई उल्लेख नहीं किया। १८वीं शताब्दी में होने वाले पंडित बखतराम साह[1] ने चौरासी जातियों के नामों मे बरहिया जाति का कोई उल्लेख नहीं किया लेकिन यदि बारहसेनी जाति ही बरहिया जाति का दूसरा नाम है तो इसका उल्लेख तो यत्र तत्र मिलता है। फिर भी सम्वत् १५४५ के एक मूर्तिलेख[2] में बरहिया कुल का उल्लेख अवश्य मिलता है इससे यह तो स्पष्ट है कि बरहिया जाति दिगम्बर जैन धर्मानुयायी थी और उसका ग्वालियर एवं आगरा क्षेत्र में अच्छा प्रभाव था।

परिमल्ल को अपने पिता एवं बाबा का कब तक प्यार मिला तथा तब तक उनकी छत्रछाया में ग्वालियर में रहे इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन वे ग्वालियर छोड़कर अपने परिवार के साथ आगरा आकर रहने लगे थे इस घटना का कवि ने अवश्य उल्लेख किया है। आगरा मे वे शल्य रहित होकर रहने लगे थे इसका कवि ने निम्न पंक्ति मे उल्लेख किया है।

"ता सुत कुल मंडन परिमल्ल, बसै आगरे में तजि सल्ल"

आगरा मे उनका जीवन शान्तिपूर्ण था। जब उन्होंने श्रीपाल चरित्र की रचना प्रारम्भ की थी उस समय देश में अकबर बादशाह का शासन था। कवि ने अकबर के शासन काल का उल्लेख ही नहीं किया किन्तु उसके तेज एवं प्रताप की भी प्रशंसा की है। उसने समस्त पृथ्वीतल को अपने वश में कर लिया था तथा उसकी चारो ओर दुहाई फिरती थी। इसी के साथ परिमल्ल कवि ने बाबर एव हुमायु का भी उल्लेख किया है—

बाबर पातिसाहि हौई गयौ, तासु साहि हुमाऊं भयौ।
ता सुत अकबर साहि प्रवान, सो तप तप्यौ दूसरौ भान ॥३२॥
ताके राज न कहूं अनीति, बसुधा सकल करी बसि जीति।
जंबूदीप तास की आन, दूजौ अवरंग ताहि समान ॥३३॥

रचना काल

अधिकांश पाण्डुलिपियो में रचना समाप्ति के समय का उल्लेख होता है लेकिन श्रीपाल चरित्र में कवि ने रचना के आरम्भ करने का उल्लेख किया है जो सम्वत्

---

1. बुद्धिविलास—बखतराम साह पृष्ठ संख्या—८६
2. संवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदि १० [illegible] श्री मूलसंघे [illegible]
   जिनचंद्रदेवा: [illegible] बरहिया कुले [illegible] प्रणमति
   आदीश्वर बिम्बं [illegible]। भट्टारक सम्प्रदाय—पृष्ठ संख्या १०४

१६५१ आषाढ सुदी अष्टमी शुक्रवार है। रचना समाप्त कब हुई और उसमें कवि को कितना समय लगा इसका कवि ने कहीं भी उल्लेख नहीं किया।

संवत् सोलहसै ऊपरै, तापर इक्यावन जानौ।
मास असाढ पहुंतौ आई, वर्षारित को कहु बढाइ ॥२०॥

पख उजालो आठें जानि, सुक्रवार वार परवानि।
कवि परिमल्ल सुभ करि चित, आरंभ्यो श्रीपाल चरित ॥२१॥

श्रीपाल चरित्र के अतिरिक्त कवि ने और कितनी रचनायें निबद्ध की इसका भी कहीं नामोल्लेख नहीं मिलता और न शास्त्र भण्डारों में परिमल्ल की श्रीपाल चरित की अतिरिक्त कोई रचना प्राप्त हो सकी है। जिसका अर्थ यही है कि प्रस्तुत कृति ही कवि की एक मात्र कृति है जिसको उसने अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में लिखी थी।

श्रीपाल चरित की पूर्व कृतियां

जैन धर्म में श्रीपाल का जीवन अत्यधिक लोकप्रिय है। सिद्ध चक्र पूजा के महात्म्य के कारण श्रीपाल का कुष्ट रोग दूर हुआ था इसलिये पूरा समाज श्रीपाल और मैना सुन्दरी के पावन जीवन से प्रभावित है और यही कारण है कि प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत एवं हिन्दी सभी भाषाओं के कवियों ने श्रीपाल चरित को कविता बद्ध करने में अपना गौरव समझा। अपभ्रंश भाषा में निबद्ध जयमित्रहल, पंडित नरसेन एवं पंडित रइधू के 'सिरिवाल चरिउ' पर्याप्त लोकप्रिय रहे हैं। संस्कृत भाषा में भट्टारक सकलकीर्ति एवं पंडित नेमिदत्त के श्रीपाल चरित्र समाज में चर्चित ग्रन्थ रहे हैं। हिन्दी भाषा में परिमल्ल कवि के पूर्व ब्रह्म जिनदास एवं ब्रह्म रायमल्ल (संवत् १६१५) के नाम उल्लेखनीय है। यही नहीं परिमल्ल के साथ साथ ब्र० वादिचन्द्र ने भी उसी वर्ष (संवत् १६५१) में श्रीपाल आख्यान लिखकर समाज में श्रीपाल के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

लेकिन जितनी लोकप्रियता परिमल्ल के श्रीपाल चरित्र को प्राप्त हुई उतनी अन्य कवियों के काव्यों को नहीं मिल सकी। यही कारण है कि राजस्थान के शास्त्र भण्डारों में कवि के श्रीपाल चरित की पाण्डुलिपियां सर्वाधिक संख्या में मिलती है। अभी तक उपलब्ध पाण्डुलिपियों में साहित्य शोध विभाग (वर्तमान जैन विद्यासंस्थान

१. देखिये—राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों की ग्रंथ सूची भाग चतुर्थ—
पृष्ठ संख्या ७७१.

श्री महावीरजी) के एक गुटके में संग्रहीत पाण्डुलिपि है जिसका लेखन काल संवत् १६६० द्वितीय वैशाख शुक्ला तीज है।[1] उक्त प्रति के अतिरिक्त १७वीं १८वीं शती में लिपि की गयी निम्न पाण्डुलिपियां भी उल्लेखनीय है।

१	शास्त्र भण्डार दि. जैन तेरह पंथी मन्दिर, दौसा	पत्र सं. १८०	लिपि काल सं. १६६९ फागुण सुदी १२

२.	"	दि. जैन मन्दिर [illegible] दीवान पुरानी दीग	गुटके मे है	सं. १७५७
३.	"	दि. जैन बीस पंथी मन्दिर दौसा	९७	१७७४
४	"	दि. जैन तेरहपंथी बडा मंदिर जयपुर	१५८	१७७६
५.	"	दि. जैन मंदिर गोधो का, जयपुर	८५	१७९०
६	"	दि जैन मंदिर वैर (भरतपुर)	१५८	१७९६

लेकिन संवत् १८०० के पश्चात् लिपि की हुई पचासों पाण्डुलिपियां राजस्थान के कितने ही शास्त्र भण्डारो मे संग्रहीत है। किसी २ शास्त्र भण्डार में तो ५–६ अथवा इससे भी अधिक पाण्डुलिपियों का संग्रह मिलता है। राजस्थान के अतिरिक्त आगरा, देहली, मैनपुरी आदि नगरों के शास्त्र भण्डारों में भी श्रीपाल चरित्र काव्य की अच्छी संख्या मे पाण्डुलिपियां मिलनी चाहिये।

पद्य संख्या

श्रीपाल चरित की विभिन्न पाण्डुलिपियो का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकल सकता है कि उनमे पद्यों की संख्या समान नहीं है। श्री दि. जैन मन्दिर चौधरियो की पाण्डुलिपि में २२२२ पद्यों की संख्या दी गयी है जबकि राजमहल [टोंक] की पाण्डुलिपि २२०० पद्य, बयाना की पाण्डुलिपि मे २२९० तथा गोधा मन्दिर जयपुर वाली पाण्डुलिपि मे पद्यो की संख्या २३४१ दी हुई है। यह संवत् १७९० की पाण्डुलिपि है। इस तरह अन्य पाण्डुलिपियो में पद्यों की संख्या मे अन्तर हो सकता है।

भाषा—श्रीपाल चरित ब्रज भाषा का काव्य है। आगरा ब्रज भाषा का प्रमुख केन्द्र रहा है इसलिये परिमल्ल कवि ने भी अपने काव्य मे ब्रज भाषा का प्रयोग किया है।

> आपस में सब मंत्री कराहिं, जाचो वीरदमन पै जांहि।
> जो आईस देहै हम जोग, सोई मानि लेहु सब लोग ॥१४०॥

> [illegible] [illegible] [illegible] करि [illegible], [illegible] लिखि [illegible] में [illegible] ।
> [illegible] भेंट [illegible] [illegible] करी, [illegible] लीन [illegible] है [illegible] ॥१४१॥

मांकी, कोहु, गरी, आ देखे (२०/१५) जाकी (७१/१६) जैसे शब्दों की अधिकता है ।

काव्य की विशेषताएं

श्रीपाल एवं मैनासुन्दरी पर हिन्दी में अब तक जितने भी काव्य लिखे गये हैं उनमें प्रस्तुत काव्य सभी दृष्टियों से उत्तम है । भाषा एवं वर्णन शैली दोनों ही आकर्षक हैं । कवि ने नायक, नायिका एवं उपनायिकाओं के जीवन में घटने वाली घटनाओं का सरस वर्णन किया है । कवि की वर्णन शैली से काव्य के सभी पात्रों का चरित्र विकसित हुआ है तथा पाठकों में उनके प्रति सहानुभूति, करुणा अथवा रोष के भाव जाग्रत होते हैं ।

काव्य का नायक श्रीपाल है जो कोटिभट है । असंख्य योद्धाओं की शक्ति का प्रतीक है । विपत्तियों एवं संकटों के सामने वह कभी हार नहीं मानता है किन्तु अपनी शक्ति, साहस एवं सूझबूझ से उन सभी पर विजय प्राप्त करता है । वह युवावस्था में ही राज शासन चलाता है लेकिन कुछ ही समय के पश्चात् वह भयंकर कुष्ट रोग से पीड़ित हो जाता है । यह कुष्ट रोग उसके सात सौ अंग रक्षकों के भी हो जाता है । खाना, पीना, उठना, बैठना, नहाना, धोना, वस्त्र पहिनना आदि सभी सभी क्रियायें दूसरों द्वारा की जाती हैं । राध एवं पीप की दुर्गन्ध से सारा वातावरण दुर्गन्धमय बन जाता है । नाक एव अंगुलियां गिरने लग जाती है । कवि ने कुष्ट रोग पीड़ा का बहुत अच्छा वर्णन किया है—

> [illegible] राज [illegible] शरीर, होई [illegible] बहुत [illegible] ।
> कोढ उदम्बर [illegible] अति राई, [illegible] अंगुली [illegible] [illegible] ॥१२१॥
> रक्तपीत [illegible] तन [illegible], हारे [illegible] राई [illegible] सीस ।
> भरे प्रसेद [illegible] सौ [illegible] देह [illegible] [illegible] रही ॥१२२॥
> स्याम [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] हि [illegible] [illegible] ।
> भरजन करें [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥१२३॥

श्रीपाल राजा थे लेकिन प्रजावत्सल थे । उनके कुष्ट रोग के कारण जब प्रजा को दुख होने लगा, नगर दुर्गन्ध से भर गया, तथा उनका खाना पीना हराम हो गया तब मन्त्रियों ने राजा से विनयपूर्वक प्रजा की व्यथा बतलायी । तत्काल श्रीपाल ने कुष्ट रोग से मुक्ति पाने तक राज्य का समस्त भार अपने चाचा वीर-

दमन को सौंपने का निश्चय किया। इस अवसर पर कवि ने प्रजा के महत्व पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला है—

रइयति बिन सोभा नही रहै, रइयति बिन को राजा कहै।
बिन पंखनि है पंखी जिसो हूं रइयति बिन बीसो तसो ॥१५२॥

×　　　　×　　　　×　　　　×

रैयति को हम उपर छांह, रैयति बसे हमारी बांह ॥१५९॥

ऐसै कहे सयाने लोय, राजा प्रजा बराबरि होय ॥१६०॥

मैनासुन्दरी जब सोलह वर्ष की हुई तब रूप एवं सौन्दर्य की राशि बन गयी। जिसने उसके रूप को देखा उसी ने दांतों तले अंगुली दबा ली। मैना सुन्दरी का कवि के शब्दो मे सौन्दर्य देखिये—

षोडस बरस चढी परवान, कोउ रूप न ताहि समान।
ताको रूपसो हेम करंडु, मानौ सरद पून्यौ कौ चंदु।
लोचन परम सुबनत अति बने, ज्यौ चकृत मृग सावक तने ॥२६॥

कटाक्ष दृष्टि मांनु बहु बान, भृकुटी कुटिल धनष्ष कमान।
माथै मांगे बिराजै भार, मानौ नागनि के उनिहार ॥२७॥

कवि ने मैनासुन्दरी के प्रत्येक अंग के सौन्दर्य का वर्णन किया है जब मैना सुन्दरी को कोढी के साथ विवाह करने के समाचार सुने तो चारों ओर राजा को धिक्कारने तथा मति भ्रष्ट होने, विनाश होने के ताने सुनने को मिले। इसी प्रसंग में अपने २ कर्त्तव्य का पालन नहीं करने के कारण किन २ का विनाश होता है इसका काव्य मे बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है।

विनसै मंत्री संकाधरै, विनसै राज अन्ध जो करै।
विनसै भामिनी आइसु तजै, विनसै धुक देखि रण भजै ॥४०४॥

विनसै ईसु कोहु परहरै, विनसै सांचु चाडु जो करै।
विनसै बाला तजै विवेक, विनसै बाछल चलै विष एक ॥४०५॥

श्रीपाल का कुष्ट रोग सिद्धचक्रव्रत पूजा के प्रभाव से गया था। मैना सुन्दरी ने पूर्ण आस्था एवं विधि के साथ इस व्रत का विधान किया था। अन्तिम तीन दिन तक गन्धोदक से स्नान करने पर श्रीपाल का कुष्ट रोग दूर हुआ था।

कवि ने इस व्रत के अवसर पर मांडने, फिर उस पर पूजा करने आदि क्रियाओं का विस्तृत वर्णन किया है। इससे पता चलता है कि परिमल्ल कवि पंडित भी थे।

> तीन चिकनु वंदनिक सुहाय, कोषु चिन्तकि पहुंचे अनुराग ।
> कंचन वरण भयो तनु ऐसो, सोहनु काम देवको जैसो ।।

श्रीपाल जब विदेश गमन करने लगे तो मैना सुन्दरी अतीव धर्मात्मा होने पर भी पति विरह के दुख को सहन नहीं कर सकी और पति को अपनी विरह व्यथा निवेदन करने लगी—

> यह कहि गवनु कीयो वरवीर, कामिनि व्याकुल भई शरीर ।
> लोचन भरे चित्त उमह्यो, मनु गाढो करि न चलु गह्यो

श्रीपाल की बलि देने के लिये उसे धवल सेठ के पास ले गये। श्रीपाल सुन्दरता की प्रतिमूर्ति होने पर भी धवल सेठ के हृदय में किञ्चित् भी दया नहीं आयी। और उसने उसकी बलि देने की स्वीकृति दे दी। लोभ मनुष्य का गला काटता है। इस प्रसंग में कवि ने लोभ रूपी पाप का विस्तृत वर्णन किया है—

> लोभ अंध जो मानुषु होई, पाप पुण्य जानै नहि सोई ।
> लोभ अंध मारै हूं प्राण, मलिन नाव नहि सर्व निदान ।।६०१।।
>
> लोभ अंध जो करही मित्त, तो पर करो न कबहू चित्त ।
> लोभ अन्ध जाको मन रहै, तो न भलो काहू को कहै ।।६०२।।

श्रीपाल का जीवन विदेश में भी पूर्णतः धार्मिक था। जहां भी उसे जिन चैत्यालय मिलता, वह दर्शन करके ही भोजन करता। यदि मुनिराज होते तो फिर उनके भी दर्शन करता।

> जिन चैत्यालो वंदौ जाय, तब हौं भोजन करि हौं आय ।
> अरु मुनिवर के वंदौ पाय, भोजनु करौ तबहीं जाय ।।

धवल सेठ ने जब रैनमंजूषा के रूप को देखा वह कामान्ध बन गया और पिता पुत्र के सम्बन्ध को भुला बैठा। वास्तव में मनुष्य जब काम का शिकार बन जाता है तो वह भाई बहिन, माता पिता, पुत्री के सम्बन्ध को भुला बैठता है इसी को कवि के शब्दों में देखिये—

> काम पुरुष सरवर बरहूँ, कामहीन कछु चिन्ता न करै ।।

सुरत भान ते सूर्य सत्रु आय, जथा होम ज्यों पावकु जाय ॥१२१०॥

× × × × × ×

कामी जन बंछै परनारि, कामी जन मन भावै गारि ।
कामी जन छांडै गुरु सेव, मानैं नाहिं न पूजै देव ॥१२४७॥

कामी जन जनकै उलटी रीति, उत्तम तजै मध्यम सौं प्रीति ।
कामी जन कै मित्तु न बंधु, नैननि देखै सदा निरंधु ॥१२४८॥

श्रीपाल फिर संकट में फंस जाता है। धवल सेठ द्वारा वह समुद्र में गिरा दिया जाने के पश्चात् वह सागर तैरकर दूसरे द्वीपमें आ जाता है। वहां सागर तटपर राजा के सिपाही उसका स्वागत करते हैं। और सागर तैर कर आने के उपलक्ष में राजा द्वारा अपनी लडकी गुणमाला से उसका विवाह कर दिया जाता है। वे दोनो कुछ समय तक सुख से रहते है लेकिन जब धवल सेठ का जहाज उसी द्वीप मे आ जाता है। श्रीपाल को देखकर घबरा जाता है और एक नयी चाल खेलता है। वह भांडों को बुलाकर राज दरबार मे श्रीपाल को भांड पुत्र सिद्ध कर देता है। जिस व्यक्ति के बुरे दिन आने लगते हैं तो अपनी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तथा वह धर्म का मार्ग छोड देता है। कवि ने इसका अच्छा वर्णन किया है—

यह सुनि सेठ विचारै तबै, किमस हाल होतु मर अबै ।
पहलैं मति ताकी तजि जाय, बुधि कछु करै कुटकाय ॥१५३७॥

तीनै सतु चले पुनि सीलु, धीरजु छीनि देह बलहीनु ।
महिमा ताकै पास न रहै, भानु ताहि तजि मारगु गहै ॥१५३८॥

संजम सीलु तजै फुनि ताहि, दया विवेकु वसै चित नाहि ।
पहलैं कुमति बैसै आय, गेरै असुभु जु कंठ लगाय ।
बहोरि होय अदया सौ प्रीति, बहोरि असत्य करै असि जीति ॥१५४०॥

भांडों ने राज्य सभा मे श्रीपाल को अपनी जाति का तथा अपना लडका सिद्ध कर दिया। भांडों द्वारा किये हुए प्रदर्शनको देखिये—

कोउ कंठ लागि रोवय, कोउ मुखु पौंछै बिहुसाय ।
कोउ ताकै पकरै पाव, कोउ बांह गहै अकुलाय ।

कोउ ताकै पीछे पंथु, ताहि देखि हल्यो सबु संघु ।
कोउ कहै धनि भूपाल, याको भयो यहां प्रतिपालु ॥

भांडों ने विचित्र प्रकार से राजा को समझा दिया कि श्रीपाल उन्हीं का पुत्र

है। श्रीपाल को फिर अशुभ कर्मों ने घेर लिया। राजा ने कोपित होकर चंडालों को श्रीपाल को मारने का आदेश दे दिया।

> बहु सुनि राय कोप अति भयो, चांडालनि को आयसु दयो।
> मारौ अब कीय मैं धरि करो, या पापी तैं धूरी भरो ॥१६८२॥

इसके पश्चात् रैनमंजूषा से श्रीपाल का पूरा परिचय सुनने के पश्चात् राजा ने श्रीपाल से क्षमा मांग ली और फिर से नगर में उसका जोरदार स्वागत किया गया। इसके पश्चात् तो विभिन्न द्वीपों से श्रीपाल के सामने विवाह के प्रस्ताव आने लगे और श्रीपाल ने भी सभी प्रस्तावों को स्वीकार कर अपनी उदारता का परिचय दिया।

श्रीपाल को राजकुमारियों से विवाह करने से पूर्व उनकी समस्या पूर्ति भी करनी पड़ी। कोकन पट की आठ राजकुमारियों द्वारा रखी गयी समस्या का श्रीपाल द्वारा निम्न प्रकार से पूर्ति की गयी।

समस्या—जहां साहसु तहां सिधि (श्रृंगार गौरी द्वारा)

पूर्ति—सत्त सरीरह आपतो, प्रगटै अधिक सुबुद्धि।
सील सुसाधन परहरै, जहां साहसु तहां सिधि ॥१७१८॥

समस्या—यो पेखंतह सबु (पद्मलोमी द्वारा)

पूर्ति—नवि पूजा नवि दान हित, अनिबापो यो दव्व।
वृथा जनम गवाइयो, गयो पेखंता सव्व ॥१७१९॥

समस्या—ते पंचायण सिंह (पउलोमी द्वारा)

पूर्ति—सील विहूना जे नर, तिन की देह मलीन।
जे चारित्रह निर्मला, ते पंचायण सिंह ॥१७२०।

समस्या—कासु पिबाउ खीरु
रावन विषा सीभियो, दसमुख एक सरीर।
तास माय चर्म परी, कासु पिबाउ खीरु ॥१७२२॥

इसके पश्चात् और भी देश की राजकन्याओं के साथ श्रीपाल ने विवाह कर लिया। एक दिन अचानक उसे मैनासुन्दरी की याद आ गयी और किया हुआ वायदा। वह तत्काल गुणमाला और रैनमंजूषा के पास आ गया और वहां से चलने की तैयारी कर ली. दलपट्टन के राजा ने उसे निम्न प्रकार सैन्य बल दिया—

मल्ल राय पुत्री विहसंतु, एक हजार वसु ग्रामवंत ।
च्यारि सहस वर वसु तुरंग, दीने द्रुम पखर वर अंग ॥

अनेक देशों में होता हुआ श्रीपाल उज्जैनी पहुंच गया जहां मैना सुन्दरी उस की प्रतीक्षा कर रही थी । उसके दीक्षा लेने के समय में केवल एक रात्रि बाकी थी । मैनासुन्दरी के लिये एक रात्रि की प्रतीक्षा भी कठिन हो रही थी । मैनासुन्दरी एवं उसकी सास के मध्य होने वाले वार्तालाप को सुनकर श्रीपाल ने घर में प्रवेश किया । दोनों को वह रात्रि को ही अपने कटक में ले गया और अपनी माता एवं रानी को अपनी विशाल सेना एवं अपनी पत्नियां बतलाई । उसने सबके सामने मैनासुन्दरी को पट्टरानी—महारानी घोषित किया तथा रैन मन्जूषा, गुणमाला, चित्ररेखा को रानियां घोषित की । मैनासुन्दरी का हृदय प्रसन्नता से भर गया और उसने श्रीपाल से निम्न प्रकार निवेदन किया—

मेरे पिता करम नहि मान्यो, मानभंग कीजे ता तनौं ।
कंवर पहरि कुहारी कंध, कर पीजा की मरी सबंध ।
ऐसी विधि जब मिलि है तोहि, तब ही सुख उपजैगो मोहि ॥

दूत ने तत्काल जाकर राजा से इसी प्रकार के वेश मे श्रीपाल से भेंट करने का आग्रह किया । राजा ने क्रोध में आकर दूत को पकड़ लिया । लेकिन मन्त्री के कहने से उसे छोड़ दिया । राजा पहुपाल ने उसी तरह श्रीपाल से मिलने की बात मान ली लेकिन मैनासुन्दरी ने जब राजा का मान भंग होता सुना तो श्रीपाल से पुनः अपने पिता को राजा के तरीके से बुलाने के लिये कह दिया । दोनों में जब परस्पर मिलन हुआ तो चारो ओर आनन्द छा गया ।

राजा पहुपाल ने जब मैना सुन्दरी एवं श्रीपाल के वैभव को देखा तो उसके आखों में आंसू बह चले और निम्न शब्दो मे मैना सुन्दरी की प्रशंसा करने लगा—

भो पुत्री सबही गुण खान, शील धुरंधर सुख निधान ।
तु ं अति दयावंत जीव बोध, तो सम पुत्री और न कोय ॥
मै तेरी देख्यौ अब करमु, अब आराध्यो जिनवर धरमु ।

अभी श्रीपाल को अपना स्वयं का राज्य और लेना था जिसे वह अपने चाचा को दे आया था इसलिये जब उसने अपना राज्य दूत भेजकर मांगा तो उसे निम्न प्रकार उत्तर मिला—

बिनु भुजबल बिनु खड्गप्रहार, बिनु रण जुरै न करै प्रकार ।
जौलौ एहु करम नहि होय, तौ लौं राज न पावै कोय ॥१६४६॥

श्रीपाल ने एक बार दूत भेजकर अपने चाचा को समझाने का प्रयास किया तो वह और भी क्रोधित हो गया और दूत को ही मारने का आदेश दे डाला—

दूत ने [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

लड़ाई की तैयारियां होने लगी और उसने तत्काल आक्रमण करने का आदेश दे दिया।

आवै मार मार तिहु बार, हुम [illegible] [illegible] ते हुसीयार ।
यो संग्राम मिटे हम बाह, जैसे श्रीपाल एक न [illegible] ॥१९८८॥

यहै कहत करी उमरी चढ्यौ, कौर लै [illegible] [illegible] रिस बढ्यौ,
ता देखत ही सबै जुझार, [illegible] [illegible] [illegible] तिहि बार ॥१९७९॥

सैनिकों की पत्नियां जब अपने अपने पति को युद्ध के लिए विदा किय उन्होंने निम्न प्रकार अपने विचार प्रगट किये—

कोउ प्रिया मांगे रतिदान, हम तुम कंत [illegible] है [illegible] ।
कोउ कहै युद्ध भुज लगो, [illegible] पिय [illegible] [illegible] ॥१९९९॥

कोइ सीख देई कुल लाम, युद्ध हारि मति आवो धाम ।
बहुत दोस जो आवौ भाल, स्वामी काम [illegible] करो हलाल ॥२०००॥

कोउ कहै संगिनी नारि, जियो पीय जो आनि हारि ।
एक कहै मुकतनि के हार, [illegible] पाटंबर और अपार ॥२००१॥

दोनों में युद्ध होने लगा। गज से गज, अश्व से अश्व एवं पायक से पायक भिड गये। शाम हो गयी लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। मन्त्रियों के परामर्श से अन्त में यह निश्चय किया गया कि श्रीपाल एवं वीरदमन में परस्पर युद्ध होने पर जो जीत जायेगा वही राजा पद प्राप्त करेगा। दोनों में भीषण युद्ध होने लगा।

तब ए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] करै [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥२०२८॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], श्रीपाल की [illegible] [illegible] [illegible] ।
ताके [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥२०२९॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥२०३१॥

वीरदमन ने अपनी हार मान ली और श्रीपाल को राज्य भार सम्हला कर स्वय ने जिन दीक्षा धारण कर ली। श्रीपाल ने सब राज्य सुख भोगा और धर्म नीति के अनुसार राज्य किया। कवि ने धर्म की बडी महिमा गायी है। धर्म का प्रभाव एवं तेज अपूर्व होता है जिसके हृदय मे धर्म उतरता है उसे चारों ओर से सुख शाति एवं अपूर्व आनन्द प्राप्त होता है—

धर्म एक त्रिभुवन में सार, धरमैं कुगति विनासन हार।
धर्म एक सब सुख को कंदु, धरम एक भवै दुख दंदु ॥२०२५॥

धर्म पसाय गज गुडरें, धरम पसाय होस हीय धरें।
धरम पसाय चंवर सिर ढरें, धरम पसाय छत्र सिर धरें ॥२०२६॥

अन्त मे श्रीपाल एवं मैनासुन्दरी दूसरे सहस्रो राजाओं एवं रानियो के साथ जिन दीक्षा धारण कर ली। मैनासुन्दरी की घोर तपस्या का बहुत ही अच्छा वर्णन किया है—

अब वन मारग सो पगु धरै, ग्रीषम रितु सिकता पर जरै।
सरद सौम सम बदनी बिका दु, पोसनि करती पोष पियास।
ग्रीषम हल माह परभात, हो ती मलिन सीत की घात ॥७॥

इस प्रकार श्रीपाल चरित हिन्दी का उत्तम काव्य है। इस काव्य से हिन्दी काव्य जगत् को गतिशीलता मिलती है। महाकवि तुलसीदास की रामायण के पूर्व दोहा, चौपई मे रचित श्रीपाल चरित से तत्कालीन समाज में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन, काव्य निर्माण मे कवियो एव विद्वानो की रुचि बढी थी। परिमल्ल कवि का आगरा केन्द्र था और ब्रज भूमि मे हिन्दी का प्रचार प्रसार करने मे जैन कवियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

श्रीपाल चरित मे काव्य के नायक द्वारा जिन जिन देशों एव द्वीपो का भ्रमण किया था उनके नाम निम्न प्रकार है—

१. राजगृह—राजा श्रेणिक की राजधानी, भगवान महावीर के विहार का प्रमुख केन्द्र।

२, चम्पापुर—अग देश की राजधानी, श्रीपाल के राज्य की राजधानी, भगवान वासुपूज्य की निर्वाण स्थल।

३. उज्जैन—मालवा प्रदेश की राजधानी, मैना सुन्दरी की जन्म स्थली,

श्रीपाल द्वारा कुष्ठी जीवन यापन, वन में सिद्ध चक्रव्रत की पूजा से कुष्ट निवारण। कवि के शब्दों में—

> देस मालवो सब सुख थानु, मध्यलोक में अमरपुरी मान।
> पुर मांहि सिद्धि है वासर रैनि, सुबस बसै तहां नगर उज्जैनि ॥६॥

४. कौशांबीपुर—श्रीपाल उज्जैन से कौशांबीपुर पहुंचा जहां उसकी धवल सेठ से भेंट हुई। वहीं से वह सेठ के साथ आगे व्यापार के लिये गया।

५. हंस द्वीप—यात्रा का प्रथम पड़ाव। श्रीपाल ने इसी द्वीप में स्थित जिन मन्दिर के बज्रकपाट खोले थे तथा उसका रैनमंजूषा से विवाह हुआ था।

६. कुंकुम द्वीप—दलपट नगर—समुद्र को तैरता हुआ श्रीपाल इसी द्वीप के किनारे पहुंचा तथा दलपट नगर के राजा द्वारा अपनी लड़की गुणमाला से उसका विवाह कर दिया। धवल सेठ के आने पर भांडो द्वारा श्रीपाल को अपना लड़का बतलाने पर राजा द्वारा श्रीपाल को सूली लगाने का आदेश दिया। लेकिन रैन मंजूषा के पहिचान के कारण श्रीपाल सूली से बचा तथा पुनः सम्मान प्राप्त किया। धवल सेठ की वहीं मृत्यु हुई।

७. कुण्डलपुर द्वीप—हंस द्वीप में कुण्डलपुर द्वीप पहुंच कर चित्ररेखा के साथ विवाह हुआ।

८. कंचनपुर—विलासवती का जन्म स्थान।

९. कोंकण पट्टन—यहां श्रीपाल ने पहुंचकर आठ राजकुमारियों की समस्या पूर्ति करके उनके साथ विवाह किया।

१०. पंढीय देश—कोंकण पट्टन से श्रीपाल पंढीय देश में पहुंचा।

११. मेवाड़ देश—पंढीय देश से मेवाड़ देश में पहुंचा।

१२. तिलिंग देश—श्रीपाल की यात्रा का अन्तिम देश।

१३. सोरठ देश (सौराष्ट्र)—तिलिंग देश से श्रीपाल वापिस कुंकुम द्वीप के दलपट नगर में पहुंचा तथा वहां कुछ समय विश्राम के पश्चात् रैन मंजूषा, गुणमाला आदि रानियों के साथ उज्जैन के लिये प्रस्थान किया। तथा सौराष्ट्र में पहुंचा।

१४. सौराष्ट्र से श्रीपाल वहा के राजाओं से कर वसूल करता हुआ मरहट (महाराष्ट्र) देश में पहुंचा।

१५. उज्जयिनी—महाराष्ट्र से श्रीपाल उज्जयिनी नगरी मे पहुंचा जहां मैनासुन्दरी उसकी १२ वर्ष से प्रतीक्षा कर रही थी।

१६. चम्पापुरी—उज्जयिनी में कुछ समय अपने श्वसुर के यहां ठहर कर अन्त मे वह चम्पापुरी पहुंचा। यहां उसका अपने चाचा वीरदमन से युद्ध हुआ और अन्त में विजय प्राप्त करके अपना राज्य प्राप्त किया।

काव्य की विशेषता

श्रीपाल चरित्र अत्यधिक रोचक काव्य है। कवि ने घटनाओं के वर्णन के साथ और भी ऐसे वर्णन प्रस्तुत किए है जिनके कारण काव्य और भी सुन्दर बन गया है। श्रीपाल का पूरा जीवन ही कर्म प्रधान है वह भाग्य के सहारे आगे बढ़ता है इसलिए निम्न मान्यता में वह अपना पूर्ण विश्वास रखता है :—

> विधना जो कछु लिख्यौ लिलार, शुभ अरु अशुभ अंक शुभ सार।
> जैसो निमित्त जास कै होइ, ताहि मिटाइ सकै नहिं कोई ॥३०३॥

इससे आगे कवि और भी अपने भाव निम्न शब्दों मे प्रस्तुत करता है :—

> पूरब ते पछिम रवि उवै, नर फुनि मेरु चूलिका छुवै।
> सायर हू पै धूरि उडाइ, भावी तऊ न मेटो जाइ ॥३०५॥

भवितव्यता मे इस प्रकार अटल विश्वास के साथ श्रीपाल आगे बढ़ता है। मैनासुन्दरी का भवितव्यता मे सबसे अधिक विश्वास है अपने पिता के बार बार आग्रह करने पर भी वह अपने विचारों में दृढ रहती है और कुष्ट रोगी के साथ विवाह के अपने पिता के निर्णय को सहर्ष स्वीकार करती है। विवाह मडप मे बैठने के पश्चात् जब उसका सारा परिवार रुदन करने लगता है, मौन हो जाता है तब वह साहस पूर्वक कह उठती है कि जिस प्रकार उसकी बड़ी बहिन के विवाह में मंगलाचार गाये गये थे उसी प्रकार उसके विवाह में भी गाये जाने चाहिये :—

> तब सुन्दरी उठि ठाढी भई, निज परियन माता पै गई।
> सुरसुन्दरी को गायो जिसो, मोकौ क्यों नहिं गावौ तिसो ॥१२०।६१

पुत्री के विवाह में जो कुछ पिता द्वारा कन्या को दिया जाता है उसे हम दहेज संज्ञा देते हैं। मैनासुन्दरी के विवाह मे भी श्रीपाल को ढेर सारा दहेज मिलता है

लेकिन आज के युग की तरह उस युग में मांग ठहराव अथवा और जबरदस्ती कुछ भी नहीं होता था जो कुछ भी दिया जाता उसे सहर्ष स्वीकार करने की परम्परा थी। और इसी परम्परा से समाज जीवित भी रह सका। श्रीपाल को भी दहेज में अपार चल एवं अचल सम्पत्ति मिलती है कवि ने उसका अच्छा वर्णन किया है।

> धन कनक दीन्हे भंडार, दीने मैगल तुरीय हैं सार।
> पाटंबर दीए बहु और, दिने सबै निर्मोलिक हीर ॥१३४॥
>
> सहस दास सुन्दर गुन गेह, दीए सिरीपाल को तेह।
> सेवग भले भले जो भए, बहुत और सेवा को दए ॥१३६॥

पत्नी के लिए पति चाहे कैसा ही क्यों न हो वही उसका देवता कहलाता है। श्रीपाल ने विवाह के पश्चात् मैनासुन्दरी से दूर रहने के लिए कहा क्योंकि वह उस समय कुष्ट रोग से पीड़ित था। कहां रूप लावण्य की खान मैनासुन्दरी और कहा कुष्ट रोग से पीड़ित श्रीपाल। लेकिन मैनासुन्दरी ने श्रीपाल को जो उत्तर दिया वह बहुत मार्मिक एवं पढ़ने योग्य है :—

> विधिना मोहि यह लिखि दियौ, सोहि तोको निरखो भयौ।
> तुम मेरे प्रीतम भरतार, तुम मेरे जानति आधार ॥१५३॥
>
> तुम अति रूपवंत गुनवंत, तुम ही सुख सागर बलिवंत।
> जोवन सुखी जो लोए चार, तो लौं देखें तुम्हें निहार ॥१५४॥

श्रीपाल जब विदेश यात्रा के लिए रवाना हुआ। उसके पूर्व उसकी माता ने सुखद यात्रा के लिए कुछ बीज मंत्र दिये। ऐसी शिक्षा श्रीपाल के लिए ही नहीं सभी के लिए हितकारी सिद्ध हो सकती है कवि ने इन सबका बड़ा अच्छा वर्णन किया है—

> धन दीनो मति लीजहु चित्त, परदारा मति लावहि चित्तु।
> तौं ते बड़ी नारि जो होय, मात बराबर जानियें सोय ॥७७०॥
>
> होय त्रिया जो ताहि समान, ताहि जानि जो बहिन समान।
> जो कामिनि तौते लघु आहि, पुत्री सम जो जानिजो ताहि ॥७७१॥
>
> दुखियाके मन को परिखी जानु, दु जो दीन मन दीजो दानु।
> बहुत बात का कहुं सुजान, पालियो व्रत संयम परवान ॥७७२॥

श्रीपाल पुण्यशाली था। इसलिये जब विदेश प्रस्थान के पश्चात् वह भुरपट्टन नगर में पहुंचा तो उसे सहज मे ही तीन विद्यायें सिद्ध हो गयी जिससे उसको विदेश यात्रा में बहुत सहायता मिली। इन विद्याओं के नाम थे शत्रु निवारिणी, जल तारिणी। प्राचीन काल मे मंत्र विद्याओं पर जन सामान्य को पूर्ण आस्था थी और वह उनके चमत्कारो से पूर्ण प्रभावित थी।

धवल सेठ का जब समुद्र में जहाज नहीं चला तो उसे मनुष्य की बलि देने के लिए कहा गया इससे पता चलता है कि उस समय उपसर्ग निवारण के लिये मनुष्य तक की बलि देने का प्रचलन था। बलि के लिए श्रीपाल जैसे युवक को पकड़ लिया गया।

तातैं मन मैं उपज्यो सदेहु, मंत्री मन विचारयो एहु।
एक पुरुष बलि दीजै आय तब बह चलै परोहन जाय ॥७७३॥

प्राचीन काल मे समुद्री लुटेरे यात्रियों को लूट लिया करते थे। वे जहाज तक डुबो दिया करते थे। धवल सेठ के जहाज के ऊपर भी लुटेरोने हमला कर दिया था जिसके कारण पूरा व्यापारिक संघ ही संकट मे पड़ गया था। यदि श्रीपाल नहीं होता तो पता नहीं धवल सेठ की क्या हालत होती।

श्रीपाल कोटिभट्ट था। पुण्यशाली था। इसलिये उसके हाथ लगते ही वज्र के किवाड़ खुल गये। जिनके खुलने का अर्थ था वहां के राजा की कुमारी रैनमंजूसा के साथ विवाह। श्रीपाल का भाग्य चमक उठा और विदेश मे उसे सफलता पर सफलता मिलने लगी। इसके पूर्व वह जहाज को अपने बाहुबल से चलाकर लुटेरों को पकड़ने में सफलता प्राप्त कर चुका था। यह तीसरी सफलता उसके उज्वल भविष्य के लिए वरदान सिद्ध हुई। श्रीपाल ने रैनमंजूसा जैसी सुन्दर राजकुमारी ही नहीं किन्तु विवाह मे अपार सम्पत्ति भी प्राप्त की इसका एक वर्णन पढ़ने योग्य है :—

रैनमंजुसा गुणह विसाल, श्रीपाल व्याही सुकुमाल ॥
सोबो दीयो तूठि कै राय, और छत्र हय गय अधिकाय ॥८६२॥
दीनौ मणि रत्ननि भण्डार, दासी दास ए सुभसार ॥
और बहुत को कहै बढाय, दीनी मोलम महल कराय ॥८६३॥

श्रीपाल के जीवन मे फिर संकट आ जाता है और वह समुद्र में गिरा दिया जाता है। उस समय रैनमंजूसा के दुख का कोई थाह नहीं रहता। वह भी

अपने पूर्व कृत कर्मों को रोती है और निम्न प्रकार पश्चाताप करती है :—

> कै मैं पर पुरुषहु मन धर्‌यो, कै मैं सामसु जीयसे डर्‌यो।
> कै मैं काहूं को वित्तु हरयो, कै मैं भविजन पावन कर्‌यो ॥११८१॥
>
> कै मैं निंद्यो जिनवर धर्मु, कै मैं असुभ कमायो कर्मु ।
> कै मैं जीव दया परहरी, कै हूं कहूं अग्नि मैं जरी ॥१२८२॥
>
> कै मैं मिथ्या गुरु सेइयो, कै मैं पात्रही दान न दियो।
> कै मैं कहू उधार्‌यो मंतु, कै मैं कियो वरतु को भंगु ॥१२८३॥
>
> कै गुरु कह्यो न लीनो मानि, कै मैं झूठो बोल्यो आनि।
> कै मैं परपुरुष सेद्‌यो पाय, कै हूं बूडी नदी मैं जाय ॥१२८४॥

श्रीपाल का व्यक्तित्व पूरा क्षमाशील था। शत्रु को जीतने पर भी वह उसे क्षमा कर दिया करता था। उसने सर्व प्रथम समुद्री डाकुओं को धवल सेठ के जहाज पर हमला करते समय पकड़ कर लाने पर भी उन्हें क्षमा कर दिया। तथा स्वयं धवलसेठ को उसे समुद्र मे गिरा देना एव भांडो द्वारा पुत्र बतलाने के षडयंत्र का पता लगने पर भी धवल सेठ को क्षमादान दे दिया। श्रीपाल ने अपने जीवन में कभी ऐसा कोई कार्य नही किया जिससे उसके जीवन मे कलक लगता हो। इस प्रकार श्रीपाल चरित्र शिक्षाप्रद काव्य है जिसमे एक ओर कर्मवाद (भाग्यवाद) की प्रधानता है तो दूसरी ओर पुरुषार्थ को भी गौण नहीं किया गया है। स्वयं श्रीपाल राजा होने पर भी वैभव, धन संपत्ति अर्जन के लिए देशाटन करता है। वह अपने सिद्धान्तो पर चलता है और उनका कभी उल्लंघन नही करता।

श्रीपाल का अन्तिम जीवन साधु जीवन के रूप मे व्यतीत होता है। अपने अपार राज्य एवं वैभव, आठ हजार रानियों के भोगो को हेय समझ कर मुनि दीक्षा धारण करता है अर्थात् अन्तिम जीवन में त्याग को प्रधानता देता है। जो वर्तमान भौतिक जीवन व्यतीत करने वालो के लिए अच्छा उदाहरण है। मानव को अपनी वृद्धावस्था मे त्यागमय जीवन अपनाना चाहिये इसी मे उनका कल्याण और आगामी जीवन के लिए शुभ लक्षण है।

विद्याध्ययन

श्रीपाल को आठ वर्ष का होते ही विद्याध्ययन के लिए मुनि के पास भेजा गया जहां उसने णमोकारमंत्र, अक्षर विद्या, अंक विद्या (गणित), न्यायशास्त्र, सामुद्रिक शास्त्र, व्याकरण, ज्योतिष, वैदिक आदि विद्यायें सीखी। यही नहीं जल में तिरना, घुड़सवारी, हाथी की सवारी, रथ की सवारी एवं संगीत आदि की विद्याओं भी अध्ययन किया। इसी तरह मैनासुन्दरी एवं सुरसुन्दरी ने भी विद्यायें सीखी इतना अवश्य है कि मैनासुन्दरी ने जिन मन्दिर में आर्यिका के पास जाकर जैन धर्म

की शिक्षा प्राप्त की जिससे उसके मन में कर्मवाद की प्रधानता स्वीकार करने का प्रभाव पड़ा और सुरसुन्दरी ने 'शिवगुरु" से शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसके दूसरे ही संस्कार बने। इस प्रकार जैसा शिक्षक मिलता है बालक के उसी प्रकार के संस्कार पड़ जाते हैं। मैनासुन्दरी ने जिस प्रकार की शिक्षा प्राप्त की उसका एक वर्णन देखिए :—

जोतिष पढ्यो इसौ परवानि, आगम अरु अध्यातम जानि।
सीख्यो तिन संगीत पुरान, नाटिक वाछिक करै बखानि॥

तर्क छंद पुनी पढि लियो, अरु राजन तिन उत्तर दियो।
भाषा सोजु अठारह पढी क्रिया करि दिन ही नित बढी ॥२२७॥

इस प्रकार परिमल्ल कवि का श्रीपाल चरित्र उत्तम प्रबन्ध काव्य है जिसका जितना गहरा अध्ययन किया जावे, उतना ही श्रेष्ठ एवं सुखद है।



श्रीपालचरित्र (परिमल्ल कृत)

चौपई

मंगलाचरण

श्रीसिद्धचक्र विधि केवल रिद्धि । गुण अनंत फल आकर सिद्धि ॥
प्रणमौं परमसिद्धगुरु सोइ । भविक कंज ज्यों नवल होइ ॥ १ ॥

सिद्धपुरी सिद्धनि को थान । सिद्धपुरी आनंद निधान ॥
प्रगट जोति त्रिभुवन मैं आहि । अलख देव को लखै न ताहि ॥ २ ॥

अंजन रहित निरंजन जानि । हीन बुद्धि क्यों सकै बखानि ॥
जय जिनंद आदीसुर देव । सुर नर किंनर पद पंकज सेव ॥ ३ ॥

जय अजितेसुर मुकति निधान । मान रहित मिथ्यातम भान ॥
जय जिन संभव हरै विकार । सुचिरत अति आनंद अपार ॥ ४ ॥

जय अभिनंदन नंदन वीर । गुन गरिष्ट भव भंजन धीर ॥
जय सुमतीसुर परम उदास । सुमय प्रकाशन कुमय विनास ॥ ५ ॥

जय जय पद्मप्रभ पद जाहि । श्री संजुत कवलासन आहि ॥
जय सुपास उपहास निकंद । प्रनवत दूरि होइ भ्रम फंद ॥ ६ ॥

जय चंद्रप्रभ केवल नाम । होहु कृपाल सबै सुख धाम ॥
जय पुष्पदंत जीत्यौ जिहि मार । दुर्धर धर्यौ चारित्रह भार ॥ ७ ॥

जय जय सीतलनाथ मुनिंद । मधुर जास सेवैं सुर वृंद ॥
जय श्रीयांस रहित विकलेस । उचित मुकति अंबु परमेस ॥ ८ ॥

जय श्री वासपूज्य व्रत लीन । जैन धर्म उपदेस प्रवीन ॥
जय श्री विमलदेव मति चंद । विमल भयौ गुण विमल अमंद ॥ ९ ॥

जय अनंत जिनवर सुभ थान । मन वच तन जानियौ प्रमान ॥
जय श्री धर्मनाथ सुभगेह । कंचन वर्ण विराजित देह ॥ १० ॥

जय श्री सांति सदासिव खानि । दुख हरन पूरति सौभानि ॥
जय श्री कुंथ कुमंत विनास । केवल उदित ज्ञान परकास ॥ ११ ॥

जय श्री अरहनाथ जगनाहु । अति बलिष्ट जिह मोह मसाहु ।।
जय श्री मल्लि मल्यौ जिह मांन । पुन तीरथ महि जो परवान ।। १२ ।।

जय श्री मुनिसुव्रत मुनिराइ । [illegible] पाइ ।।
जय जय नमि रतनत्रय धार । मन के छांडे सकल विकार ।। १३ ।।

जय श्री नेमिनाथ गुणखांन । [illegible] राजमती थए निर्वाण ।।
जय श्रीपारस नाथ जिनद । फनि मनि मंडित त्रिभुवन [illegible] ।। १४ ।।

जय श्री बर्द्धमान जिनराइ । केहरि लंछित आसन छाइ ।।
चतुर्विंश जिन जे गुनमाल । प्रनवत दूरि होइ भ्रम जाल ।। १५।।

अरु जे मुकतिपंथ मुनिगए । निरभय अलख अगोचर थए ।।
कीनौं नमसकार परिमल्ल । जिमते दूरि होइ भव सल्ल ।। १६ ।।

जिनमुख अबुज तें उछरी । त्रिभुवन मांहि कथा विस्तरी ।।
द्वादसांग शासन भगवती । जास प्रसन्न होइ बहुमती ।। १७ ।।

विमल बरण वेदनि में कही । निज निर्वेद प्रसंग मारही ।।
निरमुख ताहि कहैं बहु भंग । गुणतामें राखी सरबंग ।।१८।।

स्वामिनि जिन पर होहु दयाल । बढ़ै कथा ज्यौं होइ रसाल ।।
मूरिष वैं पंडित पद लहौं । सारद गुन गाढौ करि गहौं ।।१९।।

षट दंसन मुख मंडन सार । मिथ्या कुमति विनासन हार ।।२०।।

दोहा

अमुख हरन अम बंदनी, बंदौ केवल संग ।।
देहु बुद्धि ब्रह्माइनी, ज्यौं होइ उक्ति तरंग ।।२१।।

चौपई

तोहि सुमरि कर लेखनि गहौं । सिव सुख विधि बरनन कहौं ।।
ज्यौं सारद पसाउ मति लहौं । नवरस कथा प्रगट करि कहौं ।।२२।।

गुरु गौतम मोहि देहु पसाउ । बाढ़ै कथा होइ मन चाउ ।।
पुंजि परमेठि पंच गुरजांनि ' मन क्रम करि कहौं बखानि ।।२३।।

पंच परमेष्ठी स्तवन

जय जय नमौं देव अरिहंत । हैं प्रसिद्ध गुण जाहि अनंत ।।
जय जय नमौं सिद्ध वर देव । अलख रूप त्रिभुवन करि सेव ।।२४।।

जय जय आचारिज मुनिराइ । अमर खचर जव वंदहि पाइ ।।
जय जय नमौं परम उवझाइ । उदीयत गुन जा अवगाह ।।२५।।

जय जय साध लोक वर बीर : अमृत बुधि बखानैं करि ।।
तिनकौं नमस्कार कर जोरि । जातैं अघमन होइ बहोरि ।।२६।।

पढत सुनत मन उपजै भाउ । कोहि परमल होऐं धरि भाउ ।।
कैसैं श्रीपाल भौतरयौ । कैसैं कुष्ट व्याधि करि भरयौ ।।२७।।

श्रीपाल के जीवन को जानने की उत्सुकता

कैसैं बन उजालहु गयौ । कैसैं सिद्धचक्र व्रत लयौ ।
कैसैं सायर बूडयौ जाय । कैसैं कोढ गयौ सिकुताय ।।२८।।

कैसैं दस तिन प्रगटयौ घनौं । कैसैं प्रगटयौ वसु आपनौं ।।
कैसैं राजकीयौ परवांन । कैसैं वाको चल्यौ पुरान ।।२९।।

रचना काल

संवत सोलहसैं ऊपरैं । सांवन इक्यावन आगरैं ।।
मांस असाढ पहुंती आइ । वर्षारित की कही बढाइ ।।३०।।

पक्ष उजाली आठैं आनि । सुकरवार वार परवांनि ।।
कवि परमल्ल बुध करि चित्तु । आरंभ्यौ श्रीपाल चरित्तु ।।३१।।

बाबर पातिसाहि होइ गयौ । तासु साहि हुमाऊ भयौ ।।
ता सुत अकबर साहि सुजान ।। सो तप तपौ दूसरौ भान ।।३२।।

ताकैं राज न कहूं अनीति । नगुवा सकल करी बसि प्रीती ।।
जंबुदीप राज की आन । दूजी अबर न सरसहि मान ।।३३।।

ताकी राज सोभा कहू करी । कवि [illegible] [illegible] विस्तरी ।।
जंबूदीप प्रगट सुभथान । कोइन जाय जासु बखांन ।।३४।।

अा बहु फेरि सिंध जल बहै। कोऊ ताको पार न लहै ।।
तामै भरहखेत परवांन। सब ही खेतनि मैं परधांन ।।३५।।

मगध के राजा श्रेणिक का वर्णन

मगधह नाम राजै तिह देस। भूमंडल में सुबस असेस ।।
नयर राजिगर सुबस बसाइ। ताकी सोभा कही न जाइ ।।३६।।

अमरपुरी अमरनि की जिसी। है प्रसिद्ध महिमंडल तिसी ।।
सुन्दर ग्रह सतखने अवास। बाडी बाग कुवा बहु पास ।।३७।।

श्रेणिक राव तिहां अरिसल्ल। करै राज अगट्यौ भुव भल्ल ।।
एक छत्र निवसै इह रीति। बसुधा सकल करी बसि जीति ।।३८।।

कथा नाथ है ताकौ नाम।पुन्यवंत सबको सुषधांम ।।
ताकै सत्तुसील जानियें। धरमातमा बसै बानियें ।।३९।।

कोऊ ताकै दुषी न लोइ। दया दांन पालै सब कोइ ।।
ताकै बहुत महासुत जान। तामैं बारिषेन परधांन ।।४०।।

तसु रांणी चेलणा परधांन। सतसील अरु गुणह निधांन ।।
कछु सुन्दरता कहीयन परै। दरस होत पापनि कौं हरै ।।४१।।

मिथ्या दरसन रीति सुजांनि। समकित की परतीति बषांनि ।।
अरु अति जैनधर्म्म की लीन। दया दान पालन परवीन ।।४२।।

करै राज श्रेणिक नर पार। बहुत राइ सेवैं सर बारि ।।
एक दिवस सिंघासनि आइ बैठ्यौ सिर परि छत्र धराइ ।।४३।।

सेवग लाष सेव ता करैं। हय गय गाह चौर हूं ढरैं ।।
तिह अवसरि आयौ बनपार। हर्षवंत मनमांहि अपार ।।४४।।

श्रेणिक के दरबार में वनपाल का आगमन

छह रित के जु फूल भए। अति मनोग राजा कौं दए ।।
विपुलागिर परवत परवांन। आयौ समोसरण तिह थांन ।।४५।।

चतुर्विशतमों वीर जिनंद। दरस होत दुख दुरति निकंद ।।
कौतूहल कछु कह्यौ न जाइ। सुर लोक तिह ठां रह्यौ आइ ।।४६।।

इंद्र चन्द्र धरणिंद फुनेस । जिनको बहुत धरहि परवेस ॥
अस्तुति करत जोरि दो हाथ । ठाडे रहत सुनो हो नाथ ॥४७॥

श्रेणिक द्वारा महावीर वन्दना

अमर खमर गन भूप जिते । सेव करन आवत हैं तिते ॥
ऐसी सुनि आनंदो राउ । सीघ्र ताहि तिह कियो पसाउ ॥४८॥

कर कंकन आभरन अपार । दीनौं ताहि न लाई बार ॥
आसन ते उठि ठाढो भयो , मनको भरम सबै भजि गयो ॥४९॥

तिह ठा उपज्यो सुख असेसु । तीन प्रदक्षणा दई नरेसु ॥
वाञ्छित भयो मनमें सुख पाइ । चलि भयो सो अंबिन आइ ॥५०॥

आनंद भेरि बाइ सुख लही । परजन सहित राइ उमगही ॥
पाटबद्धंना गुणनि अगंथ । नारि चेलणा ताकै संग ॥५१॥

गुण बरनत सो पहुती तहां । समोसरण श्रीजिन को जहां ॥
द्वादस कोठा देखन लए । धनपति आइ आप निरमए ॥५२॥

तिनकी सोभा बरनि जो कहौं । कहत कथा कछु अंत न लहौं ॥
मानस्थंभ देखियो राइ । अति आनंदो चित न समाइ ॥५३॥

तब जिनवर थुति लाग्योकरण । जय जय जरा जनम को हरण ॥
जय जय उदति नभ जोति जिनेस । जय जय मुकित वधू परमेस ॥५४॥

जय जय छियालीस गुणमंड । जय अतिसै चौतीस प्रचंड ॥
तीन लोक की सोभा जाहि । कोऊ और न उपमा ताहि ॥५५॥

जय जय केवलज्ञान पयास । जय जय निर्नासिन भव त्रास ॥
जय जय मान रहित जिनदेव । नर सुर असुर करैं जा सेव ॥५६॥

जय जय अस्तुति राव करेइ । बारबार प्रदक्षणा देइ ॥
नयौं प्रताप दुःख भजि गयो । मन वच काय सुख अति भयो ॥५७॥

गौतम स्वामी गणहर जाहि । नमस्कार कीयो नृप ताहि ॥
जिह ठा अर्जिकानि को साथ । वंदन करैं तहां नर नाथ ॥५८॥

अरु क्षुल्लक तहां पुनि जाहि । समाधान तिन पूछे राइ ॥
ताके हर्ष कछू न कुभाव । नर कोठा तहां बैठ्यो राव ॥५९॥

श्रेणिक द्वारा सिद्धचक्रव्रत कथा जानने की इच्छा प्रकट करना

श्रेणिक पूछै वीर जिनेसु । सिद्धचक्र फल कहि परमेसु ।।
गुण अनंत राजे सरबंग । बाणी तब उच्छरी अभंग ।।६०।।

गोतम स्वामी गुणह निधान । लागौ परिछन केवलनान ।।
सुनि सुनि श्रेणिक राइ प्रवांनि । सिद्धचक्र व्रत कहौं बखांनि ।।६१।।

कथा का प्रारम्भ

जबूदीप मनोगि उदार । जोजन लछि तास विसतार ।।
छार सिंधु ता बहुधा बहै । अति अथाह को पारन लहै ।।६२।।

ता मै भरह खेत्र सो सार । सब ही क्षेत्रनि मैं अधिकार ।।
तामहि अंगदेश परवान । अवर देस ता सम नहि आन ।।६३।।

चम्पापुरी का वैभव

तहां नगर चंपापुरी बसै । देखत जाहि चित्त उलहसै ।।
सोहैं गृह सतषने अवास । द्वारै कंचन कलस निवास ।।६४।।

घर घर प्रति चौंतरा सुठान । अति उज्वल ते फटिक समान ।।
विचि विचि हीगुर वर्न्यौ सुरंग । ते चमकत देषियो सुचंग ।।६५।।

घर घर सवै लोग परधान । लक्षमीवंत सरव गुन जान ।।
घर घर सुर वेद धुनि करै । सहैसक्रत भाषा उच्चरैं ।।६६।।

सामोद्रक ब्याकरन पुरान । घर घर कीजे अरथ बषांन ।।
जोतिग अरु वैदक गुन लीन । सब नर कोक कला परबीन ।।६७।।

सब को दया धर्म्म व्योपरै । परससा नहि कोऊ करै ।।
अति रमनीक हाट बाजार । बसै तहाँ नर साहु सा बार ।।६८।।

विणजै मग निरमोलिक चुनी । तिनकी बस बोलै सब दुनी ।।
कहू होइ बालक पैखनौं । सो कछु ताहि कहत नहि बनौं ।।६९।।

कहू कहू नाचक नाचै ठाट । कहू कहू आवै बंदन भाट ।।
कुली छतीस बसैं तहाँ लोइ । कुल की रीति न छाँडै कोइ ।।७०।।

अपनैं अपनैं चित सब सुखी । तिहु पुर कोऊ नाही दुखी ।।
आस पास बातिका सुथान । बहुत बावरी कुवा निवान ।।७१।।

अरु तिहा बाग्वर बाने बरे । सघन दाख बारूनी द्रुम भरे ।।
बहुत भांति अमृत फल रूख । देखत जिनै न लागै भूख ।।७२।।

फरे नारियर अंब अपार । बहुत करि नारिंगि सुरंग ।।
अगिनत केला और खिजूर । रहे बिजौरे जहां तहां पूर ।।७३।।

कुसुम कदंब रहे बहु फूलि । रहे भ्रमर तिनके रसभूलि ।।
तिहकी सोभा कहियन जाइ । जोजन बास रही महकाइ ।।७४।।

वस्तु बन्ध

केवरो केतकी मरुओ मोगरौ अरु जाइ,
गुलाब कुंजो भवर करणौं रह्यो तहां महकाइ ।

मंजरी अरु जुही चपौ राइ बेलि सुबास,
पाडर निवारी राइ चपौ देखत बढै उल्हास

फूली चंबेली सरपदी मचकुंद सोभित मूल,
भवर एक सुगध जित कित बहुत फूले फूल ।।७५।।

चौपई

महा फूल फूले बहु भाइ । सोभा कछु कही नहि जाइ ।।
कोकिल बोलत मधुरी भाष । सारो सुवा अचरति लाष ।।७६।।

पांडुक घुमरी भ्रमर चकोर । कहू क बोले विधि विध मोर ।।
जो सब पंषी बरनन कहीं । कहत कछु इक अत न लहीं ।।७७।।

अरु तहां सुन्दर सरोवर भरे । मांनौं जलधि आप ही धरे ।
तिनमैं मधुप बहुत विलास । देत कुसुम सुवासे अलिमाल ।।७८।।

चकवी चकवा केलि करांहि । जल कुकरी तहां फहरांहि ।।
जिनकी सोभति मधुरी भास । रहे निकट बहु कुच मराल ।।७९।।

जलचर जीव रहे जहां जिते । कहे कथा जो बरनौं तिते ।।
है अनेकनि जलकी विधि करी । जानों इन्द्रपुरीहि उतरी ।।८०।।

अरिदमन राजा

करै राज अरिदमन नरेस । ताको बहुत आहि अलवेस ॥
वीरदमन लहुरो ता वीर । कोटी भट यहु साहस धीर ॥८१॥

हय गय पाइक अगन अपार । परिगह बहुत लहै को पार ॥
सूर असंषि रहै दरबार । जे आवै छत्तीस हुन्यार ॥८२॥

आण्या देस दिसांतर दूरि । सुजस रह्यो मही मै भरि पूरि ॥
पट्टण गढ मंगर भूपाल । तिनकी आवै बहुत रसाल ॥८३॥

कुन्दप्रभा रानी

एक छत्र सो आहि नरेंदु । मानौं सोहै दुजौ इन्दु ॥
कुंदप्रभा ताकै अरधग । पाटप्रधानि गुणनि आभंग ॥८४॥

सीलवंति सुंदरि अति सोइ । ता सम और त्रिया नहीं कोइ ॥
जैसे रामचन्द्र कै सीय । प्रगट पुरांन जनक की धीय ॥८५॥

जैसै ससि कै रोहणि नेह । जैसै कवला हरि के गेह ॥
समयं समये के यहु सुष जिसौ । विलसति पियके सगति तिसौ ॥८६॥

एकै दिन सौरनि अवास । सोइ गई करि भोग विलास ॥
तीनि जाम निसि वीती तवै । चौथो जाम आइयौ जबै ॥८७॥

भयौ परफूलत ताको हियौ । अति उत्तिम सुपनौं पेषियौ ।
धवल महागिर कंचन वर्न । कलपवृक्ष देषियौ रतन ॥८८॥

तवै तहां अंधकार मिटिगयौ । पहु फाटी जब पगडौ भयौ ॥
बहु बुधिवंत सयांनी घरी । नाह पासि आवै सुन्दरी ॥८९॥

सत्रदवन भयौ सुनि सुन्दरी नारि । सुपने की फल कहौं विचारी ॥
भूधर सुरतरु धवल जु दिठ । हुं सो फल मन की इष्ट ॥९०॥

बहुर्यो जंपै राइ सुजांन । महा कुसल अरु विनै प्रवान ॥
सकल परिग्रह कौ सुषकार । ह्वै है सुन्दर तोहि कुवार ॥९१॥

कंचन गिर सम ह्वै है धीर । सोभत नृमल होइ सरीर ॥
कल्पवृक्ष सम होइ उदार । दुषी जनहि कौ करै प्रतिपार ॥९२॥

धरमधुरंधर जीनहु जानि । बहुत कहा हौं कहौं बखानि ॥
यह सुनि दंपति बहु सुख भए । निबसत धर्म करत दिन गए ॥९३॥

स्वर्ग थकी सुर चय करि गिर्‌यौ । रानी गर्भ आय संचर्‌यौ ॥
मुह पांडर दैषीयौरवन । कुच बोहरा भयो उवर्न ॥९४॥

श्रीपाल का जन्म

थूल पयोद स्तन पय भरे । मंहता नैन देषिए हरे ।
दसमास भयो गर्भ परवान । अति उदित रवि किरण समान ॥९५॥

जनम्यौ नंदन कुलह पयास । दुर्जन जनकौं प्रगट्‌यौ त्रास ॥
सज्जन जन मन भयौ आनंद । लक्षणवंत बाढ़ो कुलचंद ॥९६॥

ताको मुष देषियौ नरेस । मनवंछित सुख भयो असेस ॥
कंसाल ताल बाजै अनिवार । बंभन बेद पढ़ै कुलकार ॥९७॥

भयौ उदार अति फूल्यौ गात । धन बिलसत को कहै कछु बात ॥
हीन दीन जे दुष निधान । जिननैं सुष व्यापै दिनमान ॥९८॥

हय हाटक मुक्ता भरिथार । बहु धन दीयौ मंगन द्वार ॥
तब तिन जनम सुफल कै चयौ । बालक तीस दिवस कौ भयौ ॥९९॥

रानी राजा भयो सुष अंग । बालक लयौ उठाय उछंग ॥
श्रीजिन भवन पहौतो जाइ । परस्यौ महा मुनीसर पाइ ॥१००॥

जाकौ निर्विकार ही हियौ । मन सुष सकल छांडि तिन दियौ ।
ताके चरननि परस्यो माथ । रतनत्रय सो महा गुनाथ ॥१०१॥

मुनिवर आय बोल्यिो सोइ । धर्मवृद्धि दीनी सुख जोइ ॥
नीकै करि मुनिवर सो दीठ । तू है बहु जन ही को ईठ ॥१०२॥

भाष्यौ मुनिवर सुषदातार । याहि नाम श्रीपाल कुमार ॥
अब यामैं गुन है अधिकार । बरनत मोहि होइगी बार ॥१०३॥

यह सुनि निमसकार तब कर्‌यौ । बहुरि धरि मन को दुख हर्‌यौ ॥
जननी जनक लाडिल्यौ जासु । वरस आठ कौ भयौ अवासु ॥१०४॥

श्रीपाल की शिक्षा

मुनिवर पास पठन सो गयो। ऊंकार प्रथम ही लयो ।।
गण अक्षर मत्तह भयो लीन । तर्क वितर्क भयो कोक प्रवीन ।।१०५।

साम्रोद्रिक सीख्यो सुख सार । पढ्यौ ग्रंथ व्याकरण कुमार ।।
सबही विधि सो कला विनान सीख्यौ बहु सो अर्थ पुरांन ।।१०६।।

कला बहैंतरि प्रगट विनांन । नाद करै गंधर्व समांन ।।
हय गय वाहन रथ विधि आहि । गुन छतीस प्रसिद्ध ताहि ।।१०७।।

जस तिरिवौ सीख्यौ लिहु सार । तर्क वितर्क पढ्यौ मनिधार ।।
जोतिग वैदक गुन सीषियौ । आगम अध्यातम पढि लियौ ।।१०७।।

हैं प्रसिद्ध विद्या पद जितौ । पढ्यौ कुंवर मुनिवर पैं तितौ ।।
जोवन करि आरुढ्यौ जबैं । राजा चित्त उलह्स्यौ तबैं ।।१०८।।

महाबली श्रीपाल सुजांन । रूपवंत अरु गुंनह निधांन ।।
अति प्रचंड कोटीभटु सोइ । जाकै दरस अघ क्षय होइ ।।१०९।।

कबहूं भूलि न भाषै कूर । साहस धीर धरम कौ मूर ।।
ऐसी जुगति काल कछु भयो । राजतिलक श्रीपालह दयौ ।।११०।।

भयौ निसल्ल को कहूं वढाइ । आप काल बसि हूयौ राइ ।।
है हूंकार कियौ संसार । वीरदमन दुख कियौ अपार ।।१११।।

श्रीपाल राजा दुष लह्यौ । हूवै विचारि सोच करि कह्यौ ।।
तीन लोक देष्यौ अवगाहि, इहै मरण सबही कौं आहि ।।११२।।

यह विचारि अपनैं जिय धर्यौ । मन को सोक दूरि सब कर्यौ ।।
कुंदप्रभा रानी समझाइ । देषि विचारि रीति यह माइ ।।११३।।

जौ अब माता कीजैं सोग । तौ सब हूंसैं देस मैं लोग ।।
छत्री कुल जाको अवतार । श्रीपाल यौं कहै कुमार ।।११४।।

ताहि सोक पूछिएन आनि । बहोत कहा हौं कहौं बखानि ।।
मोते कछु होइगी जितौ । जांकी सेवा करिहौं तितौ ।।११५।।

बात सुनत सुष ताकौं भयो । हूवै सोक माता कौ गयो ।।
करै राज श्रीपाल प्रचंड । लीयौ सब राइनि पैदंड ।।११६।।

ताकी सेव सातसै वीर । ते बहु सदैं भूप की भीर ॥
ताकी कीरति भई असेस । कीनैं वसि और सब देस ॥११७॥

धर्मरूप राजा ब्यौहरै । परधन परतीय लोभ न करै ॥
दुर्जन सकल जीति वसि कीए । महा दंड तिन पै ते लिए ॥११८॥

श्रीपाल के कुष्ट रोग होना

कोउ अमरै न ता अंगवै । एक समै प्रगट्यौ असवर्ग ॥
ऐसी भांति काल कछु जाइ । पूरब पाप उदै भयौ आइ ॥११९॥

कुष्ट व्याधि राजा कौं भई, हुरैं हुरैं सो बरधत गई ॥
अग सातसै हैं अति नेह तिनहू कोढ बियापी देह ॥१२०॥

बहु रागिन पीडियो सरीर । होइ दुर्गंधा बहुत समीर ॥
कोढ उमारे देखयो राइ । नासि पंगुरी गरि गए पाइ ॥१२१॥

रक्त पीत जाकें तन दीस । झरै और राइ के सीस ॥
झरै प्रसेदु अग सो गहै । देह दाघ अंगारी रहै ॥१२२॥

स्यांम दाग जाकें असमांन । सो राखै हि बजावै कांन ॥

मरदन करै जाहि नही कांन । घजुवा करवावै असनांन ॥१२३॥

वरए कवारी धरै मंजेज । नृपति की सु बिछावै सेज ॥
कंठ गूंम सोहैं कुचसार । गूरज वर्ण गूर असवार ॥१२४॥

जाको कहूं कहुं गल्यौ सरीर । सो नर बैठो जाहि हजीर ॥
और दुरगंधि मुख आवै जांन । सो निरंद को है परधांन ॥१२५॥

काढ पाप जाकौ तन माहि सोदक ते सब देखे चाहि ॥
बहै नाक पकसनी मनि करै । ते राजा कै पानी भरै ॥१२६॥

जिनके गात भए कसि अवार । ते पायक देखिए अपार ॥
ते सिरतेव पाइते चलै । ते निसान बजावै भलै ॥१२७॥

जाकें रकत नेत्र तिन माहि । सो नर नीके जाहि बजाई ॥
जाकैं हृदय सिरा बहु झरै । बहुतक जन ते सुरहि करै ॥१२८॥

महा बाकृ बाबरे कुलकारै । अरदीनिका बजावै झारै ॥
जाके सांपी लावै दौरि । बीन बजावै तार मरोरि ॥१२९॥

घरें पांघरैं गावै गीत । पातरि नाचै पुर विपरीति ॥
अैसो तिहां भयानो कोढ । सवनि कोढ जानै सब कोढ ॥१३०॥

जो सब कोढ वरनि कैं कहौं । कहत कहत कछु अंत न लहौं ॥
इह सामिग्री राज कराइ । सगरी सभा जुहारैं आय ॥१३१॥

कबहूँ न निकरैं सैल बजार । मंदर महल कैं सभा मझार ॥
सेवग साह जुहारैं जिते । राजै देषि बिसूरैं तितै ॥१३२॥

जनमन कहै सबै सति भाउ । एह श्रीपाल महाबल राव ॥
अरु यह दया धर्म परवान । राजनीति पालै गुन जान ॥१३३॥

ताकौं कहा कर्म यह भयौ । कुष्ट रोग जाकैं तन तयौ ॥
कछू कर्म गति कहियन जाइ, महानींच नीचनि की राइ ॥१३४॥

उत्तिम कौ मध्यम गति करैं । मध्यम कौं उत्तिम पद धरैं ॥
नृपस्यौं ते नहि कछू कहाइ । घर घर आपस मैं पिछताइ ॥१३५॥

महा कोढ राजा कै अग । कोढी अंग सात सै संग ॥
बहु दुर्गंधता बढी अपार । फैलिगई सब नगर मझार ॥१३६॥

जबै बयारि बहै नहि घटै । तबै नाक सबही की फटै ॥
बहुत बात को कहै बढाइ । कोऊ नगर न भोजन खाइ ॥१३७॥

कोऊ बिनती सकै न मांडि, बहुत लोग गए घर छांडि ॥
घर घर एक बुलावो फिरयौ । रयति लोग नकर कौ भिरयौ ॥१३८॥

जो आवै सो कहौ विचारि । महा दुष क्यों सकैं सहारि ॥
कोऊ कहै भजो हरिद्वार । जैसैं राजा लहै न सार ॥१३९॥

कोऊ कहै अैसी न करेहु । आइस मांगि राइ पै लेहु ॥
बनिये भाजै छांडि धनधाम । मरिहैं दुष देषि बेनाम ॥१४०॥

आपस मैं सब मतौ कराहि आवो वीरदमन पै जांहि ॥
जों आइस देहै हम जोग । सोई मानि लेहु सब लोग ॥१४१॥

मोती रतन थार भरि लए । सब मिलि वीरदमन पै गए ॥
जाइ भेट ता आगै धरी । नाइ सीस सब बिनती करी ॥१४२॥

महादुष सबकौ संदेह । स्वामी हमकौं आइस देहु ॥
तेरैं देश अंत कहूं रहैं । राजा सौं क्यौं निकसन कहैं ॥१४३॥

जाके राज सुख हम लयौ । दुख दरिद्र सब ही को गयौ ॥
जाके राज धर्म को काज । जाके जग्यु है मोल विकाज ॥१४५॥

जाके राज पाप की हानि । जाके हिरदै दया की खानि ॥
जाके राज सूल सब भगे । हम सब परियन धरे अग ॥१४६॥

जाके राज सुबस हू बसे । कबहूं दुर्जन दुखन किसे ॥
जाके राज सबै जन सुखी । जीव जन्त कोऊ नहि दुखी ॥१४७॥

कुष्ट रोग अब ताको भयौ । नासा पाइ अंगु गरि गयौ ॥
अरु जे अंग सातसै बीर । तिनहू को गरि गयौ सरीर ॥१४८॥

तिनकी महा दुर्गंधा होइ । सब ही पुर में फैली सोइ ॥
दिन द्वै च्यारि अन बिनि भए । कछूक मूए कछु भजि गए ॥१४९॥

जो जैसी कहु सुनिए कांन । तो भोजन नहि जाई खांन ॥
फैली बास नाक रुधि रही । अब ज्यौं हम तुमस्यौं नहि कही ॥१५०॥

महा कष्ट भूले सब चाउ । सब ही नगर भयौ कहु राउ ॥
क्यौ हूं कोऊ धीर न धरै । स्वामी हम पै रह्यौ नहि परै ॥१५१॥

प्रजा का महत्व

सुनि मनमांहि चितवै राउ । अब यहु कीजै कहा उपाउ ॥
जो घर में श्रीपाल रहाइ । तो सोते सब रइयति जाइ ॥१५२॥

रय्यति बिनि सोभा नहि रहै । रइयति बिनि को राजा कहै ॥
बिन पंखनि है पंधी जिसो । हूं रइयति बिनि दीसै तिसो ॥१५३॥

बिन पांननि तरवर जो आहि । रइयति बिन जो राजा आहि ॥
बिन पानी है जिसी तलाव । रइयति बिन है तैसो राव ॥१५४॥

जैसो है उडगन बिनु चंद । रइयति बिन है तिसो नरिंदु ।
बिन रुखनि जैसो बनु जानि । बिन रइयति भूपति त्यौं मांनि ॥१५५॥

जैसौं सघन घटा बिनु मेह । रइयति बिनि त्यौं राजा एह ॥
बिन हथ्यार ज्यौं सुभट अनूप । तैसो रइयति बिनि है भूप ॥१५६॥

बार बार बिचारै राउ । अब तैसो कीजियै उपाउ ॥
जैसे सब रइयति जो रहै । श्रीपाल अब मारगु गहै ॥१५७॥

रइयति की हम ऊपरि छांह । रइयति बसी हमारी बांह ॥
ऐसैं कहै सयाने लोइ । राजा प्रजा बराबरि होइ ॥१५८॥

वीरदमन यह चिंतै घनौ । राखै रहपति राज अपनौ ॥
वीरदमन मंत्री मनि आइ । मंत्री लीने पासि बुलाइ ॥१५७॥

तुम कही श्रीपाल सौं जाइ । जैसी वाके हिए समाइ ॥
रहपति के मनकौ दुख जिसौ । कहियौ भांति भांति करि तिसौ ॥१५८॥

तब मंत्री नृपकौं सिर नाइ । विनयौ श्रीपाल सौं जाइ ।
कछू बात जो मनमैं रही । मंत्री जाइ राजसौं कही ॥१५९॥

सुनत बात जानयौ राइ । मनमैं कछू न कियौ कुभाइ ॥
समो देखि मंत्री उठि गयौ । देस घटी को कारण भयौ ॥१६०॥
तीज पांन कौं बीरा लयौ । आपुन श्रीपाल कौ दयौ ।

वन उद्यानमि साहस धीर । जाइ असुभ मुंजौ बरवीर ॥१६१॥
जौलौं कुष्ट व्याधि तुम अंग । जौलौं अंग सातसै संग ॥
इह असुभ मुंजौ वर वीर बनमैं जाइ मठ देवल तीर ॥१६२॥
जौलौं उदै कुवर तो पाप । तौलौं नहि कीजिए संताप ॥

जौलौं सुभ न प्रसिद्ध आइ । तौलौं घर मति आवै राइ ॥१६३॥
होइ पुंन्य प्रगटै तुम तनौं । आइ राज कीज्यौ आपनौं ॥
जाकौ राज भार तुम देहु । सोई करै धरै जिय नेहु ॥१६४॥

यह सुनि श्रीपाल उचर्यौ । कछु कुभावन जिय मैं धर्‌यौ ॥
कर्म तनौं जान्यौं सुभ भाव । मनमैं विचार कियौ सब राइ ॥
सुनहु तात भाष्यौ व्यौहार । मेरौ ऊहो इहै विचार ॥१६५॥

मेरी बढी दुर्गंधा घनी । होत दुखी नगरी मो तनी ॥
बिनती करि न सकै को आइ । मेरै चित बीती इह आइ ॥१६६॥

मेरौ दुःख वियाप्यौ हियौ । मैं हूं बन ही कौ मनु कीयौ ॥
भली भई तुम निकसन कह्यौ । या कौ सुख बहुत मैं लह्यौ ॥१६७॥

तुम सब लेहु राज कौ भार । परजा कीज्यौ सकल प्रतिपार ॥
न्याव नीति करि कीज्यौं सुखी । सुपिनै कोई होइ न दुखी ॥१६८॥

सोरठा

जो उबरैंगे प्रांन, कुष्ट रोग जौ नाथि है ।
तौहूं इंद्र समान, राज करौंगो आइकैं ॥१६९॥

दोहा जौं लग पूरब पाप कौ, उदै फिरैगौ साथ ॥
तौं लग अपनौं भुंजि ही, राज तुम्हारै हाथ ॥१७०॥

चौपई

सबै राज मैं दीनौ तोहि । मन मैं ताहि राखिज्यौ मोहि ।।
कुंदप्रभा कौ देकर भार । निकस्यौ तब श्रीपाल कुंवार ।।१७१।।

ताकैं चली साल तैं संग । कोढी सबै लागियैं अंग ।।
बुरे भेस दीसैं सबै जना । पीछै कंवर कौ पीछना ।।१७२।।

श्रीपाल का नगर त्याग

राज विभूति जिसी बरनई । सामग्री सब गोहन भई ।।
जब वे गांव बाहिरे भए । लोचन वीरदमन भरि लए ।।१७३।।

रोवै सब नग्री को लोग । विधनां तैं कित कियौ वियोग ।।
घर घर सोग सबै जन धरै । अति बिलखाइर करुना करै ।।

घर घर करैं अमंगलचार । भूल्यौ सबनि सुख अधिकार ।।
घर घर सूंनसान होइ गई । पुर मैं राति द्यौस तैं भई ।।१७४।।

वे चलि दूरि पहुंते जबै । कुंदप्रभा सुधि पाई तबै ।।
तिन मनमैं दुख कर्‌यौ असेस । आजि मूयौ अरिदमन नरेस ।।१७५।।

गेह भरि नैननि मूंकी धाह । अब हूं निश्चै भई अनाह ।।
विधनां इह बूझिए न तोहि । पूत बिछोह दियौ कत मोहि ।।१७६।।

वीरदमन राषि समझाइ । कछू कर्मगति कही न जाइ ।।
सुभ अरु असुभ जु लिख्यौ लिलार । को है ताहि मिटावन हार ।।१७७।।

अब यह होनहार सो भई । सब सामग्री देषत गई ।।
कर्मयोग क्यो मेट्यौ जाइ । तासौं कही बात समझाइ ।।१७८।।

जो लौ असुभ जोग तनु बहै । तौ लौ श्रीपाल बन रहै ।।
बहुर्‌यौ सुष देखैगौ घनौ । आइ राज करि है आपनौ ।।१७९।।

मातर भूलि करौ मति सोग । नाना देषसि रह्यौ वियोग ।।
मांनस कौन बानमैं थानि । सुपिनौ सो हू मनमैं आनि ।।१८०।।

कुंद प्रभावन गाढौ हियौ । धरम ध्यान परिचित-राषियौ ।।
लेइ थाप जिनवर संभर्‌यौ । मुनिवर दांन मान आचर्‌यौ ।।१८१।।

श्रीपाल पहुतौ उद्यान । रहे सबै मठ देवल थान ।।
राज विभूति सबै ता संग । कोलाहल सबनि कौ, संग ।।१८२।।

इति श्रीपालचरित्रे महापुराणे भव्यसंग मंगलकरणं ॥
बुधजन मन रंजन पातिग भंजन सिद्धचक्र विध दुषहरणं ॥१८३॥

त्रिभुवन सुषकारण, भवजल तारण, चोपई बंध परिमल्लकृतं ॥
सातसै भंग ताकै संग, श्रीपाल उद्यान भ्रमै ॥१८४॥

द्वितीय सर्ग

चौपई

श्रीपाल उद्यान मैं रहै । कुष्ट व्याधि व्यापैं दुख सहै ॥
इतनी कथा रही इह ठौर । अतरकथा सुनौ अब और ॥१८५॥

नीकै करि हौ करौ बषान । पंडित भव्य सुनौ दै कान ॥
देस मालवो मो सुषधांम । मध्य लोक मै प्रगट्यौ नाम ॥१८६॥

उज्जयिनी वर्णन

दुषनि जिह ठां बासुर रैनि । सुबस बसै तहा नगर उजैनि ॥
नौ कोसकी बसै चकराइ । बारह कोसो वसै लम्बाई ॥१८७॥

श्रीनिवास महाजन जहा । चौथो काल प्रवर्त्तै तहा ॥
कनय रयण मणि मंडप जरी । अतिरवनीक मनोहर खरी ॥१८८॥

पुहुपाल राजा

राजकरै पुहपाल नरेस । ताकै परिगह बहुत असेस ॥
जोधा बहुत सेवता रहै । रण संग्राम जुवै निरवहै ॥१८९॥

एक छत्र सो राज कराइ । ताकी कीरति कहीय न जाइ ॥
ज्यौ माता सुत उपरि भाउ । त्यौ परिजा प्रतिपालै राउ ॥१९०॥

ताकै कामिनि बहुतक गेह । अति गुनवंत रूपकी रेह ॥
जौ सब नांम नरनि कै कहौ । कहत कथा कछु अंत न लहौ ॥१९१॥

पट्टरानी सुन्दरी

पाट परधांन नांम सुन्दरी । मनौ आइ रम्भा औतरी ॥
अति सरूप देवंगनां कही । कांमदेव ज्यो रतिपति सही ॥१९२॥

संकर के ज्यौं पारवती रती । अति सकल सीता सम सती ॥
ताके धरम सुता द्वै रही । रूपवंत द्वै पंडित सही ॥१९३॥

दो कन्याओं का जन्म —

दोऊ अति गुनरूप सौंदरी । अति लावनि सिरावै भरी ॥
प्रथम कुंवरि सुरसुन्दरि जाहि । बहुत रूप सोभित है ताहि ॥१९४॥

परि सिवधर्म बसै ता चित । कुगुर कुदेव सुध्यावै नित ॥
कछु विवेक ताहि नही होइ । सबै संसारह सुख सोइ ॥१९५॥

मैनासुन्दरी

लघु कन्या मैना सुन्दरी । रूपवंत अरु सब गुन भरी ॥
अंग अंग की सोभा जिसी । कहै कथा को बरनी तिसी ॥१९६॥

अरु अति जैनधर्म परवीन । सीलवंत रत्नत्रय लीन ॥
निर्मल जाको हिरदो जोइ । कपट वचन बोलै नहि सोइ ॥१९७॥

बहुत विवेक चित्त ता रहै । मिथ्या वचन भूलि नही कहै ॥
सब सखियन मैं सोभै खरी । ज्यों सरिता मांहे सुरसरी ॥१९८॥

मधुर वचन बोलै विहसाइ । सब कुटब राखै सुखपाइ ॥
आए धाए जिय अकौं भरे । रहसि बिलाइ लगावै गरै ॥१९९॥

और बहुत को कहै बखांन । तिहकौं उपज्यो बहुत सयानु ॥
आपन मंत्री विचारे राइ । अरु तिन लीनी प्रिया बुलाय ॥२००॥

जुगल रवानी दीठें एहु । देखत नैननि उपजै नेहु ॥
मेरे चित यह कही विचारि । इनै पढावैं गुनि वरनारि ॥२०१॥

सुनी राइ हन भावतो जहां । दोऊ कुंवरि पठायो तहां ॥
तिनै विहसि करि पूछै राउ । तुमौ कहौ भावतौ भाउ ॥२०२॥

जो गुर भावहि तुमहि सुजान । तापै सिखहु सबै गुरान ॥
सुरसुन्दरी कहै सुनि तात । सांची कहौं आपनी बात ॥२०३॥

सुरसुन्दरी का विद्याध्ययन

दिन दिन वृधि दोउ गुन बढी । अब हू सिव सिवपुर पै चढी ॥
राजा भली भली परलई । कुंवरि उठाइ उहां पहु नई ॥२०४॥

सिवगुर तब धा लियौ बुलाय । नाउ करण सु को कहै प्रवाह ।।
बोल्यौ निकट कहै तब राउ । विद्या सुरसुन्दरी पढाउ ।।२०५।।

जितनी होइ कला अरु ग्यान । सब सिषाइ ज्यौं अरथे पुरान ।।
भली भली पाडे उच्चरी । मो परि कृपा गुसाई करी ।।२०६।।

जो मोपे सुख हो है राइ । याहि पढाउ सबनिकु ताहि ।।
सुनी बात तब तुस्यौ राइ । कछुक ताको कियो पसाय ।।२०७।।

तब तिह नृपहि दइ असीस । जुग जुग जीवो कोटि बरीस ।।
महिमंडल मैं प्रगटौ आन । राज तेज बढौ दिनमान ।।२०८।।

सोरठा

जौ लौं ससि अरु भान, जल थिर मेरु महि उपरै ।।
तौ लगु इन्द्र समान, मगल होहि नरेस घर ।।२०९।।

चौपई

विप्र गयौ घरि कुंवरि लिवाई । लाग्यौ ताहिं पढावन जाइ ।।
मैंनासुन्दरि स्यौ नृप कहै । पुत्री कहा तोहि मनु रहै ।।२१०।।

मैंनासुन्दरी की शिक्षा

सुनो तात हो कही सुभाइ । चढिहौं जिन चैत्यालय जाइ ।।
दंपति सुख तब भयौ अनंग । पुत्री लई उछाह उमंग ।।२११।।

रानी राउ और जन भए । पुत्री लै देवालै गए ।।
पूजा अष्ट प्रकारी ठई । जैसी परम सूरति बरनई ।।२१२।।

जल गंधाक्षत पुष्प प्रसून । नैवेद दीपक अरु धूप ।।
नाना विध फल धरे बनाइ । कियौ अरच मन वच अरु काय ।।२१३।।

पुनि तिह लौ वांच्यौ मुनिंद । जय जय तब उचरै नरिंद ।।
बैस्यौ सुकमाल [illegible] । भवसमुद्र तिरन जहाज ।।२१४।।

ध्यावै चेयत्य गुण जु अखंड । तीन गुपति पालन [illegible] ।।
भव्य कुमुद परफुलण चंद । दरसत ताहि बढै आनन्द ।।२१५।।

मिथ्या तिमर विनासन भान । जिन निजुकै छांड्यो भव पांन ।।
सत्रु मित्र जाकै इकसारै । मंने के जिह सब तजे विकारै ।।२१६।।

बाईस परीसा सहत सुभाव । केहरि समान पंच गुण भाव ॥
तीन प्रदछिना दई समीप । नमसकार तब कियौ महीप ॥२१७॥

हरषवंत मनमांहि अपार । वंदे चरन कमल नरपार ॥
दंपति पुत्री मैनासुन्दरी । बैठी जहां गुरु मन करी ॥२१८॥

जंपे राउ हरष प्रति गात । स्वामी सुनौं कहौ इक बात ॥
लहु पुत्री मैनासुन्दरी । अपनै चित एह इच्छा करी ॥२१९॥

पुत्री कहै जोरि दुहुं हाथ । विद्यादान देहु जगनाथ ॥
नरपति कह्यौ सुनौ मुनि नाथ । कृपा करौ ता ऊपरि नाथ ॥२२०॥

अजिया एक सील की खानि । वस्त्रा धर्म जिह लीयौ जानि ॥
मन वच काय सुव्रता चित्त । जानैं एक सब प्रभु चित्त ॥२२१॥

रतनत्रय व्रत पालन आहि । मुनिवर पुत्रि समर्पी ताहि ॥
रानी राव हरष अति भए । नमस्कार करि घर तब गए ॥२२२॥

मैनासुन्दरि के मन चाउ । अजिया को ता ऊपरि भाउ ॥
प्रथम पढायो ओंकार । दुःख हरन त्रिभुवन में सार ॥२२३॥

पढिया बारह मत्त विसेस । जातैं उपजै बुधि असेस ॥
पढि लीनीं नीकैं करि ताहि । लघु दीरघजे अक्षर आहि ॥२२४॥

जांनी लोयह थिति विचित्त । पढिया चरित्त पुरान पवित्त ॥
गन अरु अगन मिलेई जांनि । काव्य अनेक सुकहै बखांनि ॥२२५॥

जोतिष पढ्यौ इसौ परवांनि । आगम अरु अध्यातम जानि ॥
सीख्यौ तिन संगीत पुरान । नाटिक साटिक करै बखानि ॥२२६॥

तर्क छंद पुत्री पढि लियो । बहु हरखत तिन आदर दियो ॥
भाषा सोखु अठारह पढी । विद्या करि दिन ही दिन बढी ॥२२७॥

कला विनान विचक्षन भई । पुनि मुनिवरहु पढावन लई ॥
चारि ध्यान अणुव्रत जु पंच । सोलह कारन भावना संच ॥२२८॥

रत्नत्रय विधि सुलह लिपांक । [illegible] ॥
जो कछु शास्त्र मैं कही । सो विद्या सब सुन्दरि लही ॥२२९॥

दोहा

मुनिवर मैं सब गुरु पढ्यौ, किन्नी कुंवरि [illegible] ॥
मन वच काय विशुद्ध ह्वै, भान्यो पाप निकन्द ॥२३०॥

मन में पुत्री कियो आनन्द । जान्यौ निहचै पाप निकन्द ।।
श्रीजिन पूजा करि मनु लाइ । मुनिवर के बंदे तिन पाइ ।।२३१।।

दोनों का अध्ययन समाप्त कर आना

निज जननी हू बैठी जहां । सुरसुन्दरि पहुंती तहां ।।
प्रथम पुत्री वह पढ़ै पुरान । सामुद्रिक व्याकरण सुजान २३२।।

कोक कला नाटक गुन जिते । पढ़ै कुंवरि सुरसुन्दरि तिते ।।
पढ़ि गुनि, महा बिचछन भई । तब पांडेस्यौं गोहनि लई ।।२३३।।

राजा पासि पहुंतो जाइ । पुत्री देषि राउ बिहसाइ ।।
तबहि विप्र बोल्यौ करि सेव । मेरी बात सुनो हौ देव ।।२३४।।

पुत्री के मन को तम गयो । विद्या दान याहि मैं दयो ।।
और कहा हूं कहूं बषानि । करो परीक्षा आपुन जांनि ।।२३५।।

तबै राउ अति हर्षित भयो । बहुत दान पांडे कौं दयो ।।
दै असीस सिवगुरु घरि गयो । पुत्री सभा देषि सुखभयो ।।२३६।।

जो जो बात पयासै कोइ । सो सो निरभासै कहि सोइ ।।
चपल चित्त जोवन श्रीलही । राजा पासि बात तिन कही ।।२३७।।

अरध सिंघासन जाइ बईठ्ठ । दह दिशि जोवै चंचल दीठ्ठ ।।
राजा कही समस्या तेन । लहियै कहा कुंवरि पुन एन ।।२३८।।

दोहा

पुन्यह लहिए एउ, विद्या जोबन रूप धन ।।
घरि परियन कैं नेह, मनबंछित सुष पाइये ।।२३९।।

चौपई

तब नृप रह्यो मुहां मुंह चाहि । नीकै करि मन परख्यौ ताहि ।।
मांगि पुत्री वर जो मन बसै । देषत ताहि चित्त उल्लसै ।।२४०।।

सुरसुन्दरी का विवाह

सुंनौ तात हौं भाषौ तिसी । मेरे मन मैं बसंत जिसी ।
कौसम्बीपुर को नृप जान । बहुत सैन है तुमै समान ।।२४१।।

ता नन्दन हरिवाहन वरी । जाकी रूप मोही सुन्दरी ॥
नीको वच सो भायौ तात । सांची कही आपनी बात ॥२४२॥

सुनि करि राव विचारै हियै । याही जोग बनै या तियै ॥
बोल्यौ विप्र राइ सौं मनौं । शुभ दिन जोग महूरत बनौं ॥२४३॥

ताकौ विधि सौं कियौ विवाह । सबही जन मन भयौ उछाह ॥
उनहू सुष मन भयो अनन्त । कौसम्बीपुर गए तुरन्त ॥२४४॥

मैनासुन्दरी का वापिस आना

मैंना सुंदरि पहुंती तहां । नंदीसुर की प्रतिमा जहां ॥
पूजा करी सुष मनु कियौ । भरि बेला गंधोदिक लियौ ॥२४५॥
कछु न चित्त विचारी और । गई तहा राजा जिह ठौर ॥
भाव भाव राजा उच्चरयौ । गंधोदिक लै आगै धरयौ ॥२४६॥
हाथ हि हाथ अठोत्तर भरे । आइ जिनेसुर कैं सिर ढरे ॥
इसौ गंधोदिक है अनूप । सुर नर नाग लियौ करि चूप ॥२४७॥
कहे राउ कहि पुनि विचारि । यह कहि आहिसु कहहि कुवारि ॥
मैंना सुंदरि उचरै बात । गंधोदिक जिनवर कौ तात ॥२४८॥
होइ दुर्गंध देह आदमैं । सुंदर दिव्य होइ जा लगैं ॥
नैन निरंधह नर औतार । नैक लगै देखै संसार ॥२४९॥
नैंक लगैं अरि कर्म निकंद । जाकी इच्छ करत हैं इंद ॥
जनम भयौ तीरथंकर जबै । साइर तैं सुर लाए तबै ॥२५०॥
हाथ हि हाथ अठोत्तर भरे । आइ जिनेसुर कैं सिर ढरे ॥
सुर अरु असुर इंदु हरसियौ । बारंबार अंग परसियौ ॥२५१॥
तात सुनहि गंधोदिक सोइ । करै बंदना परमगति होइ ॥
तब भूपति लै बंदना करी । परमलीन पुत्री है खरी ॥२५२॥
राजा हर्षित हूवो जाम । अर्ध सिंघासन बैठि ताम ॥
मां सिर चूंबि पुछि करि नेह । पुत्री कहो परीक्षा एह ॥२५३॥
कीजै पुंन्य चित्त लाइये । तातैं कहा अबधि पाइये ॥
सुनि सुनि तात पयासौं तोहि । जो नीकै करि पूछो मोहि ॥२५४॥

दोहा

जिन सासन निरगंध गुरु, बलहु निम्मोल देहु ॥
पुनि भाव सब सुष करन, पूजह [illegible] एहु ॥२५५॥

चौपई

सुंनि निरंद भए लोचन भीन । कही साधु पुत्री परवीन ॥
फुंनि तिन भाष्यो मन अविवेक । मलिन बचन तिन बोल्यौ एक ॥२५५॥

दोहा

अति सुन्दर गुनवंत अरु, जो को भावैं तोहि ।
आज सु उत्तर समझिकै दीजे पुत्री मोहि ॥२५६॥

चौपई

इन नरनाह मांहि जो कोइ । मन भायौ वरु मागहि सोइ ॥
ताहि समप्पुौ जोगु ज आहि । सूबौ सैंन देऊ बहु ताहि ॥२५७॥
तात बचन जब सुंनियौ कान । तब चित मांहि गए औसांन ।
मनमैं भयौ बहुत अनुराउ । मानौं भयौ बज्र को घाउ ॥२५८॥
ऐसौ बोल सत्रु नही कहै । चहुं दिसी जोवैं चुप करि रहै ।
बार बार सो लेइ उसास । बोलि न सकैं राइ कै त्रास ॥२५९॥
राइ बचन मन धर्यो दिठाइ । तापैं कछु कह्यो नहीं आइ ॥
मनमैं दुष्ट दुष्ट उच्चरयौ । कहा पाप इन जिय मै धरयौ ॥२६०॥
अति अविलेक लीन सो जांनि । कुल मारग तिहू तज्यौ प्रवानि ॥
अलिषो बोल बयो मतिहीन । मूरिख कछू लाज नहि कीन ॥२६१॥
बहुत बाल को करैं बढाइ । याको है सब नींच सुभाउ ॥
जाकै नही कुल मारग देव । जांनै नही दइ लक्षिन भेव ॥२६२॥

मैंना सुन्दरी की दशा

जाकै गुर निरग्रंथ न कोइ । ताहि विवेक कहां ते होइ ॥
यह पुत्री मन में चितई । नीची दिष्टी न ऊंची भई ॥२६३॥
रही मुरझि मैनासुंदरी । अति विचित्र सबही गुन भरी ॥
तातहि उत्तर कछू नहीं दियो । पिशुन बात तै कांपी हियो ॥२६४॥
आवै नैंक न बात विचारि । संसै दह मैं अरि कुवांरि ॥
धरती घौरैं दुखिती भई । फुंनि नर ढंगो पूछन लई ॥२६५॥

सुनि पुत्रि पर उत्तर भाषि । कहां पिता चितई अकाजि ॥
जैसैं सुरसुंदरि बंछियौ । मांग्यौ नाह ब्याह करि लियौ ॥२६६॥

त्यौं तू काहू राजहि आनि । परनि कुंवरि मनके सुखमानि ॥
बार बार तात यौं भनैं । पुत्री धिरकारें मनमनैं ॥२६७॥

चितैं सुध अध्यान्नी राउ । अति निष्टन्नु कुदिष्ट अभिकाउ ॥
जिसौ निरांकुस मत्त गयंदु । करैं पाप धाम्यौ मतिमंदु ॥२६८॥

जैसैं बालक होय अयान । जो सो बोलैं कछु न जान ॥
जैसैं अंधु बहुत दुख दहै । बहु विधि जोवै पंथ न लहै ॥२६९॥

त्यौं नृप लाज दई छिटकाइ । जौंघ रचना सी कहत बनाइ ॥
निज गुर बचन निपोर्‍यौं अबै । संतोषी परिजन सब तबै ॥२७०॥

इह सुंदरि चितई सुजांन । सील धुरंधर गुनहु निधांन ॥
जपैं तात सुनौ करि नेहु । अजुगत बात कहौ तुम एहु ॥२७१॥

जिनसूत्रनि मुनिवर नहि भणी सुनहु तात सबही अघभणी ॥
वर सुंदरि जो होइ कुलीन । लोक लाज नहि तजै प्रवीन ॥२७२॥

अपजस बाय बाहि जो बात । सोई तुम भाषत ही तात ॥
लोक विरुद्ध बाहि यह कम्मुं । मन वांछित वर रहै न धम्मुं ॥२७३॥

मन भायौ जो करै विवाह । लोक सुहासी हास्य उछाह ॥
कछू रहै नहि कुल की रीति । सब को भावै महा अनीति ॥२७४॥

अरु जितही तित होह विचार कोउ न धरै सील की कार ॥
यहै फेर सब कोऊ न करे । मातु व बंछि बरहि जो मरे ॥२७५॥

और कहा नो सुनि हो राइ । तो सौ कही कथा समझाइ ॥
श्री आदीश्वर प्रथम जिनंदु । ताकैं भारै बाप निकंदु ॥२७६॥

प्रगट पुरानन्हि मैं बरनए । कछु सुकच्छ हू राजा भए ॥
तिनकैं भई सुभद्रा दोइ । चंद सुनन्दा जानौं सोइ ॥२७७॥

जोबनवंत भई ते जबै । रूपवंत अरु गुनहु निधानैं ॥
तिनहु पै न बंछि वरकिजै । रही सदा कुल रीति जु लिजै ॥२७८॥

तात सुधि उनकी जो भई । काहू सुगन तनकी परनई ॥
ते भई लीन जिनेस्वर पाइ । बहुत काल कौं कहौ बताइ ॥२७९॥

सो मारग प्रगट्यौ सुनि तात । मोपै बांछ्यौ जात न तात ॥
पुंनि ब्राह्मी सुंदरि हूँ पुत्रि । दीक्षिहि भई सबै सुभ सुत्ति ॥२८०॥

माता पिता नहि दीनी कासु । तिन सब छांड्यौ भोग बिलासु ॥
मन मैं लाज भई अतिगाह । दुहूंनि छांड्यौ छिन मैं ब्याह ॥२८१॥
भई अजिका ले सुभ चित्त । जानैं एक सत्रु अरु मित्र ॥
भेदाभेद कछू नहि जानि । जानैं सब जिन धर्म बषानि ॥२८२॥
लोक विरुद्ध ब्याह की लाज । अब सुष छांडि दियौ सुभ काज ॥
अरु सुनि उत्तर कहौ बिचारि । जौ बंछौ निज नैन निहारि ॥२८३॥
तुमही देषी सुरसुंदरी । हीन बुधि तिन मनमैं धरी ॥
ताहि दोष नहि दीजै राइ । यह कारन सब गुरु पसाइ ॥२८४॥
जैसै जीव विचक्षन जानि । है त्रैलोक माँहि परवान ॥
षोटैं संग करमकैं रहै । निस वासुर महादुष सहै ॥२८५॥

कर्मों की विचित्रता

छिन मैं नीच कहावै सोइ । छिन ही मैं उत्तिम पद होइ ॥
छिन ही मैं दुष पावै घनो । छिन ही मैं सुष हूं तुम सुनौं ॥२८६॥
छिन ही मैं सु कहावै राइ । छिन ही मैं महारंक हूं जाइ ॥
छिन ही मूढ महा भय भरै । छिन ही मैं संका पर हरै ॥२८७॥
छिन ही मैं सौ दुर्गति जाइ । छिन मैं स्वर्ग पहुंचै धाइ ॥
जितनै दुष पावै जड एहु । तितनो कहा कहौं धरि नेहु ॥२८८॥
पै कछु जीवै औरिन जांनि । कर्म कुसंगति कौ फलु मांनि ॥
सुरसुंदरी कुमति त्यौं लही । कुगुरू पढाई तैसी कही ॥२८९॥
अरु सुनि राइ बचन है कांत । जातैं सुजस होइ परवांन ॥
माइ बाप जाइ गुन सार । कुल उत्तिम जाकौ औतार ॥२९०॥
जोवनवंति देखैं राउ । छिन छिन मन चितवै सुभाउ ॥
मन बंछ्यो वर मांगै सोइ । सीलवंत नहि गनिका होइ ॥२९१॥
बाप बिचारैं जाकौ चित्त । पुत्री कौं अब देवैं मित्त ॥
निर्मै होउ यह दीजै काल । कोबर जोग सुकलह पयाल ॥२९२॥
यह चिंती परिजन जु महंत । सकल बोल कीजै सुभवंत ॥
उत्तिम कुल सोभिजै प्रमानु । विद्यावंतरु आपु समान ॥२९३॥
सुजन जन सब मंगल करैं । होइ ब्याह दो कुल उधरैं ॥
कन्या दान भाउ तब लेइ । सौवी तुठि बहुत करि देइ ॥२९४॥

लिखतो करै कोटि लो हाक । [illegible] पुरुष चौरे को नाक ॥
जावै पंच होइ मतिहीन । जावै होहु कला परवीन ॥२६५॥

जावै कुबजे होहु नहु पुरे । जावै पूपु होहु चातुरो ॥
जावै रोगी व्यापत पीर । जावै कुष्टी होइ सरीर ॥२६६॥

जावै बालक होहु अयान । जावै होहु सर्व गुन जान ॥
जावै नृप होहु भिखराव । जावै जोगी होहु नवाव ॥२६७॥

सब परिजन सौंपै पा बाहु । चली कुलीनु तास की बाहु ॥
यह कुल कर्म पुत्री लिख जाइ । अब बिधनु पै सब भिटकाइ ॥२६८॥

कर्म की महिमा

चलि हौं कुल मारग सुनि तात । हूँ है कर्म लिखी जो बात ॥
कर्म ही तैं होइ है राइ । कर्मेहि तैं सु रंक होइ जाइ ॥२६९॥

कर्मेहि तैं नर होइ असंक । कर्मेहि तैं नर चढ़े कलंक ॥
होइ कर्म तैं माछी भाग । कर्म हि तैं पावै सुख भाग ॥३००॥

कर्मेहि तैं तिय होइ सुहाग । कर्म रूप होइ प्रगटै आग ॥
अब प्रति सुख कर्म तैं सोइ । दुखी सुहागनि करम ते होइ ॥३०१॥

कर्म हि तैं सु होइ तन भंग । कर्मतै होइ सोभित अंग ॥
यह परपंच कर्म को सर्व । कोऊ और करौ नहि गर्व ॥३०२॥

बिधना जौं कछु लिख्यो लिलार । सुभ अरु असुभ अंक सुन सार ॥
जैसो निमित्त जासको होइ । ताहि मिटाइ सकै नहि कोइ ॥३०३॥

अमर अपर अरु नव्य गंधर्व । असुर सुर पूर रवि ससि सर्व ॥
जौ ए सब मिली करै सहाय । कर्मरेष नहि मिटि है काय ॥३०४॥

पूरब तें पच्छिम रवि जाई । नर फूनि मेरु सुमिका छुवै ॥
सायर हू पै धूरि उड़ाइ । भावी तऊ न मेटी जाइ ॥३०५॥

चवनी सु नहि बंजर पाविहरै । सौनी काज हू पै उमरै ॥
बाघुर तें पु निमा कु मि होइ । भावी लिखी न मिटै कोइ ॥३०६॥

[illegible]

जैसे [illegible] सुनै पर पर । [illegible] कहो [illegible] ॥
सुनि सुनि पुनी [illegible] । [illegible] [illegible] लिखमान ॥३०७॥

पंचामृत साल्यो दिन होई। छहरस भोजन हम वे सोई ।।
ते सुष पुत्री भुगतन लेई। तू तौ कहै कर्म मो देई ।।३०८।।
मौ कौं आदि बहुत संदेह। तेरै गुरनि पढायौ येह ।।

मैना का प्रत्युत्तर

जब नृप निन्दा गुरु की करी। तब बोली मैनासुंदरी ।।३०९।।
सुनि अविवेकी तात बिचारि। तो सौं कहौं कथा विसतारी ।।
मैं सुभ कर्म कमायो सार। तेरैं घरि पायो अवतार ।।३१०।।
तातै भोजन भुगतो सुख। पावती नही नैकहू दुःख ।।
कीयो हौं तौ असुभ मैं कर्म। नीच घरां तौ लेती जनम ।।३११।।
तहां दुःख लहती अधिकाइ। सुष तू तहा न देती आइ ।।
कहा अयांन होइ नर नाथ। शुभ अरु अशुभ कर्म कै हाथ ।।३१२।।
तुमतौ रूपवंत को देहु। अर श्री तात सर्व गुनगेहु ।।
वर जो होइ महा जड़ मूर। कालहि कोढि कातर कूर ।।३१३।।
यह तुम सुनौ बात सब ठौर। विध्वानि करै और की और ।।
माता पिता बहुत हित करै। भावी लिषी न टारी टरै ।।३१४।।

पिता द्वारा रोष प्रकट करना

पुत्री वचन सुनें सब सार। राजहि रिसि उपजी अधिकार ।।
मन मैं धरत दुष्ट मति गयौ। मुंह करि करि कछु न उत्तर दयौ ।।३१५।।
कवि परमल्ल कहै सत भाउ। मनमें इहै चितयो राउ ।।
अब हूं निज कै परषौ तिसो। देषौं याहि कर्म फल किसो ।।३१६।।
जाको कियो बहुत दिठाउ। देषौ तास करम को सहाउ ।।
जीयमैं इसो पिसुनता धरी। मुहूं कहि धनि मैना सुंदरी ।।३१७।।

मैना की सुन्दरता

पुत्री उठि चाली निजगेह। करौ पारसौ कीनी देह ।।
तात वचन सुनि उठी तुरंत। परफुल्लित मनतै विहसंत ।।३१८।।
पंथ मांहि सो निकसी जाइ। पुरजन रहे देषिवि कुलाइ ।।
थोथं रहे मुहांमुह चाहि। यह थौं कुंवरि कौन की आहि ।।३१९।।

काहूली जैसी बरनई । सुरकन्या सुरनरी भई ॥
कोऊ कहै नहीं यह सोइ । यह तो नाग कुवरि पुनि होइ ॥२२०॥
काहू कहू हम जैसी भनी । यह पुनी विमना घर तनी ॥
काहू तो यह सपना दीय । काहू यहि बंध की बीय ॥२२१॥
कोऊ कहै को देवी याहि । पटंतर कोई न सकै हम ताहि ॥
षोडस बरस बड़ी परवांन । कोऊ रूप न ताहि समान ॥२२२॥
नैंना की जस बरनैं इंद ।ताको मुष सोहै मकरंद ॥
लोचन परम प्रवन प्रति बनैं । ज्यौं चकित मृग स्यावक तनै ॥२२३॥
करै कटाक्ष दृष्टि मनु बान । भ्रकुटि कुटिल मनमथ कमांन ॥
माथै भंग विराजै बार । प्रति कोमल अति स्याम सुढार ॥२२४॥
श्रवननि कुंडल राजत कंद । मांनौं बात कहै हैं चंद ॥
नीकैं सोभित अधर प्रसंग । विद्रुम उपम विराजहि अंग ॥२२५॥
ऊंची नाक इसी उनहारि । मानो कंचनि धरी सवारि ॥
दसन पंति दीसै चमकंति । कुंदली दाडिम कीसी भंति ॥२२६॥
छोटी ग्रीव मुक्ति की मार । ताकी जोति बनै अधिकार ॥
उर ऊपरि द्वै सुबलित सुंभ । मानो मैंन कै कंचन कुंभ ॥२२७॥
मृगपति लंक मध्य प्रवीन । त्रिबलि तरंग सोभ करि षीन ॥
कोमल पांन कमलता बाल । बाहु जुगल सोभै सुविसाल ॥२२८॥
जंघ जुगल कदली कै तुल । कोमल पया गौर बनफूल ॥
चंपक वर्न पुष्प तन जानि । प्रति कोमल को कहै बखानि ॥२२९॥
प्रति सुगंध तासु को सरीर । प्रावैं लपटै बहुत समीर ॥
प्रति कुल संबन्धी दिन रैनि । चितवत चितचोरै मृगनैनि ॥२३०॥
महि पर मंद मंद पग धरै । देषत मनमथ को मन हरै ॥
हस चाल सो चहुंती तहां । जिन घर वनती जोवति वहां ॥२३१॥
दिव्य वस्त्र पहरे सति सची । तब जिनवर की पूजा रची ॥
अष्ट प्रकारी जिय धरि नेह । मद मच्छर छांडि संदेह ॥२३२॥
द्वारापेषन सब तिन कियौ । मुनि कोऊ न तहां देषियौ ॥
भावना भाई पूजी पाय । पुनि भोजन कौ यह अभिप्राय ॥२३३॥
रमल्यौ कच यहु रस मुख चित्त । पारनौ एस तब्यौ पवित्त ॥
अति सुंदर मुख सोधि जो लई । तबहि सौं उठि ठाढी भई ॥२३४॥
जैसैं सुष मुंचै बहु भाय । कीमर्इव मध सुषहु विसाल ॥
आहार दीहा सब अनेक । प्रगट पटह बाजै सु अनेक ॥२३५॥

मनवांछित सुष लहै प्रवीन । रहै भक्ति मुनिवर पद लीन ॥
कबहू न बात पाप की कहै । निस दिन ध्यान धर्म मैं रहै
कबहू बात झूठि नहि कहै । सांची होई सुहित दे चहै ॥ ॥२३६॥

दोहा

सुष जननी परियन सकल, श्री जिनवर सुमरंत ॥
ऐसे बीते बहुत दीन, निजगृह में निवसंत ॥२३७॥

इति श्रीपाल चरित्ते महापुराणे भव्य संघ मंगल करणं ।
बुध जन मन रंजन पतित गन भंजन सिद्ध चक्र विधि दुखहरणं ।
त्रिभुवन सुख कारण भव जल तारण । चौपई बंध परिमल्ल कृतं ॥२३८॥

चौपई

राजा की श्रीपाल से भेंट

मैना सुंदरी प्रति उत्तर दियो । तातैं तात निभ्रांट्यो गयो ॥
राजा कैं मन उपज्यो कोह । जंपै होनहार सो होह ॥ १॥
एकै दिन सब सैन पलानि । हय गय रथ को कहै बषांनि ॥
नगर निकास भेल्यो आइ । मंत्री लीने संग लगाइ ॥ २॥
बहुर्‌यो कथा भई तिह थान । श्रीपाल जहां वन उद्यान ॥
नासा पाइ गए गरि हाथ । ऐसे संग सातसै ली साथ ॥ ३॥
भ्रमत भ्रमत सो पहुंती तहां । राजा वर चिंतत ही जहां ॥
देखि राज उठि ठाडो भयो । मंत्रिन कै मन चोचो भयो ॥ ४॥
देषत मंत्री सबनि भई लाज । यह कोढि भेट्यो किह कांज ॥
सगरे रहे मुह मुंह चाइ । कोऊ बूझि सकै नहिं राइ ॥ ५॥
तब तिह ठा बोल्यो यौं राउ । मंत्री सुनौं कहो सत भाउ ॥
या परि मेरी है अति चित्त । यह मेरो प्रीतम है मित्त ॥ ६॥
याकी ढिग तै नेक न टरो । या परि नेहु निरंतर धर्‌यो ॥
मंत्री कहै सुनौं हो राई । गर्‌यो सरीर हाथ अरु पाइ ॥ ७॥
रही दुरगंधा जित तित पूरि । याहि देषिए भजिए दूरि ॥
तास्यो मिले कहा करि नेहु । याको चाहे बढो संदेहु ॥ ८॥
यह सुनिकै भूपति यौं भनै । मंत्री मैं तुम मूरख गनै ॥
भुप की कही न समझत बात । क्यौं जानौं को है यह तात ॥ ९॥

या देवैं नार्मैं नहि कोइ । हीनैं बरसी निरत कोइ ॥
ऐसी कथा कहत है यही । कवि ब्रह्मराय प्रगटि करि कही ॥१०॥

सुख की कही न समझत बात । क्यों आनंदै मन की बात ॥
यह कहि तहां पहुंती राव । सुनि सुनि अवलोकै करि भाव ॥११॥

पूछै तापहु भूपाल नरेस । को तू आहि बहुत असलेस ॥
हुंवत महि डोलै तन अंग । बहुत परिग्रह तेरै संग ॥१२॥

क्यौं इह नगर कियौ परनाम । सांची कहौ प्राण आधार ॥
तब श्रीपाल कियौ परनाम । हम सुनि आए तेरौ नाम ॥१३॥

दयावंत सब कोउ कहै । अति उदारता तो जिय रहै ॥
तातैं सुनि आये हम राइ । बहुत कहा हम कहैं बनाय ॥१४॥

पुर गिरवर सरवर नाघंत । अब हम पहुंते आइ तुरंत ॥
चिंता रोग सोग सब गयौ । तुम्हरौ नृप जब दरसन भयौ ॥१५॥

यह सुनि नृप फूल्यौ सब गात । सुनि कुष्टी नृप मेरी बात ॥
मंगि मंगि मवि तूठो भवैं । बहुरयौ त्याग लेइ भी कवै ॥१६॥

विलम न कीजै औसर एह । मन की आदि देहु संदेह ॥
जोई तू मांगैगो दांन । सोई देउ राखिहौ मान ॥१७॥

तब तिन जंप्यौ सुनि देह । राजा अपट पुहमि जस लेह ॥
यह सुनि राउ कोप अति भयौ । कुंनि अपनै मनमैं चिंतयौ ॥१८॥

यह तौ निमत पहुंतौ आइ । बहुत कहा हु कही बढाइ ॥
देपौं सुंदरि कौ हौ कर्म । जाहि देहु भजै सब भर्म ॥१९॥

इनि कछु मेरी कांमन निकारी । भविन आउ कुल तैं उबरी ॥
यह मनमांहि विचारै राउ । तब तिन जंप्यौ चित सतौ भाउ ॥२०॥

श्रीपाल को मैनासुन्दरी देने का प्रस्ताव

कुष्टी राइ बात सुनि जोहि । मैनासुन्दरी दीजौ तोहि ॥
तेरे मन की बाछी भयौ । तो को पुहु मांग्यौ वर दयौ ॥२१॥

चलो जीमहि घर मांहि बानि । तब बोलत पुत्र देविहि जानि ॥
जब यह बचन राव को सुण्यौ । तब सब परिजन मायौ सुण्यौ ॥२२॥

ए नरनाह कियो कहा कर्मु । कियौ कुपत न कहिसौ धर्मु ॥
यह कुष्टि तन अंग विकार । कुंवरी दे कौ कहा विचार ॥२३॥

जनम जनम की चढै कलंक । हंसि है सबै राउ अरु रंक ।।
राउ सुनिवि जपै जब तास । मंत्री क्यौं निडल सुपयास ।।२४।।

याकै सब सामग्री सिसी । होति और भूपनि पैं जिसी ।।
सिर पर छत्र चंवर है ढरैं । आगैं सूर खडग कर धरैं ।।२५।।

भंडारी राखै भंडार । बेसर वाहन अमन अपार ।।
दुखी लोग सेवतहैं पास । आगैं नितु होत है रास ।।२६।।

गाहा गीत वाद बहु भेद । सीषी बहुत अरमआमेद ।।
अरु सब भांति देषिये सूर । भूलि न कबहूं भाषं कूर ।।२७।।

अरु देषिये दया अधिकार । दान देत है चित्त उदार ।।
यापैं कोप उदै कछु कीयौ । सुष अरु दुःष अचानक दियौ ।।२८।।

यह सबहि विधी पूरो आहि । अैसौ बर तजि दीजे काहि ।।
वारंवार पयंपै राउ । याहि ऊपरि मेरौ भाउ ।।२९।।

यह सुनि मन्त्री उठै रिसाइ । अजुगत कहा कहत हौ राइ ।।
मन मैं संक बात तुम कहै । बारंबार चरन ते गहैं ।।३०।।

राजा सुनौ करौ मत कोह । कीजै कछु सुता कौ मोह ।।
तुमतो करत कहाणीं इसो । काहू मूढ कीयौ है जिसौ ।।३१।।

पायौ नग निर्मोलिक एक । ताको कछु न कियौ विवेक ।।
काग जिहां जहि बैठ्यो आइ । सो वि डारियो ताहि चलाय ।।३२।।

काहू आय भेद जब दयौ । ताकौ पिछतावौ रहि गयौ ।।
होत कहानौ तैसो एहु । कन्या मति कोढी कौ देहु ।।३३।।

अपजस फैलि देस मैं जाइ । अंतपि तौ पिछतै हो राइ ।।
आग्यौ सोच काम जो करै । तातै चूक कबहू न परे ।।३४।।

अपजस ताकौ देइ न कोइ । नीकै करि देषौ जिय सोइ ।।
और सुनौ जंपे भूपाल । पाथर ले मति आपौ लाल ।।३५।।

कहा कर्म पुत्री कौ करै । सोई होइ बातु जिय धरै ।।
नीकै करि तुम देषौ चाहि । वा मैं कछु न चौखौ आहि ।।३६।।

यह सुनि बोल्यौ राइ प्रचंड । एण वचन भो लागत डंड ।।
तुम मंत्री जानौ उनमांन । यह कारिजु हो इहै परमांन ।।३७।।

मति जंपौ तुम बारंबार । कौ समर्थ जु फेरन हार ।।
बहु भोजन श्रीपालहु दयौ । पुर बाहरि सु सौपि राखियो ।।३८।।

मैनासुन्दरी से श्रीपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव

मनमें हरषवंत विकसाइ । राजा गेह पहूंतो आइ ॥
जिह ठाहीं मैना सुन्दरी । तासौं प्रभण बात उच्चरी ॥३९॥

पुत्री उत्तर देहु विचारि । अजहूं अपनौ करम निवारि ॥
पानि ग्रहन करौ तजि लाज । सुन्दरी जंपै सुनि महाराज ॥४०॥

कहा कहत है हीनी बात । सुख चित्त होइ सुनि ही तात ॥
जो मुनि क्रियावंत मति होइ । दरसण भिष्ट कहा कीजै सोइ ॥४१॥

कीजै कहा धर्म जो गहै । जाकै चित्त दया नहि रहै ॥
कीजै कहा ध्यान धरि एक । जाकै हिरदै नही विवेक ॥४२॥

कीजै कहा त्याग बहु दीये । जाकै क्रोध प्रगट है हिये ॥
कीजै कहा पुत्रि गुन रात । मेटै मातपिता की बात ॥४३॥

बार बार को करै बषान । तात बचन मेरै परवान ॥
निठुर चित्त रानी गह गयो । दुष्ट कहानौं तासौं कह्यौं ॥४४॥

मैं दीनी पुत्री पिय जानि । कुष्टी राउ परनि सुषमानि ॥
सुन्दरि सुनै तात के बोल । तेई मनमैं धरे अडोल ॥४५॥

मनमैं कीयो हरिष अपार । विहसत जंपै बारंबार ॥
विषी निर्मयौं हीन गुनवंत । सुनहु तात वह मेरो कंत ॥४६॥

सुंदर नर नरेन्द्र जे आन । ते सब देषौ तुमहि समान ॥
यह तो मिलौ करम निरजोस । काहू स्यौं कछु राग न रोस ॥४७॥

शुभ अरु अशुभ अजो है संग । कोऊ मति भूलौ भ्रम रंग ॥
हरत परत परसोच्यौं मुझै । राजा कछू दोस नहि तुझै ॥४८॥

पुत्री सुनियो जंपै राय । तेरै पीते दुष्ट सुभाय ॥
अजहुं न तजहि कर्म मति माह । पैंपौ लागै होंन विवाह ॥४९॥

किय एक विधा करि लीन । लासौकिक लौकिक परवीन ॥
कीयो बुलाय पाप नर नाह । हरषवंत पुत्री कै व्याह ॥५०॥

दिन सुभ अरि महूरत साधि । लगन धर्यौ जोयसि आराधि ॥
भाष्यौ विग्रह तबैं निरन्त । शुभ करि अवसर आजि पवित्त ॥५१॥

सूर्य शसि हर सुर गुरु मांहि । बर कन्या कौ अतिशय आहि ॥
बरस बीस जो सोचो राइ । ऐसो दीस न पहुचौ आई ॥५२॥

स्याम लेत सा हाथ न बहै । बारंबार विप्र यौं कहै ॥
बाल कहै सो करै न संक । सुनि हो राइ करम के अंक ॥५५॥

ताको कछु न दीजे खोरि । प्रानी बांध्यो विधि की डोरि ॥
जित प्रेरै तित ही लै जाइ । या मैं कछु न चोखो राई ॥५६॥

जा परि ताको दुख निरमयो । काहू पै दुख जाइ न दयो ॥
ज्यौं सुखी सिरजी सुखकाज । को दुख देवे सुनि हो राज ॥

अपनो कियो कछू जो होइ । तौ काहू को बदे होइ ॥
विधना अंक जु लिख्यो लिलार । ते निरबहै ठोर इकसार ॥५७॥

भूलि गर्व कोऊ मति करो । करता बली तहां मनि धरो ॥
तिणस्यौं वज्र पलक से धरै । पलमैं वज्र ताहि विध करै ॥५८॥

करतै पहल कांम चितवै । यहै और की और कछु ठवै ॥
सोधै पडित सुनै पुरांन । ताको अपजस होइ निदान ॥५९॥

यह अजुगति कछु कही न परै । राजसुता क्यों कोढी वरै ॥
जाके रूप जगत माहिए । सो क्यों कुष्टी को सोहिए ॥६०॥

राजा हीन बात जीय धरी । तेरी बुधि विधाता हरी ॥
ऐसो ते आरंभ्यो काज । जान्यो बूझ्यो चाहत राज ॥६१॥

विनासके कारण

विप्र गयो घरि लयो न वित्त । लागो प्रगटन एहु चरित्त ॥
मंत्री बरजै फुनि फुनि तास । स्वामी एतौं धर्म विनास ॥६२॥

विनसै मन्त्री संका मन धरै । विनसै भाविन साहस टरै ॥
विनसै राव मंत्र जो तजै । विनसै सुभट देखि रन भजै ॥६३॥

विनसै ईसुक्रोध परिहरै । विनसै साध क्रोध जो करै ॥
विनसै दाता जो न विवेक । विनसै वाड चलै दिन एक ॥६४॥

विनसै अलि पंकज की बास । विनसै रागी रहै उदास ॥
विनसै चोर प्रकासै भेव । विनसै निघटे जो को देव ॥६५॥

विनसै साहु जुवारी देह । विनसै गनिका जो धन लेइ ॥
विनसै अति कामातुर देह । विनसै रावर मोटी नेह ॥६६॥

विनसै पात्र क्रिया जो हीन । विनसै तपा लोभ करि लीन ॥
विनसै रांक राग चित धरै । विनसै भोगी पाप न डरै ॥६७॥

जिनसै जोसी घर घर फिरै । जिनसै पैंड़ा पावहु तिरै ॥
जिनसै भैंस न मारी मरै । जिनसै पैबद पाहु न मरै ॥६८॥

जिनसै ज्वारी हारिय कहै । जिनसै साहु चोर जिम रहै ॥
जिनसै कम नदी के तीर । जिनसै राजा जिसा वजीर ॥६९॥

जिनसै बाप सतावै पूत । जिनसै जो मंडै अत भूत ॥
जिनसै काजी काकन करै । जिनसै कुल कपूत औतरै ॥७०॥

जिनसै कीट पींजरै पड़ै । जिनसै साधु को ऊंची चढ़ै ॥
जिनसै ठग कुठेहर वसै । जिनसै चोर हुवै [illegible] ॥७१॥

जिनसै करिवर काहर हुन्न । जिनसै [illegible] पुत्रै [illegible] ॥
जिनसै चोरी जिन लखावै । जिनसै घर जो बैठ न खावै ॥७२॥

जिनसै चोर साहु जिम बसै । जिनसै साहु न मारी जसै ॥
जिनसै जिन को मीयो चार । जिनसै काम हीन कुलचाल ॥७३॥

जिनसै सज्जन पुनि पुनि बसै । जिनसै सहू को हलहल हसै ॥
जिनसै साधु करत जो कहै । जिनसै राज कुमंत्री गहै ॥७४॥

बार बार मंत्री मन कहै । काहू को बरज्यौ नहीं रहै ॥
जिम मोती मैलन वलि परी । आंकुस रहै न एकौ घरी ॥७५॥

[illegible] चलतै मंत्र प्रबंध । सब कछु सुन होइ [illegible] ॥
नंदि विक्रमसिंघह दरबार । [illegible] ॥७६॥

मां [illegible] बात कोइ [illegible] । [illegible] राज ॥
तब रानी बोली [illegible] । [illegible] ॥७७॥

सूरिच हिए विचारी बुधि । [illegible] बुधि ॥
मैं तो [illegible] ॥७८॥

तब [illegible] ॥
[illegible] ॥७९॥

तब मैं [illegible] ॥
बात [illegible] ॥८०॥

सुनि करि [illegible] ॥
राजरीति [illegible] ॥८१॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥८२॥

तब मन्त्री बोलैं कर जोरि । स्वामी हमैं न दीजै खोरि ॥
हम मंत्री बोलैं नृप जीति । यहै हमारे कुल की रीति ॥८३॥

स्वामि धर्म इह बाहर होइ । साची बात कहासैं सोइ ॥
जो हम काज करैं सुनि राइ । तौ कुल रीति हमारी जाइ ॥८४॥

अरु राजनि कौ इह सुभाउ । जब जानत है बसऊ दाउ ॥
तब मन्त्री लीजिये बुलाइ । । बूझे ताहि भेद निकुताइ ॥८५॥

जोइ बात कहै समझाइ । सोई करैं सबै छिटकाइ ॥
और न मन ल्यावैं अधिकार । ऐसे नृप कुल के आचार ॥ ८६॥

तातैं बार बार उच्चरैं । कछू जिय को लालच करैं ॥
चूक हमारो कछू न आहि । नीके करि देखौ चित चाहि ॥८७॥

मनमैं समझ्यो कछु इक राइ । मुख करि तिनसौं उठयो रिसाइ ॥
और बात मति ल्यावो चित्त । सामग्री तुम करौ पवित्त ॥८८॥

सुन्दरि बर कौं सोभा करौ । वेगे होइ बार मति करौ ॥
सुनत सु'ब मंत्री जब भयौ । हरे बांस मंडप अरु ठयौ ॥८९॥

लगन मंडप का वर्णन

च्यारि थंभ कंचन के बनैं । चमकैं नग निर्मोलिक घनैं ॥
च्यारि कलस इस तोरन धरे । ते सोहै चहुं पूंटह धरे ॥९०॥

अरु सोभा तिहु विध प्रकार । मुक्ताहल की बंदरवार ॥
चौक सवासिन देहि सुचंग । अति उज्वल देखियौं अभंग ॥९१॥

अरु तहां निए सुरंग उचार । तिनकी सोभा कहै अपार ॥
केन्हौ चूनी दई फैलाई । ते चमकैं कछु कहियत जाइ ॥९२॥

सबैं सिंघासनि रदन कराहि । सोभा चौक संवारति जाहि ॥
सज्जन लोग जुरैं सब आइ । भलिन चित्त को नहि विकसाइ ॥९३॥

ठांठा घेर करैं सब कोइ । अनुचित बात न ऐसी होइ ॥
विधना कछू एह लिखयई । राजा की मति बिधु हरि लई ॥९४॥

राजा लोग जुरे सब जिते । अश्रुपात करैं तहां तिते ॥
अरु बाजैं बाजिन्न अपार । भेरि मृदंग तुर सहनार ॥९५॥

गहर सबद बाजैं नीसान । सकल सबद अति सुनिये कान ॥
विप्र वेद धुनि पढैं अपार । नरनारि रोवैं अधिकाइ ॥९६॥

राजा कहै ब्याह के चाउ । जैसे करौ [illegible] उछाउ ॥
मेरौ मन को इष्ट सु आहि । बेगि बुलाई ल्यावो ताहि ॥९७॥
करौं सेव जो मोते होइ । बार बार यौ भावै सोइ ॥
मंत्री चले सीस धुनि जहां । नगर निकासहु बरही जहां ॥९८॥
देख्यौ बहौत अति विपरीति । तन मन जाको हू गयौ बीति ॥
लै आए अति कुष्ठी देह । कहै रानीह सब [illegible] नेह ॥९९॥
जो देखैं सो हूं की करै । तिनकौ कोउ न [illegible] टरै ॥

देखत राजा अति सुख कियौ । कंचन कलस न्हावन लियौ ॥१००॥
सौंप्यौ मन सौ बहुत अधीर । तोकौं कछु न लगै सरीर ॥
कंकन कर बांध्यौ सेहुरौ । भूपति राउ भयौ बावरौ ॥१०१॥
कामिनि चोरी गावैं जबै । दूलहा ब्याहन चलियौ तबै ॥
मंगल तुरी चढ़ावन लियौ । मंत्री माहै हांसी कियौ ॥
बहुविध बाज बजैं कर चाउ । राजवंश भयौ मिटौ सुभाउ ॥१०२॥

श्रीपाल की बारात

चली बरात उड़ी तहां धूरि । रही तहां नर कौतुक पूरि ॥
रतन जरित सिर छत्र सु साजु । करैं [illegible] चोखते महाजु ॥१०३॥
श्रीपाल मन हर्षित भयौ । मंडप द्वारैं ठाडौ भयौ ॥
[illegible] वन सयल देखियो आइ । तिनके बदन गये कुम्हिलाइ ॥१०४॥
मांनो अंबुज हुए तुसार । मानौं तरुवर हुए [illegible] ॥
ऐसी भयौ चित जनराउ । मांनो भयौ वज्र को घाउ ॥१०५॥

ते बहु रुदन करैं बहु भरैं । राजा कौं ते निंदा करैं ॥
नारी नर अंतेवर जितै । अति बिलखाहि बिसूरैं तितै ॥१०६॥
तिनकै बिलखैं कहा सिराइ । राजा आनंदै करौ बधाइ ॥
मूंड रही नीचौ करि नारि । काहू तन नाहि सकै निहारि ॥१०७॥
माता बहुत खरी गह करै । हैरि [illegible] आंसू जल ढरै ॥
माता महा दुख तन भरौ । पुत्री [illegible] [illegible] [illegible] ॥१०८॥
हा पुत्री दुख सागर परी । क्यों है जिय मैना सुन्दरी ॥
पूरब कहूं [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] संताप ॥१०९॥

मैनासुन्दरी द्वारा [illegible]

सुन्दरी बोली [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ॥
कोउ दुख करौ मति [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥११०॥

जो प्राणी आयो संसार । ताकैं परैं दुख की मार ॥
जित ही देखैं नैन पसारि । तितही बांधी दुख की पारि ॥१११॥

यह सागर संसार अपार । बिरलौ कोऊ पावै पार ॥
मात पिता सुत बंधव मित्त । हय गय वाहन रथ सु पवित्त ॥११२॥

माया और जहि अधिकार । मिथ्या सबै रची करतार ॥
काको पिता कौन की माइ । जीव अकेलौ आवै जाइ ॥११३॥

बैठे रहैं हितू पचास । बार बार जोवैं चोपास ॥
काहू पासि न होइ उपाइ । जब कर केस गहै जम आइ ॥११४॥

सोई बडी हितू सुनि आइ । धरबराइ मरघट लै जाइ ॥
भजै जौरि देहु मति कोइ । होनहार सोई परिहोइ ॥११५॥

प्रतिबोध्यौ सगरौ परिवार । मांडन कह्यौ ब्याह को चार ॥
आपुन हरषि उठाइ सुलियौ । ससि बदनी सेहर बांधियौ ॥११६॥

मणिमय कुंडल पहरे कंन । करकंकन सोहिये रतन्न ॥
नेवर पहरे अति झुंनकार । पहरी बलि मौतिन की मार ॥११७॥

सुरति बास भरदियौ सरीर । पहरयौ अंग कसूंमिल चीर ॥
करि श्रृंगार पहुती जांम । सिरीपाल मंडफ गयौ तांम ॥११८॥

मैना का विवाह मंडप में बैठना

मैना सुंदरी बैठी आइ । परियन रहसि लियौ सिरनाइ ॥
तिहठा ध्यान करैं सब कोइ । टकटक रहैं मुहां मुह जोइ ॥११९॥

तब सुंदरि उठि ठाडी भई । निज परियन कहता पै गई ॥
सुरसुंदरी को भायो जिसो । मोको क्यो नहि भायो तिसो ॥१२०॥

पुत्री जंपै बारंबार । करौ उछाह र मंगलचार ॥
यह कहि कै पुत्री बैसियौ । माता बहुत हियौ अति लियौ ॥१२१॥

ढरैं चौंर दूलह कै सीस । जै जै सबद करैं नर ईस ॥
बाजैं जहां गहर बाजनैं । कामिन जन बिरदावलि भनैं ॥१२२॥

चंदन भरवटि दई लिलार । पहरे पाटंबर सुकमार ॥
नाचैं गावहि मंगलचार । बंभन बेद पढैं फुंकार ॥१२३॥

भांवरि सात फिरी सुभ बरैं । राजा गंधवी लियौ तबैं ॥
मैनासुंदरि पकरी हाथ । सौंपी श्रीपाल नर नाथ ॥१२४॥

कन्यादान लियौ नरनाह । तब करि दीयौ कु की व्याह ।।
मंत्री जन सब लए बुलाइ । मेरौ मुंह मति देखौ आइ ।।१२५।।

राजा द्वारा पश्चात्ताप करना

हे हे हूं पापी परधान । हे हे हूं मतिहीन अयान ।।
महादु:ख परियन कौं दयौ । अपजस सकल लोक मैं भयौ ।।१२६।।

बार बार ऐसो उच्चरैं । ऐसे काम नीच नहीं करैं ।।
सर्व बुवाई कुल की रीति । नरयौं पोयौ करी अनीति ।।१२७।।

अब कहां बदन दिखाऊं लोइ । चढी कालिमा मेटै कोइ ।।
हे हे पुत्री सब गुन लीन । जैन धर्म पालन परवीन ।।१२८।।

मो निर्मल मति खोटी भई । तूं कन्या कोढी कौं दई ।।
पुत्री कहै सुनौ हो तात । मिटै केम जिन भाषी बात ।।१२९।।

कछु खोरि नहीं दीजे तोहि । उदै कर्म आयौ सुनि मोहि ।
जो कुछ निमित्त होइ जिह काल । सेई अंक लिषे मम भाल ।।१३०।।

पहलैं विधनां यह जीव धरी । पीछे हीं गरभ संचरी ।।
जो कछु आप करै करतार । ताकौ कीजै कहा विचार ।।१३१।।

काहू पास न जाषौ जाइ । अजहूं कहा होयगी राइ ।।
ऐसौ वचन भूप जब सुन्यौ । मन पिछतावौ पापौ गुन्यौ ।।१३२।।

नीकैं करि देखौ चित माहिं । अनमी भूख सुनावौ काहि ।।
यह चितत दीनी ज्यौनार । सोभी कीन्ही प्रगट अपार ।।१३३।।

छत्र चमर दीन्हे भंडार । दीने मेगल तुरीय ते सार ।।
पाटंबर दीए बहु चीर । जिनें लगे निर्मोलिक हीर ।।१३४।।

षोडस वर्षनि कीनी संग । पहिरे कंचू सबै सुरंग ।।
अति सुंदरि दासी बनि लाई । एक सहस सुंदरि कौं दई ।।१३५।।

दहेज

सहस दास सुंदर गुन गेह । दीए निरीपाल कौं तेह ।।
सेवक भले भले ले आए । बहुत और सेवा कौं दए ।।१३६।।

पुत्री देखि बिछुरै राइ ।। बार बार मनमैं पिछताइ ।।
कंचू दीन्हे कहुं न जाइ । बहुत दीए कामनि चढाइ ।।१३७।।

थाई सात रची चहुं पास । नौतन दीए कराइ आवास ॥
पुर बाहरि राखियो नरेस । दिए बहुत पुर पट्टन देस ॥१३८॥

बहुत दीए बाजनै निसान । दियो सुखी बिना उनमान ॥
राजा दियो अति धन जितो । कवि परमल्ल न बरन्यो तितो ॥१३६॥

प्रजा द्वारा दुःख प्रकट करना

लई कुंवरि चौठोर चढाइ । सिरीपाल घरि गयो लिवाइ ॥
यह सुनि नगर भयो कहराउ । सभी कहैं कुग कुम यह राउ ॥१४०॥

रोवैं परियन बे उनमांन । रोवैं मंत्री अरु परधांन ॥
रोवैं रइयति कुली छत्तीस । रोवत पशु पंछी सब दीस ॥१४१॥

तू विधनां अति खोटी आहि । बुरे भले नहि देखै काहि ॥
घर घर घेर करैं बिललांहि । राजइ गारि देहि पिछुताहि ॥१४२॥

बहुत बात को करै विचार । सुष निबसै श्रीपाल कुंवार ॥
मैनासुंदरि मन की इछा । एकै दिन एकासन बिछा ॥१४३॥

तब श्रीपाल कहै ए नारि । प्रान पियारी देषि विचारि ॥
तू त्रिसुद्ध गुन सील अभग । रूपवंत कंचन मैं अंग ॥१४४॥

चन्द्रमुषी सुनि अभी निवास । मति आवछे तू मेरे पास ॥
जौलौं असुभ उदै मो कर्म । तौं लौ राषि आपनौ धर्म ॥१४५॥

बार बार हू बिनऊ तोहि । सुंदरि अति आलवै मोहि ॥
ए बलभा तुम सुषदातार । संगति आई दोष अपार ॥१४६॥

संगति का महात्म्य

संगति गुनी निरगुंनी होइ । संगति होत कुबुधी लोइ ॥
संगति तपा भ्रष्ट व्रत तजै । संगति पाइ सुरभी भजै ॥१४७॥

संगति साधु सुरा आचरै । संगति ही चोरी नर करै ॥
संगति सींह स्यार होइ जाइ । संगति श्रावक आमिष खाइ ॥१४८॥

संगति विप्र तजै षट कर्म्म । संगति ते हूं धर्म अधर्म ॥
संगति सील तजैं बरनारि । जानति मनमैं देषि बिचारी ॥१४६॥

संगति कोढ चढै दुष चहै । सिरीपाल सुंदरिस्यौं कहै ॥
मेरी संग बुरी बनि जानि । सुंदरि बात हमारी मांनि ॥१५०॥

बोली नारि बैन सुनि एहु । मन मैं उपज्यौ अति संदेहु ।।

श्रीपाल से मैनासुन्दरी का निवेदन

बालम सुनौं कहौं अब तोहि । कर्कस वचन कहौ मति मोहि ।।१५१।।

नीकैं करि सोचौ मन मांहु । जो लौ उदै कर्म को [illegible] ।।
तौलौ भुगतौ दुख सुख संत । भूलि न काइ रहुवौ कंत ।।१५२।।

विधिना मोहि बहु विधि कियौ । [illegible] मोकौं [illegible] ।।
तुम मेरे प्रीतम भरतार । तुम मेरे प्रांननि आधार ।।१५३।।

तुम अति रूपवंत गुनवंत । तुम ही सुख सागर बलिवंत ।।
लोचन सुखी जो लौंए चार । तौलौं देखें तुमैं निहार ।।१५४।।

तौलौं पवित्त रहै शुभ ठांम । जौ लौं जपौं तुम्हारो नाम ।।
तौ लौ हाथ धन्य सुनि राय । जौ लौं प्रछालौं तुम पाइ ।।१५५।।

बाहु धन्य कछु कही न जाइ । जो आलंबौ कंठ लगाइ ।।
हौ प्रिय धन्य तौ लौं जिय धरौ । जौ लौं सेव तुहारी करौं ।।१५६।।

सील विहूनी नारि जु होइ । तिह की निंदा करि है सोइ ।।
पतिव्रता सब ही गुंन भरी । हौ तौ सीलवंति सुंदरी ।।१५७।।

शील की महिमा

सीलहीस्यो मेरी अति चित्त । सील पिता बंधु अरु मित्त ।।
सील परिग्रह मेरी संग । सील रूप मेरी सरबंग ।।१५८।।

सील द्वादस आभरन विचार । सीलै है नव सत सृंगार ।।
सीलै जीवन सीलै मरन । सीलै धर्म सु सीलै सरन ।।१५९।।

सीलै मेरैं मग उनमांन । तौलौं तजौं न जी कौ प्रांन ।।
सर्बस जाइ सील जौ रहै । त्रिभुवन मैं सोभा सो लहै ।।१६०।।

श्रीपाल का प्रसन्न होना

यह सुन सिरीपाल हरषियौ । धनि मैनासुंदरि तेरौ हियौ ।।
धनि [illegible] । जिह [illegible] सील को भार ।।१६१।।

ऐसी विपति माँहि विहसंत । बहुत दिवस बीते निवसंत ॥
कोठा एक रहै बहु पास । सुंदरि दैवै लेइ उसास ॥१६२॥

ए विधना दोषन के राइ । तेरी कथा न कहनी जाइ ॥
तेरी सरन आइ जिह लयौ । ताको दुःष बहुत तैं दियौ ॥१६३॥

अरु जे फिर्‌यौ दुष्ट तो साथ । ताकौं भले लगाए हाथ ॥
तेरी आस रह्यौ जिय सोइ । ततकाल ताकौं दुष होइ ॥१६४॥

जिह काहू तो को सुष दियौ । ताकौं बुरौ सर्वथा कियौ ॥
जिह तेरो सेयौ पर संग । ताको सदा भयौ सुष भंग ॥१६५॥

दोहा

जिह मार्‌यौ तू दु:षदे, रे विधि अष्ट प्रकार ॥
सो पहुचे वैकुंठ कौ, तेरे मुष दै छार ॥ १६६॥

जिह तेरी आसा तजी, कीनौं मूल विनास ।
तिह भव दुषसागर तज्यौ, लह्यौ मुकति पर वास ॥१६७॥

चौपई

नथा बहुत करम की करी । और न काहू ऊपरि धरी ।
मैंना सुंदरि उठी तुरंत । दिव्य अबर पहरे बिहसंत ॥१६८॥

सीलवंत अरु गुंमहु निधान । निज बालक संयुत सकाज ।
मनमैं उपज्यो सुष असेस । श्री जिन भुवन किय्यौ परवेस ॥१६९।

तीन प्रदक्षणा उत्तम बुधि । कीनी मन वच काय त्रिसुधि ॥
दंपति लागे अस्तुति करनं । जै जै मुनिवर भव भय हर्न ॥१७०॥

मैंनासुंदरी एवं श्रीपाल द्वारा मुनि के पास जाना

जै मिथ्यातम हरन पतंग । सेवत सुर नर षेचर संग ॥
निरद्वंद निरामय नाहन कोप । क्षय कीने अष्टादश दोष ॥१७१॥

अनंत चतुष्टय गुनह निवास । इन्द्री वेदन सदा उदास ॥
महित सप्त तत्वारथ जास । अजदंत मोहारि विनास ॥१७२॥

रत्नत्रय भूषण सुभ चित्त । एकत्व वितर्क धरि चित्त ॥
भावंदकरण श्रे ॥ बलवीत । जे जे कल्याणकर लिये ईस ॥१७३॥

सुभ चित्तैं दोऊ चिरजाइ । बैठे मनल कमल तट जाइ ॥
तब सुंदरि बोली करि चाइ । हौं नाग्निनी मोहि समझाइ ॥१७४॥

सो स्वामी कछु ज्ञान पयासि । जौ मेरै चित्त की नासि ॥
जै जै मुनि बीतराग निहार । नाहु भीम दे चित्त उदार ॥१७५॥

कहु परम स्वामी कहि सोइ । कुण्ड अवधि वाली सब होइ ॥

मुनि द्वारा संबोधन

मुनिवर कहै सुनि सुनि एह । अनुपम पुंण्य समकित सूं नेह ॥१७६॥
पुंनि सिम्याक्त कुमहु निवारी । पवनैं मुनिवर पराहारि ॥
गुरुवो चरन प्रणाहूनी जो जाहि । नीकै करि मुनि भाषौं ताहि ॥१७७॥

मुनीश्वरोवाच हे पुत्री श्रूयतां ।
धर्मे मतिर्भवति किं बहुना श्रुतेन ।
जीवे दया भवति, किं बहुभि प्रदानैः ॥
शांतिर्मनो भवतु किं कुबनैश्चतुष्टे ।
आरोग्यमस्तु विभवेन बलेन किंवा ॥१७८॥

बुद्धैः फलं तत्वविचारणं च ।
देहस्य सारं व्रतधारणं च ॥
अर्थस्य सारं किल पात्रदानं ।
वाचः फलं प्रीतिकरं नराणां ॥१७९॥

सिद्धचक्र व्रत लेने के लिये कहना

चौपई

निर्मल सिद्धचक्र है एहु । आष्टान्हिका करी व्रत एहु ॥
तब तावैं सुनियौ विधि साधि । बहु दिन सिद्धचक्र आराधि ॥१८०॥

प्रथमहु मंडल कीजै आदि । ओंकार प्रथम हि आदि ॥
चहुं कूणैं लिखि सोलह भट्ठ । भक्ति पंच परमेष्ठि बनाइ ॥१८१॥

दल दल दे लिखिए बहु वर्ण । अ क च ट त प य श ये बहु वर्ण ॥
दल अंतर अंतर सुभनाम । दरशन ज्ञान चरित्र सुभाम ॥१८२॥

पुनि चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी । अंबा पद्मावती पौमिनी ॥
व्याल्ली जिपिके गुनहु विसाल । लिखिए तहाँ दसौं दिगपाल ॥१८३॥

गोमुख जरवेसुर लेखिए । बाहरि मालवत वाणिए ॥
क्षपगुप को थापिए सारंग । बहाँ द्वार उद्योत अभंग ॥१८४॥

वसु दिन पालही सील सुभाउ । इंद्रिनी की जयसदु सिराउ ॥
मूल मंत्र वसु दिन भाषिए । होउ नवीत भाउ राषिए ॥१८५॥

संक्षेपह विधि यह मैं कही । सुनी सुनत भई गहु मही ॥
दुष्ट कुष्ट तन नीको होइ । रोग सोग सब डारें धोइ ॥१८६॥

वितर प्रेत भै न कछु करैं । बसीकरन मोहन सब हरैं ॥
होई जसु धन बढ़ै अपार । पुत्र कलित्र बाढ़ै परिवार ॥१८७॥

नर अरु नारि सबै सुख लहैं । दुःख दारिद्र तहां नहीं रहैं ॥
सुनि पुत्री पूजा विधि जिसी । तो सौं वचन कही हौ तिसी ॥१८८॥

कातिक फागुन असाढ़ बखानि । स्वेत पक्ष निर्मल अति जान ॥
अष्टमि दिन कीजे उपवास । कीजे इंद्रिन की सुख नास ॥१८९॥

वसु दिन ब्रह्मचर्य मंडिए । घर की चिंता सब छांडिये ॥
सिद्धचक्र वसु दिन तजि आंनु । कीजे पूजा मिटै कमसांनु ॥१९०॥

नीकै करि थिर मनु राषियै । मूल मंत्र पुनि पुनि भाषिये ॥
मनवांछित फल पावै जबै । उद्यापन विधि कीजे तबै ॥१९१॥

व्रतका उद्यापन

कीजे आठ भुवन जिन तनैं । धरिए आठ बिंब अति घनैं ॥
कीजे सिध जंत्र सुभ अट्ठ[1] । थापै मुनिवर गुनह गरिट्ठ ॥१९२॥

झलरि मुकट चमर सुभ थान । कीजै आठ आठ परवांन ॥
कीजं आठ प्रतिठ्असार । बहु धन खरचैं चित्त उदार ॥१९३॥

पूजा आठ करो धरि भाउ । अथवा एकै मन करि चाउ ॥
उद्यापन कछु होइ न जाहि । तौ दूनौ व्रत कीजिए तिनाहि ॥१९४॥

---

१ आठ

मिस जोग बहु दीजे दान । चौसंघहु भरिए अति मान ॥
अंजिका मैं सारी पहुराइ । आठ पंच दीजिए सिराइ ॥१९५॥

दुखी दीन दालिद्री जिते । करि सनमान पोषिये तिते ॥
सुंदरि अरु श्रीपाल कुंवार । सुनि मनमें सुख कियौ अपार ॥१९६॥

गुरु कौं नमस्कार करि चले । वह जिन मंदिर दोऊ भले ॥
रहे सुपसु बहु करै उल्हास । आय पहुंती कातिग मास ॥१९७॥

कातिक की अष्टान्हिका

ससि पखहू अष्टमी दिन भयो । [illegible] ॥
न्हाए अंग पहरियौं वस्त्र । अति उज्वल देखिये समस्त ॥१९८॥

सर्व द्रव्य लिए भरि थाल । अति हर्षित मन [illegible] ॥
इंछिमुक्ति भए जिन देह । वीतराग [illegible] सुभ देह ॥१९९॥

तिहूं गुप्ति मन वच अरु काय । [illegible] जिन [illegible] ॥
थिरमन होय कियो अति भाइ । [illegible] पूजनी की [illegible] ॥२००॥

वसु दिन प्रति विधि स्यौ मांडियौ । राग रोस दोऊ छांडियौ ॥
जानैं सम सो वसु अरि जित । [illegible] ॥२०१॥

मुनि पै लीन्हौ कियौ उपास । उपज्यौ दुष्ट कर्म कौ नास ॥
नीकै सिद्धचक्र पूजियौ । सुभभाव गंधोदिक लियौ ॥२०२॥

गन्धोदक लगाना

अति सुगंध को करै विस्तार । वंछित भई जहां भरतार ॥
सिरतैं तहं [illegible] छोड़ । प्रथमहि दिन कछु नीकौ होइ ॥२०३॥

श्रीपाल अरु सातसै कुबंग । देखियौ [illegible] अपंग ॥
वसु दिनि [illegible] ॥२०४॥

हरै पीर [illegible] ॥
[illegible] ॥२०५॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥२०६॥

कछुक कीन्हीं सुन्दर माल । स्वेत अरुन देखिए विसाल ॥
कछु कुसुम अति छूटे लए । भरि भरि अंजुरि जिन कौं दए ॥२०७॥

नइवेदक पकवान अपार । श्री जिन आगैं रचे अवार ।
बारि धरे तहां दीप अनूप । खेयौ वर कृष्णागर धूप ॥२०८॥

नाना विधि फल धरे सवारि । मनबांछित को कहै बिचारी ॥
श्रीपाल पूजा की जहां । आठौं द्रव्य चढाए तहां ॥२०९॥

कुसमांजुलि दे सिर नाइयौ । दुग्ध जलांजलि पानी दयौ ॥
प्रथम ज पूजा इक गुनि करी । दूजे दिन दह गुन विस्तरी ॥२१०॥

तीजैं सौं गुनि पूजा सची । सहस गुनी चौथे दिन रची ॥
पचम दससहस गुन भनी । लक्षगुणी षष्ठै दिन तनी ॥२११॥

सातैं दिन दसलक्षरण गुणी जानि । अष्टम कोटि गुणी परवानि ॥
ठाडे सब सुर कौतिग हार । मनमे कीयौ हरिष अपार ॥२१२॥

अति सुकंठ लीनी जैमाल । उपज्यौ कौतूहल तिह काल ॥
सुंदरि महा आरती रचैं । इंद्र इन्द्राइनि दोऊ नचैं ॥२१३॥

सुर बाजे बाजैं अनिवार । मधुरी धुनि सोभा अधिकार ॥
जिनके नाम न बरने जाहिं । नाचैं किन्नरि अति मुसकाहिं ॥२१४॥

अमरेसुर सब चढै विमान । पहुंचे आप आपने थान ॥
पूजा करी भरम सब भग्यौ । कोटीभट आठौं निसि जग्यौ ॥२१५॥

कुष्टरोग नष्ट होना

तीन दिवस गंधोदक न्हाइ । कोढ मिट्यौ पर्यौ वह राइ ॥
कंचन वर्न भयौ तनु इसौ । सोहत कामदेव को जिसौ ॥२१६॥

और जु बली सातसै मित्र । तिनहू के तन भये पवित्र ॥
और जु कुष्ट देह हे जिते । गंधोदिक नीके भये तिते ॥२१७॥

भूत पिसाच निसाचर मंत । नासै गंधोदिक परसंत ॥
मोहन वसीकरन जे आहि । बिसहर डाइनि साइनि जाहि ॥२१८॥

नैननि रुग श्रवन विधि जिते । नीके भए सबै नर तिते ॥
अरु जे दुष्ट कर्म दुख दबे । सुख पावै गंधोदिक लगे ॥२१९॥

नर नारी मन बच करि कोइ । सिद्ध चक्र आराधै जोइ ॥
सो प्रगटै तिहुं लोक मझार । सो भुंजै बहु सुक्ख अधिकार ॥२२०॥

बाढै बिभौ बिभा समसान । करै राज सो इन्द्र समान ॥
नाना फल बिलसैं सुभराइ । मरिकैं बहुरूचो मुकतिहु जाइ ॥२२१॥

जाके जल न्हावैं कवि कहै । कुष्ट व्याधि नहिं तन मैं रहै ॥
याको इचरज कछू न आहि । जो करि है सो पावै ताहि ॥२२२॥

मैंनासु दरि पिय की देह । देषत नह भरि आई नेह ॥
तब तासौं मुनिवर यौ कह्यौ । यह फल तैं सब सुरत ही लह्यौ ॥२२३॥

मुनि की वन्दना करना

स्वामी तुम प्रसाद सब एहु । बहुत बिनति कीनी धरि नेहु ॥
चरन कमल मुनिवर के बंदि । दोऊ घरि आए आनंदि ॥२२४॥

गयो असुभ सब धर्म सहाइ । आइको सुख कौं कहै बढाइ ॥
धर्म एक त्रिभुवन मैं सार । धर्म दुष विनासन हार ॥२२५॥

धर्म की महिमा

धर्म हि ते नर भौ पाइए । धर्म हि कुल उत्तिम पाइए ॥
धर्म हि ते कीरति बिस्तरै । धर्म हि ते कोऊ बैर न करै ॥२२६॥

धर्म हि ते बाढै परिवार । पुत्त कालित्त रु बिभौ अपार ॥
धर्म हि ग्रह व्यापै नहि कोइ । धर्म हि ते सब कारिज होइ ॥२२७॥

धर्म हि ते नहि चढै कलंक । धर्म हि ते सबै सुर रंक ॥
धर्म हि ते नर बैर न बहै । धर्म हि ते कोई बुरी नवि कहै ॥२२८॥

धर्म बिहूनां सेइ बिकाइ । सब अघु आप दिषावै आइ ॥
महूं केस उपजोहुं जबैं । चरम राषि सेतु है तबैं ॥२२९॥

धर्म हि ते सब मिटै किलेस । धर्म हि ते नरि होइ सुरेस ॥
बहुत बात को कहै बढाइ । धर्म हि के नर मुकितहु जाइ ॥२३०॥

कवि परमल्ल कहै चित चाहि । धर्म बिना को हितू न आहि ॥
प्रानी तजि परपंच बिकार । करहु धर्म ज्यौं उतरै पार ॥२३१॥

और कछू सब दुष को धाम । धर्म एक जु सुख को नाम ॥
धर्म हि ते श्रीपालहु रूप । मकरध्वज सम भयो अनूप ॥२३२॥

कुष्ट व्याधि तैं लयौ उबारि । पाइ महा मनोहरि नारि ॥
हुई परसपर सुख अपार । भोग भोगवै विविध प्रकार ॥२३३॥

जिन मंदिर नित जिन पद धरैं । निज गुर की ते अस्तुति करैं ।
बिलसैं बिभौ देहि बहुदान । गुनी जन सर्व लहै तिहा मांन ॥२३४॥

याहि विधि जिय संग सुख माहि । कुल संग जग पूजै ताहि ॥
महासुख उपनो नौरंग । सेवा करैं सात सै संग ॥२३५॥

इति श्रीपाल चरित्र महापुराणे भव्य संघ मंगल करणं ।

दुखजन मन रंजन, पातिग भंजन, सिवपद विविध सुख हरणं ॥

त्रिभुवन सुख कारण, भवजल तारण, चौपई बंध परिमल कृतं ॥
मद सुंदरि पाई, विधा सुभाई, श्रीपाल सुख राज करे ॥

इति

× × × × × ×

इसके पश्चात् श्रीपाल का जीवन ही बदल जाता है। वह विदेश यात्रा करता है। बारह वर्ष तक विभिन्न द्वीपों में भ्रमण करता है। इसी यात्रा के मध्य में अनेकों विपत्तियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन अन्त में वह पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। अन्त में पूर्ण वैभव एवं सेना के साथ वह वापिस मैनासुन्दरी के पास लौटता है। कुछ समय तक अपने ससुर के यहां रहने के पश्चात् वह वापिस अपने देश को लौट आता है।

× × × × × ×

श्रीपाल चरित का अन्तिम पाठ

चौपई

श्रीपाल की सेना

वीरदमन सो मुनिवर भयौ । परमविरद तिप्तनी चढ़ौ ।।
श्रीपाल सुं ज सुभराज । तिहयाक जग को सुख साज ।।१।।

सरव जीव की रक्षा करै । दुर्जन [illegible] जग जीव मैं डरै ।।
मनमैं परिग्रह संख्या किये । और निवृत्ति सबै परिहरि ।।२।।

आठ सहस [illegible] । [illegible] ।।
बीस लाख रावणिया तुरंग । सोलह लाख रथ वर अंग ।।३।।
पैदल संख्या कहीयन जाइ । बहुत रिधि को कहै बढ़ाइ ।।
संख्या सकलनकी जो कहौं । कहत कथा कछु अंत न लहौं ।।४।।

दोहा

अशुभ कर्म भयौ दूर सब, शुभ प्रगट्यो सु प्रचंड ।।
राज करै विलसै विभौ, श्रीपाल [illegible] ।।५।।

कीयो सुजस भुव लोक मैं, दुर्जन के उर सल्ल ।।
सकल जीव रक्षा करन, श्रीपाल भुव मल्ल ।।६।।

एक छत्र सो भयौ नरेस, जाको परिजन बहुत असेस ।।
दीपानी ते नृप आए साथ, बहु सुख दे सम दे नरनाथ ।।७।।

चौपई

सत राज पारै वर धीर । दुष्ट अगनि भई वरवीर ।।
दयावंत नहीं तांहि समान । कोऊ मिटि न सकई आन ।।८।।

तिनसौं नेह कियौ असमान । बोली श्रीपाल की आन ।।
सेवक हूं अपनै करि नृप । ते निरखै सबही के भूप ।।९।।

[illegible] पाली जिकी । राजनीति वह पारै तिसी ।।
जिनको बास पहुंचै चित्त । [illegible] सुख सो सु दै नित्त ।।१०।।

इह विधि राज करै नरनाह । [illegible] उछाह ।।
दीन दुखित [illegible] । कोटि [illegible] ।।११।।

पुत्र प्राप्ति

बहुत दिवस यों बीते जांय । रहुत प्रेम सुंदरि कौ तांम ।।
मैनासुंदरि कैं मन चाउ । भयौ दोहरो निर्मल भाउ ।।१२।।

दांन पुंन्य परि राखैं चित्त । आराधै जिन नाम पवित्त।।
पुंन दोहरी उपज्यौ जिती । सिरीपाल सब पुरयौं तिसी ।।१३।।

पूरे भए जबै दस मास । जिन गुन गावत सुष विलास ।।
भयौ पुत्र सब लछन सार । कुल सशिहर उपज्यौ कुंवार ।।१४।।

सब कुटंब आनंदित भयौ । अतुल द्रब्य जाचिग जन दयौ ।।
कह्यौ जोवसी सब सुभ्यांन । धनपाल है याकौ नांम ।।१५।।

महीपाल ता पीछैं भयौ । तीजौ पुत्र देवरथ ठयौ ।।
चौथो भयौ महारथ बरी । च्यारि जने मैंनासुंदरी ।।१६।।

मंजुसा जाए सुत सात । दुज्जन भजन जिनके गात ।।
पांच पुत्र जाए गुंनमाल । अति बलिष्ट अरु गुनह विसाल ।।१७।।

सब सुंदरी नि सत कर धरे । एक हि एक रूप आगरे ।।
कोटी भट सब सुत जनए । बारैंसहस्र आठसैं भए ।।१८।।

बाढे दिन दिन सबै कुवार । और ही रूप और ब्यौहार ।।
मंडलेश्वर श्रीपाल नरिंद । दीसै मनौ दूसरौ इंद ।।१९।।

दोहा

जानैं ऐसो फल भयो, मिट्यौ अशुभ सब कर्म्म ।।
यहै जानि नरलोक हौं, पालौ जिनवर धर्म्म ।।२०।।

धर्म का महात्म्य

चौपई

धर्म्म एक त्रिभुवन मैं सार । धर्म्म कुगय विनासन हार ।।
धर्म्म एक सब सुष कौ कंदु । धर्म्म एक भंजै दुह दंदु ।।२१।।

धर्म पसाइ गज गुंजरैं । धर्म पसाइ हींस हय करैं ।।
धर्म पसाइ चवर सिर ढरैं । धर्म पसाइ छत्र सिर धरैं ।।२२।।

धर्म पसाय सुष अधिकार । धर्म पसाइ सबै नरपार ।।
धर्म पसाइ सुजस बिस्तरै । धर्म पसाइ सकल दुख हरै ।।२३।।

धर्म पसाइ रूप अधिकार । धर्म्म पसाइ सेवैं नर पार ।।
धर्म्म पसाइ सुजस बिस्तरैं । धर्म्म पसाइ सकल भै हरै ।।२४।।

धर्म पसाइ सुरति तनु होइ । धर्म पसाइ जाइ भव मोह ।।
धर्म पसाइ मिलै वरनारि । सचि मृगनी रंभा उनिहारि ।।२५।।

अमृत बैन सुख की खांनि । तीन पुरंदर सेवैं आनि ।।
धर्म पसाइ होंहि सुख सबै । जिनकी सोभा कहत न बनै ।।२६।।

धर्म पसाइ सेवक सुर करी । धर्म पसाइ संकट नहि परी ।।
धर्म पसाइ न वैरी करै । धर्म पसाइ सिंह नहि चरै ।।२७।।

धर्म पसाइ सिप पति होइ । धर्म पसाइ जाय भय सोइ ।।
धर्म पसाइ ज्वाला नहि जरै । सो प्रांनी मधुर हूँ परै ।।२८।।

धर्म पसाइ रोग मरि जाइ । धर्म पसाइ धरै सब पाइ ।।
धर्म पसाइ न मूसे चोर । धर्म पसाइ न व्यापै चोर ।।२९।।

धर्म पसाइ होइ जल पार । नदी सरोवर सागर धार ।।
धर्म पसाइ न दोहै धाड । धर्म पसाइ मिटै भव भाड ।।३०।।

धर्म पसाइ देव वसि रहै । धर्म पसाइ भली सब कहै ।।
धर्म पसाइ उच्चाटन सबै । धर्म पसाइ दैषि रिपु भजै ।।३१।।

धर्म पसाइ धन कुंचन लहै । धर्म पसाइ सोक सब बहै ।।
धर्म पसाइ परम मति होइ । माया मोह निवारै सोइ ।।३२।।

धर्म पसाइ देइ बहु दान । धर्म पसाइ मिटै अवसान ।।
धर्म पसाइ पंचव्रत धरै । भव के दुःख सबै परिहरै ।।३३।।

धर्म पसाइ डिगै नहि चित्त । आराधै जिन नाम पवित्त ।।
धर्म पसाइ कर्म कौ नास । धर्म पसाइ ग्यांन परकास ।।३४।।

धर्म पसाइ बहुत को कहै । प्रानी मुकति जाय घर लहै ।।
इंद्र आदि सब सेवै पाइ । बहुरि न भव में आवै जाइ ।।३५।।

धर्म पसाइ मोक्ष गति होइ । धर्म पसाइ मुकति घर सोइ ।।
धर्म पसाइ पंच पद होइ । तातै धर्म करौ सब कोइ ।।३६।।

दोहा

प्रानी सुनौ चरित्र यह, मन देवी थिर थोइ ।।
धर्म हिये संसार के, जाते सिव पद होइ ।।३७।।

एकहु दिन श्रीपाल नरेस । बैठ्यौ संघासन अलवेस ॥
वाम अंग मैनासुंदरी । रूपवंत सब ही गुंन भरी ॥३८॥

ढरै चमर सोहे सिर छत्र । हर्षित चित महा सुभ सत्त ॥
आगे नाटिक नचैं अपार । गीत विनोद हो हि अधिकार ॥३९॥

बुधजन भाषै जिनपुरान । सुनियै ताको अरथ बषान ॥
कस्तूरी चोवा अरु भेद । कपूर जवादि वासकौ भेद ॥४०॥

कुंकुम सों मर्दै वसु अंग । चहुंघा फैली बास अभंग ॥
इह सुष आसन बैठ्यौ जाम । आ वनमाली प्रणम्यौ ताम ॥४१॥

मुनि दर्शन

अैसे भाष्यौ मधुराई जेव । भो भूपति सुपकलि जेव ॥
लै फल फूल छहों रितु तनैं । जिनकी सोभा कहत न बनैं ॥४२॥

उपवन सब परिफूलित भयो । देषत ही वेरी सुष भयो ॥
आवागमन भयो मुनि तनौं । वा सोभा कैसैं कर भनौं ॥४३॥

यह सुंनि श्रीपाल वुधियो । सिंघासन ते उठि हरषियो ॥
सात पैड उसर्यौ तब सोइ । प्रोष्यनयो मनमैं सुष होइ ॥४४॥

वस्त्राभरन उतारे सबैं । वनमाली कौं दीए तबैं ॥
पुनि बैठ्यो राइनि कौ राउ । सैंन समान सु उपज्यौ चाउ ॥४५॥

अति उदार ताकौ चित भयौ । बहुत दर्ब वनपालहमौ ॥
आनदभेरि दिवाई तबै । नगर लोग चलि आए सबैं ॥४६॥

चउरंग दल चल्यौ अभंग । अंतेवर सब लीयौ संग ॥
ते परफूलित चली बिसाल । जिन गुंन गावत आछी ढाल ॥४७॥

करै सग सब मंगलाचार । बहुत परिग्रह चल्यौ अपार ॥
पंथ न सूझै छिपियो भान । सिरीपाल मनमैं रंजान । ४७॥

अैसे दलसौं पहुतौ तहाँ । उपवन अति मनोहर जहाँ ॥
कुसमित कुसुम वृक्ष अधिकार । जह तह वासु लेत अलिभार ॥४९॥

मद पवन अति सीतल बहै । अति सुवास जन कौं सुष बहै ॥
कछु कदम मोर कछु हरे । कछु कंच फूले कछु फरै ॥५०॥

रति बसंत सोहत बन जिसो । मुनिवर पुण्य भयो बन तिसो ॥
द्रुम असोक सुंदरता मांहि । ताकी अति सुंदर सुभ छांहि ॥५१॥

सब सुभ करि श्रीपाल हि दीठ । ताकों लाग्यो मन कौ ईठ ॥
ता करि सुद्ध चित्त सुबहुत । मुनिवर बैठ्यो तहां महंत ॥५२॥

देख्यौ श्रीपाल नरेस । मनमैं उपज्यो सुभ [illegible] ॥
एक परम पद जाने सोइ । केवल ग्यान [illegible] सोइ ॥५३॥

मुनि बरनन

राग रोस नहि जाके चित्त । संजम [illegible] पाले नित्त ॥
तीन गुपति जाके परमत्थ । रत्नत्रय भूषन समरत्थ ॥५४॥

तीन सल्लि छेदन सिवकंत । ध्यान धरन [illegible] संत ॥
भव जलनिधि तारन जिहाज । पंच महाव्रत धर मुनिराज ॥५५॥

मकरध्वज पंडयो करि काज । [illegible] आसन राज ॥
अष्ट कर्म मायर मद हरता । अष्ट सिद्ध गुन धारक करता ॥५६॥

नवविधि ब्रह्मचर्य प्रतिपाल । दसलछन गुन धरन दयाल ॥
एकादस प्रतिमा जिन माहि । द्वादसांग वाचन कौ चांहि ॥५७॥

बारा विधि तप करै प्रमांन । द्वादस भावना धरनं सुजांन ॥
बाइस परीसह सहनं अपार । पंच महाव्रत पालन हार ॥५८॥

देषत उपजै हर्ष बिसाल । ऐसो मुनि वंदो श्रीपाल ॥
तीन प्रदक्षणा दीनी ताहि । निमसकार कीयो ता माहि ॥५९॥

आपन [illegible] परवांन । नयर लोग संजुत [illegible] ॥
बैठ्यो ता मुनीस के पास । अति आनंदित भयो उल्हास ॥
सब मिलि अस्तुति कीनी जबै । धर्मवृद्धि मुनि दीनी तबै ॥६०॥

बहुरयो निमस्कार करि राउ । पूछन लागो मनि धरि भाउ ॥
भो मुनि करुना सरवर धीर । [illegible] धर्म बुद्धि गुनगंभीर ॥६१॥

जातैं जीवन मरन न होइ । [illegible] ॥
दुरगति पंथ निवारन [illegible] ॥

मुनि द्वारा धर्मोपदेश

यह सुनि मुनि जंपै सुभ कंद । सुनौ राइ निज कुलके चंद ।।
धर्म वृद्धि हौ भाषौं पिसी । श्रीजिन आपुन भाषी जिसी ।।६३।।

बडो धर्म दस लछन जानि । गुंन अनंत को कहै बखानि ।।
अरु सम्यक दरसन सुभ जोइ । धर्ममूल है प्रथमहू सोइ ।।६४।।

अतुल लछि समिकत ते सर्व । समकित ते लहिए सिव दर्व ।।
समिकत तीर्थंकर पद करै । समिकत गुंन अनंत संचरै ।।६५।।

सम्यकु सर्व होय दुष नास । सम्यकु सबही सुषकी रास ।।
समिकत बिन दुष पावै तवै । सम्यक बिन नर भवमैं भर्मै ।।६६।।

सम्यक गुन जाके मन माहि । सबै गुंन आवंहि ताहि ।।
तपु जपु संजमव्रत अरु पुन्न । सम्यक एक बिना सब सुन्न ।।६७।।

अब सुंनि श्रावक व्रत हो राइ । संषेपौं कहौं समझाइ ।।
मन वच काइ त्रिसुध्यो चित्त । जीवौ घात न कीजिए मित्त ।।६८।।

थावर बिनु कारन टारिए । प्रथम अनोछत जल टारिए ।।
सबै मुष सबै जी रहै । मिथ्या बचन भूलि नहि कहै ।।६९।।

अलियो बोल बोलिए जबै । जीव बिराधत उबरै तबै ।।
पुरपट्टन कारन मैं आइ । परधन दिष्टि परै जो आइ ।।७०।।

लेइ अदत्तन उत्तिम सोइ । त्रिन समान देषै जिय जोय ।।
कबहुं न चोर संग जाइए । ताको हर्‍यौ न मनु लाइए ।।७१।।

परदारा न देषिए नैन । माता बहन सम बोलहु बैन ।।
हय गय रथ अरु दासी दास । वस्त्राभरन और घरवास ।।७२।।

गाइ भैंसि अरु षेत बषांन । इन संख्या कीजिए प्रवान ।।
अनोवरत एकादस सार । जीव दया गुंन पंच प्रकार ।।७३।।

दोहा

जो को पारै भाव धरि, सुभ गुन मन लोय ।
भव दुष सकल निकंदिकै, मुक्ति [illegible] होय ।।७४।।

पुनि धनोकुल सुनि हो राइ । दिसि सब [illegible] लोग की जाइ ॥
इनकी संख्या है है और । एक प्रथमपुन जानी सौर ॥७५॥

हीन मलेछ बसत है जहां । कबहूं मुनिन जइये तहां ॥
पुन्न प्रभावना जहां न सोइ । तहां विवेकी लोग न कोइ ॥७५॥

नदी मंजार स्नान किन किते । भोजन [illegible] बहुत ही किते ॥
तिनमैं ते लीजिए [illegible] । बरो एक [illegible] है बहु [illegible] ॥७६॥

मैन लोहु लाख मद रास । मधु [illegible] मुत हरिलाल ॥
मद तिन मैं बखिए परवांन । धर्मवंत सब गुन जान ॥७७॥

यह उद्यम सबही ते हीन । पर इन [illegible] लेइ प्रवीन ॥
प्रथमहि जिन चैत्याले जाइ । तब उदिम प्रारंभै प्राइ ॥७८॥

कै प्रतिमां पूजै निज गेह । तब भोजन सौं पोषै देह ॥
उत्तर दिसि सनमुष सुभथान । पालिक सैन करौ भर जान ॥७९॥

कीजै सामाइक त्रिन काल । मूलमंत्र जपिये सुविसाल ॥
राग दोस दीजै [illegible] । पंच परमगुर [illegible] ॥८०॥
संजम [illegible] जांह । सुभ भावना करौ मनमांह ॥
तिहता [illegible] सार । [illegible] न [illegible] ॥८१॥
एक मास मै [illegible] बार । कीजै [illegible] मन सुभ विचार ॥
[illegible] रैन [illegible] । [illegible] अभिराम ॥८२॥

इंद्री पोषन कीजे भाव । इनकी संख्या कीजै राव ॥
ऐसी विधि ते बाढै धर्म्म । नासै सकल पाप अरि कर्म्म ॥८३॥

पुनि [illegible] श्रावक [illegible] । [illegible] के रोग [illegible] ॥
च्यारि प्रकार दांन जो देइ । [illegible] ॥८४॥
[illegible] करै [illegible] । [illegible] ॥
करै [illegible] । [illegible] ॥८५॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥८६॥
[illegible] ॥
हाइ हाइ [illegible] । [illegible] ॥८७॥
[illegible] ॥
ए बारह [illegible] बिबिध प्रकार । [illegible] ॥८८॥

कहै मुनिंद सुनौं श्रीपाल । इनतैं कर्म कटैं ततकाल ।।
हरष्यौ नृप इह सुनियौं जबै । पराविधि मुनिवर पूछयौ तबै ।।८९।।

श्रीपाल द्वारा प्रश्न

दोहा

भो ज्ञान दिवाकर परमगुरु, गुन रत्नाकरि जांनि ।
हमैं भवातर है जिसे, तैसैं कहौ बखांनि ।।९०।।

चौपई

कौन कर्म करि कोढि भयौ । क्यौं मैं सिद्ध चक्र व्रत लयौ ।।
क्यौं हूं पर्यौ समद मैं जाइ क्यौं भुजबल तिरयौ निकुताइ ।।९१।।
कहौ कर्म्म स्वांमी मो तनौं । भांड विगोवौ कीनौं घनौं ।।
कवन कर्म्म ते मेटियौ सौंहि । यह संसौ मेरैं मन होहि ।।९२।।

मुनि द्वारा प्रश्न का उत्तर

यह सुनि मुनिवर जंपै तबै । सुनि श्रीपाल कर्म्म निज सबै ।।
भरत क्षेत्र सब सुक्ख निधान । कर्म्म कोटिभट परवान ।।९३।।
तामैं रत्न चंपापुर जांनि । वन उपवन करि सोभित मांनि ।।
जह श्रीकेतराउ बलि बंड । विद्याधर सोहियै अखंड ।।९४।।
विद्या जानैं अति चतुरंग । कुल बल रूप सोरंप अभंग ।।
तसु भामा श्रीमती सुजांन । सब अंतेवर मैं परधान ।।९५।।
अह निसि पिय मन रंजन करन । रूपवंति सीलवंति मति हरन ।।
जैन धरम पालन परवीन । पात्रहि दान भक्ति अति लीन ।।९६।।
अंनह दिन नृप ताहि समान । गयौ जिन मन्दिर मन कल्यांण ।।
महामुनिस्वर वंदौ जाइ । फिर ताढिग बैठयौ सुख पाइ ।।९७।।
मुंनि सु प्रसंन भयौ तिहवार । लाग्यौ भाषन धर्म विचार ।।
पुंन्य पाप जैसौ फल आहि । कह्यो प्रगट राजा सौं ताहि ।।९८।।
सुंनि नृप मनमैं हरष्यौ जांनि । जैसौ मुनिवर कह्यौ बखांनि ।।
आनंद्यौ राजा घर गयौ । जैन धरम धारैं सुख भयौ ।।९९।।
बहुर्‌यौ असुभ उदै भयौ आइ । श्रावक व्रत दीए छिटकाइ ।।
जोवन मद श्रीमद भयौ राउ । भयौ विकल कैं कहु बढाइ ।।१००।।

मिथ्या कर्म उदै भयौ तास । [illegible] गुर मिथ्या कौ पास ।।
कबहूं जैन [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।१०१।।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।
मुनिवर एक [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।१०२।।
सहे परीसा [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।
हेम पटल सौ [illegible] [illegible] । रवि आकार न [illegible] [illegible] ।।१०३।।
[illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।
ताहि देषि [illegible] [illegible] कियौ । [illegible] [illegible] [illegible] ।।१०४।।
सागर [illegible] [illegible] [illegible] । ताकौ मन [illegible] [illegible] ।।
पुनि करुना [illegible] मन आइ । [illegible] [illegible] ।।१०५।।
कछु [illegible] [illegible] हूं भयौ । निज मन्दिर [illegible] [illegible] ।।
अंनह दिन बन गयौ तुरन्त । देष्यौ तिव मुनिवर [illegible] ।।१०६।।
पर मत तु [illegible] मुनिराउ । [illegible] [illegible] [illegible] ।।
घोर वीर तह षीनौं अगु । भरयौ धूरिसौं वीसं अंगु ।।१०७।।
रत्नत्रय व्रत ध्यावैं चित्त । मांस एक पित्र आहार तिथित्त ।।
आवत हौ सो नगर मझार । देषि राइ तुष कियौ अपार ।।१०८।।
बोल्यौ मुनिवर सौं तिहवार । तैं कत षोई लाज गंवार ।।
नांगौ भयौ फिरत बेकाज । काया मैली अति बेसाज ।।१०९।।
मार मार करि उठियौ ताहि । असिवर तै सिर काटौ याहि ।।
बहु उपसर्ग ताक कौं करयौ । बारंबार [illegible] [illegible] ।।११०।।
अति हास्य कियौ ता तनौं । [illegible] कहु [illegible] [illegible] ।।
[illegible] [illegible] [illegible] मयौ । ताहि [illegible] [illegible] [illegible] ।।१११।।
महा पाप [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।
[illegible] [illegible] [illegible] । मुनि [illegible] [illegible] [illegible] ।।११२।।
कबहुं जलमैं [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।
यह सुनि रानी [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।११३।।
कौन पाप तैं [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।
महा [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ।।११४।।

दोहा

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।।
निंदा अपनी करत सौ, [illegible] [illegible] [illegible] ।।११५।।

चौपई

राजा आय गयौ तिहु बार । पहुतौ सो रांनी दरबार ॥
जो देखै तो बिलखी थाइ । कारनौ पूछत अकुलात ताहि ॥११६॥

प्रान पियारी ए बरनारि । कारन कहा सु कहहि बिचारि ॥
हसइ न बोलै जो मुरझाइ । रांनी कहि निरखेव सुभाइ ॥११७॥

बोली एक चेटिका तबै । राजा बात सुनौं यह सबै ॥
तुम श्रावक सुत दीयौ आहि । तुम मुनिवर निंदे वनमाहि ॥११८॥

घर जल मैं दीने डरवाइ । करि उपसर्ग तबै लिए कढाइ ॥
काहू मोसौं कहियौ आइ तातै । सोचि रही मुरझाइ ॥११९॥

यह सुनि राउस लज्जित भयौ । अपनौं चूक जानि परमयौ ॥
बार बार जंपै है जिया । मौ पापी अकर्म सब किया ॥१२०॥

जो तैं असुभ उदय भयौ आइ । सेए मिथ्या गुर के पाइ ॥
ताकी सीष नीकै सुनि लई । नांठी सुमति कुमति अति भई ॥१२१॥

हूं पापी पातिक कौ मूर । हौं गुन हीन महा जड़ कूर ॥
हौं अभिमान महा मद भरौ । देखत अंध कूप मै परो ॥१२२॥

तुम सौं कहा कहौं हो सालि । नर्क पंथ तै लै मो राषि ॥
रांणी वचन सुणे ए जबै । दयावत ह्वै बोली तबै ॥१२३॥

स्वांमी तुमी सब मजुकतौ करी । धर्मकथा मन दै बीसरी ॥
मुनिवर निंदे अति दुषदयौ । मुनि के मोहि महा दुष भयौ ॥१२४॥

अब तुम सुनहु धर्म की रीति । बहुत न्याई मति राख्यौ प्रीति ॥
जिन सासन सुत निंदै कोइ । अवनी चहुंगति भ्रमि है सोइ ॥१२५॥

जौं पापी निंदै बहु भाइ । सो निहचै करि नर्कहि जाइ ॥
पंच प्रकार सु देखहि दुष । किंचित कहून पावै सुष ॥१२६॥

सो प्रानी पीडिजे सुभाइ । कंपित सूली दीजै जाइ ॥
पुनि उपल मैं डारियै सोइ । मूर भेट जब ताकी होइ ॥१२७॥

बहुरूपी उपजै ताहि सरीर । बहु दुःख पावै प्रांनी धीर ॥
संडासनी तन तोरैं मारि । नोंचैं ताहि देह बहु मारि ॥१२८॥

गाली रांघ ताको मुष भरै । कुंभकारनि मुह्रं कूं पीकरैं ॥
बहुदहाति अति पुतरी लाइ । बैठावै घर फंड लगाइ ॥१२९॥

परतिय रावन लेहु सुख एहु । चोरि करहु पराऐ जाहि लेहु ॥
कछु जीव मति करहु संताप । सो कहूं चोर कियौ तैं पाप ॥१३०॥

तैं जिन अरु सेइयौ बन अरुयौ । तैं अज्ञान मुनिंद न बूझयौ ॥
तैं मुनिवर निंदे अविचार । तिन कारन दुख भये अधिकार ॥१३१॥

तैं पर हुर्यौ सीलवत नारि । तू सेवत पापिन की वानि ॥
यह दुख सुंनि नाहु संसार । करहि परम दुख मंहि अपार ॥१३२॥

सुंनि स्वामी नरकह दुख डरौ । तो सौं मैं सु अकारथो कियौ ॥
या भवमें कछु पुंन्य उपजाइ । सुंनि पै जिनवर व्रत लै जाइ ॥१३३॥

यह सुंनि राजा मिथ्या अयान । पहुच्यौ जाइ जिनेसुर थान ॥
तहां मुनीसर देख्यौ धीर । सुध की निधि अरु गुंन गंभीर ॥१३४॥

ग्यान धरण निःसुध उदास । बंदे चरण अनत सुख जास ॥
जंपै राउ जोरि द्वै हाथ । हौं पापी अति सुनि हौं नाथ ॥१३५॥

बहुत पाप मैं कियौ बिचारि । नरक पड़ते लेहु उबारि ॥
धर्म प्रयासि पंचगत मरन । अबहूं आयौ तेरी सरन ॥१३६॥

श्रीपाल द्वारा पूर्वभव में सिद्धचक्र व्रत ग्रहण

यह सुनि मुनिवर भयौ दयाल । सिद्ध चक्र व्रत लै भूपाल ॥
तासौं होइ पापकौ छेद । ताकी जुगति सुनौं यह भेद ॥१३७॥

कातिक फागन मास असाढ । स्वेत पक्ष सब सुख को ठाढ ॥
अष्टमी दिन उपवास कीजिए । वसु दिन सिद्ध चक्र पूजिये ॥१३८॥

अतहु निसि जागरन करेइ । दान सुपात्रहि सो पुन देइ ॥
वसु दिन सील बरत धारिए । वैयावृत चित्त धारिए ॥१३९॥

पुनि उजोवंन करै धरि भाउ । करै प्रतिष्ठा पाठ बनाउ ॥
अथवा सांतिक विधिकौं करै । यौ जिन पूज करै भौ हरै ॥१४०॥

धजिया सारी दीजै आनि । पुस्तक दीजे मुनिवर जानि ॥
गुंबार [illegible] दीजै [illegible] । आठ [illegible] ते लिखे ॥१४१॥

श्रीमणहर [illegible] व्रत एहु । करै जीव सुख भुंजै सिव गेह ॥
यह सुंनि राउ जिनेस्वर बंदि । सिव संजुक्त बहु भयौ अनंदि ॥१४२॥

[illegible] । [illegible] सिद्ध चक्र सुख भाय ॥
तीन बार सौ लेइ प्रवानि । [illegible] सुख जानि ॥१४३॥

कुंकुम अरु कपूर बर गारि । चंदन लेइ पवित्त निहारि ॥
अरु अखंड अक्षत बहु लेइ । उज्जल पुंज मनोहर देइ ॥१४४॥

धर केवरौ केतुकी माल । चंबेली अरु बेली गुलाल ॥
चंपक जुही मालती सार । अवित्तसुगंध बंधुब मन्दार ॥१४५॥

नाना विधि के पहुप अपार । पूजै भरी अंजुरि सुभ सार ॥
षटरस नईवेद सुभ जोइ । बहु पकवान चढावै सोइ ॥१४६॥

कपूर दियौ तहां धरै प्रजारि । बहु किस्नागर खेवै वारि ॥
नानाविधि फल पूजै भाउ । जल गंधाक्षत पहुप बनाउ ॥१४७॥

नईवेद दीपक अरु धूप । सुंदर फल तहां धरै अनूप ॥
देइ अर्घ पूजै सुभ चित्त । सिद्ध जत्र आराधै नित्त ॥१४८॥

पुनि उजवन करै धरि भाउ । करी प्रतीष्या धर्म सहाउ ॥
पूज्यौ निमत्त आइकैं जबै । संन्यासह तनु छाड्यो तबै ॥१४९॥

दोहा

दिव्य देउ सुरपद् भयो । भुंज्यौ सुष अधिकार ॥
आउ मुक्ति चै आइयौ, सो तू है श्रीपार ॥१५०॥

चौपई

सुनि श्रीमती अनोव्रत धारि । पहुती सुर्ग देह तजि नारि ॥
तहा तै चै आइ गुन भरी । सोई है मैनासुन्दरी ॥१५१॥

अरु ए देषि सात सै अंग । पूरब मित्र जु रहते संग ॥
मुनिवर सौं तैं कुष्टी कह्यौ । तातैं कुष्टी व्है दुष सह्यौ ॥१५२॥

तैं मुनि जलवोरन उचरयौ । तातैं तू सागर मैं परयौ ॥
दयावन्तह्वै काढयौ सार । ताही ते तैं पायौ पार ॥१५३॥

जो तैं भिष्ट भिष्ट करि चयौ । तातैं भाड डिगोवो भयौ ॥
असिवर सौं मुनि मारन कह्यौ । तातैं त्रास महा तैं सह्यौ ॥१५४॥

पुव्व भवांतर सुनि हो राइ । दु:ष सुष यहै भ्रम छिट जाय ॥
यह सुनि मुनि बंद्यौ श्रीपार । व्रत आचरयौ सुष अधिकार ॥१५५॥

उपदेश के बाद गृहागमन

आदि अंत पूरब भव सरन । दु:ष विनासन सुभगति करन ॥
बारंबार नवायौ सीस । घर आपनैं गयौ नर ईस ॥१५६॥

सिंघ चक्र धारावैं चित्त । जैन धरम प्रतिपालै नित्त ॥
पुत्र कलित्र मित्र सुख ठांम । करै राज चक्री समान ॥१५७॥

इच्छित काम भोगरस लेइ । सेवासु धरि मांन धरेइ ॥
नाटिक नवैं वेद धुनि होइ । सब राय चाहैं नृप सोइ ॥१५८॥

दुरजन वसि कीए बलि बंक । हय गय लख लीजे बहु अंक ॥
इन्द्र तुल्य सुख जाइ न गिन्यौं । महाराज सब ही विधि बन्यौं ॥१५९॥

बहुत काल गयो इह रीति । वसुधा सकल करी बसि जीति ॥
गज गुंजरैं महामयमंत । हय हींसैं देखियै अनन्त ॥१६०॥
सेवैं पाइ बहुत नर पाल । निति प्रति आवैं सरस रसाल ॥
अष्ट सहस सुंदरि भोगवै । जा प्रताप महि मंडल तवै ॥१६१॥

बांचैं बुधजन काव्य पुरांन । गुनियन जन को राखैं मान ॥
गुनियन जन राखैं दरबार । पावैं हय गय विभौ अपार ॥१६२॥

वैराग्य भाव उत्पन्न होना

एकह दिन आसन बिहसंत । कौतुक कौतिकी जोवंत ॥
उलकापात भयो अति भांम । देखत ही चित चिन्त्यौ तांम ॥१६३॥

ज्यो चितत यह गयो बिलाय । त्यौंही सो बिभूति सब जाय ॥
राज भोग धन जोवन गर्व । ऐसे ही सौ जैहैं सर्व ॥१६४॥

पुत्र को राज्य देना

यह मनमैं चितवै नरेस । सो उदास मन भयो असेस ॥
धनपाल सुत लयो बुलाय । कह्यो राजभार तैं सुत थाइ ॥१६५॥
ए त राज पालो वरवीर । हम निज काज सवारैं धीर ॥
यह सुनि बिलख्यो सुवन कुंवार । एहु वचन तैं कह्यो असार ॥१६६॥
बालापन सुख जान्यो न जांनि । हम सुख कछ सुख जान्यो न जांनि ॥
क्यौं निहचिंत न कीयो मोय । राज भार ही नाहीं जोय ॥१६७॥
तुम बिन राज न सोभै होय । बहुकुल को देखे जोय ॥
तासौं राव कही सुनि धीर । कुल कारन प्रगटो वर वीर ॥१६८॥
पूत न वहै पिता को राज । कहा सरयो तिन जाते काज ॥
जे सुत पिता सुख नहि देहि । कल कुलेक को नाम न लेहि ॥१६९॥
अरु जे सुत कलंक नहि हरैं । ते कुल माहीं नाम न धरैं ॥
ता सुत जाये ही कछ सूत । तातैं समझी भयो अपूत ॥१७०॥

जननी भार धरैं दस मास । दुर्जन डरैं न ताकैं त्रास ।।
बाचिग जाकी आस न करै । ते सुत गर्भ मांहि किन मरै ।।१७१।।
तुमतो सब लायक गुन सार । सीघ्र लेहु राज को भार ।।
लज्जित व्है जु नवायौ सीस । अति रूपो देख्यौ नर ईस ।।१७२।।
यह सुनि कुंवर कियौ थिर चित्त । राज भार तब लयौ पवित्त ।।
राइ हरष सुत कौं सुष चाहि । राज पट्ट बांध्यौ सिर ताहि ।।१७३।।
कहैं राऊ सुनि कुवर सुजान । नीकैं करि सिख लै परवान ।।
सील भार जे अंचहि अंच । पररव नीकौं देषत अंध ।।१७४।।
मिथ्या दरसन देषन जांहि । लोचन सफल सदा सरमांहि ।।
विषै राग कबहू नहि सुनैं । मिथ्या कथा न मनमैं गुनैं १७५।।
ग्रर कबहूं न सुनै परपीर । तेइ सफल श्रवनसुनि बीर ।।
नाना विधि के पहुप अपार । जिन की अति सुबास अधिकार १७६।।
तिन ते प्रमुदित होइ सुचित्त । नासा सफल जानियौ नित्त ।।
कबहू हीन बात नहि चवै । कबहुं गुन आताप न लवैं ।।१७७।।
स्वाद प्रमाद न आनै सोइ । रसना सफल जानियैं जोइ ।।
सुरत संग नहि बंछै चित्त । इंद्री सफल महा सुचि नित्त ।।१७८।।
दया भाउ मनमै राषियौ । मधुर बैन सबसौं भाषियौ ।।
न्याय पंथ पर लिए न जानि । तजिए नही धर्म की बानी ।।१७९।।
सुष रहियैं माया के पास । पुन्यवंत सौ रहे उदास ।।
पिसुन बात सुनियैं नहि कान । जीवै जै न दीजियै जांन ।।१८०।।
पर उपगार कीजिए प्रीति । बोलै सांच राज की रीति ।।
कबहूं लोभ न कीजे चित्त । परधन परदारा परमित्त ।।१८१।।
बहुत देस पुर पट्टन जिते । भुजबल जीति कीए बसि तिते ।।
सुत संतोष चित्त मति करौ । बैरी बिभौ नथा मति धरौ ।।१८२।।
बहुत सीष दीन्ही अधिकार । आपन मन पग धारे सार ।।
बन गमन जानियौ नरेस । बायौ पुरजन सकल प्रवेस ।।१८३।।
कोऊ रुदन करैं बिलषाइ । कोऊ बिलसैं अति सुषपाइ ।।
कोऊ कहै बुरी अति भई चंपापुर की सोभा गई ।।
दयावंत सब सुष को धाम । कंपवंत मानैं सुर काम ।।१८४।।
महाबली भुजबलि उदारि । वंस कुलीन दस कवैं विचारि ।।
राजरीति वषवंसी राज । नहि मंडलमैं जाकौ नाम ।।१८५।।

जाकैं राज सबै सुख लहै । कबहूं दुःख दारिद न गहै ॥
जाकैं राज दान जब दए । कबहूं काल हीन नहीं भए ॥१८६॥

जाकैं राज अकाल न पड़ै । जाकैं राज रोग नहीं रहै ॥
जाकैं निवसी कुल घर नार । कामिनि पुरषौ सील को धार ॥१८७॥

जाकैं राज न मूसैं चोर । जाकैं राज न व्यापैं घोर ॥
जाकैं राज सहयौ परिवार । सुखी दीन जनको आधार ॥१८८॥

जाकी कहै कथा सब कोइ । ऐसो दूजो भयौ न होइ ॥
वे गुन सुमिरैं अरु लालियाहि । नरनारी घर घर सिखताहिं ॥१८९॥

मैनासुंदरी द्वारा दीक्षा ग्रहण करना

मैनासुन्दरी जिनवर काज । चलियो धरी जिनेश्वर लाज ॥
आठ सहस भामिन के मांन । तेऊ संग भई परवांन ॥१९०॥

सकल परिग्रह सुख छिटकाइ । चाली श्रीपाल की माइ ॥
पुरवासी और नरनारि । दिष्या कारन चली बिचारि ॥१९१॥

कोटीभट वन पहुच्यौ जबै । महा मुनिस्वर देख्यौ तबै ॥
बंद्यौ ध्यान धरत परमेस । लाग्यौ अस्तुति करन नरेस ॥१९२॥

जय भविजन जलजहु के भांन । जय दुर्गति वारन परवांन ॥
जय जय सिव रमनी भरतार । जय जय रत्नत्रय व्रत धार ॥१९३॥

विषयन वन भूरन मत्त दंत । जय जय गुण रत्नाकर संत ॥
जय जय सर्व दोष दुख हरन । जय भव जलनिधि तारन तरन ॥१९४॥

जय जय मोह मार मद राय । जय जय कल्पतरु सुख दाय ॥
जय जय क्रोध वडानल नीर । जय जय निर्मल मनधीर ॥१९५॥

जय जय लोह माल हत बीर । जय जय मदन कुंजर हरि धीर ॥
जय जय अष्ट कर्म कुल नास । जय जय केवल ज्ञान प्रकास ॥१९६॥

जय जय सुर नर सेवैं पाय । जय जय केवल [illegible] राइ ॥
जय जय सुर नर सेवैं वृंद । जय जय करुणा रस निधि चंद ॥१९७॥

जय जय [illegible] सुमति दाइ । जय जय सुर नर सेवत सुख ॥
जै जै त्रयामतं सुख कंद । जै जै अष्टु [illegible] कुल चंद ॥१९८॥

दोहा

भो गुन सागर [illegible], [illegible] कारिजो [illegible] ॥
या संसार समुद्र मैं, [illegible] ॥१९९॥

चौपई

मो कौं व्रत दीजे सुभसार । जो चहुंगति कुल छेदन हार ।।
यह सु'नि मुनिवर जंपं एह । धनि तू जिन यह कीयो नेह ।।२००

श्रीपाल द्वारा मुनि दीक्षा ग्रहण करना

बहुरयौ तू भव दुष न लहैं । आमन मरन सबै भी दहै ।।
यह सु नि श्रीपाल जीय धरयौ । छिमा खिमंतर सबस्यौ करयौ ।।२०१।।

मित्र भाव सबसौं परगासि । राग रोस दोउ जिय नासि ।।
पु'नि सेहुर मणि भूषित सीस । छिनमैं लयौ उतारि नर ईस ।।२०२।।

ककन कु'डल दीए डारि । मू'के वस्त्राभरण उतारि ।।
पंच महाव्रत पर चित्त दियौ । पंच मुठि सिर लु'चन कियौ ।।२०३।।

बाह्याभ्यतर सुध सभयौ । अति निर्ग'थ भयौ गधु गयौ ।।
जो हौं सब सुष सेवन जांनि । तिन दिष्या लीनी परवांनि ।।२०४।।

कु दपहू रानी सुभ चित्त । अजियाँ कौ व्रत लियौ पवित्त ।।
मैंनासु'दरि सब सुष कर्न । दिष्या लीनी जिनवर सर्न ।।२०५।।

बछाभरण भोग सब गर्बु' । छिनमैं छांडि दियौ तिह सर्बु' ।।
रैनमंजूसा अर गुन माल । तिनहू दिष्या लई गुनाल ।।२०६।।

ि तरेह पीमा परमांन । और ज अंतेबर कछु आन ।।
दीक्षा सबनि लई धर भाउ । माया को सब तज्यौं उपाउ ।।२०७।।

और जु हुते सातसै अंग । दिष्या तिन हूं गही अभंग ।।
जो कछु राज मित्त है और । दिष्या सबनि लई तिह ठौर ।।२०८।।

तब श्रीपाल भ्रमैं बनराइ । महा मुनिसर भयौ शुभाइ ।।
ताके सिर परि ग्रीषम भोन । महा तपैं को कहै अमोन ।।२०९।।

बर्षा सीत परैं असरार । सहै दुष मनमैं अविकार ।।
कृष्णागर बहु कु'कुम वारि । तन परसतो निहारि निहारि ।।२१०।।

सीत तुसार छाया ता देह । तपमैं तौ जाम्यौ अति नेह ।।
चालै महाहरा की छांह । इन्द्री बन बाल्यौ छिन माह ।।२११।।

दिढ चरित्र धर्यौ जिय जोइ ।अठावीस गु'न धारै सोई ।।
निज पद आरावैं गु'न राउ । भ्रमैं अकेलो चित्त शुभाउ ।।२१२।।

देइ जोग बन भीतर जाइ । बहुत सहैं उपसर्गं सुभाइ ।।
धरैं ध्यांन अति धीरो चित्त । ठाढौ मांनौं मेर पवित्त ।।२१३।।

मास एक बिन लेइ अहार। सहै परीसा बाईस सार ।।
पावस रितु तरु तरि सो रहै। ग्रीषम रितु गिर परि दुख सहै ।।२१४।।

सीत मास सरवर के तीर। ठाढे देह दुख सहै सरीर ।।
बहुत भई अति खीनी देह। छांडे सबै सुख अरु नेह ।।२१५।।

हिम पटल तन छायो ताहि। सब सुख लहिए ताप न चाहि ।।
एक ध्यान ठाढो सो रहै। कोऊ ताको भेद न लहै ।।२१६।।

कोऊ कहै चित्र निरमयो। काहू तसु पाहन को थयो ।।
कोऊ कहै काठ की देह। मन वच क्रम ऐसैं थिर नेह ।।२१७।।

बनचर जीव न भी मन धरैं। ताकौ देह परसैं सुख करैं ।।
पंखी बैठे मस्तक उडि जांहि। ताकी संक न कछु करांहि ।।२१८।।

हंस तूल्य की सेज्या धीर। जो सोवंतो साहस धीर ।।
गिर कंदरा सैन सो करैं। कछुन दु:ख अपने मन धरैं ।।२१९।।

जो चलतो बहु दल बल साथि। हय ऊपरि कै चढतो गजहि ।।
बिनहि सुखासन चलतो राउ। अब वांह चलतो नहिं पाउ ।।२२०।।

ताके सिर पै ग्रीषम काल। महा तपै जो करै अबोल ।।
बर्षा सीत परै असराल। सहै दु:ख अगनै अविकार ।।२२१।।

छत्राकार बहु ह्र कम गारि। तन चर्षती निहारि निहारि ।।
सो तुसार छायौ ता देह। तबते प्रभ भाखौ अति नेह ।।२२२।।

बहु बहुक विध रमतौ जोइ। सहै परीसा बाईस सोइ ।।
मन वच काय विचारै चित्त। जागैं एक अगत अरु मित्त ।।२२३।।

दोहा

श्रीपाल मुनि को कैवल्य प्राप्ति

तप करंत मन दृढ़ कर, किसो करम को नास।
ताको उपज्यो विमल पद, केवल ग्यान प्रकास ।।२२४।।

चौपाई

गंधकुटी की रचना

आसन कंपे देवनि तबै। आए सब सुर जै जै भनै ।।
धनपति निमायौ सुखकार। गंधकुटी रचियो [illegible] ।।२२५।।

कंचन मनि रतननि सौं करी । अति रवनीक सिंहासी भरी
उभय चमर दीपै सिर छत्र । सो संपद् वंछियो मह सु ॥२२६॥

तीन प्रदक्षिण दे सुर राइ । भयो करन प्रस्तुति धरि चाउ ॥
जै जै ग्रष्ट कर्म निरदलन । जय जय प्रभु त्रिभुवन के सरन ॥२२७॥

जय जय श्री मंडल परवेस । जय जय मुनियन व्रत उपदेस ॥
सिद्ध चक्र फल पावन देउ । जै सुर नर असुरनि कृत सेउ ॥२२८॥

जनम जरामृत नासन हार । जै मिथ्यामत मंडन हार ॥
जै जै सीतल पावन नीर । जै जै प्रभु नासन भव भीर ॥२२९॥

जै जै काम कंज हीम पूर । जै जै अघतम नासन सूर ॥
जै जै पंच महाव्रत धारन । जै जै मोहबली बल हारन ॥२३०॥

जै जै कोह सिंघ हत वीर । जै जै धम्म धुराधर धीर ॥
जै जै जोगय कंद निकंद । जै जै जगभंजन दुह दंद ॥२३१॥

जै जै प्रारज तम सुभ संत । जै जै मुकित वधू वरकंत ॥
जै जै वरन धराधर सेस । जै जै भासुर मन हर नेस ॥२३२॥

जै जै ग्यांन कोस मुनिराइ । जै जै त्रिभुवन जीव सहाइ ॥
जै जै सम्यक दरसन सूर । जै जै लोह महीरुह चूर ॥ २३३॥
इह विधि स्तुति करि अनिवार । इन्द्र आदि सुर नरअपार ॥
पन विधि सुरलोका गए सबै । निज थानह मुनि बैठ्यो तबै ॥२३४॥
लोयालोय पयासै सोय । निरमल बांनी ताकी होय ॥

भव्य जीव प्रति बोलै जैन । मिथ्यातिमर विनास्यो सेन ॥२३५॥
सिद्ध चक्र व्रत प्रगट्यो करयो । राग रोस तिन सब पर हरयो ॥
धर्माधर्म प्रकासक संत । भाष्यो जिन व्योहार महंत ॥२३६॥

निर्वाण प्राप्ति

सुर नर पसु पंषी मन जिते । जिनवर मंगल गावै तिते ॥
कर्म घातिया चूरै सबै । वीरच काल भयो कछु जबै ॥२३७॥
पुनि श्रीपाल निमल पद भयो । अमर मुक्ति तिय सौं भयो ॥
अष्ठ महा गुन पाई सिद्धि । परमातम भयो सहि रिधि ॥२३८॥
जनम जरा तिन चूर्यो मर्न । सो भयो स्वामी त्रिभुवन सर्न ॥
समकित ग्याण दर्स वीर्य सुमंहत । अवगहण अगुरलघु अव्याबाध ॥२३९॥
सिद्ध विराजै जीति निर्वान । सुख अनंत निवसै तिहू थान ॥
सुर नर मन गंध्रव धरि भाउ । आराधै मलमैं करि चाउ ॥२४०॥

दोहा

सिद्ध चक्र व्रत प्रगट करि, पंच महाव्रत गहि ॥
श्रीपाल मुक्तिहु गयो, भव सुख सकल बिहांहि ॥१४१॥

इति श्रीपाल चरित्र महापुराणे भव्यसंघ मंगल करणं ।
बुधजन मन रंजन, पातिग भंजन सिद्धचक्र विधि सुखहरनं ।
त्रिभुवन सुख कारण भवजल तारण चौपई बंध परिमल्लकृतं ।
बहु राजवि किनय जग जय विजय बहु विभूति को बरनि कहे ।
पुर पट्टन सर्वं परहरिगर्व्वं पंचमहाव्रत सार गहं ।
सुभ ध्यान उपायो त्रिभुवन गायो कोटीभट्ट सो मुक्ति गयं । ११६४॥

चौपई

मैनासुन्दरी की तपस्या

पुनि मैनासुंदरि व्रत लीन । करै महातप तन अति षीन ॥
सही परीसा कही न जाइ । नाना विधि को कहै बनाइ ॥ १॥

कंचन बरन देह पीतरी । कूंकम मंडित ही पल धरी ॥
कामातुर रहती पिय संग । सो बन बसै सहै दुष अंग ॥ ॥

अति सुवास कूंकम रस गारि । भूषन बहुत पहरती नारि ॥
सरद महल रहती सुखवास । कुसुम सेज सोवती उल्हास ॥ ३॥

दीपक जोति बहुति ही जाहि । सुष रहती रैन दिन माहि ॥
मंद पवन बहती दिन रात्रि । कुसुमनि की बीजती सुहाति ॥ ४॥

षाय प्रान कोमरे सुजान । करती सेवसिही दिन मान ॥
भीम बहुत पहरती सरीर । बहती तहां सीतल की नीर ॥ ५॥

अंजन मंजन भूषन साज । तन पहरती प्रीति प्रिय काज ॥
अंबुज दल रहती कर सबैं । रहती पालकनि परि पग दबैं ॥ ६॥

जाती अति सुगंध पग सार । तक सकति करती कतिसार ॥
सो ठाढी गिर परि सुकमाल । सिर पर तपै भान तिहकाल ॥ ७॥

पासिक पर रहती मन भाउ । सुचि परि सुमि न धरती पाउ ॥
कोमल कमल नैन अधिकार । पग नेवर पहरैं झुंमकार ॥ ८॥

जहि ऊपरि सुपती सुकमाल । ताके पग पैती बनी बराल ॥
ध्यान अचल तिसती तिह ठाइ । कालमाह बहुती बहु बाइ ॥ ९॥

इह विधि जिन चैत्यालै जाइ । मुनि बंदती सयल सुखपाइ ॥
अब सो बन मारग पग धरैं । ग्रीषम रिति सिकता पर अरैं ॥१०॥

सरदै सोमवदन विकास । मल निवारती देखिय पास ॥
ग्रीषम महल महा परभात । हो ती मलिन सीत कै घात ॥११॥

हिम पटलनि करि छायौ सोइ । पंडुर बरन कहै सब कोइ ॥
इह विधि कष्ट सहै वर नारि । नाना विधि को कहै विचारि॥१२॥

संन्यासहि तिन तज्यो सरीर । निज बरजाइ छेदियौ बीर ॥
अच्युत स्वर्ग देव भयौ तेह । अपछरि कोटि भई ता गेह ॥१३॥

बाईस सागर आउ प्रधान । विलसै सुष को कहै बषान ॥
बहुर्यो चै जैहै शिव थान । ह्वै है सो परमेस प्रवान ॥१४॥

कुंद प्रभा रानी सुभ चित्त । वैही विधि तप चर्यौ पवित्त ॥
तप छांड्यौ केवल पद जोइ । तैं ही सुरग भयौ सुर सोइ ॥१५॥

रैनमजूसा तप अति कर्यौ । पहुती सुरग महा सुभ धरयौ ॥
करयौ महातप और ज नारि । सुभ गति सब को भई विचारि ॥१६॥

इह सिरि सिद्धचक्र फल सार । सोभव दु:ष विनासन हार ॥
सब ही जीवनि कौं हैं सर्न । जनम जरा नासन सुभ कर्न ॥१७॥

भो मगधेस सुनौं धरि भाउ । जहां श्री सिद्धचक्र व्रत थाउ ॥
ऐसी विधि श्रेणिक नर पार । गनहर पैं सुनियौ सुभसार ॥१८॥

मनमै कर्यौ व्रत धरि साउ । नाना विधि मन उपज्यौ चाउ ॥
मन बच काय बंदौ जिन नाहु । पहुंतो नगरी बढ्यौ उछाहु ॥१९॥

हय गय रथ अरु दासी दास । अतुल अधिक बहु भोग विलास ॥
करै राज सौ इन्द्र समान । कीरति जाहि मंडल परवान ॥२०॥

दोहा

भुंज्यौ सुष संसार को, श्रीपाल इन्द्र समान ॥
सिद्ध चक्र व्रत पालि करि, आमर्यौ मुकति निदान ॥२१॥

चौपई

सिद्ध चक्र व्रत का महात्म्य

अरु नर नारी उत्तम कोइ । सिद्ध चक्र आराधै जोइ ॥
मन की भरम देइ छिट काइ । पूजै अंगहि थिर मन लाय ॥२२॥

जल गंधाक्षत पुहुप अनूप । नेवेद्य दीपक अरु सुभ धूप ।।
फल नाना विधि भरथ चढाइ । अष्ट प्रकारी पूज कराइ ।।२३।।

ताकै रोग सोग नहि रहै । कामिनि रूप हारिद्रनि रहै ।।
पुत्र कलित्र वियोग न होइ । भूत पिसाच दुखवैं कोइ ।।२४।।

डाइन साइन जोगन जाति । ये असांत गावैं दिन राति ।।
इनको मैं न ताहि संचरैं । जो को सिद्धचक्र व्रत धरैं ।।२५।।

नैन निरंध नैन हूं लहै । रसना हीन बेद धुनि कहै ।।
श्रवन हीन सब सुनैं सरूप । कुष्टी तन सौं होइ अनूप ।।२६।।

कनक बरन तन ताको होइ । मन बच क्रम व्रत पालै सोइ ।।
सुष अपार भुंजै ससार । पावैं हय गय भवन अपार ।।२७।।

पावैं रतन हीर मनि चंद । पावै हेम पेम सुष कंद ।।
अंतेवर अपछरा उनिहारि । पावैं हंस जु मनह भकारि ।।२८।।

होहि दास घर दासि घनै । सेवैं पति महि मंडल बनै ।।
दत गहै तिन मानै हारि । माइस नैंक न सकई डारि ।।२९।।

भुंजै सुष जो मनमैं धरैं । इन्द्र समान राज सो करैं ।।
अति महिमा को कहै बढाइ । निहचैं सो नर मुकतिह जाइ ।।३०।।

श्रीपाल जैसो फल लहौ । कवि परिमल्ल प्रगट करि कहौ ।।
भविजन सुनौं सुफल तिय जानि । यहु व्रत आदरवौ परवांनि ।।३१।।

एक चित्त राखौ मन ध्यान । सुष विधि उपजै सौख्यान ।।
या संसार सयल सुख लहै । बहुरयौ मुकति पाइ सुष वहै ।।३२।।

काव्य

उग्रं गोमती गंगतुल्यसमलं शस्तं वरं पूजितं
जं थीरं हस्तिमवरं मदकलं साजातं दृढोन्नतं ।
तन्मध्ये श्रीमानसिंह अधिपते भूलोकवर कंकाते ।
तन्राज्ये सुरनाथ तुल्यभाषितं तद् जैन संकर्यते ।।३३।।

सुजस रजत कुसलो नामेन चंदिनवं ।
तत्पुत्रो गुणं रामदास विपुल मुक्त त दीयवं सदा ।।
तद् सुतु कुलदीपकस्तु प्रकट नाना सकरत्नो सुधी ।
तत्पुत्र परिमल्ल धर्मसहन सम्यं एवं श्रीपदे ।।३४।।

प्रशस्ति **चौपई**

गोपगिरि गिरि बहु उत्तिम थांन । सूरवीर तहां राजा मांन ।
ता आगैं चादन चौधरी । कीरती सब जग में विस्तरी ।।३५।।

जाति बरहिया गुंन गम्भीर । अति प्रताप कुल रावै धीर ।।
ता सुत रामदास परवीन । नंदन आसकरन सुभदीन ।।

ता सुत कुल मंडन परिमल्ल । बसै आगरे मैं अरि सल्ल ।।
ता सम बुद्धि हीन नहिं आंन । तिन सुनियौ श्रीपाल पुरांन ।।३७।।

ताकी छांह कछु मति भई । तब श्रीपाल कथा बरनई ।
कीनी चौपई जथ बखांन । नवरस मिश्रित गुनह निधांन ।।३६।।

होइ असुद्ध जहां पद हानि । फेरि संवारो कवियन जांनि ।।
बार बार जंपोकर जोरि । बुध जन मोहि देहु मति थोरि ।।२२२२।।

[1]नंदो गुरु जे गुण के मूर, जिन ते होयमान आपूर ।
नंदो जिनबानी सोहनी, जाते सुरगति होय अति घनी ।।

नंदो कविकुल गुनह निवासु। जिहि पुरानु प्रगट्यो सुखवासु ।।
नंदो पण्डित करै बखान नंदो श्रोता लोग सुजान ।।

नंदो जैन सभा चिरकाल, नंदो जीवदया प्रतिपाल ।
देव कथा को अधी भई. जिनवर धरम आराधी सबै ।।

जो भव दुख विनासन हारू, जो त्रिभुवन के जीव सिंगारू ।
जो त्रिभुवन बर मंगल करन, आदि अंत जीव को सरन ।।

जो शिव रमणी को वर भयो, जो जिनदेव सभा को भयो ।
ताकी कथा निरन्तार भई, कवि परिमल्ल कथा वरण ।।

थिर मनु कथा सुने जो कोई, मन वांछित फल पावै सोइ ।
अरु जो पढै पढावै सोय, ताकै कोतै असुभ न होय ।।

अरु जो नर नारी व्रतु करै, सो चहुँ गति को भ्रमणु हरै ।
भव्यनको उपदेस बताय. निहचै सो नर मुक्ति हि जाय ।।

इति श्रीपाल कथा परिमल्ल कृत भाषा चौपाईबंध संपूर्णम्

---

1 यह पाठ मूल प्रति में नहीं है ।

छप्पय

नगर आगरे मधि रहे आलमगंज मांही ।
संवति पैंसठि साल जेठ सुदि दसमी मांही ।
लिख्यो चरित्र [illegible] भाँति एक मैं ।
निजु पर हेत कैं काज मिटै क्रोधादिक जी कै ।
यह ग्रंथ बांचै सुनै, सील छिमा धीरज गहै ।।
सुभ गति पावै वेग्यही, कर्मकाटि [illegible] कहै ।।

।। श्री ।।

मिति पौस सुदि १० दीतवार सं. १८८६ ।।

समाप्त



कवि धनपाल

धनपाल कवि अब तक हमारे लिये अज्ञात एवं अचर्चित हैं। कवयित्री बाई अजीतमति के समान प्रस्तुत पुष्प मे ये दूसरे कवि है जिनका यहां परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है। धनपाल कवि की रचनाओ का संग्रह टोंक जिले के प्रमुख वैष्णव तीर्थस्थल डिग्गी नगर के दिगम्बर जैन मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत एक गुटके मे उपललब्ध हुआ है। लेखक ने जून१६८३ मे जब नगर के शास्त्र भण्डार के सूचीकरण का कार्य किया तब इस महत्वपूर्ण कवि की रचनाओ का पता लगा सका।

धनपाल प्राचीन कवि देल्ह के सुपुत्र थे। ये वे ही देल्ह कवि हैं जिनकी अब तक बुद्धि प्रकाश एव विशाल कीर्ति गीत नामक कृतिया उपलब्ध हुई है। दोनो ही लघु रचनायें हे। इनके एक पुत्र ठक्कुरसी बडे अच्छे कवि थे जिनकी अब तक १५ कृतियां प्राप्त हो चुकी है। कविवर ठक्कुरसी का विस्तृत परिचय एवं उनकी कृतियो के मूलपाठ हम श्री महावीर ग्रन्थ अकादमी के दूसरे पुष्प मे दे चुके हैं। [1]ठक्कुरसी के परिचय के आधार पर धनपाल कवि सभवत. देल्ह कवि के दूसरे पुत्र थे। इसलिए ये भी ढूंढाड के प्रसिद्ध नगर चम्पावती के रहने वाले थे। कवि जाति से खण्डेलवाल दि० जैन एव गोत्र से पहाड़िया थे। धनपाल कवि ने अपनी अधिकाश कृतियों मे अपने बडे भाई ठक्कुरसी के समान अपने आप को "देल्ह नंदन लिखा है।

समय—कविवर ठक्कुरसी का समय हमने संवत् १५२० से १५६० तक का माना है धनपाल ठक्कुरसी के छोटे भाई थे इसलिये इनका समय संवत् १५२५ से १५६० तक का माना जा सकता है। स्वयं कवि ने अपनी कृतियों में रचना काल काल का उल्लेख नहीं किया इसलिये उक्त समय ही ठीक जान पड़ता है।

कृतियां—धनपाल कवि की ठक्कुरसी के समान अधिक रचनायें तो उपलब्ध नही हो सकी हे लेकिन एक ही गुटके में उपलब्ध कवि की रचनायें निम्न प्रकार हैं—

1. देखिये—कविवर बूचराज एवं उनके समकालीन कवि
   लेखक एवं सम्पादक—डा० कस्तूरचंद कासलीवाल, पृष्ठ सं. २३८–२९५

१. मुनिसुव्रत जिनवन्दना

२ नेमिजिन वन्दना

३. वर्द्धमान गीत

४ आदि जिन गीत

इस प्रकार गुटके मे कवि की चार लघु कृतियों का संग्रह मिलता है। राजस्थान के अन्य शास्त्र भण्डारों में हो सकता है धनपाल कवि की और भी रचनाओं की उपलब्धि हो जावे। उक्त चारों कृतियों का परिचय निम्न प्रकार है:—

१ मुनिसुव्रत जिन वन्दना :—

कवि की यह एक ऐतिहासिक वन्दना है जिसमे राजस्थान के बूंदी जिले में स्थित केशोराय पाटन के प्रसिद्ध जैन मं में विरा. भगवान मुनिसुव्रतनाथ की वंदना का वर्णन है। वर्तमान मे केशोराय पाटन नाम से प्रसिद्ध नगर पहिले पाटन नाम से और इसके पूर्व आश्रम पत्तन नाम से प्रसिद्ध था। स्वयं कवि धनपाल ने पाटन को अतिशय क्षेत्र लिखा है जहां भक्तगण वंदना के लिए आते रहते है और अपनी मनोकामना पूर्ण करते रहते हैं। ऐसे पाटन नगर में मुनिसुव्रतनाथ का अतिशय क्षेत्र है जिसकी वन्दना के लिए मुनि आर्यिका, श्रावक श्राविका सभी आते रहते हैं। इसके पश्चात् कवि ने भगवान मुनिसुव्रतनाथ के पिता सुमति राजा, माता पद्मावती एवं उनके लाञ्छन कछुवे का उल्लेख किया है। इसी तरह उनके शेष जीवन का भी छन्दों मे उल्लेख किया है। पूरी वन्दना चार छन्दों मे पूर्ण होती है और अन्त मे कवि ने अपने पिता एवं स्वय के नामोल्लेख के साथ भगवान मुनिसुव्रतनाथ की कृपा की याचना की है :—

> पद कमल सेवित देवह नन्दन धनपाल विनती करहे ।
> मनसुव्रत जे सेवत पावे तब मनवछित पूरो ॥१॥

अर्थात् कवि के समय मे भी भगवान मुनिसुव्रतनाथ के दर्शनार्थ सपरिवार आने की परम्परा थी कवि ने उक्त वन्दना को राग मलार/मल्हार में लिखा है।

२. नेमि जिन वन्दना—

कवि की यह दूसरी ऐतिहासिक कृति है जिसमे भगवान नेमिनाथ की वन्दना की गयी है। इस गीत में जयपुर राज्य की प्राचीन राजधानी आमेर के दि० जैन मन्दिर सांवला बाबा के (नेमिनाथ स्वामी) स्तवन के पश्चात् नेमिनाथ स्वामी के माता पिता, जन्म स्थान, तोरण द्वार से लौटने की घटना, वैराग्य व स्थान

गिरनार पर्वत पर तप, कैवल्य एवं निर्वाण कल्याणक का वर्णन किया गया है। १५वीं शताब्दि में आमेर के सांवला बाबा के मन्दिर में स्थित [illegible] की मूल नायक प्रतिमा अत्यधिक प्रसिद्ध एवं अतिशय युक्त मानी जाती थी। कवि ने जिसका निम्न प्रकार वर्णन किया है :—

> जाहि नाम लीया दुरित नासौ, गुणह गणत न पार।
> अंबावती प्रतिब्यंब, शोभिता स्याम वर्ण गहीर।
> बन्दहु सुभ वियहु नेमि जिणवरु, दीह अट्ठ शरीर ॥१॥

इस वन्दना मे पांच छन्द हैं। कवि ने इस गीत मे अपने आपको वेल्ह तनय लिखा है।

३. वर्धमान गीत :—

यह कवि का तीसरा ऐतिहासिक गीत है। इस गीत में कवि ने जयपुर से १२ किलो मीटर दक्षिण में स्थित प्राचीन नगर सांगानेर के संघी जी के मन्दिर मे विराजमान महावीर स्वामी की स्तवन के रूप मे भगवान महावीर का माता पिता, गर्भ, तप कैवल्य एव निर्वाण स्थान पावापुरी का उल्लेख किया है तथा गौतम आदि ग्यारह गणधरों का एवं अन्य घटनाओ का वर्णन किया है। गीत में पांच छन्द हैं। सांगानेर मे संघी जी के मन्दिर का निर्माण १२वीं शताब्दि में हुआ था। मन्दिर अपनी कला एवं शिखरो के लिए पूरे राजस्थान में प्रसिद्ध है।

४. आदि जिन गीत :—

यह कवि का चौथा गीत है जिसमें प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का का स्तवन कियागया है कवि ने टोडारायसिंह के दि.जैन मन्दिर आदिनाथ स्वामी की प्रतिमा को अपने युग में अत्यधिक महत्वपूर्ण लिखा है। गीत के शेष भाग में इसी तरह कावर्णन है जैसे उक्त तीन तीर्थंकरों के गीतों में वर्णन किया गया है।

इस प्रकार चारों ही गीतो मे कवि ने स्थान विशेष के मन्दिरों में विराजमान प्रतिमाओं का नामोल्लेख करके उनमें इतिहास का पुट दिया है। कवि का मुख्य निवास चम्पावती था लेकिन वहां के किसी मन्दिर की प्रतिमा का उल्लेख नहीं करके पाटन (केशोराय) आमेर, सांगानेर व टोडारायसिंह के मन्दिरों के महात्म्य का वर्णन किया है।

भाषा—गीतों की भाषा अपभ्रंश प्रभावित राजस्थानी है। कवि का मुख्य कार्य क्षेत्र ढूंढाड़ प्रदेश था इसलिये गीतो की भाषामें ढूंढारी भाषा का भी प्रयोग हुआ है।

गीतों के मूल पाठ

मुनिसुव्रत जिन वन्दना

रागु मलार

सकल जिणेसर पणउ सरसै धरि ध्यानो जी ।
ए जह पाढणु नगर भलं तहं अतिशय भावो जी ।
इक भानु अतिसय वेगु जाणिवि भविक जन वंदे घणा ।
ए तुरिय संघ आनंद उपजै होइ महोछा जिण तणा ।
परत्यासु पूरै विघन चूरै प्रगट जिणवर आणि जे ।
पाटण भामकि सुथिर बैठे सुव्रता जिन वंदिजे ।।१।।

ए जो सुमति नरेसर नंदण पदमावती मातो जी ।
तसु लछनि काछिव सोहैं स्याम सरीरो जी ।
इक स्याम वर्णहि अति मनोहर देखतां मनु मोहिए ।
इंद्रादिकह जामण महोछा मेर सिहरां सोहए ।
गायंति किन्नर अमर अछरि आणि भाव सम्मपए ।
वीसमै जिणवर वांदि सखी हे मनह वंछितु अप्पए ।।२।।

ए जहि जाणे हो जोवनु वंतु भवे वैरागो जी ।
ए जहि जीते हो मदन भयंकर उपसम रागो जी ।
उपसम रागा मदन जितें पंच आश्रव टालए ।
दसण णाण चरित्तमय जीय णाण केवल पालए ।
दश अठ गणहर मलि भाविहि समोशरण छज्जए ।
मनसुव्रतां जिन चरण वंदे दुरित पयलां गज्जए ।।३।।

ए जो बहु गुण मंडित जिणवर मुकति दातारो ।
चउतीसाति अयारां सोभिता गुणंह अपारजी ।
अपार गुणह न पार आमं विविध जीव हितंकरो ।
मनवच काय नरनारि सेवे जनमि जनमि सुखंकरो ।
पद कमल सेवित देवह मानव भवपास छिपा करो ।
मनसुव्रतां जे जात पावे सदा संपतु त्याह वरो ।

२. नेमीश्वर वंदना

राग सोरठी

पणमो आदि जिणंदो जहि पणमा होइ अनंदो ।
गुण प्रगट करें निसिचंदो, हैं गाउं नेमिजिणंदो ।
गुण गाइसें श्री नेमि जिणवर, सयल सुख दातार।
जहि नाम लीया दुरित नासें, गुणह गणत न पार ।
अबावती प्रतिव्यंब शोभिता स्याम वर्ण गहीर ।
वंदहु सुभ वीयहु नेमि जिणु, दोइ अठु धनुष शरीरु ।।१।।

सूरीपुरह उपन्नो, राइ समद विजै सुत धन्नो ।
वर लक्षण गुण संपुन्नो, सिवदेवी कुषि रतन्नो ।
सिवदेवी माता उरि उपन्नो, सयल सुरपति आइया ।
ले मेर सिहरां करि महोछा, इंद्र आगें नच्चिया ।
तिहु ग्यान करि संजुत्त, दीसें सुन्दरा आकार ।
वंदहु सुभ वीयहु नेमि जिणवरु, जादम वंस सिणगारु ।।२।।

हलि सम्बविसें सोभियो, तु मे उग्रसेणि घी मंगो ।
राजमती सरीस सुचंगो सा परणें नेमि जिणंदो ।
नेमि जिणवरु व्याहण चढिया, तोरणि तांम पराइया ।
हकारि सारथि नेमि पूंछा, जीव कांइ पुकारिया ।
ए भगति होइसी तुम्ह तणी राय उग्रसेणी अणाइया ।
रथु मोडि पाछें चलें जिणवरु, जाइ चढे गिरनारिया ।।३।।

सो जाइ चढे गिरनारे जहि तजीये राजमती नारे ।
सव् अथिर जाणि ससारो, मुणि धरें महाव्रत भारो ।
व्रत भारु ले छद्मस्तु रहिये लोयती यह पसंसीयें ।
वरदत्त घरि पारणें कियें, प्रथम गणहरु आइयें ।
वाणीय सरस विसा कोमल, भवि जनह नमंसीये ।
वन्दी हु शुभकियो नेमि जिणवर, सब्वजीव अभो दियो ।।४।।

छायाल गुणह संजुतो, बाइसमु जिणवर पत्तो ।
दश अठ दोश थे चत्तो, पुणु अठ गुणह संयुत्तो ।
तिहु लोक वंदित चरण जिणवर, संख लंछण सोभियो ।
गिरणारि गिरि निर्व्वाण थाणक अठमी पुहवी गयो ।
नरनारि जे गुण कहहि स्वामी, सफल जन्मह त्या तना ।
कवि वेल्हु तन धनपाल प्रणमि ते भेटियो मैय नेमि जिणा ।।५।।

२. वर्धमान गीत

रागु मल्हार

सकल जिणेसर ध्याउं, सरसै आधारे जी ।
गुण गाउ श्री वीर जिणेसर बुद्धि अणुसारें जी ।
गुण गाइसै श्री वीर जिणवरु, बुधि कै अनुसारि ।
तसु नाम लीया होइ नव निधि भेटिया भवपारु ।
सांमानथरि अतिबिंब सोभिता, हैम वर्ण शरीर ।
वंदहु शुभ भवीयहु वीर जिणवरु, सत्त हव सरीर ।।१।।

ए जो कुंडल पुरिहिं अवतरे भयंउ अनंदो जी ।
राणी तिशला दे उवरि ऊपनी सिधारथ नंदो जी ।
तिशलादे माता उरि उपर्ना राय सिद्धारथ नंदणो ।
तसु इन्द्र आगैं आइ नच्चै देव दुंदभी वाजणो ।
जिम मेघ गर्जित मोर नाचित चात्रिग करति अनंदु ।
तिम पेखि भवियहु वीर जिणवरु, मेइसमउ जिणंदु ।।२।।

ए जो तीस बरस लगु जिणवरु, गुज्यौ ग्रिह वासो जी ।
पुणु ज्जुण तिण समु जाणिरु, लीनै वन वासो जी ।
वनवासु ले व्रत भारु धरियै, लोयतीयह जु हारीयै ।
दश अठु दोसह रहितु स्वामी, जीव गणु सा धारीयै ।
दोइदस वरिस छद्मस्त रहियै, इन्द्र आसणु कंपियै ।
सौ वर्धमान जिणंद वंदहु, सब भव खय कारियै ।।३।।

ए जो केवल ग्यानु ऊपाय्या, मुनिजन आया जी ।
तह गोत्तम आदिहिं ग्यारा गणहर आया जी ।
गोतम श्रोतम अरु निरोतम सयल गणहर आइया ।
वाणीय कै परगासु हुवो, अमरगण जय कारीया ।
सो अतिसै जिणु नमो भवीयहु चैतीसैती रायरू ।।४।।

ए जो तीस बरस फिरि जिणवरु संबोध्या भाजो जी ।
पुणु अंत कालु आयै जाणिरु पूरा सुम ध्यानो ।
शुभ ध्यान पूरा कर्म्म चूरा पंचमी गति पाइया ।
पावापुरिहिं निर्वाण थानकु भव्यजन नसांसिया ।
कवि वेल्ह नदणु मनि अनंदणु वल्हपाल गाइया ।
मह सयल वंछितु होऊ स्वामी वीर जिणु जै कारिया ।।५।।

।। इति श्री वर्धमान गीत समाप्ता ।।

४. आदि जिन गीत

राग गौडी

सो जिणुसमरहु भावधरि जहि सु चाहो भवपार हो ।
मरु दे माता उरि धरै नाभि घरा अवतार हो ।
सो नाभि नदनु भविक वंदै. तोड़ा नयरि मझारि ।
पंचसै धनुष प्रमाण काया व्रिष लाछण धारि ।
सर्व्वार्थसिद्धि थे आइया ईसाक वंशह जाणि ।
अजोध्या नगरी भयो जिणु रिषभ गुण की खानि ।।१।।
जनम चैत्र वदि नवमी को कचनवरण शरीर हो ।

इन्द्र महोछै आइया, मेर न्हायो वीर हो ।
इकु मेर सिहरां हयो जिणवरु इंद्र नाचै बहु परे ।
सचीसइहथां हलेविणु, आणियो माता घरे ।
कुमरै पणे वखि लक्ष पूरब, तेसठि रजु करेइ ।
निवेउ पायो वेलि अपछरे लोयंतीय हसरेइ ।।२।।

आखातिजाहा पारणो घरि श्रेयांस नरेसहो ।
वरस सहस छदमस्तु भौ केवल फागुण ग्यासिहो ।
फागुण ग्यारसी हुवा केवलु समोसरण बिराजये ।
त्रिषभ सेणह आदि गणहर वाणि दुंदभी गाजियो ।
तपु लक्ष पूरब जेणिपाल्यो छहै हरिहि नमसियो ।
सो आदि जिणवरु वंदहु भवियहु धम्म मारग दसियो ।।३।।

इडक पाटक पूरणा पूरया ध्यान वियारिहो ।
गिरि कयलासह सिव हुआ अठ गुणाह विचारिहो ।
कैलास गिरि निर्वाण थानकु अठ गुण सजुतीया ।
जोति मैं जोति समाय पैठा पठहि सुणहि ति धनु जिया ।
कवि देल्ह नदण सुगति मांगै धनपालह गाइया ।
श्री आदि जिणवरु नमौ भवियहु तुरिय संघ मनि भाइया ।।४।।

भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति

महेन्द्रकीर्त्ति नाम वाले एक से अधिक भट्टारक हो गये हैं लेकिन भट्टारक पट्टावलियों के अनुसार अब तक निम्न प्रकार परिचय मिलता है :—

(१) भट्टारक महेन्द्रकीर्त्ति	(१) अजमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य (सं० १७९९)
(२) ,,	(२) आमेर गादी के भ० देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य (सं० १७९०)
(३) ,,	(३) ,, भ. देवेन्द्रकीर्त्ति (द्वितीय) के शिष्य (सं० ११३१)
(४) आचार्य महेन्द्र कीर्त्ति	(४) सूरत गादी के भट्टारक मल्लिभूषण के शिष्य (सं० १५७०)

उक्त चार महेन्द्रकीर्त्ति नाम वाले विद्वानो मे से कौन से महेन्द्रकीर्त्ति प्रस्तुत पदो के रचयिता है। जिस गुटके मे इन पदो का संग्रह मिला है उसमे भी कोई लेखन काल नहीं दिया। लेकिन गुटका १७ वी अथवा १८ शताब्दि मे लिपि बद्ध हुआ लगता है इसलिए प्रस्तुत महेन्द्रकीर्त्ति भ. देवेन्द्रकीर्त्ति (द्वितीय) के शिष्य तो नही हो सकते क्योंकि वे तो अभी १००वर्ष पूर्व ही हुए थे। सूरत गादी के भट्टारक मल्लि भूषण के शिष्य आचार्य महेन्द्र कीर्त्ति भी इन पदों के रचयिता नही हो सकते क्योंकि पदों की भाषा एवं शैली१६वीं शताब्दि जैसी नहीं है। अब शेष दो भट्टारक रहे एक अजमेर गादी के, दूसरे आमेर गादी के। किस्की नगर जिसमें प्रस्तुत गुटका संग्रहीत है वह आमेर गादी के भट्टारक का नगर न होकर अजमेर गादी के भट्टारक के अन्तर्गत आता था इसलिए प्रस्तुत पदो के रचियता भट्टारक महेन्द्र भट्टारक विद्यानन्द के शिष्य थे जिनका पट्टाभिषेक संवत् १७९९ मे हुआ था।

संवत् १७५१ में भट्टारक रत्नकीर्त्ति ने अजमेर में पुनः स्वतन्त्र भट्टारक गादी की स्थापना की थी और अपना पुनः पट्टाभिषेक महोत्सव आयोजित किया था। भट्टारक रत्नकीर्त्ति के पश्चात् विद्यानन्द (संवत् १७६६) में और भट्टारक

महेन्द्रकीर्त्ति स० १७६६ में भट्टारक गादी पर अभिषिक्त हुए थे ऐसा उल्लेख भट्टारक पटावलियों मे मिलता है। महेन्द्रकीर्त्ति के चार वर्ष पश्चात् ही संवत् १७७३ मे भट्टारक अनन्तकीर्त्ति का पट्टाभिषेक होने का उल्लेख मिलता है जिसमे महेन्द्रकीर्त्ति का समय संवत् १७६६—१७७३ तक (सन् १७१२ से १७१६) तक का निश्चित होता है और इसके आधार पर उनके सभी पद १८वीं शताब्दि के प्रथम चरण मे निर्मित लगते है।

महेन्द्रकीर्ति भट्टारक थे। पदो के मूल्याकन से पता चलता है कि वे आध्यत्मिकता की ओर अधिक रूचि रखते थे। अभी तक इनके जितने पद उपलब्ध हुए हैं लेकिन वे सभी पद भाव भाषा की दृष्टि से उत्तम पद हैं।

(१) भ्रमस्यू भूलि रह्यो ससार—प्रस्तुत पद मे कवि ने प्रत्येक अन्तरे मे उदाहरणो द्वारा यह प्राणी मोह मगन होकर आत्मा को किस प्रकार भूल बैठा है इसका अच्छा वर्णन किया है। यह प्राणी व्यर्थ ही मोह के वश होकर अपने आपको परतन्त्र कर लेता है और उलटे कार्य करने मे ही सुख मान बैठता है। यह मानव बन्दर, तोता, स्वान, सिह, हाथी, हिरण आदि के समान विपरीत कार्य करने पर भी अपने आपको सुखी मानने लगता है और मृग तृष्णा के समान दिन रात फिरता रहता है।

(२) मेरो मन विषयाही स्युं राच्यो—पद में कवि ने मानव की वास्तविक स्थिति प्रस्तुत की है कि वह जीवन भर मृत्यु के अन्तिम क्षण तक स्त्री, कुटुम्ब, धन सपत्ति आदि में ही मगन रहता है और अपने आत्म कल्याण की ओर तनिक भी ध्यान नही देता।

(३) साधो अद्‌भुत निधि घर मांही एव साधो अद्‌भुत निधि घरि पाई—इन दो पदों में मानव को अपनी निधि को पहिचानने का आग्रह किया है। यह मानव अपनी आत्मा को भूलकर उसे अन्यत्र ढूंढने का प्रयास करता हैं। जब कि आत्मा का शरीर मे तिलो मे तेल, काष्ठ मे अग्नि के समान वास रहता हैं।

(४) देखो कर्म्म की गति न्यारी—इस पद मे कवि ने रावण, मन्दोदरी, राम सीता, यशोधर राजा अमित देवी राणी, माता चन्द्रमती आदि के जीवन में घटित घटनाओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट करते हुए कर्मों की विचित्र लीला का अच्छा चित्र उतारा है और अन्त मे भगवान जिनेन्द्र की आराधना में ही कर्मों के बाश से छुटकारा मिल सकता है इसका वर्णन किया है।

(५) सेवत विषय तृपति नहि मानैं—प्रस्तुत पद में कवि ने संक्षिप्त रूप में मानव स्वभाव पर प्रकाश डाला है कि वह संसार में विषयों के सेवन करते रहने पर अपने आपको अतृप्त मानता है और दिन रात उन्हीं के पीछे दौड़ता रहता है।

(६) सब दु.ख मूल है मिथ्यात—इस पद मे कवि ने मिथ्यात्व को ही मानव के जग मे भ्रमित होते रहने का प्रधान कारण माना है तथा पच्चीस दोषों को छोडने एवं पंच परमेष्ठी का ध्यान ही मिथ्यात्व को दूर करने एवं सम्यकत्व प्राप्ति का उपाय बतलाया हैं।

(७) करूणा करो भगवंत जिनेश्वर पय नमु —यह पद भक्ति परक है जिसमें प्रभु भक्ति से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है इसका वर्णन कियागया है। जिनेन्द्रदेव की महिमा वेद भी बखान करने में असमर्थ रहे हैं इसलिए उन्होंने "नेति नेति" शब्द के द्वारा उनके महात्म्य को प्रगट किया है। वेदों के नेति नेति शब्दों का वैष्णव कवियों ने भी वर्णन किया है।

(८) "चेतन काहे भरम भुलाना" एवं चेतन चेतत क्यूं नहि मनमैं—इन पदों में कवि ने बहुत ही रोमांचक शब्दो में मानव को सावधान रहने का आग्रह किया है। वह प्राणी आत्म स्वभाव को छोड़ कर पर स्वभाव में लग जाता और रतन को छोड कर कांच के टुकड़े मे ही लुभाता रहता है।

इस प्रकार उक्त पदों के मूल्यांकन से पता चलता है कि भट्टारक महेन्द्र कीर्ति आध्यात्मिक संत थे जो अपने प्रवचनो एव साहित्य रचना केद्वारा सदैव समाज को नैतिकता एवं आत्म स्वरूप को पहिचानने का पाठ पढ़ाया करते थे। उनके सभी पदो मे आत्मचिंतन एवं आत्मज्ञान की जो धारा दिखायी देती है वह अत्यधिक स्वाभाविक है। ऐसा मालूम पड़ता है जैसें महेन्द्रकीर्ति को रात दिन आत्मज्ञान प्राप्त करने की चिंता सताती रहती थी और उसी चिंता को उन्होंने अपने हिन्दी पदों में व्यक्त किया हो। कवि के पदों मे महाकवि बनारसीदास के पदों की छाप दिखायी देती है तथा कबीर एवं दूसरे निर्गुण पंथी कवियों की झलक दृष्टिगोचर होती है लेकिन इतना अवश्य है कि कवि ने इन पदों में अपने सैद्धान्तिक ज्ञान का भी अच्छा उपयोग किया है।

भाषा—महेन्द्रकीर्ति के पदो की भाषा राजस्थानी के समीप है। १८वीं शताब्दी में जिस प्रकार भाषा मे निखार आने लगा था वही रूप में हमें इन पदों की भाषा में दिखाई देता है लेकिन फिर भी राजस्थानी के शब्दो की बहुलता है स्यु, राख्यो, भाख्यो जैसी क्रिया पद शब्द राजस्थानी भाषाके साथ अपनी अधिक निकटता प्रदर्शित करते हैं।

भट्टारक महेंद्रकीर्त्ति रचित पद

१

राग आसावरी

भमस्यू भूलि रह्यो संसार ।

मोह मगन आतम गुण भूल्यो, भज्यो न जिनव्रत सार ।।भ्र०।।१।।

सीत व्यथा पीडित ज्युं मरकट, तापै गुंजा हार ।

ऊंधै मुख नलनी को सुवटा, कुंणै पटक्यो डार ।।भ्र०।।२।।

ज्युं नर मूढ राचि विसयामिष, मगन भयो तिहुं काल ।

सुष को लेस कहू नहि सुपनै, नरक निगोद्यामार ।।भ्र०।।३।।

जैसे स्वांन भुसैं मंदिर मैं, केहरि कूप गुंजार ।।

फटक सिला मैं देषि आप गज, कीन्हो दशन प्रहार ।।भ्र०।।४।।

ज्युं मृग वन मैं देषि भाडली, मानि सरोवर बार ।।

चहुं दिसि फिरयौ न पायो जलकरण, फूल्यो कांस गवांर ।।भ्र०।।५।।

पायकुटंब भयो ग्रह घोरी, सब सिर धारयौ भार ।।

एकलडो दुष सहै निरतर, जामण मरण अपार ।।भ्र०।।६।।

२

राग आसा

मेरो मन विषयाहीं स्युं राच्यो ।

सुष को साज नही सुपनामैं, परत्रिय देखि देखि नाठयो ।।

बनकी त्रिषा प्रीति वनितास्युं, देषि परिग्रह माच्यो ।।मे०।।१।।

जब लग पत न करै भवि प्राणी, अशुभ कर्म नहिं पाच्यो ।।

महेन्द्रकीर्त्ति तब कहा करौगे, नरक निगोदनि पांच्यो ।।मे०।।२।।

३

राग सारंग तथा पीर

देखो मोह तणी अधिकाइ, सो मोपैं कहियन जाइ ॥
जिह दुख दीयो अनादि ही कालहि, फिरि फिरि तिह लपटाई ॥दे०॥

इहै दुष्ट दुर्मति दुखदाता, नरक निगोदि निसाई ॥
छेदन भेदन ताडन तापन, सूला सेज सुटाई ॥दे०॥२॥

चहुगति भ्रम्यो महा दुख पायो. पराधीन भयो भाई ॥
पर की संगति आपो छीजैं, निज गुण सबै घटाई ॥दे०॥३॥

तातैं सम्यक दर्शन सेवो, भव्य जीव सुखदाई ॥
महेन्द्रकीर्त्ति तव होइ निरंजन आवागमन मिटाई ॥दे०॥४॥

४

राग आसावरी

साधो अद्भुत निधि घर मांही ।
इत उत फिरैं करैं नहि सोधी, अपनी जानत नांही ॥सा०॥१॥

जैसे मृग कस्तूरी कारण वनमैं हिंडत डोलैं ।
मोह मिथ्यात विकल भयो प्राणी, परम धर्म नहि तोलै ॥सा०॥२॥

घर पुरसारथ भोजन सीझा, परभी वसि कुं भटकत अंधा ॥
त्युं प्यौ जीव भ्रमत दुख कारणि, लागि रह्यो दुह धंधा ॥सा०॥३॥

सत्तर कोडाकोडी सागर, मोह महाथिति जाणी ॥
करण तीनि करि समकित राख्यौ,तब प्रगटम निधि जाणी ॥सा०॥४॥

सप्त प्रकृति उपशम करि राखी, तब तैं क्षायिक राई ॥
वेदक तैं निज पर गुण वेदै, यही मोक्ष की साई ॥सा०॥५॥

दर्शन मोह कीयो सत चूरण, वेसठि प्रकृति विनासी ॥
महेन्द्रकीर्त्ति प्रभु भयौ जिनेश्वर लोकालोक विकासी ॥सा०॥६॥

५

राग आसावरी

साधो अद्भुत निधि धरि पाई ।
तीं बिनु भम्यो अनंत चतुर्गति, श्री जिनराज बताई ।।सा०।।१।।

ज्यु अपना पुरुषां की थूणी, घणा काल की राधी ।।
बीजक सहीत पत्र ज्यों निकस्यौ, सांप्रत भयौ सुसाधी ।।सा०।।२।।

ज्यु परमातम देह भूमि मैं, त्यु कचन पाषाणे ।।
अगनि काष्ठ तिल तेल ही वासो, यू आतम निधि जाणे ।।सा०।।३।।

अष्ट कर्म्म रज भू आछादी भेद विना नहीं पावै ।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण बल, सद्गुरु यतन लषावै ।।सा०।।४।।

सौ गुरु चौतिस अतिसय जाके अनन्त चतुष्टय सोहै ।
अष्ट प्रातिहार्य प्रभु सोभित, भव्य जनन मन मोहै। सा०।।५।।

निकट भव्य सो महा उपसमी, भद्ररूप परिणामी ।।
महेद्रकीर्त्ति आतम निधि परसै,मुकति नयर पदगामी ।।सा०।।६।।

६

राग आसावरी

देखो कर्मन की गति न्यारी ।
नही टरत कही नहि टारी ।।

रावन सरीखे सुभट महानर. कहै मंदोदरी राणी ।
सीता सती देहु रघुपती को, राज करो अती जाणी ।।दे०।।१।।

अतेवर जाकै सहस अठारा रूप कला गुण सोहै ।
विद्याधर पुत्री अति सुंदर, अहनिश पिय मन मोहै ।।दे०।।२।।

राव यशोधर विष दे मारयो अम्रित देवी राणी ।
चंद्रमती माता की सगति, मिथ्या बुद्धि बषाणी ।.दे०।।३।।

और असख्य भए महाराजा, तेहु कर्म वसि हारे ।
सम्यक् भाव विना जीव जेते, बहुगति मांही मारे ।।दे०।।४।।

इसौ जानि जिन धर्म्म आराधो, हितू न दूजो कोई ।
महेंद्रकीर्त्ति जिन चरण शरण तैं जन्म मरण नही होई ।।दे०।।५।।

७

राग कानरो

परमेसुर निस्तारो ।
करुणा करि मोहि तारो हो प्रभु ॥परमे०॥
परमदयाल परमपद गामी, अघमोचन अघटारो ॥
वीतराग अरहंत जिनेश्वर, मुकति रमनि वर प्यारो ॥हो प्रभु०॥१॥
अधम उधारण सिव सुखकारण, भव्य जीव आधारो ।
महेंद्रकीर्त्ति कर जोरि वीनवे, आवागमन निवारो ॥हो प्रभु०॥२॥

८

राग कानरो

क्युं करि भक्ति करौं प्रभु तेरी,
अष्ट कर्म मन बैरी ॥हो प्रभु०॥१॥
मोह मिथ्यात महा रिपु घेरयो, छांडत नार न नेरी हो ॥
चहुंगति मांहि भ्रम्यो चिरकाल,तुम सरणागत हेरी हो ॥हो प्रभु०॥२॥
जिन अनंतगुण स्मरण,आत्म शक्ति सु सेरी हो ॥हो प्रभु०॥३॥
महेंद्रकीर्ति अरहंत ध्यान तैं,मुकतिवधू अति नियरि हो॥हो प्रभु०॥४॥

९

राग कानरो

भव सागर भमतो दुख पायो, मोह मिथ्यात महाविस खायो ॥
यो संसार समुद्र अपरमित, अब जब तरयो पार नहीं पायौं ॥
काम क्रोध मद लोभ महाजल, जन्ममरण नक चक भरायो ॥भ०॥१॥
चहुंगति बडवानल अति तातैं, नरक पयाल मांहि संतायो ॥
जैन धरम यह परम पर्योहण, भव्य जीवनि मन भायो ॥भ०॥२॥
साम्य विसेस पाइ थिर रायो, समकित हित अति पवन सुहायो ॥
महेंद्रकीर्त्ति सिव रतन दीपकुं, श्री जिनराज सुपंथ बतायो ॥भ०॥३॥

१०

राग कानरो

सेवत विषय तृपति नहि मानै,
मदन महारिपु कै मदपानै ।।
जैसे स्वान अस्थि चर्व्वण तैं चाटि रुधिर मनमै सुष जानै ।।

भ्रम वसि भूलि गयो आतमनिधि,मूढ और की ओर ही ठाणै ।।से०।।१
निज स्वभाव तजि परसग राच्यो, मोह् विकल ममता चित आणै ।।
महेंद्रकीर्त्ति प्रभु सेइ जिनेश्वर, पूजै तीनि भुवन के राणै ।।से०।।२।।

११

राग केदारो

सब दुष मूल है मिथ्यात ।
जाके उदै जीव नही चेतै करै आतमघात ।।स०।।१।।

मोह् दर्शन नाम जाकै घरै अति उतपात ।।
छाडि दोष पचीस तम घन होइ समकति प्रात ।।स०।।२।।

पंच गुरु पद नाम ध्यायो, द्रिढ ह्वै रइहै तात रमात ।।
महेन्द्रकीर्त्ति सेइ श्री जिनवर, होवौ निर्मल गात ।।स०।।३।।

१२

राग केदारो

महिमा अपार जाके गुणको न आरापार
जग को अधार इसो देव जिणदेव ध्याइये ।।

इन्द्रादिक देव जाकी, मन वचकाय करै सेव,
तीस च्यारि अतिसय बिराजमान गाइये ।।

अनत चतुष्टय प्रगट प्रतिभासै सदा,
आठ प्रातिहार्य महाविभूति पाइये ।।

अहो भव्य वृन्द तजि मोह् मान माया फंद,
बीतराग पद वंद नित्य चित्त लाइये ।।

१३

राग धनाश्री

करुणा करो भगवंत जिनेश्वर पय नवु ॥
जिनगुण सिंधु अपार, पार कहि कैसे पावु ॥
इन्द्री बुधि मनहीन कहो प्रभु क्यूं करि गावु ॥
मेरु चढण कु पांगुलो उदधि तरण भुज हीन ॥
पंछी उडै आकास मैं ताहि गिणे द्रिग छीन ॥जिने०॥१॥

गूंगो मुखि कुवरं, आलसी नभ को पासै ।
मूढ हलाहल भखै, अगनि ज्वाला मुख ग्रासै ॥
ज्युं सूर्य जल कुंड मैं, पकडयौ चाहै बाल
इसो सुभट नर कौन है जो गहि राखै काल ॥जिने०॥२॥

वीत राग सर्वज्ञ सिद्ध परमातम स्वामी ।
निर्विकार निर्दोष सुद्ध पद मोक्ष के गामी ।
निज भाषा स्तुति ये करै समवसरण तिरजंच ।
ज्यु जलनिधि जल तैं भरचो चिडी लेय भरचूंच ॥जिने०॥३॥

दोष अठारह रहित देव अरहंत जिनेश्वर ।
अतिसय वर चौतीस दिव्य सोभै परमेश्वर ।
अष्ट प्रातिहार्य भले अनंत चतुष्टय पाय ।
त्रेसठि प्रकृति विनासिके भए त्रिभुवनपति राय ॥जिने०॥४॥

जिनवर रूप अनंत कह्यौ क्यु मनही समावै ।
नेति नेति कहै वेद नाहि कछु अंत न आवै ।
अपनी ममता मारिको रहै अंतरि लौ लाइ ।
मैलै मिटै कुबुद्धी की तब दरसन दे आइ ॥जिने०॥५॥

जाको सम्यक् ज्ञान ध्यान रज कर्म विनासै ।
सकल तत्त्व को रूप परम होए परकासै ॥
चिदानंद छिद्र पहै चिद्विलास चिदधाम ॥
महेंद्रकीर्ति मनि मित असो सिव पावै विसराम ॥जिने०॥६॥

१४
राग सारंग

चेतन काहे भरम भुलाना ॥टेक॥
सहज स्वभाव राचि निज अपनो छिन मैं सिव पुरि जाना ॥चे०॥२॥
छाडि अमौलिक रतन अनोपम, काच की किरच लुभाना ॥चे०॥३॥
दुष्ट अनिष्ट मिथ्यात महा विष, रचि रचिभेष धराना ॥चे०॥४॥
स्वपर विवेक महा सुष कारण, सेवो समकित राना ॥
सहज यतन परगट होइ ऐसे, ज्युं कचन पाषाना ॥चे०॥४॥
जन्म जरा कहू मरण न व्यापैं, सुद्ध रूप ठहराना ॥
महेंन्द्रकीर्त्ति तव अंतर कैसो जल कण सिंधु समाना ॥चे०॥५॥

१५
राग सारंग

चेतन चेतत क्युं नहि मनमै ।
मोह प्रमाद महापद पीयो छक्यो धरणि घर बन मे ॥
यो जड रूप कर्म को दाता, राचि रह्यो तू तनमे चे०॥
षट्रस भोजन बहुविधि पोषो, तो हू नही गुणगनमैं ॥
प्रबल मिथ्यात घटा है आछी, सूर्य लषै ना घन मैं ॥चे०॥२॥
बिनु समकित ज्यु तत्व न भासैं, कहा भयो जोजनमैं ॥
महेंद्रकीर्त्ति कस्तूरी कारणि, ज्युं ढूंढत मृग बन मै ॥चे०॥३॥



देवेन्द्र कवि

१७वीं शताब्दि में जितनी संख्या मे हिन्दी के जैन कवि हुए उतने इसके पूर्व कभी नही हुए। देवेन्द्र कवि ऐसे ही कवि थे जो १७वीं शताब्दि के प्रारम्भ मे हुए और जिन्होंने हिन्दी काव्यों के लेखन मे अपना नाम प्रशस्त किया। वे इस भाग में जिस प्रकार बाई अजीतमति, चनपाल, एवं भट्टारक महेंद्रकीर्ति अब तक अचर्चित रहे हैं उसी प्रकार देवेन्द्र कवि भी नामोल्लेख के अतिरिक्त शेष दृष्टि से अचर्चित कवि ही रहे हैं जिनका विस्तृत परिचय यहा प्रथम बार दिया जा रहा है।

देवेन्द्र कवि का प्रथम बार नामोल्लेख मैंने राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डार की ग्रन्थ सूची पंचम भाग मे किया था। और उनकी अब तक उपलब्ध एकमात्र कृति यशोधर रास का उल्लेख किया था। इसके पश्चात् किसी भी विद्वान ने उनका कहीं परिचय दिया हो वह मेरे देखने में नहीं आया। अभी अब मैं नवम्बर ८३ में परमपूज्य आचार्य धर्मसागर जी महाराज के दर्शनार्थ एवं वहां के शास्त्र भण्डार की खोज मे प्रतापगढ (राजस्थान) गया तो जूना मन्दिर के शास्त्र भण्डार यशोधररास की एक प्राचीनतम पाण्डुलिपि मिल गयी जो अपने रचना काल के ६ वर्ष पश्चात् ही लिपिबद्ध की गयी थी। इस प्रकार देवेन्द्र कवि ऐसे चोथे अचर्चित कवि हैं जिनका यहां परिचय दिया जा रहा है।

देवेन्द्र कवि के पिता बुधेश विजय थे जो स्वयं भी कवि थे तथा अपने नाम के पूर्व कवि उपाधि लगाते थे। वे जैन ब्राम्हण थे इसलिए बुधेश शब्द का प्रयोग करते थे। देवेन्द्र के पूर्वज अनन्त पंड्या थे जो भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं शिष्य ब्रह्म जिनदास द्वारा सम्बोधित हुये थे। अनन्त पंड्या का राजाओं की तरह सम्मान था। उसने सम्यकत्व की आराधना की थी तथा जीवदया व्रत का पालन किया था। कुतुबुखान की सभा में उसने जैन धर्म की प्रभावना तथा सर्प को घड़े में बन्द किया था। यही नहीं अनेक जिन मन्दिरों का निर्माण

तथा जीर्णोद्धार कराया था [1] तथा प्रतिष्ठा विधान कराये थे।

अनन्त पंड्या के कउजी पुत्र हुए जो अत्यधिक उदार स्वभाव के थे। इसकी एक पुत्री पद्मावती थी जिसके पति का नाम धरणीधर था। ब्राह्मणो के चोबीस कुलों मे वह विशिष्ठ माना जाता था। धरणीधर के दो पुत्र थे जिनमें जेष्ठ पुत्र विक्रम तथा कनिष्ठ पुत्र गगाधर थे। गगाधर जैन न्याय के विशेष ज्ञाता थे तथा सम्यकत्व से सुशोभित थे। उसे सौभाग्य से जगत से विरक्ति हो गयी जो बादमे भट्टारक विसालकीर्त्ति के पट्ट में देवेन्द्रकीर्त्ति के नाम से विख्यात हुए। उन्होने कर्नाटक प्रदेश मे जैनधर्म की बहुत प्रभावना की थी और जैन राजाओ द्वारा पूजित हुए थे।

विक्रम [3]त्रिविध आगमो के ज्ञाता थे इसलिए वे विक्रमभट्ट के नाम से विख्यात थे। महीपाल कीर्त्ति उनके विद्यागुरु थे। विक्रम की पत्नि का नाम अजबाई था जो शीलवती एवं गुणवती थी। देवेन्द्र उसी का पुत्र था। भगवान जिनेन्द्रदेव का वह परम उपासक एव जैन शास्त्रो का परम ज्ञाता था।

देवेन्द्र कवि थे। उन्होंने कितने ग्रन्थो की रचना की थी यह तो अभी ज्ञात नही हो सका है लेकिन उनकी एक मात्र रचना "यशोधर रास" का रचना काल

---

१ धन धन जिनदास ब्रह्मचारणी, सा० प्रतिबोध्या ब्राह्मण राज तो।
अनन्त पडया नाम भलूं, ।सा०। जाणे जेह ने राज समान तो ॥५६॥

तीणें आदरयो समकीत रत्न ।सा०। यश जीवदया प्रतिपालतो।
अट सर्प दीव्य करयूं ।सा०। कुलूशांत सभा विसालतो ॥६०॥

२ जैन धर्म तिहा थापीयो ।सा०। व्यापीयो जस अपार तो।
बिंब प्रासाद उद्धार करया ।सा०। तस सुत कउजी उदारतो ॥६१॥
तस पुत्री पद्मावती ।सा०। धरणीधर तस कंत तो।
चौबीसा ब्राह्मण कुलि ।सा०। सोहि महीमावंत तो ॥६२॥

तस पुत्र दोये पवित्र ।सा०। विक्रम गंगाधर नाम तो।
जैनवादी विद्या तिला ।सा०। समकित रतन सुहामनो ॥६३।

गंगाधरे तप उद्धरयो ।सा०। भाग्य सौभाग्य समुद्र तो।
विसालकीर्त्ति पाटि हूंवा ।सा०। देवेन्द्रकीर्त्ति सुरेन्द्रतो ॥६४॥

अकंलक सूरी सीघासने ।सा०। कर्णाटक देस प्रसीध तो।
जिनधर्म तीहां उद्धरयो ।सा०। जैन राजादिक पूजा कीधतो ॥६५॥

३ विक्रम भट्ट विख्यात तो ।सा०। सील समकित गुण खाण तो।
तस वि पुत्र बीशारद ।सा०। देवेन्द्र वासुदेव जाण तो ॥६६॥

संवत् १६३८ आसोज सुदी २ शुक्रवार है। "रास की रचना महूआ नगर (गुजरात) हुई थी और वह भ० वादिचन्द्र आदेश से लिखी गयी थी[4]।

देवेन्द्र कवि भगवान मुनिसुव्रत नाथ के परम उपासक थे इसलिए ग्रंथ का प्रारम्भ उन्हीं के मंगलाचरण एवं समापन भी उन्हीं के स्मरण से किया है। यशोधर रास ६ अधिकारों में विभक्त है तथा वह प्रबन्ध काव्य के रूप में है। कवि ने रास का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया है इसके पश्चात् सरस्वती वन्दना की गयी है और "गासू' यशोधर रास" के रूप में रास रचने का संकल्प व्यक्त किया है। स्याद्वाद प्रकाशिनी जगन्माता शारदा के स्तवन के पश्चात् चौबीस तीर्थंकरों का २४ पद्यो में स्तवन किया है और फिर तीर्थंकरों के गणधरों की संख्या का उल्लेख करते हुए भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् होने वाले तीन केवलियों[6] एवं पांच श्रुतकेवलियों[7] केनामों का स्मरण किया है[8]।

श्रुत केवलियो के पश्चात् विशाखाचार्य आदि दश पूर्वधारी एवं नक्षत्रादि ११ अग के पाठियों का भी स्मरण किया है। इसके पश्चात् आचार्यों को स्थान दिया है जिसमे कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वामि समन्तभद्र, पूज्यपाद, जिनसेन, अकलक, एवं गुणभद्र जैसे आचार्यों का उल्लेख एव गुणानुवाद किया है।

एकादशांग सुजाण नक्षत्रादि सोहामणाए।
अनुक्रमि श्री कुंदकुंद पंच नामि कोडामणीए ॥२०॥

जिन चरण कमल सेवि ।सा०। करि जिन शास्त्र अभ्यास तो।

४ संवत् १६ आठ त्रिसि ।सा०। आसो सुद तीज बीजि शुक्रवार तो।
रास रच्यो नवरस भरयो ।सा०। महूआ नगर मझार तो ॥

५ अवनी अनोपम रूप, वादीचंद तस पाट सोहिए।
वादी सयल सणगार। भवी अण जन तणां मन मोहिए ॥२१॥

दोहा

एह गच्छपती आदेस थी, रास रचेवा आज।
उद्यम मांड्यो मन रली, सजन आनन्दह काज ॥१॥४॥

६ अनुक्रमि गौतम स्वामि, सुधर्माचारज केवलीए।
अंतिम केवली जाण, जंबूस्वामि कीरती वलिए ॥१६॥

७ श्रुत केवली वली पंच, पंच संसार दुःख हरए।
विष्णुनंदि मिम होय, अपराजित जिजित स्मरए ॥१७॥

गोवरधन गुणवंत, आणी भवी अरा उद्धरेए।
भद्रबाहु बहु भेद, चन्द्रगुपती संसय हरेए ॥१८॥

उमास्वामी मुनि संत समन्तभद्र भवि भ्रांतिसोए।
प्रतिबोध्या सिवकोटि कीध स्वयभू गुणनिलोए ॥२१॥

पूज्यपाद प्रसीध जिनसेन सासने चंदलोए।
अनोपम अकलक वीर धरि कीध जीतवा भलोए ॥२२॥

गुणभद्रादि अनेक पूर्वाचारज बहु हुवाए।
हो ध्याऊं धरी भाव काम वांछित सिद्ध थवाए ॥२३॥

कवि ने आचार्यों के पश्चात् भट्टारको की परम्परा का उल्लेख किया है जिनमे भ० पद्मनन्दि. विद्यानन्दि मल्लिभूषण, लक्ष्मी चन्द्र, वीरचन्द्र, ज्ञानभूषण, प्रभाचन्द्र, वादिचन्द्र के नाम गिनाये हैं। ये सभी भट्टारक बलात्कार गण की सूरत शाखा के भट्टारक थे। इस प्रकार यशोधर रास ऐतिहासिक तथ्यो का भाग बन गया है।

भगवान महावीर का समवसरण जब विपुलाचल पर्वत पर आया तो श्रेणिक महाराज पूरे प्रजाजनों के साथ उनकी वन्दना को गए। उनका हृदय से स्तवन किया और गौतम गणधर से यशोधर के जीवन वृत जानने की अपनी इच्छा प्रकट की इस प्रकार कवि ने प्रथम अधिकार काव्य की भूमिका के रूप मे प्रस्तुत किया है जिससे पता चलता हैकि कवि में काव्य निर्माण की विलक्षण प्रतिभा थी।

दूसरे अधिकार से नवम अधिकार तक यशोधर की जीवन कथा दी हुई है जो अत्यधिक काव्य-मय भाषा एव शैली में लिखी गयी है। कवि के पूर्व मे जितने भी यशोधर के जीवन पर काव्य, रास एवं चरित्र लिखे गये थे उनसे कवि परिचित था या नही इस सम्बन्ध मे तो हम कोई प्रकाश नही डाल सकते क्योंकि स्वय कवि ने अपने पूर्ववर्ती किसी भी कवि का नामोल्लेख नहीं किया जिन्होने अपभ्रंश संस्कृत एव हिन्दी मे यशोधर काव्य/रास/चरित्र लिखे थे लेकिन कवि ने यशोधर की जीवनकथा लिखते समय उसी परम्परा का निर्वाह किया है जो उसके पूर्ववर्ती कवियो ने किया था। लेकिन सभी प्रसंगो का वर्णन करते हुए कवि ने अपनी काव्य कौशल का प्रदर्शन अवश्य किया है। इससे काव्य मधुर एवं सरस बन गया है। वैसे भी स्वय कवि अपने रास को नवरस युक्त रचना कहा है। और "रास रच्यो नव रस भर्यो" जैसे शब्दो का प्रयोग किया है। यहां हम कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं :—

नगर म नारी की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है कि सुन्दरिय पर भवरे झूमते थे और जब वे उन्हें उडाती तो उनकी करधनी शब्द करती थी। उनके मधुर शब्दो को सुन कर स्वय कोयल लज्जित हो जाती थी।

भमर बादंला कंकणु खलके, खारस सरस सुगंत तो ।
कोयल नारी अवय सुराविनु, वाजी वचन अंगंत सु ।।६७।।

कवि ने एक ओर श्मशान का जहां वीभत्स वर्णन किया है वहां उद्यान का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ है। इससे पता चलता है कि कवि की वर्णन शैली सामान्य रूप से अच्छी थी।

वीभत्स वर्णन :—

चीहावकाए उठ्या बहु धूम, अर्ध दग्ध कलेवर पड्याए।
ठाम ठाम ए पड्या बहुत, बली पशु मांस एहां मडाए ।।२।।

विकसयाए मुख दीसि दांत, तु बली ए बणी रडवडीए।
सीआलीयांए ताणे तास, आकाशे गृध लेई उडैए ।।३।।

कूतरा एक लागी अपार, बकता माहो माहि हह कहिए।
वायस ए करके बहठ, कागिए बणू कल बली रहिए ।।४।।२०।।

प्राकृतिक सुन्दरता —

वाडी बन ठाम ठाम, कपूर कदली कोमल दिसी हेलो।
नालकेर खजूर, पूग तरणां तरु अर ही केहेल ।।८।।

ताल तमाल हे ताल,सरल सोहि सज्जन समाहेल।
कोमल मध्य रसाल, देवदारु आदि उत्तमा हेल ।।९।।

तज पत्र नागवेल एलची सभी फले करी हेल।
जायफल लंवगह वेल, मरी बेल कि झूमके भरी हेल ।।१०।।

कवि ने यशोधर रास में सूर्यास्त एवं चन्द्रोदय दोनों का वर्णन किया है। जिनके वर्णन से प्रबन्ध काव्य की महत्ता में वृद्धि होती है। सूर्यास्त वर्णन का एक उदाहरण निम्न प्रकार है :—

अस्ताचले रे सूर आवंतो जाणीयो।
निज सीर परि रे मुकुट समो धरवायो ।।४।।

पश्चिम दिशि रे रवी आविह्‌ बारातडी।
पंखी तरणा रे सोर अति करे बापडी ।।५।।

गिर अंतरे रे रवि बल्‌ण नाम पामयु।
उत्तम केरे को तिग एक सीस नमामयु ।।६।।

व्यभचारिणी रे गमन गोख रीसि चढी ।
रवि उपरि रे देखाडि आंखि रातडी ॥७॥२१॥

उक्त पद्यों मे सूर्यास्त होने पर वह किसको कैसा लगता है इसका सामान्यत अच्छा वर्णन मिलता है ।

इसी तरह कवि ने चन्द्रोदय का भी अच्छा वर्णन किया है ।

पूरब दिशी रे गुफा थको ए नीसरी ।
गगन वनै रे संचरयो शशी कैसरी ॥२२॥

किरण नखे रे अंधकार गज विदारयो ।
जाणी तारा रे मुक्ताफल विस्तारयो ॥२३॥

शशी सीतल रे अमृत मय कहि वाउ तो ।
लांछन मसि रे हर दह्यो काम जीवाड तो ॥२६॥

इस प्रकार यशोधर रास में और भी कितने ही अच्छे एव काव्यमय वर्णन है जिनसे रास के काव्यत्व मे वृद्धि होती है ।

लेकिन यह भी कहा जाना चाहिये कि कवि की वर्णन शैली अन्य कवियो से एकदम भिन्न है । वह प्रत्येक वर्णन मे अपनी छाप छोडना चाहता है लेकिन इसमे वह पूरी तरह से सफल हुआ है यह सन्देह युक्त है ।

भाषा—कवि गुजरात का रहने वाला था और गुजरात में ही रास की रचना की गयी थी इसलिए रास की भाषा पर गुजराती भाषा एवं शैली का पूरा प्रभाव है । छन्दो का प्रयोग एवं शब्दो का चयन दोनों मे गुजराती का प्रभाव द्योतित है । महाकवि ब्रह्म जिनदास ने जिस शैली का प्रयोग किया था और उसी शैली को यहा कवि देवेन्द्र अपनाया है । १६वी १७वी शताब्दि मे गुजराती शैली का हिन्दी कवियो पर पूरा प्रभाव रहा । इसीका नमूना यशोधर रास में देखा जा सकता है ।

छन्द—रास मे दोहा छन्द के अतिरिक्त और भी भास छन्दों का उपयोग किया गया है । हमे आज एक भास में कितने ही पद मिलेंगे साथ ही दूसरे भास आणदानी भास हेलांनी (१३), भास नारे सुआनी (१५), भास ब्रह्म गुणराजनी (१६), भास चौपई (२४) भास भमारुलीनी भास रासनी (३१), भास साहेलीनी (३६), भास वसन्त फागुणनी (४६), भास भूपाल रागनी (५३), भास भद्रबाहुनी (८१) भास पटुलसडीनी(८४) भास जीवडानी (६८) आदि भासों का छन्दोंके रूप मे प्रयोग किया है । कवि

से चौपाई जैसे स्वतन्त्र छन्द को भी ढाल चोपई कर छन्द का प्रयोग किया गया है। हां दोहा के आगे पीछे ढाल का प्रयोग नहीं किया है।

रचना स्थान—जैसा कि पूर्व में कहा जा चुका है कि यशोधर रास की रचना महुवा नगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी थी। [1]नगर धनधान्य एवं सुवर्ण से ओतप्रोत था। वहां वणिक समाज के पर्याप्त संख्या में घर थे। बड़े बड़े बाडी एवं बगीचे थे जिनमें विभिन्न प्रकार के फलो वृक्ष थे। नगर में श्रावकों की अच्छी बस्ती थी जो दान पूजा व्रत अभिषेक करने में बड़ी रुचि रखते थे। वहां बड़े २ विशाल जिन मन्दिर थे इस प्रकार जिस नगर (महुआ) मे कवि रहते थे वह अपने समय का उत्तम नगर माना जाता था।

तेह देस माही सोहि महूआ नयरी वसततो।
धन कण कणयर तने भरी, महाजन नवसय महंततो ॥७॥
ब्राह्मण वेदने अभ्यासे नाहि पूर्ण नदी मांही तो।
अवर वरण घणा वसि सां· नित नित होय उछाहतो ॥८॥
सिंहपुरा कुल मंडण महि वारिया श्रावक वसंततो।
दान पूजा व्रत अभिषेक, बहुपरि धरम करंततो ॥१२॥१३२॥

महुआ नगर के मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा चन्द्रप्रभु स्वामी की थी। मन्दिर मे धरणेन्द्र पद्मावती की प्रतिमा भी थी जिनके दर्शनमात्र से भूत पिशाच की बाधा दूर हो जाती थी मन्दिर के बहार क्षेत्रपाल भी पूजे जाते थे।

महुआ नगर में अनेक श्रावक थे जिनमे संघवी नाकर नन्दन, संघवी शिवदास सघवी दाभाई, साह नाहानकुल चादलो, सघवी जना, जयवंत सघवी, हंसराज सुत साह कुंआरी, नाहुन सुत मांगजी, माणजी आदि के नाम विशेषतः उल्लेखनीय थे जिनके नाम कवि ने ग्रंथ प्रशस्ति में गिनाये हैं। इन सबने यशोधर रास की रचना मे विशेष प्रेरणा की थी।

सघसी नाकार नंदन ।सा०। संघवी साहि सिवदास तो।
भूपाल कुल सोहावरु ।सा०। संघवीदा भाई गुणराम तो ॥३६॥
साहा नाहा नकुल चांदलो ।सा०। दा भाई दान दातार तो।
सांघवी जना कुल मांडण ।सा०। जयवंत सघीव उदारतो ॥३९॥
हंसराज सुत साहा कुंअर जी ।सा०। नाहुन सुत मांगजी सुचंगतो।
माणजी आदि संघ श्रावकनी ।सा०। रास रच्यो मन रंगतो ॥४०॥

---

१ तेह चन्द्रप्रभ्वती आदेश थी, महुआ नगर मझारतो।
चंद्रप्रभ चैत्यालय रास रच्यो शुभ कारतो ॥

देवेन्द्र कवि भट्टारक सकलकीर्त्ति के आम्नाय में होने वाले भट्टारकों— सकलकीर्त्ति, भुवनकीर्त्ति ज्ञानभूषण, विजयकीर्त्ति, शुभचन्द्र, सकल भूषण, सुमति कीर्त्ति एवं गुणकीर्त्ति जैसे भट्टारकों एवं ब्रह्म जिनदास एवं उनके शिष्य शांतिदास ब. हंसराज एवं ब. राजपाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से बड़े प्रभावित थे इसलिए कवि ने उनका साभार उल्लेख किया है। कवि के समय मे ब्रह्म शांतिदास थे जिनके उपदेश एवं प्रेरणा से कवि की धर्म एवं साहित्य रचना की ओर प्रवृत्ति बढी।

यशोधर के जीवन की लोकप्रियता

यशोधर राजा का जीवन जैन समाज में अत्यधिक लोकप्रिय रहा है। द्रव्य हिंसा के स्थान पर भाव हिंसा भी कितनी पाप बन्ध का कारण बनती है यही इस काव्य का मुख्य संदेश है। इसलिए महाकवि पुष्पदन्त से लेकर देवेन्द्र कवि तक निम्न कवियों ने अपनी शैली एवं भाषा मे यशोधर काव्यों की रचना करके यशोधर के जीवन का एक कीर्त्तिमान प्रस्तुत किया :—

१	जसहर चरिउ	महाकवि पुष्पदन्त	अपभ्रंश	९ वीं शताब्दि
२.	यशस्तिलक चम्पू	सोमदेवसूरि	संस्कृत	शक संवत् ८८१
३	यशोधर चरित्र	भ. सकलकीर्त्ति	,,	१५ वीं शताब्दि
४	यशोधर रास	ब्र. जिनदास	राजस्थानी	१५ वीं शताब्दि

मूल संघ भारती गच्छ पद्मनदी मछ राय तो।
नेह पाटि सोहे दिनकर सकल कीरति गुण ठायतो ॥५०॥

भुवनकीर्त्ति भवि विज्ञात, तस पाट सार सणगार तो।
ज्ञानभूषण ज्ञानदायक, गोयम सम आचार तो ॥५१॥

विजय कीरती गुरु गच्छपती, वचन सीची मुनि हंसतो।
तस पटोधर सुभचन्द्र वादीस्वर वर वंसतो ॥५२॥

हूंबड कुल बडं साजनं, सकल भूषणो नुत पायतो।
वादीय मान मर्दन षट् दर्शण वादी रायतो ॥५३॥

तेह पाटि सुमती कीरती सूरी, तेह पाटि उदयो भाण तो।
भवीया कमल विकासवा, गुणकीरती गुण आणतो ॥५४॥

एह गच्छपति तणि अन्वय, ब्रह्मचारी जिनदास तो।
सांतिदास तस पट धर, ब्रह्म हंसराज गुणवासतो ॥५५॥

राजपाल ब्रह्म तेह पाटि, सांपति श्री शांतिदास।
नेह उपदेस धनघोर श्री जिनधर्म उल्लास तो ॥५६॥

५.	यशोधर चरित्र	आचार्य सोमकीर्ति	संस्कृत	संवत् १५३६
६.	यशोधर रास	,,	हिन्दी	,,
७.	जसहर चरिउ	पं. रइधू	अपभ्रंश	१५ वीं शताब्दि

कविवर देवेन्द्र के पश्चात् संस्कृत एवं हिन्दी कवियो की ओर भी यशोधर काव्यों की रचनायें मिलती है जो उनकी जीवन कथा की लोकप्रियता की द्योतक है। देवेन्द्र के यशोधर रास की वही कथा है जिसका हम अकादमी के पंचम भाग में सार दे चुके हैं फिर भी पाठकों की जानकारी के लिए यशोधर रास का संक्षिप्त सार यहां भी दिया जा रहा है।

कथासार

भारत क्षेत्र के आर्य खण्ड में योध देश था जहां की प्राकृतिक सुषमा निराली थी तथा प्राणीमात्र निर्भय होकर विचरण करते थे। राजपोर नगर में महलों की पंक्तिया एवं मन्दिरों के शिखर दूर से ही नगर की भव्यता एव सुन्दरता का प्रदर्शन करते थे। नगर में सभी जाति के लोग रहते थे। योध देश के राजा मारिदत्त था जिसका राज्य वैभव निराला था। वह अत्यन्त प्रतापी राजा था। एक दिन उसी नगर में भैरवानन्द नाम का एक जोगी आया जिसके हाथ मे त्रिशूल था। वह डमरू बजाता तथा वनचरों की हिंसा करने में आनन्द मानता था। उसने नगर मे आते ही अपने ज्ञान विज्ञान के सम्बन्ध मे अनेक बाते बतलाई तथा कहने लगा कि उसे राम लक्ष्मण, पाण्डव आदि दिखलायी देते हैं और वह जनता को भी दर्शन करा सकता है। जोगी को राज दरबार मे बुलायागया जहां उसने राजा को प्रभावित कर लिया और जब राजा ने आकाशगामिनी विद्या प्राप्त करना चाहा तो उसने चण्डमारि देवी की भक्ति एवं उसके आगे थलचर जलचर एवं नभचर जीवों के युगलों की बलि आकाशगामिनी विद्यासिद्धि के लिए आवश्यक बतलाया। राजा ने अपने सैनिकों को तत्काल सभी प्राणी युगलों को लाने का आदेश दिया। चंडमारी का मन्दिर पशु पक्षी युगलों से भर गया। हिंसा का घोर वातावरण बन गया। मन्दिर में चीत्कार एव चिल्लाहट के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहा। इसके पश्चात् भैरवानन्द ने कहा कि जब तक मानव युगल को बलिदान के लिए नही लाया जावेगा तब तक विद्या सिद्ध नहीं होगी। राजाके आदेशानुसार उसके सनिक चारों ओर दौड़े और मार्ग में जाते हुए एक ब्रह्मचारी एवं एक ब्रह्मचारिणि को पकड़ कर देवी के मन्दिर में ले आये।

राजा मारिदत्त वहीं था। मानव युगल और वह भी साधु के वेश में तथा सुन्दर तथा कान्तिमान देह युक्त शरीरधारियों को देखकर राजा आश्चर्य चकित

हो गया। नगर के बाहर तीन दिन पूर्व ही दिगम्बर जैन मुनि सुदत्ताचार्य का संघ आया था। आचार्य के तपोबल से चारो तरफ हरियाली छा गयी थी। उसी संघ के ये दोनो साधु एवं साध्वी थे जो आहार के लिए नगर में आ रहे थे।

राजा मारिदत्त जैसे ही नर युगल का वध करने के लिए तलवार सम्हालने लगा, दोनों साधु साध्वी ने राजा को आशीर्वाद दिया तथा उसके दीर्घजीवन एवं यश की कामना की। राजा उनके वचन सुन कर उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ और अल्प वय मे ही साधु जीवन अपनाने का कारण जानना चाहा। ब्रह्मचारी ने राजा से कहा कि वह इनके सम्बन्ध मे जानकर क्या करेगा क्योंकि वह स्वयं तो पाप बुद्धि मे फसा हुआ है। राजा ने तत्काल तलवार छोड दी और उनसे पूर्व भाव जानने के लिए आतुर हो उठा।

मारिदत्त तब उपसम्यो, खड्ग मुक्यो तेणि वार ।
कर युगम जोडी करी, करी कोपनो परीहार ।।३।।२४।।

इसके पश्चात् ब्रह्मचारी ने निम्न प्रकार कथा प्रारम्भ की :—

भारत देश के आर्य खण्ड मे अवंती प्रदेश था जो अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध था। उज्जयिनी उसकी राजधानी थी जो सभी तरह से सम्पन्न नगर था। जिसका कवि ने बहुत ही विस्तृत वर्णन किया है। वहा का राजा था यसोध जो क्षत्रिय वंश भूषण था। राणी का नाम चन्द्रमती था जिसकी देह का निर्माण मानों स्वय विधाता ने ही किया था। कुछ समय पश्चात् उसको पुत्र रत्न की जब प्राप्ति हुई तो चारो ओर आनन्द छा गया। राजकुमार का नाम यशोधर रखा गया।

नाम जसोधर तेह वीऊए, बहु पिरि करि उछाहतो।
रतन जडित भूषण भलाएं, पहिरवी धरि ऊमाहतो ।।२३।।३२।।

पाच वर्ष का होने पर राजकुमार को पढने भेजा गया जहां उसने सभी विद्याए सीख ली। न्याय, व्याकरण, छन्द, अलकार तर्क संगीत, ज्योतिष, आदि सभी शास्त्रों मे पारंगता प्राप्त की। युवा होने पर उसे युवराज पद से सुशोभित किया गया। युवराज के विवाह का प्रस्ताव लेकर वराड देश के राजा सालिवाहन के पास भेजा। उसकी पुत्री का नाम अमृतमती था। जब अमृतमती का लग्न लेकर वहा का मंत्री उज्जयिनी आया तब अनेक प्रकार के उत्सव किए गए। पत्रियां लिखी गयी और सहस्त्रों कुटुम्बी जन एकत्रित हुए। नाच गान एवं संगीत समारोह सम्पन्न किए गये। उज्जयिनी से बारात वाराड देश गयी जहां उसका इतना अधिक स्वागत हुआ कि लोग आश्चर्य करने लगे। दहेज इतना अधिक दिया गया जिसका

री कहि। मालवीर। श्री लम्मीगर्जि संजारकहि। मां समसंग्रहे आतार नी भौतिन
मानि। वर्ष २०५ जाते। श्री कलसेन आचार्य। आपुलीग [illegible] स्थापना कीधी। बी[illegible]
मपछि। वर्ष ५३६ गते। श्री पुज्यपाद शिष्य वज्रनंदी द्राविड़ संघनी स्थापना कीधी।
बीजऊ लेपासी सवीन नमानि। [illegible] मानवथ नमूछि [illegible] वीक्रम पछी वर्ष ७५३
विनयसेन शिष्य कुमारसेन। सन्यास भंग करीनि। काष्ठ संघनी स्थापना कीधी
[illegible] कठ गा। व मरनी ली धी। स्त्रीनि पुनरपी दीक्षा। क्षुल्लकनि वीरचर्या।
[illegible] हुं [illegible] तकहि। वीक्रम पछि [illegible] वर्ष २०० जाते। मथुरायां। रामसेने माथुरी
[illegible] गछ नी स्थापना। ना की धी। नि पीछी या। दशरत्न देसो। विकेद्रे सोपु [illegible] वतीन
[illegible]। बार व इ मुनीना। तेनकरी स्थापि। पीलि संघा। वीक्रम पछि श्री वर्ष १८००
तेह की या बीपरीत करी स्यात ती। संवत् १६५० वर्षे पंचमा [illegible] तेल सातव
२ अजीतमती [illegible] लिखितं।

बाई अजीतमति द्वारा संवत् १६५० में लिपिबद्ध मूल पांडुलिपि के एक पृष्ठ का चित्र

यशोधर रास की संवत् १६४४ की पांडुलिपि का अन्तिम पृष्ठ

कोई पार नहीं था। विवाह के पश्चात् राजा यशोध ने राजकुमार यशोधर को पूर्ण रूप से योग्य मान कर उसका अपने ही हाथों से राज्याभिषेक कर दिया।

राजा यशोधर राज्य करने लगे। रानी अमृत मती भी जीवन का आनन्द लेने लगी बसन्त ऋतु आने पर बसन्तोत्सव मनाया गया तथा राजा एवं रानी वन क्रीड़ा करने गये। कवि ने बसन्तोत्सव का सूर्योदय एवं सूर्यास्त दोनों का अच्छी तरह वर्णन किया है। कुछ समय पश्चात् रानी का महलों नीचे रहने वाले कुबड़ा से प्रेम हो गया और वह एक रात्रि को राजा को सोता हुआ जानकर पूरे शृंगार के साथ अकेली ही उसके पास चली, राजा भी जग गया और उसके पीछे पीछे चलने लगा। वहां राजा को यह देख कर महान् आश्चर्य हुआ कि किस प्रकार एक रानी दुर्गन्ध युक्त कुबडे की मिन्नत कर रही है। एक बार तो राजा ने अपनी तलवार से उसे मारना चाहा लेकिन बाद में उसने स्थिति को देख कर वापिस पलंग पर सो गया। कुछ समय पश्चात् रानी भी वहीं आकर सो गयी।

यशोधर राजा को जब दुस्वप्न की शान्ति के लिए एवं सुख समृद्धि के लिए देवी के सामने जीवों का वध करने के लिए उसकी माता चन्द्रमती ने बहुत समझाया लेकिन राजा ने कहा कि हिंसा करने से पाप लगता है, नीच गति का बंध होता है। उसकी माता ने एक आटे का कुकड़ा बनाया और उसी का वध करने का आग्रह किया राजा ने माता की बात मानली और आटे कुकड़े का वध कर दिया। इस से यशोधर ने बहुत पश्चाताप किया और गृह त्याग कर तपस्वी बनने का निर्णय लिया। रानी को जब यह मालुम हुआ तो वह रोने लगी और बिना पति के जीना ही व्यर्थ समझा। उसने राजा से प्रार्थना करी कि वह एक बार उसके यहा आहार लेवे उसके बाद दोनों ही तपस्वी बन जावेंगे। रानी ने राजा को एवं माता चन्द्रमती को विष के लड्डू खिला दिये जिसके कारण राजा वैद्य २ करता हुआ मर गया। इसके पश्चात् रानी ने रोना पीटना प्रारम्भ किया। और प्रजाजनों को ऐसा आभास करा दिया जैसे राजा की प्राकृतिक मृत्यु हुई हो। यशोधर की मृत्यु से सारे नगर में शोक छा गया। राजा की ५०० रानियों में से कितनी ही स्वतः ही मर गयी। कुछ ने वैराग्य धारण कर लिया। राजा का दाह संस्कार कर दिया गया। ब्राह्मणों को खूब दान दिया गया।

ठाम ठाम थी ब्राह्मण बाल्या, बहुपेर दान देवाय।
धन कांचन कण पुण बस्त्रा, मणी वस्त्रादि अपार ।।१।।

गज अश्व रथ पो महीषी, धादि बहु दीधां दान।
अन्न कापड़ जीमे ब्राह्मणा, बहु भोजन मिष्ठान ।।२।।

इसके पश्चात् राजा यशोधर एवं माता चन्द्रमती के भवों का क्रम प्रारम्भ होता है। राजा यशोधर मर कर स्वान हुआ और चन्द्रमति मोर हुई। एक दिन मोर चन्द्रमती रानी के महल की छत पर था। वहा से उसने रानी एवं कुबडे को कुकर्म करता हुआ देख लिया। मोर ने कुबडे को अपनी चोचों से घायल कर दिया यशोमती ने मोर को पाला था जिसने लपककर मोरनी की गर्दन दबोच ली जिससे वह तत्काल मर गयी। कुत्ते को बनमे दोडते हुए बाघनीने खा लिया। इसके पश्चात स्वान मर कर सर्प हुआ तथा मोर मरकर सेहलु हुई। जब सेहलु ने सर्प को देखा तो उसकी पूछ पकड कर चबा लिया। अगले भवमे सेहलु मर कर बडा मगर हुआ और सर्प रोही (ससुमार) हो गया।

एक दिन राजा की नर्तकी तलाब पर नहा रही थी तभी उस मगर ने उसे पकड लिया। जब राजा को समाचार मिला तो मगर को पकड़ने का आदेश हुआ। अन्त मे उस ससुमार ने मगर को पकड लिया और लकडी मूसल आदि से उसे खूब मारा। वह अत्यन्त वेदना के साथ मर गया और नगर के समीप ही बकरी हुई। कहा यशोध राजा की रानी और कहा बकरी का जीव। लेकिन यह सब कुकड़े को मारने से गति प्राप्त हुई। रोहित मर कर बडी मछली हुई। जिसे तल २ खाया गया फिर वह मर कर बकरा हुआ। बकरा मर कर पुनः उसी बकरी के गर्भ से बकरा हुआ। बकरा मर कर पुन भैंसा हुआ। जिसे वरदत्त बणजारा भार लादने के काम मे लेने लगा। वे फिर दोनों मर कर मुर्गा मुर्गी की की योनी मे पैदा हुए। उन दोनो को मुनिराज से धर्मोपदेश सुन कर जाति स्मरण हो गया तथा व्रत ग्रहण किए।

> तव मह्मे बेहू कूकडे, सुणयू धरमनि भवांतर सार।
> जाति समर उपनू सही, अह्मे पण लीधा वरत भवतार ॥२६॥१०२॥

दोनो मुर्गा मुर्गी प्रसन्नता से कू कू कर रहे थे तभी राजा ने दोनो को शब्द भेदी बाण से मार दिया। फिर वे ही कुसुमावली रानी के गर्भ से पुत्र पुत्री के रूप मे पैदा हुए। जिनका अभयरुचि एवं अभयमति नाम रखा गया। कवि ने यशोधर एवं चन्द्रमती के भवो का निम्न प्रकार वर्णन किया है —

> अमृतायि जसोधर चन्द्रमती मारया, मोर कुतरा भव भव भागो ॥२४॥
> तीहा थी मरी सिहिलो सांप हवां, बली रोहीत ससूमार।
> चन्द्रमती छाली हवा तेह गर्भीराव छाग हवो बे वार सा०॥२५॥
> चन्द्रमती महीष योनि पडूया तहां थी कूकड़ा हवा बेहू।
> कुतीम कीवहि साफल पाम्या, भवि समता नही छेह ॥सा०॥२६॥

यशोधर एवं चन्द्रमती की पूर्वभवों की कहानी सुनकर कोटवाल एवं मारीदत्त राजा भयभीत हो गए और उन्होंने जैन धर्म स्वीकार कर निम्न प्रकार विचार प्रकट किये :—

> आज चिन्तामणि रत्न मैं पाम्यूं, पाम्यो धर्म कल्प वृक्ष ।
> जिनवाणी जिनवर सासन, जिणि जाण्यो ते दक्ष ।सा०॥२६॥१०३॥

राजा यशोमति एक दिन वन में गया वहां सुदत्ताचार्य मुनि ध्यानस्थ बैठे थे राजा ने मुनि दर्शन को अपशकुन समझा और मुनि के ऊपर ५०० कुत्ते छुड़वा दिये । लेकिन मुनि की तपस्या से कुत्ते शान्त होकर बैठ गये । तब राजा तलवार लेकर मुनि को मारने चला । उसी समय उसे कल्याणमित्र मिला जो मुनि की वन्दना के लिए वहां आया था । राजा से उसने मुनि वन्दना के लिये कहा लेकिन राजा ने कहा कि उनके दर्शन तो अपशकुन है । कल्याण मित्र ने राजा को बहुत समझाया तथा कहा नानत्व तो सरल स्वभावी, त्यागी एवं शुद्ध परिणामी होने का लक्षण है । उसने कहा कि ये कलिंग नरेश सुदत्तराज हैं राजा और कल्याणमित्र ने उनकी वन्दना की तो मुनि ने धर्मवृद्धि हो ऐसा आशीर्वाद दिया । राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ तथा वह अपने किये पर पछताने लगा । उसने अपना घात करना चाहा लेकिन आचार्य श्री ने उसकी मन की बात जानकर रोक दिया । राजा मुनि से बड़ा प्रभावित हुआ ।

इसके पश्चात् मुनि ने यशोधर राजा एवं चन्द्रमती के पूर्वभवों की कथा कह सुनायी तथा एक आटे के मुर्गे का वध भी कितने जन्मों के लिए दुखदायी होता है । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण उसके पुत्र पुत्री हैं बतलाया । राजा को तत्काल वैराग्य हो गया तथा अभय रुचि को राज्य देकर पांचसौ राजाओं के साथ मुनि बन गया । इसके पश्चात् अभयरुचि एवं अभयमति ने भी जिन दीक्षा धारण करली मारिदत्त राजाको उक्त सब वृतान्त सुनकर वैराग्यभाव उत्पन्न हो गए । सुदत्ताचार्य ने उसके भी पूर्वभवों का वृतान्त सुनाया । इसके पश्चात् मुनि दीक्षा धारण कर स्वर्ग प्राप्त किया । चण्डमारी देवी के पुजारी ने भी हिंसावृत्ति छोड़ कर जिन दीक्षा धारण करली । देवी के मन्दिर को स्वच्छ कर दिया और जीव हिंसा सदा के लिए बन्द कर दी सुदत्ताचार्य ने समाधिमरण करके १६वां स्वर्ग प्राप्त किया । अभयमती एवं अभयरुचि ने भी कठोर तप साधना द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया ।

❀❀❀

यशोधर रास

1. रचयिता — देवेन्द्र कवि
2. रचना काल — संवत् १६३८ (सन् १५८१)
3. रचना स्थान — महुआ नगर (गुजरात)
4. लिपि काल — संवत् १६४४ (सन् १५८७)
5. पाण्डु लिपि प्राप्ति स्थान — दि० जैन मन्दिर प्रतापगढ़ (राज०)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री सारदाई नमः। श्री गुरुभ्यो नमः।

वस्तु छन्द

मंगलाचरण

श्री मुनिसुव्रत जिनवि नमेवि, सेव करे जसु सुर निकर ।।
गणहर मुनिवरे जेह पूजिय, तीर्थंकर बीसमो जयो ।।
भवीअरण जेह वचनेहि रंजिय। छयतारतीस गुणि मंडियु ।।
खंडीयो कुमत असार।
सो जिनवर मंगलकरो, त्रिभुवन तारण हार ।।१।।

दूहा

श्री जिन वदन कमल थकी, प्रगटइ वीस प्रसीध।
सरसती सरस वचन दीयु, हंसगामिनी मति बुद्धि ।।१।।
गुणगरूआ गुरू ध्यायसूं, पायसु सुमति सुभास।
सयल सजन आनन्द करो, गासूं यशोधर रास ।।२।।
त्रै नयन पूजित त्रिभुवने, विख्याता त्रिनेत्र।
वेणा पुस्तक धारिणी, जयमाली अक्ष सुविचित्र ।।३।।
विविध वाछित वरदायिनि, स्याद्वादिनि जगमाय।
सेवक जननें सारदा, वाछित करो पसाय ।।४।।

भास असोयरजी

भवीयण जण आनंद काज, तीर्थंकर देव ।
चोवीश जिनस्तवूं जूजू आ बहु भावसूं हेव ॥१॥

चौबीस तीर्थंकर स्तवन

प्रथम जिनेश्वर वृषभनाथ, नाष्यो जेणि काम ।
धर्म कर्म प्रगटी करी, पाम्यो सिव ठाम ॥२॥

अजित जिनाधिप विजित कोह, मोह मच्छर वारण ।
केवल बोध सुवचन दिव्य, भव्य दुरित निवारण ॥३॥

संभव संभव्यु भव्य पुण्य, पुण्यम शशि सम मुख ।
त्रिभुवन जन उद्धरी करी, करी शिववधु सुख ॥४॥

अवनी अनोपम अवतरयु, हरयो मिथ्यान्धकार ।
अभिनन्दन जिन जाणे भाण, जाणे कमल विस्तार ॥५॥

सुमति तीर्थंकर सुमति दान, मान मातंग केसरी ।
तत्त्वप्रकाशी शिव थयो, जयो सो जिन बहुपरी ॥६॥

पद्मप्रभ जिन पद्म भास, भाषा जित जलधर ।
धर्मामृत रसि सींचीया, भवीयाकस्योत्कर ॥७॥

मरकत कांति सुपार्श्वदेव, देवेन्द्रयी वंदीय ।
जथ्थकाल वसु सिसुपरिग्र, वसि सुवर्ण सुचीय ॥८॥

चन्द्रप्रभ जिन पति हवो, नमो अवनी चन्द्र ।
कुमति कमल कोमलाणो साघु, वाघ्यु हरख समुद्र ॥९॥

पंच कल्याणे पूजीयो, जयो जिन पुष्पदन्त ।
तनु जीत शारद चन्द्र कुंद, कुंद को कसी दंत ॥१०॥

सीतल सीतल वचन बंध, बंध सप्त तरंग ।
वाणी गंगा प्रक्षालया, भवीयां अंतरंग ॥११॥

श्रे बहु दायक श्री श्रेयांस, हंस पाणि सरोवर ।
सुर नर फणधर करीं प्रसंस, संसार क्षयंकर ॥१२॥

वसुदायक वसुपूज्यसं, पूजीत पितृपाद ।
वासुपूज्य जग पूजीत, जीतु काम विलास ॥१३॥

विमलजिन प्रभु विमल वचन, दयाल सुखदायक ।
दयावत पाठ सहित मनुष, श्री नव भ्रमाविक ॥१४॥

अनंत अनंत सुगुण गीलो, तिलो त्रैलोक सोहै ॥
अनुदिनु जिहूं अनुभवुं, तहां बहुत उछाहै ॥१५॥

धर्म धोरंधर धर्मनाथ, पायो निधि गभीर ।
अनंत चतुष्टय मन्दिरो, जेव र राम र धीर ॥१६॥

शांतिकरण जये शांतिदेव, सेवि सुर विद्याधर ।
षट खंडाधिप कोटि काम, यमी रूप मनोहर ॥१७॥

कुंथु आदि जीवहू दयाल, जिन कुंथु समर्थ ।
मिथ्यामत तम विघटयो, प्रगटयो परमार्थ ॥१८॥

अर अभ्यंतर बाह्य लक्ष, लक्ष्मी करी मंडित ।
चतुरानन चतुरपणि, प्रणुं सेव पडीत ॥१९॥

सुर मुकुट स्थित मल्लिमाल, पूज्यो पद पकज ।
काम मल्ल प्रति मल्ल मल्लि, जिनमत सत्य ध्वज ॥२०॥

सुव्रत संवृत सुव्रत जिन, दिन दिनपती शसी ।
करय प्रदक्षण मेरू समो, सम दम कीयु वसी ॥२१॥

नमि जिन नमीत सुरेंद्रवृंद, कुंद चंद यसोज्वल ।
तप्त सु कांचन सदृसु वर्ण, कर्ण सुखद जेह स्वर ॥२२॥

धर्म महारथ जैसो नेमि, नेमि जदुकुल मंडण ॥
सामल वर्ण जिनाभिराम, काम कुमति विहंडण ॥२३॥

नील वर्ण तनु पार्श्वस्वामि, कामिनि रती दूर ॥
फणपती पूजीत जित मदाष्ट, दुष्ट कमठह चूर ॥२४॥

वर्धमान जस वर्धमान, त्रिभुवनि विस्तरयो ।
कलियुग मांहि सील कूप, उपकारज करयो ॥२५॥

वस्तु

ए चोवीस जिन. जिन त्रिभुवन ईश ।
अतीत अनागत सहीत सदा, वादू हूं हैये भाव आणीय ॥
संसार सागर तारण, कारण सहू मंगलह जाणीय ।
वेहेरमाण बीसे सहीत, सहीत वचन सुखदान ॥
श्री संघहू मंगल करो, देवेन्द्र नुत विख्यात ॥१॥

ढाल चौमासी

गणधरों की वन्दना

भाव भगत सहीत, हित भवीयण तणु अनिवरीए ।
गणधर वरणवू सार, संख्या सहीत भली परिए ॥१॥

वृषभसेन छे आदि आदि जिनह चोरासी हुवा ए ।
अजीतह गणधर नेऊ, लेऊ गुण सिंहसेन जवाए ॥२॥

संभवनि सत पंच, सहित चारुषेणादिक ए ॥
वज्रनाभि आदि होय अभीनंदन सतत्री अधिक ॥३॥

सुमति एक सो सोल, चामर मुख्य गणाधिप ए ॥
पद्मप्रभ सत एक, दस सुवज्र चामर भू स्वामी ॥४॥

पचाणं छे सुपार्श्व, गणपति बलपूर्वक सणो ए ॥
त्राणं चन्द्रप्रभ देव, दत्त प्रमुख सदा भणो ए ॥५॥

अठ्यासी पुष्पदत, संत विदर्भादिक सहीए ॥
अणगारादि गणेस, सीतलनि एकासी कहीए ॥६॥

कुंथु प्रधान श्रेयांस, सत्योत्तर सत्यें भलोए ॥
छासठ श्री वासुपूज्य, पूज्य धर्म आदि गणुए ॥७॥

विमल पंचावन मेरु, धीरा मेरु आदि कह्या ए ॥
गणेन्द्र अनंत पंचास. प्राधाजयि जयार्य लह्याए ॥८॥

त्रयतालीस गरीष्ट, अरीष्टसेनादिक वर्णविए ॥
छत्रीस शांति चक्रेश, चक्रायुध आदिगमंदे ए ॥९॥

ध्यांऊं, पांत्रीस गणेन्द्र, कुंथु संभू स्वयं प्रमुख ।
अरनि त्रीस गणेश, कुंभ मुख्याइं होइं सुख ॥१०॥

अठ्यावीस विसाख, पूर्वक गणिमल्लिनि भलाए ।
मुनिसुव्रत नि अढार, मल्लिमुख सही गुण निलाए ॥११॥

गणधर सत्तर होय, सुप्रभादिक नमिनायक ए ।
नेमि जिननि अठ्यार, वरदत्तादि वरदायक ए ॥१२॥

दशदिशि यश कीय वास, पासनि दश स्वयंभू मुख ए ॥
गौतम आदि अग्यार, वीरनि विख्यातिय सुख ए ॥१३॥

एवं कारें वाणि, गणधर संख्या चौदसो ए ॥
पावन पावन होय, चोर्ईं पातक जिम अग्यासो ए ॥१४॥

जिम लह्यो सौख्य अपार, पार पाम्यो संसार तणो ए ॥
रोग वियोग विणास, भास ए कवि देवेन्द्र भणिए ॥१५॥

केवली एवं श्रुतकेवली

अनुक्रमि गौतम स्वामि, सुधर्माचारज केवलीए ॥
अंतिम केवली जाणि, जबू स्वामी कीरती भलीए ॥१६॥
श्रुत केवली वली पंच, ससार दुख हरिए ॥
विष्णुनंदि मित्र होय, अपराजित विजित स्मर ए ॥१७॥

अंग व पूर्व के ज्ञाता

गोवरधन गुणवत, वाणी भवी अरण उद्धरे ए ॥
भद्रबाहु बहुभेद, चन्द्रगुपती ससय हरे ए ॥१८॥
दसपूरव धरधीर, विसाख आदि मुनीवर हवा ए ॥
जिनशासन उद्योत, सबल मिथ्यात निवारवाए ॥१९॥
एकादशाग सुजाण नक्षत्रादि सोहामणाए ॥
अनुक्रमि श्री कुंदकुद, पद्मनामि कोडामणा ए ॥२०॥

आचार्य वन्दना

उमास्वामि मुनि संत, समन्तभद्र भवियां तिलो ए ॥
प्रतिबोध्या सिव कोटि, कीध स्वयंभू गुणनिलोए ॥२१॥
पूज्यपाद प्रसीध, जिनसेन सासनें चंदलो ए ॥
अनोपम अकलंक वीर, धीर बौध जीतवा भलो ए ॥२२॥
गुणभद्रादि अनेक, पूर्वाचारज बहू हवा ए ।
ते ध्याऊ धरी भाव, कामवांछित सिद्ध थवा ए ॥२३॥

भट्टारक वन्दना

अनुक्रमि श्री पद्मनंदि, पुण्यकंद पदोधक ए ॥
देवेन्द्रकीर्ति सुमूर्ति, भवीअणनि उद्धव करो ए ॥२४॥
विद्यानंदि मुनेन्द्र, तेह पट कमलदिवाकर ए ।
मल्लिभूषण माहंत, वचन सिवगुण आकर ए ॥२५॥

लक्ष्मीचंद्र मुनिचंद्र, तस पद कमलि कुंभि कक ए ।।
वीरचन्द्र विख्यात, मन त्यजि जस विस्तरयु ए ।।२६।।

ज्ञानभूषण सुरूप, भूप सहू मानि घणुं ए ।।
लाड न्यात सणगार, शांति मूर्ति गौतम भणुं ए ।।२७।।

तस पाटि उदयोचन्द्र, प्रभाचन्द्र सोहामणो ए ।।
वादि सरोमणि वीर, हूंबड कुल कोडामणो ए ।।२८।।

अवनी अनोपम रूप, वादीचद तस पट सोहि ए ।।
वादी सयल सणगार, भवी घण जन तणां मन मोहि ए ।।२९।।

राग रचना का संकल्प

दूहा

एह गच्छपति आदेसथी, रास रचेवा काज ।
उद्यम माडयो मन रली, सजन आनंदह काज ।।३०।।

लघु गुण देखी पर तणो, गिरि सम लेखि जेह ।।
बहू नीज गर्वह नही, कहीमि सज्जन तेह ।।१।।

सज्जन प्रशंसा

सुजना मन माखण समूं, जे कहि तेह अजाण ।।
पर संतापि सज्जन तपि, माखण एह गुण हांण ।।२।।

सजनासा करसेलडी, सुनूं सुगंध सुघूप ।।
काटीय पीलीय छेदीयु, दह्यो नदाविक रूप ।।३।।

सज्जन नेंबली बोलली, भलो उपना अति बंस ।।
छेदा भेदा बहु परी, मधुर वाजि सु अरोध ।।४।।

सज्जन रचता कर मली, जग्या ते परमाणु ।।
ते परमाणुं करी रच्या, मेघ चंदन चंद्र भाण ।।५।।

पावस ऋतु घन ऊपरें, हीयडे चन्दन चन्द ।।
सजन सदाए ऊपगरि, बहु जन नयनानंद ।।६।।

सज्जन करीसी कोठडी, दिन दिन दीसइ बेच ।।
दुर्जण दूरें दीसि रचे, सज्जन पडो एक बेच ।।७।।

सज्जन सरीसो क्षण भलो, नही वरस खल साथ ।।
आंबा भली क्षण छाहुली, न भली बाउल बाथ ।।८।।

साधु साथि सादज सुखद, नहीं चिर खल खल सूं वाद ।।
अमृत तणो स्परस जु भलो, न भलो विष आस्वाद ।।९।।

दुज्जण मलि नीपाईउ, अरे विधाता आण ।
काच विना मणि केम लहे, तम विण दिवस वखाण ।।१०।।

दुजणा घूहड दोए समा, दोखो दय संतोष ।।
अधारो अवगुण गमि, ऊद्योति होइ रोष ।।११।।

मात थकी दूज्जण भलो, रखे वखोडो कोय ।।
मात धोयि मल करी करि, दूजण जीभय धोय ।।१२।।

मने नलो मुख मीठडो. मूक्यो दूज्जण दूर ।।
कठिण सिला सेवा लसू , लर्पास भाणू ऊर ।।१३।।

भण्यो गण्यो पण अवगणो, दुज्जण घणं घण दूर ।।
मणि मंडित सूं नव्यहरि, प्राण फणी अति दूर ।।१४।।

नीचु न भणो दूज्जणो, देषी विस्वास म आण ।।
जिम नमतो नीचो भीलडो, बाण मूंकी हरि प्राण ।।१५।।

विनय करो अर्द्धचन्द्र करो, तेहू पण खल नडे सोय ।।

सिर पर धरो पाए हण्यु, पण फणी डसतो जोय ।।१६।।
घणं सीखव्यो विनइस्तव्यो, खल न मूंकि दुष्ट अंस ।।
दूधे धोईवि जोहू घणू ं, काग न होइहं हंस ।।१७।।

खल पुसतो गरडो हवो, तोहू दुष्ट पणूं न जाय ।।
फल पाका इन्द्र वारणीनां, किमे न मीठा थाय ।।१८।।

दुज्जण जीवो वरस सो, जेह तापि सहू कोय ।।
सूधि मारग संचरि, उत्तम मज्झम लोय ।।१९।।

सूकर दुज्जंण दोए जणां, उपकारी महि मज्झ ।।
सूकर सेरी सूकवि, दूज्जण दोख विसूद्ध ।।२०।।

गुणग्राही सज्जन सदा, दुज्जण दोख ज जोय ।।
ए एह नीछि सभावडो, दोषम देसो कोय ।।२१।।
सज्जन दूरथी बिन दुहि, खल मलथी दहिकाय ।।
बेहू दाहक गुण सम हुवा, कुहो किम भेव कहिवाय ।।२२।।

मूलक उपकारी तथा, सज्जन दुज्जन बेउ ।
तेह भणी समता आणीयि, जणा वट माहि भेउ ॥२३॥

दोष लीधितो सेय जो, करो कवित कवि कोय ॥
जूउका तणि अर्थे करी, वस्त्र न मूकि कोय ॥२४॥

सुकवित सुकवी करय, सुणी, को एक पामि उल्लास ।
कामिनि नयन कटाक्ष थी, करय अशोक विकास ॥२५॥

तुछ छे मुझ मति अति घणूं, पण प्रेरयो गुरु भास ।
रास रचूं एह तेह भणी, को मम करसो हास ॥२६॥

विनय प्रदर्शन

श्रोता मन सुध थिर करी, सुणज्यो त्यजी प्रमाद ।
जोडंतां पद दोहलूं, मम धरसो अनुवाद ॥२७॥

सूप समो श्रोता भणो, गुण किहीयो एके जाण ।
दोष त्यजे दूर करी, गुण आदरि बखाण ॥२८॥

चालणी समवली जाणीयि, श्रोता बीजा भेद ।
दोष रांखें हृदि दृढ करी, गुणकेरो करें छेद ॥२९॥

एक नर काई लहि नहीं, सभा मांडाहो थाय ।
मिहिष पडयो जिमि मादणि, आछूं नीरडोहो थाय ॥३०॥

गुण आशह आगल गुणी, करे ते विस्तार ।
दूर थो अलि कंज गुण लहि, भेक न लहि विचार ॥३१॥

भरत रासनो

जम्बू द्वीप भरत क्षेत्र वर्णन

जबू वृक्षि उपलक्षीयो ए, लक्ष योजन जंबूदीपतु ।
दोए चंदा दोए दिनकरा ए, करय उद्योत जेम दीप तु ॥१॥

सकल दीप सागर माहें ए, महीअ मांहें एहतु ।
लक्ष योजन ऊंचत घणो ए, कनय गिरि नाभि तेहनो ॥२॥

नाम सुदर्शन तेह कहू ए, ज्यूं हो भले सोई वि हतो ।
अपछरासु सुरि सेवयो ए, जयो एक सीस जिम मेहतो ॥३॥

पंचोत्तर योजन उन्नत ए, सत योजन आयाम तु ।
योजन पंचास विस्तारें कह्यो ए, तारय भवीम्रा सुठाम्तु ॥४॥

कनक कलस करी मंडीयो ए, मंडीयो कुसमितिनी मामतो ॥
मामस्थभ आयल भलाए, भली घटा निशान तो ॥५॥

सिखर ध्वजा घूघरी घणं ए, घमकि पवन संयोग तो ॥
सहूलहिं गयनें दूरथी दीसे ए, दीठि दुरति वियोग तो ॥६॥

कनकमय रतने जड्या ए, अष्टमंगल सहित तो ।
रतनवेदी रली आमणीए, मणीमय बिंब समेत तो ॥७॥

पंचसे धनष ऊनत सणो ए एक सु आठ प्रमाण तो ॥
पखवरण किरणें करीए, जी कीया कोटी भाण तो ॥८॥

अमर असुर विद्याधर ए, चारण मुनी करे सेवतो ।
पंच चूरण स्वस्तिक करीए, करय पूजा नित देव तु ॥९॥

पंचामृत अभिषेक होइ ए, होइ त्यांहा नाटारंभ तु ।
अमरी किंनरी जिन गुण गायिविए, नाचि नाचि रंग तो ॥१०॥

ताल कसाल मादल भला ए वाजि अनेक वाजित्र तो ॥
भवीअण जन भावि भावनाए पूजय जिन जग मित्र तो ॥११॥

तेह मेरू दक्षण दसिए, दीसय भरत सु क्षेत्र तो ।
गंगासिंधु विजय करीए ए, सोहि खट खंड विचित्र तो ॥१२॥

आरज खंड तिहा जाणीयिए, जाणे स्वर्गह खंड तो ।
मगध देश तिहा भलो ए, सहू देश माहि प्रचंड तो ॥१३॥

मगध देश वर्णन

पुण्य तीर्थे करी अलकरयो ए, गंगा यमुना मध्यतो ॥
ठाम ठाम मुनि तपि बलिए बने बनचरछि अवध्य तो ॥१४॥

सरोवर छे जीहां सोहामणाए, आमणा कमल विस्तार तो ॥
परिमलें बाध्या भमरलाए, करयते रण झणकारतो ॥१५॥

निरमल जलि करी पूरीयांए, हूस करें स्वर सार तो ॥
सारस चक्रवाकी सणो ए, कलीरव करय अपार तो ॥१६॥

वनवाडी विवध परी ए, फिरफेर तरु अर वृक्ष तो ॥
आंबा आबली आमलीए, अशोक अवती अति मुक्त तो ॥ १७॥

बोलो वकुल बली वलसरिए, कदंब चंपक कुरंट तो ॥
वाडी सींचे बा बालकाए, जांवती झाके अरहिट तो ॥१८॥

रेहेंट चीत्कार सींचि करो ए, फूल पूरेंति एह तो ॥
कवण चतुर नर गावतां ए, पावि विक्र ती न पेह तो ॥१६॥

आई जूई जासू वणीए, सोवन केतकी कोड तो ॥
मोगरा मालती मचकुंद ए, चांगोलीनि सबौड तो ॥२०॥

नालिकेर नानारंग ए, नारंग नें नागवेल तो ॥
कमरख कोठा केवडा ए, केवडो वलिछि केल तो ॥२१॥

दिशि दिस द्राक्षा मंडप ए, तपि छाया प्रचूर तो ॥
पथीयडा पंथ चालता ए, संताप नें करि चूर तो ॥२२॥

लींबू जांबू जंबीरडाए, बीजोरा बहुभेद तो ॥
रायण आदि अनेक तरु ए, देखता जावि खेदतु ॥२३॥

क्षेत्र दीसि धान्य तणाए, नीपना अनेक प्रकार तो ॥
राखय कुणबी कन्यकाए, गावइ सरस अपार तु ॥२४॥

ते सुणें वनि वणी हरणलीए, वेघी नचरि लगार तु ॥
बीसय वेध्यावली हरणाला ए, तुहु आइ वनह मझार तु ॥२५॥

बालकाने नयने जीकीया ए, लाजीया तेणी वार तो ॥
पथी आ गान सुणी करी ए, सांभरी आवे नीज नार तो ॥२६॥

वदन नीहाल जतां बापुडाए, कुडी नवि सकय लगार तो ॥
एहवी गति विषई तणीए, वीसरि विवेक विचार तु ॥२७॥

नयर पाल्हणपुर जती भलाए, वेटक कर्बट नाम तु ॥
भरया धण कणि करी वणं ए, कणय रयण अभिराम तु ॥२८॥

अनेक लोक तीहां वसिए, हसए ते देवनी अपार तु ॥
रूप संपदा चतुर पणिए, महाजन विविध प्रकार तु ॥२९॥

वन वन गिरि गिरि पुर पुरे ए, कनक तणा पतीमतु ॥
जिन प्रासाद सिखरबंध ए, देखी हरखें भव्य जीव तु ॥३०॥

ठाम ठाम मुनीवर दीसिए, देता उपदेश तो ।
नरनारी सणगार करीए, जिन पूजी सुविसेस ते ॥३१॥

वांदि मुनीने नीरमलाए, स्वामी वखाण करि सार तु ॥
च्यार वरण लोक पूछवी ए, देश सुषमें विस्तार तु ॥३२॥

दूहा

कटक नदी सिखर कह्यो, कंत नहीं जस एक ॥
कटक कंडिल कर नार तणां, एवी सिर बंध विवेक ॥१॥

नीत राखें नृप अति घणं, लोक अनीत विकार ॥
ए आचार्य मोटूं अछे, डाहा लहि विचार ॥२॥

इत्यादिक सोभा सहीत, सहू सुहीतकारी देश ॥
भवी अण जन सहु साभलो, नयरह सुगुण कहेस ॥३॥

भास भमाल्लोनी

राजगृह नगर वर्णन

राजगृह नगर छि रुवडूं तो भमाल्ली ।

तेह देश मांहि वीसालतो, पायल फरतो ऊंनत तो ॥भ॥
सोनातणो सोहितालतो ॥१॥

राता रतन को सीसे अकधां तो, गगन किरण विस्तार तो ॥

सध्या नें रवी तावडतो ॥भ०॥ रातडी होयि जोहां सार तो ॥२॥
नील रतन करी बेंधीउं ॥तो भ०॥ कही एक नीलो होय तो ।
रवी जाणे नील गिरि परी ॥तो भ० ॥ ऊग्यु एक अण लेय नो ॥३॥

अलि करी पूरी खातीका ॥तो भ०॥ बीटी रहि पोर मान तो ॥
जाणे लोभिणी सापिणी ॥तु भ०॥ राखी रही एक निध्यान तु ॥४॥

पिर पिर पेलीयि पेषणा ॥तो भ०॥ पोढी पोल पगार तु ॥
मोटी मेडी मतवारणां ॥तो भ०॥ बारणां वज्र सूं सार तु ॥५॥

हाट श्रेण सोहामणी ॥तो० भ०॥ साहि मेडी श्रेण तो ॥
धवल हर ऊन न घणा ॥तो भ०॥ सात भूमि सोहि तेण तो ॥६॥

नर सुंदर सुरपति समा ॥तो भ०॥ भूषण पिहिरि बहावनु ॥
लीला लिहिर बहि बारीआ ॥तो भ०॥ दान पूजा करि भावतु ॥७॥

कल्पवृक्ष जिम सोहीआ ॥तु भ०॥ भला भोग भोगवें चंग तु ॥
घरि घरि ओछव होय ॥तु भ०॥ होइ नित नवारंग तु ॥८॥

मोटां मेडी मालीया ॥तु भ०॥ विस्तरि अगुरु सुधूप तु ॥
चूआ चंदननि कस्तूरी ॥तु भ०॥ परिमल महे महे रूप तु ॥९॥

बरास कपूर भली एलची ॥तु भ०॥ पान बीडा अखंड तु ॥
भोगी भला सुख भोगवि ॥तु भ०॥ नही त्याहां पाप पाखंड तु ॥१०॥

मंदरि नारी पदमनी तु ॥भ०॥ रूप सोभाग सोहंत तो ॥
हाव भाव अनेक परी ॥तो भ०॥ कंतह चीत हरंत तो ॥११॥

मलपती चालि गजगामिनी ॥तो भ०॥ बीछीआ नेउर नाद तु ॥
करकंकण चूडी रूडी ॥तो भ०॥ खलकती कांकणोनाद तु ॥१२॥

कटी मेखला विछी घूघरी ।।तो भ०।। चमकि कडीही अपार तो ।।
चालते छूटी हाथीयो ।।तो भ०।। उरवर सांकिहार तो ।।१३।।

कोटि चंपा टोडर तुमभावली०।। भूमणुं भूलकि रसाल तु ।।
नाके मोती अनोपम ।।तो भ०।। काने भबूकि भाल तु ।।१४।।

खरो चांदलो मोती भरयो ।।तो भ०।। पीयल सोहिवाल तु ।।
सेसफूल रूडी राखडी ।।तो भ०।। आंखडी हिमणी भालि तु ।।१५।।

दान सील तप भावना ।।तो भ०।। करय मंगल गीत गान तु ।।
पात्र विविध नें मनरंगि ।।तो भ०।। दे विनीत दान मान तो ।।१६।।

जिन भुवन तिहा भामणां ।।तो भ०।। सिखरबद्ध उत्तंग तो ।।
धज तोरण कनक कलस ।।तो भ०।। वाजित्र बाजि सुरंग तु ।।१७।।

जिनवर बिंब सोहामणा ।।तो भ०।। महोछव होयि गुणमाल तो ।।
मुनीवर तत्व पुराण सूं ।।ती भ०।। कहिधर्म कथा विशाल तो ।।१८।।

वाडी वन तीहां सोहीयां ।।तो भ०।। फल फूल सहित अपार तु ।।
सुडा साद सोहि घणा ।।तो भ०।। भमरा रणभूणकार ।।१९।।

बाड बडा सेलडी तणा ।।तो भ०।। यंत्रे पील्या रस देयनु ।।
आपेखा सही उपगारि ।।तो भ०।। कृपण तणा एह भेयतो ।।२०।।

आंबा रान रली भामणा ।।तो भ०।। सोहि तांहा सुखकारतो ।।
कोएल करय टहूकडा ।।तो भ०।। विरहीनि दुःख अपार तु ।।२१।।

सरोवर सोहि जल भरया ।।तो भ०।। कमल कुमुद सहीत तो ।।

हंस सारस सरस बोलि ।।तो भ०।। चकवा चकवी सुमीत तो ।।२२।।

ते नगरीनु राजीउ ।।तो भ०।। श्रेणीक राय सुजाण तो ।।
रूपि मनमथ जीतीउ ।।तो भ०।। परतापिज सुभाण तो ।।२३।।

सयल सजन आनंद करू ।।तो भ०।। जाणे पूरण चन्द्र तु ।।
राज लीला अकल करी ।। तो भ०।। जाणों दूजो इन्द्र तु ।।२४।।

न्यायवन्त गुण आगलो ।।तो भ०।। दानिय मो कल्पवृक्ष तु ।।
समकित रयण मंडीयो तो भ०।। अपपूछन गुणि दक्षि तु ।।२५।।

तस मन रंजन कवडी ।।तो भ०।। राणी चेलणा नाम तु ।।
सीलवती गुण रूयडी ।।तो भ०।। रूप सोभागनो ठाम तो ।।२६।।

समकित व्रत करी मंडीत ।।तो भ०।। बोलतु मोकली वान तो ।।
एक जिह्वा हूं किम कहू ।।तो भ०।। बहु गुण तणो निधान तु ।।२७।।

जिम रुक्मिणी सूं माधवो ।।तो भ०।। रोहिण सूं जिम चंद तो ।।
तिम चेलणा सूं श्रेणिक ।।तो भ०।। राज करे सुख कन्द तो ।।२८।।
जिम रती सूं मकरध्वज ।।तो भ०।। इन्द्राणीसूं जिम इन्द्र तु ।।
तिम चेलणा सूं श्रेणिक ।।तो भ०।। राज करि सुख समुद्रतो ।।२९।।

वस्तु

श्रेणिक राजा २ करे तिहा राज, भोगवि सुख सोहामणो ।।
धर्मवन्त बली न्याय पालय, पर उपकार करय घणो ।।
प्रजा तणों सन्ताप टालय, जिनवर धरम करि भलो ।।
अनेक भूप करि सेव, समकित गुणे करी मंडीयु । सेवे श्री गुरुदेव।।१।।

भास माल्हंतडानी

एक बार राजा श्रेणीक ए महालंतडे । सभा बिठो गुणवत ।।
सुणे सुन्दरे । सामंत क्षत्री मडयो ए ।मा०। सहित विद्वज्जन सत ।सु० ।१।
चमर ढालि वारंगनाए ।मा०। जाणि गग कल्लोल ।।
करवली कंकण रणझुणिए ।सु०। नयण चालि अती लोल ।।२।।
गज अवगाह गजगामिनिए ।मा०। आंदोलि वारोवार ।।
सिर वरि छत्र सोहि भलूए ।मा०। नीर्मल यस विस्तार ।।सु०।।३।।
अनेक क्षत्री नृप परवर्यो ए ।मा०। नक्षत्र सु जिम चन्द्र ।।
मालि भाव सभातणो भलो ए ।सु०। सहश्राक्ष जिम इन्द्र ।।सु०।।४।।
सांभलि कवीनी कवि कला ए ।मा०। काव्य कतूहल चग ।।
क्षण एक षटदर्शन तणाए ।मा०। वादीयां वाद नारंग ।।सु०।।५।।
सा री ग म प ध नीसप्त स्वर ए ।मा०। तान मानादि संगीत ।।
सुधा गगावती नृत्यकी ए ।मा०। नृत्य जोवि वीर बाल ।।सु०।।५।।
बदी जन बीरद बोले ए ।मा०। छद प्रबंध कवित्त ।।
दान देवि मनवांछीत ए ।मा०। धन धन ए नृप रीत ।।सु० ।।६।।

वनपाल का आगमन

तीणि अवसिरि एक आवियो ए ।मा०। वनपाल राज दुआर ।।
राज आदेशथी हरषीयो ए ।मा०। पोहोतो सभा मझारि ।।सु०।।७।।
फल फूल भेट मूंकी करीए ।मा०। वीनव्यु राय वीर नाथ ।।
धन वन तह्य पुष्पि करीए ।मा०। समोसरण अभिराम ।।सु०।।८।।
विपुलाचल अति रूवडो ए ।मा०। महावीर जिन अवतार ।।
आव्या अतीह सोमणाए ।।सु०।। भवीयण तारणहार ।।९।।

वनवाडी बहु बहुगहीए ।।मा०।। छ ऋतु तणां बहु फूल ।।
एकि वारिं प्रगट्याए ।।सु०।। वाय सुगन्ध अनुकूल ।।१०।।

कोयल करिं टहुकडाए ।।मा०।। टूकडा भमर गुंजार ।।
मयरि किंनरी मधुरराए ।।सु०।। रासडा गाथि सार ।।११।।

साडी बार कोडी वाजीभए ।।मा०।। मादल ताल कंसाल ।।
भेरी भू ंगल भरणुं बहुगहीए ।।सु०।। सरणाई नाद रसाल ।।१२।।

अमर किंनर खग फणधराए ।।मा०।। करय ते जय जयकार ।।
विमान बिठा विद्याधराए ।।सु०।। आवया जाम अपार ।।१३।

राजा श्रेणिक की प्रसन्नता

ते वाणी सुणी नृप हरखीए ।।मा०।। सींचीउ अमृत धार ।।
सिंघासण थकी उठीउए ।।सु०।। चाल्यो सात क्रम सार ।।१४।।

वीर देसि विवेकसूंए ।।मा०।। नमयो राय उदार ।।

वनपालनि पसाय दीयोए ।।सु०।। सहू भूषण वलिहार ।।१५।।

आनन्द भेरी उछलीए ।।मा० ।। वांदवा वीर जीणंद ।।
राजा चाल्यो कटक सूंए ।।सु०।। अंतउरी सुं आणंद ।।१६।।

श्रेणिक का समवसरण के लिये प्रस्थान

हाथी भा बहु सणगारीयाए ।।सु०।। घमघमि घूघर माल ।।
घंटा घणु टकार करीए ।।मा०।। सूंढि मोती जाल ।।१७।।

कानें हेम चमर धर्याए ।।मा०।। अंबाडी मजा कार ।।
पंच वरण वस्त्र पहिरियाए ।।सु०।। सुंभट हाथी हथियार ।।१८।।

जगमग भाला भल हलिए ।।मा०।। बिठा अंकुश धरी हाथ ।।
कनक लगांम मोती जड्याए ।।सु०।। कंठ चमर सोहि साथ ।।१९।।

तुरग चालि चमकताए ।।मा०।। रतन जडीत पलाण ।।
गजबिसी राय चालीयुए ।।सु०।। चेलणा सहित सुजाण ।।२०।।

[illegible]णा लोक बहूए ।।मा०।। नर नारी धरीय उछाह ।।
[illegible] आरती करीए ।।सु०।। उछक हुवा माहो माहि।।२१।।

[illegible] ।।मा०।। भेरी धमधं उत ंप ।।
हर्षि स[illegible]ए ।।सु०।। वीकाथि अंबो पंग ।।२२।।

हार तुटि केलि छूटिए ।।सु०।। फाटि चीरयो रंग ।।
माट पडि कोती अंकेए ।।मा०।। गोडकी मकीय सुगंध ।।२३।।

भवि भोला भला भवीम्राए ।।सु०।। आवी आवांदवा काज ।।
वीर स्वामीनि मन रलीए ।।सु०।। साथे सामग्री समाज ।।२४।।
श्रेणिक राजा त्रि देषियो ए ।।सु०।। समोसरण अवतार ।।
गज थको हेठो उतरयोए ।।सु०।। जाणि विनय अवतार ।।२५।।

दूहा

सनि सनि राय चालीयो, आनद अंग न माय ।।
छत्र चमर विण गुणनिलो, सुधो मन वच काय ।।१।।

मानस्तम्भ का वैभव

मानस्थम्भ शोभा वणी, मान निवारण दीठ ।।
बीस सहस पग थारीया, चढता हरष पईठ ।।२।।
गढ सरोवर वली खातीका, फलवाडी बहु फूल ,।
कांचन गढ वाट वापिका, जन्तु रहित अतूल ।।३।।
अमरी किनरी अपछरा, करय ते नाटक साल ।।
उपवन वाडी फूलि फली, रतन वेदिका विसाल ।।४।।
पच वरण धज लहलहि, मणीमय गढ उत्तग ।।
कल्पवृक्ष पकति भली, उन्नत शाम्वा अभग ।।५।।
रत्नस्तूप तेज झगमगि, मगमगि धूपह कुंभ ।।
हर्मावली हरषवीयि. दीसि नही किही दंभ ।।६।।
नीर्मल फटक तणो सुणो गढ उन्नत अभिराम ।।
बार सभा तिहां रूवडी, भवीमां करे विश्राम ।।७।।
प्रथम सभा मुनिवर तणी, कल्पनारी बीजी होय ।।
अर्जिका सभा त्रीजीसणी, चोथी योतिक स्त्री जोय ।।८।।
पचमी वितर कामिनी, छठी नागिनी जाण ।।
नागतणी सातमी सभा, आठमी व्यतरनी वषाण ।।९।।
नवमी योतिक सुरतणी, दसमी सुर कल्प वास ।।
अग्यारमी नरवर सभा, बारमी तिर्यंच निवास ।।१०।।
बाघ गाई गज सिंह सु , सर्प नकुल सुविचार ।।
श्राम सिंह मृग हय महिष, करि हंस मार्जार ।।११।।
वानर मींढा मोरडा, गरुड भेरग ग्रतीव ।।
समली सिचाणा सेहली, नेह लागा त्याहां जीव ।।१२।।
जात वैर छांडी करी, क्रूर जीव तहां शांत ।।
भूष तरस पीडा नही, नही आणी मन भ्रांति ।।१३।।

आंधला नयणे देखिए, पांगला चालि पाय ॥
मूंगा मुख चालिए, मूंका जिण गुण गाय ॥१४॥

रोगीयडा निरोग होइ, कोढी निर्मल काय ॥
बिहिरा गुण श्रवण सुणी, समोसरण मही आय ॥१५॥

पोल छत्रीस सोहामणी, बणी तोरण गुणमाल ॥
ठाम ठाम मोती झूंबकां, मेढी जालीयां सुविसाल ॥१६॥

सूत्रधार तिहां धनपती, सुरपती आज्ञा तास ॥
एक जिह्वा केम वर्णवूं, समोसरण सुख वास ॥१७॥

बार सभा मध्ये सही, भव्य सिंहासन रंग ॥
बैठा जिनवर निर्मला, चतुरांनन उत्तंग ॥१८॥

बैठा स्वामी सोहामणा, चोत्रीस अतिसयवंत ॥
प्रातिहार्यज सोहामणा, हरषु राय महंत ॥१९॥

भव्य प्रदक्षणा देई नम्यो, पूजेवि अष्ट प्रकार ॥

कर जोडी जिन वीरनि, स्तवन करि विस्तार ॥२०॥

ढाल अष्टकुवीसनी

महावीर स्तवन

वीर जीनिस्वर त्रिभुवन तार । जय जय स्वामी जगदाधार ॥
पाप संताप निवार ॥ १॥

नाथ वंस तणो संणगार । सिधारथ राय सुत अगि सार ॥
भीवकारणी मल्हार ॥ २॥

कुंडलपुर धरयो अवतार । बरस मेघ कनक मणिधार ॥
नवषटमास अपार ॥ ३॥

सुरपतीइ जिन अंके धरयो । चोणी काय देवि धर धरयो ॥
सुरगिरि पिर संचरयो ॥४॥

अनेक उछाह मंदरगिर पामी । आणा पंडु सिला पर स्वामी ॥
सुर सुरपति सिर नामी ।.५॥

एक योजन मुख अणिमिवाण । आठ योजन गंभीर बखाण ॥
आगम कह्यो प्रमाण ॥६॥

सहस अष्टोत्तर कुंभ सज करया । क्षीर सागर निर्मल जल भरया ॥
इंद्री तेउकि करे धरया ॥७॥

जय जय करंता जिन सिर ढाल्या । जनम जनम नो पाप पखाल्यां ।
सहस्र नयणे नीहाल्या ।।८।।

एक सहश्र आठे सुभ लक्षण । सणगारि इन्द्राणी विचक्षण ।।
ईक्षण सुखद सरूप ।।९।।

स्तवन गीत नर्तन सुखदात । वीर नाम त्रिभुवन विख्यात ।।
पूजा जिन मात तात ।।१०।।

कही वृत्तांत आप्यो तब बाल । बाजि मादल ताल कसाल ।।
नाटक रच्यु रसाल ।।११।।

नित नित सुरपति सेवा आवि । बच्य काल भूषण पहिरावि ।।
अमरी किन्नरी गुण गावि ।।१२।।

तनु भव भोग विरक्त जाणी । लोकांतक देवे स्तव्यु वखाणी ।।
जय जय करता वाणी ।।१३।।

सुरपति सिबकां सू लेई चाल्यो । वनि वसी सिद्ध नमन सभाल्यो ।।
स्वामी संजम पाल्यो ।।१४।।

घात कर्म गिरि वज्र समान । प्रगटयो निर्मल केवलज्ञान ।।
तनु तेजि जिस्यो भानु ।।१५।।

धनदत्त रचित तह्य सभा सुसोहि । त्रिभुवन जन केरां मनमोहि ।।
जगि तुह्य सम नही कोहि ।।१६।।

अशोक वृक्ष सोहि सुखकार । पुष्प वृष्टि सुर करि उदार ।।
दुंदुभी नाद विस्तार ।।१७।।

चोसठ चमर अमर तुझ ढालि । दिव्य ध्वनि धर्मने प्रजू आलि ।।
भामंडल सुविशाल ।।१८।।

रतन जडित सिंहासन दीसि । छत्र त्रय सुर धरि जेहे सिसे ।।
दीठी सहूं मन हीसि ।।१९।।

छाया रहित चतुर्मुख स्वामी । पुण्य फलि तुझ महुरति पामी ।।
रक्ष राख शिवगामी ।।२०।।

मोह राक्षस भुक्षथी मुझ राखो अनेक जीवने ग्रसय जे आखो ।।
मुकती मारग मुझ दाखो ।।२१।।

राग द्वेष मोटा विसारण । डसया दीय आप संताप ।।
टालो तेह विष व्याप ।।२२।।

मन उदयो मिथ्यात महाग्रह । संसार कूपें नाखें आग्रह ।।
सिग्रह तेहनो कीजि ।।२३।।

काम पारधी मुझ मृग ने रंजाणि । नारी नयण शर केरे संधाणि ।
तुझ विण कोण राखी जाणि ।।२४।।

आसा नदी सागर संसार । लोभ मगर मुखें पडयो गमार ।।
राख तूं जगदाधार ।।२५।।

विषय गहन इन्द्री गज रुद्र । तृष्णा अगन ज्वाला अति क्षुद्र ।।
तिहां थी राख समुद्र ।।२६।।

दोष कंटक भव वन मझार । गर्भ पिसाच अमारडि अपार ।।
ते मुझ फेरो निवार ।।२७।।

डाकिनी साकिणी भूत वितात । बाघ सिंघन नाडि विकलाल ।।
तुझ नाम ध्यांता दयाल ।।२८।।

जगि मंगल कारी वीर जीणेंद्र । प्रभाचन्द्र वादीचन्द्र गणेंद्र ।।
स्तवि विजय देवेन्द्र ।।२९।।

दूहा

एणी पिरि वीर जिणवर तणुं, स्तवन करी सुजाण ।।
गणधर गौतम आदि करि, मुनी वांद्या सुखखाण ।।१।।

मनुज सभा माहि बीसिउ, भाव सहित गुणवंत ।।
धर्म कथा रस सांभली, दीव्य धुनि जयवंत ।।२।।

योजन मान सु विस्तरी, वाणी अमिय समान ।।
प्रगटी वीर वदन थकी, निर्मल जिम हिम भान ।।३।।

तत्त्व पदारथ सांभली, पाम्यो परमानन्द ।।
पुनु श्रेणिक सभा थकी, वंदीया गौतम गणेंद ।।४।।

भाव धरी मन माहि घणुं, पूछि कथा विचार ।।
राय जसोधर तेहनी, कहो स्वामी कथा संसार ।।५।।

श्रीमंतो जिननायका: शुभ चतुर्विंशत् महाग्रर्थका: ।।
त्रैलोकेश्वर पूजिता, जिनभवा: सत् पंचकल्याणका: ।।
अर्हन् श्री परमेष्ठिन: सुखकरा: सत्प्रातिहार्याष्टका: ।।
श्री देवेन्द्र मुनिकमलस्तुतपदा: कुर्वन्तु वो मंगलं ।।१।।

इति श्री यशोधर-महाराज-चरित्रे रासचूडामणी काव्य प्रतिछन्दे भूदेव कवि श्री विक्रमसुतदेवेन्द्रविरचिते श्रेणिक समवशरण आगमन महावीरस्तवन श्रीगौतम प्रश्नकरणो नाम प्रथमोऽधिकार ॥१॥

द्वितीय अधिकार

भास हेलीनी

यशोधर राजा की कथा

गौतम स्वामी देव । मधुरीय वाणी उच्चरया हेल ॥
दंत किरणें करी हेव । जनमनना तिमिर हरया हेल ॥१॥

सुणो श्रेणिक सुविचार । राय जसोधर कथा तणो हेल ॥
एछि दया भडार । छेदहसि मिथ्यातनो घणो हेल ॥२॥

प्रगटि दया अपार । पुण्य होय एह सांभलि हेल ॥
पाप तणो निरधार । मन तणा संसय सहु टले हेल ॥

योध देश वर्णन

जंबूद्वीप मझार । भरत क्षेत्र माहि जणो हेल ॥
आरज खड तेह ठाय । योध देश कोडामणो हेल ॥४॥

कुकुंट पाति गाम । ठाम ठाम सोहि रुवडा हेल ॥
अनेक लोक विश्राम । सजन वसि धर्मी घणा हेल ॥५॥

गिरि कंदरा वनमाहि । हाथी हींडि तिहा मलपता हेल ॥
सीतल तरुवर छांहि । हाथणी सुं रहींडि खेलता हेल ॥६॥
कहीं एक हरीणा रान हरी नें भय नाहा ठां फरि हेल ॥
मुनीवर धरवां ध्यान । तेहि तणो आश्रम मधुकरि हेल ॥७॥

वाडी वन ठाम ठाय । कपूर कदली कोमल दीसि हेल ॥
नालकेर खजूर । पूग तणां तरु घरही से हेल ॥८॥

ताल तमाल हें ताल । सरल सोहि सजन सम्या हेल ॥
कोमल मध्य रसाल । देवदारु आदि उत्तमा हेल ॥९॥

तज पत्रज नागवेल । एलची लवी फलें करी हेल ॥
जायफल लवंगह मेल । भरी वेलडि झूमके भरी हेल ॥१०॥

द्राख मंडप विसाल । छाया फल करी लंक हेल ॥
पंथीयडा तीणि काल । भूप तरस तहं विसर्या हेल ॥११॥

सरोवर नीर्मल नीर । कमल पोयणे घणुं मडीईयां हेल ॥
आवां वनह गंभीर । देखी माननी मान छंडीया हेल ॥१२॥

भमरा रण झणकार । होइ कोएल ना टहुकडा हेल ॥
कामनी कंत सहीत । सुणतां अमृतना घूंटडा हेल ॥१३॥

खेलि कंत सूं तेह । नेह भरंरि तेजडा हेल ॥
रूप सोभागह गेह । गावइ सरस गीत गोरडी हेल ॥१४॥

ता अनेक ताणे देस । निपजी सरस सोहामणा हेल ॥
गाम गाम सुविसेस । गिर सरवा घ्यान दम वणी हेल ॥१५॥

जिणवर तणा प्रसाद सीस रे । धजा मणूं लहलहिं हेल ॥
घंटा मसेंकरी साद । गर्व म करो स्वर्ग इम कहि हेल ॥१६॥

राजपोर नगर वर्णन

तेह देस मझार । राजपोर नगर छि अति भलूं हेल ॥
अमरावती जिम सार । जाही पावल करी संकल्पो हेल ॥१७॥

सात खणा आवास । रास रमे रामा रूवडी हेल ॥
कत सूं गोठ विलास । हाथ चालंतां खलाके चूडी हेल ॥१८॥

रतण तणी छि भीत । नीज प्रतिबिंब ने देषीयो हेल ॥
कंत सूं मांडि खंत । अवर नारी सूं प्रेम लेखियो हेल ॥१९॥

आंगण रतनमि भूमि । निश तारा प्रतिबिंबिया हेल ॥
मोती ऊपनो भ्रम । हंस चरता विलखा थया हेल ॥२०॥

दीसि पडया मोती । तेहवें पण हंसनव्यवरि हेल ॥
कुकुरिण छे तरूयां होति । कहिते सज्जननें ते हेवो वणि हेल ॥२१॥

श्रावक सुजन अपार । दान पूजा करि सणो हेल ॥
पात्र प्रतीसय सार । पंचाचर्य होइ घणो हेल ॥२२॥

उपवनहि उरंग । लडो कली निर्मल अलि भरी हेल ॥
पीठी परिमल रंग । फूल महिमहि तिहा बहुं परी हेल ॥२३॥

जल क्रीडा करि नार । कंत सरीसी सोभागिणी हेल ॥
ते नगरी मझारि । दीसि नही को दो भागिणी हेल ॥२४॥

नर तिहा लाजे इन्द्र । रूप संपदा जोवने सुखि हेल ॥
गुण लक्षण समुद्र । धरम थणो छि तेह तणो हेल ॥२५॥
अवर मिथ्याते लोक । वरतइ व्यापार तीहां वसि हेल ॥
नही कोहनि दुःख सोक । धन कणु तेह तनि उल्लसि हेल ॥२७॥

राजभुवन उतंग । कनक कलस धजा सोहीयो हेल ॥
फाटक मंडप बहु रंग । राजोत्सव जनि मोहीयो हेल ॥२७॥

जाणें नृप जस एह। प्रगट प्रतापि धीर धरयो हेल ॥
लाल रतन तणा तेह। तोरण सोभा अंकरयो हेल ॥२८॥

मारीदत्त राजा

मारिदत्त ग्राहा राय। राय अनेक वणं सेवीयो हेल ॥
पुण्य प्रताप सुठाय। जिणि प्रजा लोक निर्भय कीयो हेल ॥२९॥

गज घोडा असंख। रथ पाला पार नहीं हेल ॥
चौदह विद्या सुलख। च्यार नीति तेहनीछि हेल ॥३०॥

सौम्यगुणि जिम चंद्र। प्रताप गुणि सूर जाणीयि हेल ॥
लीला गुणि जस इंद्र। रूपि कामबखाणीइ हेल ॥३१॥

मनें वणं मिथ्या भाव। क्रूर मतीछि अति घणी हेल ॥
तेह तणी नारी सुभाव। रूपवंती नामि सही रूपणी हेल ॥३२॥

तेह सरीसो राय। राजपालि वयरी विण हेल ॥
विषयासक्त सभाय। धरम न करि एक क्षण हेल ॥३३॥

दूहा

नगर में भैरवानन्द जोगी का आगमन

तेणि अवसरि नयरी मांहि, जोगी आव्यु प्रचंड ॥
भैरवानंद नाम तेह तणं, बोलि वात वीतंड ॥१॥

अनेक जोगी बीहामणा, दीसि तेहचि साथ ॥
शस्त्र त्रिशूल आदि करी, आयुध छि तेह हाथ ॥२॥

डम डम डमरू डाकलां, बजावें बीकराल ॥
सिर सींदूर लाबी जटा, कहावें ते खेत्रपाल ॥३॥

जोगी नागाछि केटला, रांखि वरड्यां अंग ॥
हरण चमर पिहिरि केटला, बाघ चर्म पिर रंग ॥४॥

कछोटी याबली केटला, कावरी झांट जटाल।
हाक दीइ एक दुरंधरा, जीव तणा तेह काल ॥५॥

भास नारेसूआनी

जोगी का रौद्र रूप

जीव हंसक ते पापीया। नारे सूआ ॥ हींडिवन खेलंत ॥
चक्रनाले घणं फेरवी ॥ना०॥ बनचर प्राण हरंत ॥१॥

अद्धं चंद्र फरसी धरि ।ना०। आणे यम तणी डाढ ।।
मयमत्त करि सह्ं ए ।ना०। हाक करि धनी गाढ ।।२।।

हाथे धणनना खापरा ।।ना०।। लोह कवळी करि रुन्ही ।।
जीभि धरि ज्वाला पीयि ।।ना०।। आगी आकाहारि वेद ज्ञान ।।३।।

गुपत खडग के ताबहि ।।ना०।। गरल केतला भीडमाल ।।
लोह कुडीला कडी धरि ।।ना०।। बली छरी विकराल ।।४।।

कोटें शींगी बजावता ।।ना०।। दुर्धर भींगडां नाद ।।
शंख बजावि ते सवि ।।ना०।। मांहो माहि करि वाद ।।५।।

भखि भांग धतूरडो ।।ना०।। राता नेत्रछि देह ।।
तूं बडी पत्र धणा धरि ।।ना०।। भीष मांगि गेह गेह ।।६।।

केटला कोट कांथडी ।।ना०।। चीथरां माला हार ।।
चीथडायु टोप शिर धरि ।।ना०।। केटला शिर जटा भार ।।७।।

काली मूद्रा धरि केटला ।।ना०।। फटक मूद्रा बेहू कांन ।।
लडथडता हींडि धणूं ।।ना०।। गाथि करि गीत गांन ।।८।।

हाथें दोरचां कूचरचां ।।ना०।। रीछडा केतलां हाथ ।।
चीत्रा वाघ बधां धरचा ।।ना०।। केटला मांकडा साथि ।।९।।

किनरी जंत्र बजावता ।।ना०।। लेतां गोरख नाम ।।
विखय बाह्या भूला भमि ।।ना०।। पाप मिथ्यातनो ठांम ।।१०।।

जोगणि साथि साकोतरी ।।ना०।।डाकिणी सांकिणी भेद ।।
जाणे चालती व्यंतरी ।।ना०।। नाक तणा तस छेद ।।११।।

अस्थि तणां काने कुंडल ।।ना०।। संखलाना गलि हार ।।
अस्थि तणां हाथे कडा ।।ना०।। कोट सीगी सणगार ।।१२।।

व्यंताल काल पंचाक्षरा ।।ना०।। चेडा चेटक अनेक ।।
कामण मोहण उच्चाटणा ।।ना०।। कूड कपट परिवेक ।।१३।।

विखयी विकनी जुवारीया ।।ना०।। जूठा बोला लपाट ।।
जायें भूला पर मोलवि ।।ना०।। ते किम पामि सुवाटि ।।१४।।

एह तह जोगी जोगिण गली ।।ना०।। देखो नीरवानंद ।।
लोकमानि मिथ्यातीया ।।ना०।। विवेक नहीं मतिमंद ।।१५।।

जोगी द्वारा रावण विभीषण आदि को देखने की भविष्यवाणी

लांबूं कूंछ नख मोटेरडा ।।ना०।। मोरख पीछनां छत्र ।।
लोक पूछि बात ते कहि ।।ना०।। फाकन बोलि विचित्र ।।१६।।

रावण लंका राजियो ।।ना०।। दीठो विभीषण साथि ।।
ब्रह्मा ईश्वर देखीआ ।।ना०।। जमीयो लक्ष्मी साथ ।।१७।।

हरी सूं मीठी करी गोठडी ।।ना०।। कोश्री अवमह साथि ।।
पांचे पांडवा मानता ।।ना०।। मनबलिमाहारी भाख ।।१८।।

रामलक्ष्मणे वषाणीयो ।।ना०।। सीतानि पूजा कीध ।।
अनेक राणा राय राजीया ।।ना०।। ते मूड वादि प्रसीध ।।

मारीदत्त बात सांभली ।।ना०।। तेडाव्यु ते ततकाल ।।
ते आव्यु ऊतावलो ।।ना०।। साथ जोगी विकराल ।।२०।।

राय आवंतो देखीयो ।।ना०।। साहामु चाली लागु पाय ।।
कर जोडी राय वीनवि ।।ना०।।आसत्ति करो पसाय ।।२१।।

जोगी किहि राय सांभलो ।।ना०।। सयल वीद्यामू पाश हू ।।
तूसूं तो राज देऊ ।।ना०।। रूसूं तो सवि वीणास ।।२२।।

तंत्र मंत्र यंत्र घणा ए ।।ना०।। पिर पिरभाऊवाद ।।
विद्या आकाश गामिनी ।।ना०।। विद्या अदृसीकरणादि आद ।।२३।।

राजा द्वारा आकाश गामिनी विद्या प्राप्ति की इच्छा

तब राजा आचभीयो ।।ना०।।बोल्यु मधुरीय वाण ।।
आकाशगामिनी मुझ दीयो ।।ना०।। विद्या तम्हे सुजाण ।।२४।।

जोगी द्वारा उपाय बतलाना

जोगी किहि राजा सांभलो ।।ना०।। विद्या सीझवा ऊपाय ।।
चडमारीजे देवता ।।ना०।। तेहनी भगत जो थाय ।।२५।।

थलचर जलचर नभचरा ।।ना०।। जीव जुगम आणेवि ।।
देवी आगलि हिंसतां ।।ना०।। ततक्षण तूसि देवि ।।२६।।

दीइ विद्यानभ गामिनि ।।ना०।। अवर घणेरी रम्य ।।
दुर्मक्ष रोग मरकीटलि ।ना।०।। सकटटलि प्रसीध ।।२७।।

रायते वचन प्रमाण यूं ।।ना०।। मूकपणि अपार ।।
कुर्कुटि मोलव्या जीवडा ।।ना०।। कुण न पडि संसार ।।२८।।

ते नयरी दक्षण दिसा ॥ना०॥ चंडमारी विख्यात ॥
देवीकूर कुरूपिणी ॥ना०॥ वाहलो तेहनि जीव घात ॥२६॥
हिंसा विण ते पापणी ॥ना०॥ करि अनेक उत्पात ॥
राजादिक मिथ्यातिया ॥ना०॥ समय करि जीव घात ॥३०॥

पशु पक्षियों के युगलों को लाना

देवी मठ राय आवीयो ॥ना०॥ लोक सहीत अजाल ॥
देवीनें पाए पडयो ॥ना०॥ मनलाउ पणी भार ॥३१॥

थलचर जीव

तीन जुगम तिहां आणीया ॥ना०॥ कूकड छाग वराह ॥
हरण रोज ससा सांबरा ॥ना०॥ महेस मतंगज घोडु ॥३३॥
रीछ चीता वरू चावरू ॥ना०॥ गेहेला नकुल सीयाल ॥
साप सरड पल्ली बामणी ॥ना०॥ मार्जार स्वान विकराल ॥३४॥
खर करभा वृषभादीक ॥ना०॥ वनचर आण्या अनेक ॥
समलि सीचांणा सारसा ॥ना०॥ हंस वायस बली भेक ॥३५॥

नभचर जीव

मोर चकोर लवारडा ॥ना०॥कोयल कीर कपोत ॥
चकवा चकवी पारेवडा ॥ना०॥ टीटिम घूहड घोत ॥३६॥
महुसी सोलीआ चडगीआ ॥ना०॥क्रौंच भैरव कुकड ॥
एह आदि नभचर घणा ॥ना०॥ वांधवालवाल किकड ॥३७॥

जलचर जीव

मछमगर जलमांणसा ॥ना०॥ करचला काचवा मूर ॥
जलहस्ती आदि जलचरा ॥ना०॥ बहु आण्या ते कूर ॥३८॥
मठ पाचलि ते बांधीआ ॥ना०॥ जपता करि पोकार ॥
भूख तरष अति पीडीया ॥ना०॥ भयकरी कांपि अपार ॥३९॥
धुरघुं दासि सवी सही ॥ना०॥ वाड पावधा ठाम ठाम ॥
पापी हुंस कलोकलि ॥ना०॥ नरक जावाने काम ॥४०॥

दूहा

खड्ग ऊघाडो झलकतो, वीज तणो झत्कार ।।
केश कलापद्दि मोकला, जलधर सोभा धार ।।१।।

मानव युगल लाने की आज्ञा

कोटवाल राय तेडीयो, चंडकर्मा तस नाम ।।
मनुष्य युगम आण्युं नही, ए हवूं सूं तुझकाम ।।२।।

राय नम्यो भयभीत तदा, कोटवाल ततकाल ।।
मनुष्य युगमनि कारिणि, जण मोकल्या जिम काल ।।३।।

ते चाल्या ऊतावला, दोहो दशधामि धीर ।।
तीणि अवसरि तिहां आवया, मुनीसागर गम्भीर ।।४।।

भास सामेरी माहिपण कहीयि, केदारा माहिपण कहीयि

सहीनी

मुनीचर्चा

एक आत्मा ध्यान मन धरे । राग द्वेष दोए परहरि अनुसरे ।।
त्रण्य रत्न अति नीरमलाएं । सहीए ।।१।।

त्रण्य गारव त्रण्य सल्य टालि । त्रण्य गुपति मुनिवर पालि ।।
अजूआलि । त्रण्य आगमि करी त्रिभुवन ए । सहीए ।।२।।

च्यार कषाय विहडणो । च्यार बंध कीय खडणो ।।
मंडणो च्यार संघ तणो घण् ए ।।सहीए ।।३।।

पंच आचारिज रंजीउ । पंच आश्रव बल भजीउ ।।
गंजयो पंचइंद्रीय दल दुरधरोए ।।सहीए।।४।।

पच संसार दुःख वारण । पाचमी गति सुखकारण ।।
तारण पंच परम गुरुनित ध्याइए । सहीए ।।५।।

षटकाय जीवरक्षण । खटद्रव्यनूं कहि लक्षण विचक्षण ।।
षटदर्शन जन जन प्रतिबोधवाए ।।सहीए।।६।।

षटकालनी स्थिति लहि । श्रावकनां षटकर्म कहि ।।
मन माहि सात तत्व चिंतन करें ।।सहीए।।७।।

सात भय थकी बेगलो । सात गुणस्थान ऊजलो ।।
नीरमलो सात तत्व सात गुण जेहनोए ।।सहीए।।८।।

आठ ध्यान करे आगलो । आठ मूकि मद कलमलो ।।
सोहो जलो चीतवे आतमा सिद्धि दिन ए ।।सहीए।।९।।

आठ महा सिद्धि दायक । आठ महा रिद्धि नायक ।।
गायक अमरी किनरी गुण जेहनाए ।।सहीए।।१०।।

नव नयनि नीरमल जाणि । नवविध सील धरि सुख खांणि ।।
मन आणि केवल लब्धि गुण ए ।।सहीए।।११।।

मुनि का उपदेश

दश लक्षण धर्म प्रकाशि । दस धर्म ध्यान अभ्यासे ।।
अति भासे । दश विधि जस विस्तोरो ए ।।सहीए।।१२।।

अग्यार प्रतिमा उपदेसि । लहि अग्यार अंग विसेसि ।।
नीसेसें बार अंग श्रुत पाठक ए ।।सहीए।।१३।।

बार भेद तप आचरि । बार अनुप्रेक्षा मनधरि ।।
विस्तारि । बार वरत श्रावक तणाए ।।सहीए।।१४।।

तेर प्रकार चारित्र धारी । चौद मल तणो निवारी ।।
क्षयकारी । पनर प्रमाद नो अति घण ए ।।सहीए।।१५।।

भावे सोले भावना । सत्तर संयम पालि पावना ।।
सोहामणा । यम नीयम धार धुर लगि ए ।।सहीए।।१६।।

अठार सहस्र भेद सील राखि । उगणीस जीव समास भाखे ।।
नासेय । दुष्ट दोष बीहामणाए ।।सहीए।।१७।।

वीस मार्गणा भेद कहि । एक वीस चोगुण सत गुण वहि ।।
अंगे लहि । बावीस परीसह धुरंधराए । सहीए।।१८।।

चोवीस जिन दिन दिन ध्याइ । पंचवीस कषायनि न बीठाय ।।
कविताय अनुदिन गुरु एह मुनी तणाए ।।सहीए।।१९।।

धरव मूलगुण अठावीस । पाठक गुरु धरे पंचवीस ।।
छत्तीस । वे धरपारत गुरु सर्वकरणा ए ।।सहीए।।२०।।

एह आदि गुण अति घणां । एह गुरुनें वे सोहामणा ।।
भामणा । गुरु गुण गावें केवल कवीए ।।२१।।

दूहा

पांचसौ मुनियों के साथ सुदत्ताचार्य का आगमन

पांचसें मुनीवरें परवरयो, वरयो संयम श्रीयंग ।।
सुदत्ताचारज नाम तेह तण्, तप संयमे अभंग ।।१।।

नगर समीपें आवीया, मुनिवर स्वामि सुजाण ।।
अनेक वृक्ष करी अलंकरयो, दीठो तब उद्यान ।।२।।

वन की शोभा

आंबा ऊनत अति घणां, मोरया तेहां अपार ।।
कोएल कुहू कुहुका करें, सुणता काम विकार ।।३।।

मालती मंदार मोगरा, फूल तणा मकरंद ।।
गू ंजता भमर भमि भला, वायु वाय अति मंद ।।४।।

सेवती सोवन केतकी, पाडल परिमल पूर ।।
वेलतणा घर पिर पिरह, करन पसारय सूर ।।५।।

भूख दुखीया दुःख वीसरि, सुखीया होइ सुख सूर ।।
हुइ व्यरहणी दुखि दुखणी, जेह भरतारछि दूर ।।६।।

फूल पगर पसरयां घण्, फलवली पत्र ठाम ठाम ।।
नीरतणां नीझर तिहां, व्यापय विषयने काम ।।७।।

ए मुनिनिजू गसं् नही, वन बहूराग सचीत्त ।।
अवर स्थानक नीहालवा, चाल्या मुनी सुपवित्त ।।८।।

भास कल्हगुणराजनी

मशान वर्णन

ते मुनीए । चालया आम । ताम मसाण दीठो घणोए ।।
मडा तिहां ए अलि अपार । रौद्र दीसि बीहामणो ए ।।१।।

बीहायकाए । ऊठ्या बहु धूम । अर्धदग्ध कलेवर पड्या ए ।।
ठाम ठाम ए पड्या बहुत । मली मधू मांस एह्वां मडाए ।।२।।

विकसयाए । मुखदीसिदांत । दुंकलीए घणी घणीरह बही ए ।।
सीआलीयांए ताणे तास । आकासे गृध लेई उडे ए ।।३।।

कूतरा एक लभि अपार । वढंता माहोमाहि डहडहिए ।।
वायस एक रंके बइठ । कामिस घरां् कलगली रहिए ।।४।।

अलबल्यां ए काष्ट अंबार । हाक प्रकाक्षां श्रवी श्याम्यो ए ॥
वेषीउ ए अति बलो रौद्र । कायरनो मन कांपीयो ए ॥५॥
तिहां बहुए वरी करी सोक । लोक बहु बापडारडे ए ॥
वाही आए मोहना तेह । बाप बाप कही मही पडिए ॥६॥

श्मशान की भय नकता

वीर वीर ए । एक कहंत । माता सुत नारी नाम लीयिए ॥
लेडोए साथि सजन । वाहाबाले इम नहीं मूंकीइ ए ॥७॥
एणी पेरें ए । ए करीअविलाप । मोहीया रडेते बापडा ए ॥
करता ए अती घणां रीव । पामवे अतीही संतापडा ए ॥८॥
निशसमे ए भूतजोटींग । क्रूर रूपि हाक थु करि ए ॥
डम डम ए डमरू बाडा हांक । डह डहि नाद कायर डरें ए ॥९॥
वाघ सिंघ ए महिस्वना रूप । बावरी कांट बीहामणा ए ॥
झब झबे ए खडग तेह हाथ । स रमतां भूत भूमि मणा ए ॥१०॥
डाकणी ए व्यंतरी क्रूर । सीकोतरी हींडे बसमसीए ॥
देषीय ए कलेवर भूर । हुकहुकाट हेबंबाहसें ए ॥११॥
सिरविण ए कड बाड धासंत । घणघण शिर घण ऊछलिए ॥
ठाम ठाम ए ऊकता जाण पूला अगनी तणां बलें ए ॥१२॥
जोगटा ए साथि श्यंताल । तु बलीजय टोली करी ए ॥
राषिए अनेक नैवेद । होम करव बह्नि परी ए ॥१३॥
एहवूं ए अति विकराल । मसाण दीठो मुनीवरि सहीए ॥
होइए वैराग्य बुधि । अपवित्र माटि रहि नही ए ॥१४॥

श्मशान में ध्यानामग्न होना

ज्याहां थी ए पडिते दृष्टि । प्रासुक ठाम ते जोईयो ए ॥
सांभलीयि ए रडिते साद । साधु संवाष्टक होहीयो ए ॥१५॥
मोटीए सिला अपार । तेह ऊपरि आसन करयो ए ॥
पडिकमें ए बहु सुजाण । ईर्यावहि काउस करयो ए ॥१६॥
पहले ही ए बेठा ठाम । आवश्यक करे आपणो ए ॥
कोइ भर्णे ए अंग ने पूर्व । आसन निविध कौडामणो ए ॥१७॥
हिंसा तणो ए कारणीय दीव । चोवीहार सवे उचरयां ए ॥
संतोष ए करी निसल्य । ध्यान मौनकरी अलंकरया ए ॥१८॥

अभयरुचि एवं अभयमति का गुरु के पास आना

तीणे समे ए मुनीवरे दीठ । अभयरुची अभयामती ए ॥
नाहा नडां ए नव दीक्षत । मुखे कोमलाणां अती ए ॥१९॥

आणी अए करुणा भाव । वदय वचन सुदत्तगुरु ए ॥
तेडीय ए दीयि आदेश । वछ यथा सुख तम्हे करो ए ॥२०॥

लागीयाए तेह गुरु पाय । काय स्थीती काज चालीयां ए ॥
जोडली ए ब्रह्मचारी तेह । ईरीयापंथ नीहालीया ए ॥२१॥

तणें समिए सेवके तेह । ब्रह्मचारी युग देखीया ए ॥
रूपि ए सोहि अपार । काम रती समलेखया ए ॥२२॥

युगल को देखकर विभिन्न विचार

माहोमाहि ए । करयते वात । आत आपणा चष्या श्रम टल्याए ॥
लक्षण ए रूप विख्यात वात कारणि जोइता मल्या ए ॥२३॥

पामसे ए देवी बल आज । काज राय तणं सीझसे ए ॥
देखीयए युगम सरूप । भूप आपण प्रति रीझसे ए ॥२४॥

सांभली ए किंकर भास । भाषा कोमल अभयरूचीए ॥
बोलीयो ए वेहेनर साथ । हाथ राखो मन करो सूची ए ॥२५॥

सह गुरु ए कह्यू बहू पेर । परीसह जीकवो तप फल ए ॥
तेह भणीए धरीय समाध । बाध त्यजी वाउ नीश्चलए ॥२६॥

संसार स्वरुप

जीवनें ए भमतां संसार । पार रहित दुःख ऊपनि ए ॥
नरके ए सातें माहि । कांहि सुख नहि नीपजे ए ॥२७॥

भूख तृषा ए पाडिए रीर । नीर अन्न रती नवि मल्योए ॥
छेदें तनू ए नारकी पाप । आपको जीवडो टलवल्योए ॥२८॥

वली भम्यो ए वार अनन्त तिर्यंच गती जीवडो ए ॥
विहितो ए भार अपार । सार बहूणो रडवडयो ए ॥२९॥

भूखिए तरसें अ दुखी उदास । भास आक्रंद करि वलीए ॥
छेदन ए भेदन मार । दुःख जाणे तें केवली ए ॥३०॥

---

१. अन्य रचनाओं में ब्रह्मचारी के स्थान पर क्षुल्लक क्षुल्लिका पाठ मिलता है ।

मांनव ए मते मझार । आरत रौद्र ध्यानें पडयो ए ॥
दारीद्र ए रोग वियोग । भोग भूलो कामें नडयो ए ॥३१॥

देवगतींए माहि अयाण । मानसीक दुःख व्यापीयो ए ॥
देखी सुख ए अमरह्हरीष । बीजीयो मन मही कांपीयो ए ॥३२॥

एणी पिरिए चोगती मांहि । एह जीव भमयो दुखि भरयो ए ॥
भोलो ऐ मोलव्यो मूर । कुगुरु कुदेवन ऊधरयो ए ॥३३॥

पुण्यनिए योगि जाण । वाणी जिन तणी पामीयो ए ॥
श्रीगुरु ए तणें पसाय । तेहनें शीर नामयो ए ॥३४॥

पामयो ए श्रावकाचार । सार लघु दीक्षा भलीए ॥
प्रतीमाए भेद अग्यार । धारक हवा मनें रलीए ॥३५॥

भव भव ए लहीइ प्राण । पण समकित व्रत नवि मलें ए ॥
इम जाणीए तिम करो मात । भ्रात भय जिम टलिए ॥३६॥

ले से ए जीवराय दीख । दीक्षा सीक्षा लेसे कोनहीए ॥
ते भणीए । देहेन सुजान । आणो मन जिनपदे सहीए ॥३७॥

तब बोलीए बिहिनी बोल । बह्म सुणो वाणी मुझ तणीए ॥
पूरव ए भवे सणो भ्रात । हिंसा कीधी बीहामणी ए ॥३८॥

पीठनो ए कूकडो एक । देवी आगल हण्यो ए ॥
तेह फलिए । पांमयाए दुःख अतीव । भव सातिते मुझकले ए ॥३९॥

एक हवि ए साधु धर्म । कल्पद्रुम चिंतामणी जसो ए ॥
समीकीत ए कर सूं जतन । मन एहनो संसय किसो ए ॥४०॥

इन बीतीए मन दृढ कीध । लीध अणसण दोए परीए ॥
जीवूं भए तो पारणूं जाण । नही तो आ अणसण अनुसरीए ॥४१॥

दूहा

सिपाहियों द्वारा अपने प्राणों करना

झूक देई घायल करया, तेणि सेवकें तेणी वार ।
वेहू भालता थींतवे, अनुप्रेक्षा भेद बार ॥१॥

क्रूर काल मकरे घणू, बीत्या सोहि सार ॥
मेघ पटले जिम बीटीयो, कांति सूं चन्द्र उदार ॥२॥

भास हींदोलबानी

देवी मठ की भयंकरता

दूर थो देवी मठ तदा । दीठो दुर्ग्ग विसाल ।।
पाषल फरतो उपवन । हींदोलडारे । अनेक तरु छिरसाल ।।१।।

केसू आसू वन तीहां । रातडा असोक अपार ।।
जाणे भयभीत वसंतडें । ही०। भेटण मांस विस्तार ।।२।।

महूडां मोरघा बहू त्यहां । फलगलि बारबार ।।
जाणें रडि देवी भमें । ही० । वसत मूके आसू धार ।।३।।

काला बाबू फले करी । काला वृक्ष तमाल ।।
देवी भेटण आवीया ।ही०। जाणें पिशाच विकराल ।।४।।

ताड तणा तरु उन्नत । ताड फल स्याम विशाल ।।
देवी मलूआ बहु रूप धरी ।ही०। जाणे ईस गलि रूडमाल ।।५।।

खजूरी नारी अली । घडीयां बांध्यां छेवेय ।।
देवी मलवा सजथीया ।ही०। मद्य घडा सिर लेय ।।६।।

पूला दीसि 'मधू' तणा । माखी भमे अपार ।।
जाणे देवी कारणें ।ही०। सूका मांस तणा भार ।।७।।

ठामे ठाम चणोठडी । रातडी दीसि मोय ।।
देवी पूजवा कारणें ।ही०। अभक्ष थाल भरयो ओय ।।८।।

फूला तिहा वली चांपला । पीला पेखीया जेहू ।।
देवी कोपि कांपता ।ही०। जाणो पिंजर हुवा तेहू ।।९।।

कोयल सूडा सारसा । बोलि भमर गूंजार ।।
जाणे बीहना भयकारी ।ही०। स्तवन करिज अपार ।।१०।।

मठ गठनिको सीसडि । मांणस माथां भाड ।।
जाणें जाता जीवने ।पी०। बावबे जूहतें राड ।।११।।

अनेक जीव मठ पासलि । बीध्यलि बही बार ।।
भूख तरस पीडया घणू ।ही०। करय पोकार अपार ।।१२।।

मद्यपान करि ओकटा । अंगोटा गलि चंग ।।
वायि संख सींगी सींगडां ।ही०। कली कली करिय उतंग ।।१३।।

डम डम डमरू डाकलां ।ही०। तबली ताल कंसाल ।।
रणभेरी रण काहल ।ही०। तूर वाजि विकराल ।।१४।।

मठ का आंगन

दीठो देवी मठ आंगणो । मांस रुधिर ठाम ठाम ॥
अजीतमति जाणे देवी क्षमी ।ही०। मानवी तणा विसराम ॥१५॥

रुधीर तणा दीधा छडा । मठ करती भव भार ॥
जीव मस्तके चौक पूरया ।ही० । रुधीर हाथा मठ बार ॥१६॥

मस्तकनी तोरण रच्यां । वीझनी वानर वाल ॥
पंखी पींछ पशू पूंछडा ।ही०। ठाम ठामें बांध्या विकराल ॥१७॥

रायनि नफरें हुकम दीयो । दीठो राय यम काल ॥
मोकले केश कोपि भरयो ।ही०। झबकि हाथे करवाल ॥१८॥

राति आंखि जाणे राक्षस । जाणी केर यमदूत ॥
वन वसतो जाणे व्यंतरो ।ही०। जाणे भयंकर भूत ॥१९॥

जाणे क्रोधनों पूंजलो । जेसो अघरमी चित्त ॥
जाणे पापनो पोटलो ।ही० दीठेए होय भयभीत ॥२०॥

भैरवानंद जोगी

भैरवानंद जाणे भैरवो । वसमो वीर वंताल ॥
खडग झाली कोटी गडो ।ही०। नयण जाणे अग्नि ज्वाल ॥२१॥

देवी का रूप

देवी दीठी बीहामणी । सकत त्रिशूल छि हाथ ॥
रूंडमाला गलि ललकती ।ही०। बिठी छि संघनाथ ॥२२॥

लांबी जीभ छि रातडी । राता मोटा दांत ॥
डह डहती मुख पसारती ।ही०। बाबेला नी होइ भ्रांत ॥२३॥

कोडी सम मोटे रडे । फाटे डोले जोय ॥
अनेक जीव हणावती ।ही०। परतख मरकी होय ॥२४॥

हाथ काती मद्यूं कांपती । कांपती कोपि अपार ॥
मद्य पीइ नरनूं वली ।ही० डीकोतरी भयकार ॥२५॥

ब्रह्मचारिणि अजयमति को देखकर राजा द्वारा विचार

ब्रह्मचारी राय देखीयो । मांचीयो काम स्वरूप ।
केए इंद्र स्वर्ग तणो ।ही०। के मही माहि मह्या भूप ॥२६॥

के पैयालनो राजीयो । के गणपती के चन्द्र ॥
के ब्रह्मा के ईश्वर ।ही। के हरी के बलभद्र ॥२७॥

के मंदी के नल कहूं । नलहूं रूपह पार ।।
सक्र कहू के सुरगुरु ।ही०। सूरवीर उदार ।।२८।।

कालिका जाणे सरस्वती । रोहणी लक्ष्मी होय ।।
इन्द्राणी उर्वसी कहूं ।ही०। नागकुमरी के जोय ।।२९।।

कि सावित्री सीता कहूं । तारा मंदोदरी एह ।।
गौरी के अंजनी कहू ।ही०। रूप न लाभि छेह ।।३०।।

रूप लक्षण बहु गुणनिलो । कला अनेकह ठाम ।।
मारीदत्त नृप पूछए ।ही०। कहो तुह्म कवण सु नाम ।।३१।।

राजा द्वारा प्रश्न

कवण गाम थका आवीया । मात तात कुण ठाम ।।
अकल रूप ए अनोपम ।ही०। कवण मो हो साल सुधाम ।।३२।।

दयाधर्म तुह्म जय करो । त्रिभुवन माहे जे सार ।।
आशीर्वाद दें उच्चरे ।ही०। मारिदत्त अवधार ।।३३।।

काम तम्हारू तम्हे करो, मम पूछो अह्म वात ।।
अह्म वृत्तात दयामय ।ही०। तह्मने गमे जीवघात ।।३४।।

साधु युगल द्वारा उत्तर

अ धा आगलि नाच बु । बिहिरा आगलि गीत ।।
पापी आगलि धर्मकथा ।ही०। कहिता होइ विपरीत ।।३५।।

गिहेला सूं गुण गोठडी । उसर भूमे बीज रोप ।।
गिर सिर नील पेर लेडवूं ।ही० तिम अह्म वचन निरोप ।।३६।।

दूहा

मारिदत्तके हृदय में दयाभाव आना

दया भरी अह्म गोठडी, रुचे नहीं राय मान ।।
पीतज्वरी मन रुचि नहीं, साकरनि दूध पान ।।१।।

इम जाणी निज हित करो, अह्म ने म पूछो आज ।।
जेहनि जेहवी गति सही, तेहेनि तेहवी मति राज ।।२।।

खड्ग का त्याग

मारिदत्त तब उपसम्यो, खड्ग मुक्यो तेणी बार ।।
कर युगम जोडी करी, करी कोपनो परिहार ।।३।।

ब्रह्मचारी प्रति बोलियो, विनय सहीत उदार ।।
कहो कथा तह्यो रूबडी, स्वामी दया भंडार ।।४।।

ब्रह्मचारी तब बोलीयो, वाणी अमी समान ।।
भी भो भूप भलो भणो, साधु साधु तह्म वाण ।।५।।

धर्म बुद्धि सही जीवनें, पुण्य बिना नहीं होय ।।
सुरग मुगति सुखकारणी, राय विचारी जोय ।।६।।

कथा कहूं राय रवडी, ध्यानी कहो विस्तार ।।
तेह बह्म पण प्रणसरी, अब साते मझार ।।७।।

भास चोपई

भरत क्षेत्र वर्णन

एहज जबूदीपज माँहि । सुरमहीयो मंदर तू चाहे ।।
पांडुसिल्या चीहो सही तनु जोय । जिनवर जनम कल्याणक होय ।।१।।

चीहो वनें व्यंतर किंनर वास। देवी देवी रमये जिहाँ रास ।।
परदक्षणा योतकी करें सदा । सास्वतो अचल चले नहीं कदा ।।२।।

तेह दक्षण दिशि भरतह क्षेत्र । आरज खंड मांहि सुपवित्र ।।
देश अछि तीहा मोटो घणो । नाम अवती छि तेह तणो ।।३।।

अनेक गिरी गहवर पर वरघो । अनेक महा नदीयि अनुसरघो ।।
मोटी अटवी वृक्ष असख्य । आछेकूर जीव तिहा लक्ष ।।४।।

चमरी गाय अछे ते घणी । पूंछि भोम्य बूहारे तेह तणी ।।
झर भर मेघ छडो तिहां देय । देस महारायह पद लेय ।।५।।

चमर चमरीया मृग ढालंत । पाडला तरु फूल्या जे महूत ।।
पंच वरण जाणे छत्र धरंत । अनेक ठाम दीसे जयवंत ।।६।।

किंनर गध्रव जाणे गीत गाय । देव अनेक सेवें जेम राय ।।
सूडा सारस सावजा साद । जाणें बदियन करें स्तुतिवाद ।।१७।।

अनेक फूल रचना तिहां होय । चोक पुरंता वेवला जोय ।।
पोढा फल जाणे भेटणू । वन देवता मूके नित घणू ।।८।।

भोज पत्र आदि बलकल जाण । विचित्र वस्त्र सोभा बखाण ।।
विविध वेल मंडप घर भला । अमरा भमि किंकर केटला ।।९।।

कपूर वेल के लदीयि कपूर । कस्तूरीया मृग बीर कस्तूरि ।।
विचित्र रूप मही सोभिनार । देश राय सम सोभे सार ।।१०।।

वसि ठांम ठांम बहु गाम । कूकडा कूकडा अति अभिराम ।।
गाम तणो नवि लाधि पार । जाणे भूपह बल विस्तार ।।११।।

अवन्ती देश वर्णन

दीसि दस दिश चरती फिरे । गोवाला साथि अनुसरें ॥
पूंछ उलालि वाधि वसि । अवर कोहूने न व्यथायि वछि ॥१२॥

महिषी मोटी घणी छिवली । जल दीठि पोहोचि मन रली ॥
भिस कुभामिनी भोला जीव । सही पाणी देखि हूरषे अतीव ॥१३॥

गोवालिया सिर सोहि घूघडी । मयोर पीछनी मनोहर घडी ॥
गले लिलकि गूंजानो हार । सोमें लाकड़ी हाथ उदार ॥१४॥

फूल मुकुट सिर रहयो लली । मुख मधुरी वाथि बांसली ॥
गीत गायि नाचि मन रली । सांभले हरण घणी हरणली ॥१५॥

वंस नाद सुणी डोलि सांप । भूख तरसनो न लेखे व्याप ॥
विखय वलूधो जीव गमर । न व्यलेखें सुख दु.ख विकार ॥ १६॥

पाछली राति तीहा गोलणी । दीही वलोणूं घूमे घणी ॥
कंकण खलकि ललके गोफणो । कटि चालि मटको तेह तणो ॥१७॥

राते रच्यो जे काम विलास । रखे वीसरूं जाणी करय अभ्यास ॥
विलोणां गंभिर सांभली साद । जाणे मेघ तणो ते नाद ॥१८॥

नाचे मोरडा रची कलाप । मेहो मेहो शब्दह करि व्याप ॥
बन मांहि मोरडी साथें रमे । जाणे आव्यो वरखा समे ॥१९॥

साल क्षेत्र भर्यां नमी रहि । स्थल कमल ऊग्यां तेह मंहि ॥
वायु वसि हलावि सीस । परीमल जाणे वखाणि ईस ॥२०॥

सूडा साद करें सोहामणा । बनफल त्यजी तिहां आवि घणां ॥
बहू फूलत्यजी त्यहां भमर भमंत । रणझण करता साल सेवंत ॥२१॥

अवर धान्य तीहा नीपजिइ घणां । परबत सम ढग होयि तेह तणा ॥
राखि कोय नही तेहनि । लेई जायि ओईयि जेहनें ॥२२॥

ग्रीषमे कठण कर सूरज तणो । राजा कर न कठिण तिहां भणो ॥
नारी पयोधर करें पीडाय । नही गाम राय करिसी वाय ॥२३॥

छत्रि दड नब्यलोक दडीयि । फूलें बध व्यलोक बंधीयि ॥
नारी अधर कामी करें खंड ॥ जीवह खंड नही परचंड ॥२४॥

भवन राय सरणागत तणो । न कोई गाम बन पालि भणो ॥
जीहा भला भमरा दीसिअपाट । नही लोक को हीडें कुवाट ॥२५॥

लंपट भमरा कमल बंभाव । नहीं लंपट को लोक कहिवाय ।।
नर माँहि चोर नहीं कुचटी । छिनारी चणु ँ मन चोरटी ।।२६।।

द्राख मंडप दीसि ठाम ठाम । नागवेल वाडी अभिराम ।।
व्यरही जननि व्यापि काम । नारी सम दीसि आराम ।।२७।।

तीलक मंडीत पत्र वल्ली साथ । पातलडी दीयि तरुणा बाथ ।।
प्रवाल सूं उंचे स्तन स्तबका । विभ्रम छे भम तणी भविका ।।२८।।

मदन मंडित योगी सेवए । फूल रेणु उडणी सेवए ।।
पखी सादें जाणे गावे गीत । दीसे सह नामोहि चीत ।।२९।।

नाग केसर नारंग जंबीर । बीजोरा रायण बहु खीर ।।
फणस खजूरी नें नारकेर । फूलफल दीसि बहु पेर ।।३०।।

मालती मोगरो ने मचकुंद । मंदार मरुउ बकुलह वृंद ।।
एह आदिछि तरु वर लाख । पिर पिर पंखी बोलि भाष ।।३१।।

जाणे दीन दुखी भूखीया । तेडि तरु करवा सुखीया ।।
माली नवी वहि तीहाँ पाट । अनेक खेत्र सींचिया माट ३२।।

सरोवर वाव कुआ गभीर । भरीया ते बहू नीर्मल नीर ।।
कमल नयण जाणे जूयि समृद्ध । हसा नादें वखाणे सबूद्ध ।।३३।।

नीत राखे राय लोक अनीत । देश अभय लोक अभयाचीत ।।
लोक माहि को खल न कहिवाय । तिल पीलतां सही खलथाय ।।३४।।

कौतकमाल तणो होयि युद्ध । कटक युध तिहाँ नहीं होयि सुध ।।
फल सम समार्वे तब भरखे विरुद्ध । तिहाँ नहीं लोक माँहि कोध ।।३५।।

जिन प्रसाद दीसि अति चंग । गिरी गिरी नगरे नगरे उत्तंग ।।
कनक कलस सोभा झंझवरि । घूघरी सहीत धजा फरहरि ।।३६।।

अनेक लोक तीहाँ आवि यात्र । नव्य काल नाचे तिहाँ पात्र ।।
घुमि घुमि मदल ताल कंसाल । होइ भफेरी नाद रसाल ।।३७।।

अनेक फूल फल मेई पकवान । जिन पद पूजि सुजन सुजाण ।।
अनेक व्रत विधान आचरि । भवसागर ते हेलांतरि ।।३८।।

चतुर्विध दान देवा सुपात्र । पर उपकार सफल करि गात्र ।।
मन कय रयण भावएनें देव । लोक सह त्याँति नितेव ।।३९।।

धनद तिहां एक अहां अनेक । इंद्र अस्यां नर आहां सुविवेक ॥
चतुर घणा नर सुर गुरु समा । घणी घणी सोम तीलोत्तमा ॥४०॥

सवे नार मर्त्या उर्वसी । घिर घिर नार सुकेसी असी ॥
रंभा जणी ऊर घणी मानवी । रंभा वन मंडित अवनी ॥४१॥

सजल अपछरा भूमि भावि भली । रसा कल्पवृक्ष छि घणावली ॥
मदारंभ साधर्मी घणा । पारजातक तिहां कौतकी भणा ॥४२॥

विबुध विद्वांसन जाण् पार । सहू घरि सुख संतान अपार ॥
हरीचंदन चर्या बहु लोय । स्वर्गतो एक एक सहू जोय ॥४३॥

अई.रावण सम गज नही मणा । ऊचाश्रवासरखा हय घणा ॥
सर्व लोक कवि कला निवास । नित मंगल गावें सुभ भास ॥४४॥

चन्द्रमुखी मंदहगति नार । गाम नगर पुर पाट मझार ॥
आदित तेज अनेक छे सूर । सवे सुबध अती नही कूर ॥४५॥

नारी प्रति अबोडे राहु । गूथी वेण केतु बहु चाहु ॥
अनेक नवेग्रह मडीत लोक । स्वर्ग स्वर्ग करे ते फोक ॥४६॥

एक सुरु गुरु एक रवि एक चंद । राहु केतु एक बुध सुकेन्द्र ॥
एक मंगल माटिए देस । ऊंचा स्वर्ग नेंहसि विसेस ॥४७॥

ठाम ठाम वली सतकार । भूखा ने जमाडि अपार ॥
केटला वस्त्र भूषण देयंत । भागण गायणनें गुणवंत ॥४८॥

नागवेल दल बीडी अखंड । नारद तुंबर अनेक प्रचंड ॥
नयण कटाक्ष नारी चालवि । मयण भूजग मडस्या पालवे ॥४९॥

अधर अमृत रस देई अपार । मधुर वचन मंत्रोषधी चार ॥
अमृत भरया स्तन कुंभ बहु सार । अमललेलि मुगता फल हार ॥५०॥

घूआ मीठा गीत गाहा कवे । अमरीनि नीज गुण हारवे ॥
सहू जन वदन सरस्वती वसे । स्वर्ग नें देस तेह कारण हसे ॥५१

वस्तु

देसह सोहि देश सोहि । मती बहु एह । सवे देश माँहि भलो ।
मध्यम छे पण अति ही उत्तम । मध्य मेरु यम गिरिपती ॥

तारा माहि जैम चंद्रसत्तम । तिम सहू देश मांहि अवंती चंग ।
धन कण कणय रयणि घण् । मंडित अतहि उत्तंग॥१॥

श्रीमंतः भवनंतबोधकिमला: सम्यक्त्वमुख्यैर्गुणैः ।
युक्तावेऽष्टविरष्ट सिद्धिकरना: पूज्या: सुरावलिभि ।।
श्रीसिद्धाः परमेष्ठिनो भवपति श्रीमधायऽनन्तोत्तमा:
श्रीवैकमसुविक्रमस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो मंगलं ।।१।।

इति श्री यशोधर महाराज चरिते रास भूजामखी काव्य प्रतिछंदे
भूदेव कवि श्री विक्रमसुत वैद्यन्न विरचिते मारिदत्तनृप
देवीमठागम बहु श्री मदभयरुचि प्रतिपताऽवंती देश वर्णनो
नाम द्वितीयोऽधिकारः ।।२।। ।।छ।।

तृतीय अधिकार

भास भमरुलोनी

उज्जयिनी नगर

तेह देश माहि सोहि । तो भमारुली । नामे नगरी उजेण तो ।
नवतेरी नगरी भली । तो भ०।। अमर नगरी जीके सैण तो ।।१।।

उन्नत गढ सूषा तणों । भ०।। रतन जडीत को सीस तो भ०।।
जणा जोति करी जाणीयि । तोभ०।। तिलक अवनी कोसीस तो ।।२।।

पाखल फरती खातिका ।।तोभ०।। निरमल भरयु छे नीर तो ।।
जाणें नवनी मागर नारी ।।तोभ०।। पेहरयो नीले चीर तो ।।३।।

राता नीला कमल भला ।।तोभ०।। जाणे भरत भरी भात तो ।।
ऊपवन उपें अनोपम ।।तोभ०।। फूल्याहि तरु बहु जात तो ।।४।।

फूल रेणु पसर तिहां ।।तोभ०।। आकाशे ऊडाडे वात तो ।।
जाणे पीली पीछोडलो । तो भ०।। जाणे भमरा कालीभात तो ।।५।।

जाणे नगरी नायका । तो भ०।। ऊंचे स्तन गढ भार तो ।।
लाजी आपण धावरे ।तोभ०।। करें करी वाचे राय तो ।।६।।

पेरबीयि पोलि पोढां पेरवला तोभ०।। कनक सांकल लल काय तो ।।
मोटा माला हुणीया । तोभ०।। सांकल्या अनेक बंधाय तो ।।७।।

तलीया तोरस्त ऊनमयि ।।तो०भ०।। रतन तणा सुविसाल तो ।।
मेडी मोतीं कू ंबका ।।तो०भ।। मोहोल मोटें मोती जाल तो ।।८।।

पोलि पासली धूलनो ।तो०।। चिनायतन छि अनेक तु ।
चौरासी आसन भली ।।तो० भ०।। सब काम लाग्य अनेक तो ।।९।।

विकट सुभट बिठा रापि ।तो० भ०।। आयुध अनेक प्रकार तो ।।
कोतक करता कामीयां ।तो० भ०। केता कोडि जुइ सार तो ।।१०।।

नगर मध्य राय धवलहरा । तो०भ०।। एक बीस खणा उतग तो ।।
कनक कलस कोडामणा ।तो०भ०।। सोभा दीसि अती चग तो।।११।।

रातां रतन रंग मडप उपरितु ।तो०भ०।। फटकत तणो सोहि थम तो ।।
पाखलि फरती पूतली । तो०भ०।। करय ते नाटा रभ तो ।।१२।।

जाणे प्रतापराय तणो तु ।भ०।। यश मंडिन सोहत तु ।।
रतन मोती झूंबके करीतु ।भ०।। सभा मंडप सोहंत तो ।।१३।।

महुल मोटा माननी तणा तु ।तो भ०।। पाखल फरती अनेक तु ।।
रतन मेडी रलीआ मणी ।तोभ०। रचयछि अती सुविवेक तो ।।१४

मुपेउ राउ रडी ।तो भ०।। कनकें घडी जडी रत्न तो ।।
रतन पेटी अति उरडि ।तोभ०। वस्त्र भूषण नही यत्नो तो ।।१५।।

अंत पुर घर अती घणा ।तो भ०। भरया सामग्री अपार तु ।।
गुरव अवाली जालीया तु ।तो भ०। अगुरू सु धूप विस्तारतो ।।१६।।

माणिक चोक चतुर चहूटा ।तो०।।भ०। चुरासी दीसि दीसि च्यार तु ।।
हाट श्रेंण सोहि सारी ।तुभ०। भरा कीयाणा अपार तु ।।१७।।

उपलबद्ध मेडी वणी ।।तुभ०। पंचवरण मणी चग तो ।।
चित्रामण मोती सिर ।।तोभ०। रगत छि बहू रंग तो ।।१८।।

नाणोद श्रेण छि नवरगी ।तो भ०। नाणा अनेक प्रकार तो ।।
जह विरीउल जाणीइ । तो०भ०।। रतन तणा झलकार तो ।।१६।।

सोहू ठवामणी ।तो०भ०। सोना घडिया घाट जमाथोत तु ।।
जडीया उस ग मलि जडि ।तो०भ०। वगाहे दोसी भट दीसि भली ।।२०।।

वस्त्र अनेक छिभीण तो ।तो०भ०। बहू मूलक सेसा सालू ।।
पटकोल आदि अरवीण तो ।।

गधी अटे बहू पामीइ । तो० भ०। अनेक कीयाणां सार तो ।।
नेसटीइ नव नीध्य जाणो ।तो०भ०। अनेक ध्यान अपार तो ।।२१।।

अनेक वस्त व्यापारीया। तो०भ०। ठाम ठाम छि बसारि तु ।।
एणी पिरि मोटा चोहटा । तो०भ०। मूलि चतुर नर नारि तो ।।२२।।

अनेक वसि विवाहारीया ।तो०भ०। वारवा दारीद्र जेण तु ।।
मागणिनि वाछीत दीयितु ।तो०भ०। लीयि कीरत सु गुणंण तो ।।२३।।

साव बरणा अवार तु । अमाउली । राता रतन नी भात तु ॥
हुसी करी कहि कंत ने ।तो०भ०॥ साडी पिहिरवा बयू पीत तु ॥२४॥

फटिक कंबोलि चंदन ।तो०भ०। रले किरण बेभ्यू जोयतो ॥
कंत आयमि बरथ् ऊमटनि ।तो०भ०। कुं कुं आरणीय भिलोमतो ॥२५॥

नील रतन ममकुडी तो भ०॥ चोरवी समुमारिक कायतो ॥
नीलें चिरसे सामली आणी ।तो० भ०। चोली बसी बसी पीठी लाय तो२६

फटक करां भर भीतरे ।तो०भ०॥ नारी पीठी प्रतिभाय तो ॥
मोठ करिते मोरवी ।तो०भ०। सही भरमणी तेहिं कय तो ॥२७॥

रीस करिते ऊपरि ।तो०भ०।उत्तर नहीं चोवि काव तो ॥
किरीसाणी सुभ ऊपरें ।तो०भ०। के कंतेनू सुहवीमाव तो ॥२८॥

कहीं राता रतन तणो ।तो०भ०। उरेहि रमवा थई बाल तो ॥
रात आणी रंग रस भरी ।तो०भ०। वाछि कत रसाल तो ॥२९॥

पीला रतन नी तुरडी।तो०भ०।।सामली कंत प्रति जाय तो ॥
परनारी करी लेखवी ।तो०भ०। करण आदर तो संकायतो ॥३०॥

चन्द्रकांत गोखरु बहा ।तो०भ०। चंद्र किरण मलि आव तो ॥
झरभर धार अमृत झरे ।तो०भ०। सारद मेघ बखाण तो ॥३१॥

फटिक गोखतणि बालीयि ।तो०भ०। चन्द्रना किरण प्रसारतो ॥
चोली भामनी लेय। बसि ।तो०भ०। आणी मोतीहार तो ॥३२॥

हार विना बलथी हुवी । तो०भ०। हासू करि तब जाय तो ॥
हार देसी बली सांचलां ।तोभ०। बावरि नही तहां हाथ तो ॥३३॥

आकाश ऊभा पेढी ऊलीयां ।तो भ०॥ बिठी चंद्रमुखी वाहि तो ॥
पुंणम दिन ग्रहण कालि ।तो०भ०। भूलो गगनें भमें राहुतो ॥३४॥

ठाम ठाम करडेवी तो ।भ०। संसि बहको तेण ठाम तो ॥
सहेह थी चन्द्र तण् तो ।भ०। कण एक ग्रहण न थाय तो ॥३५॥

फिर फिर कापी चोरवी तो ।भ०। मारी रमें सही घर जाय तो ॥
हाक करें तासी दीधि तो । ।भ०। प्रेम पोढि पीढि जाय तो ॥३६॥

हीडोलि बस् हीचकितो ।भ०। गावती गीत रसाल तो ॥
अमिक बेठी चोपायी तु ।भ०। हार नहि निपुलमाल तो ॥३७॥

माहि बेठोहि मही डोलारिलो ।भ०। हीयती अबला बाल तु ॥
भगती करती भामनी तो ।भ०। भला भोग भोगवि रसाल तो ॥३८॥

चूम्रा चंदन कस्तूरी तु ।भ०॥ पीठी परीमल अंबतो ।
रमत करि रत्नी भामणी तु ॥भ०॥ नर नारी बहु रंग तु ॥३९॥

को गोठ करे कर लेहेकते तो ।भ०। चिबूके धरंती हाथ तो ॥
नयण कटाक्षे गोरडी तो ।भ०। रिझवि तेह निज नाथ तु ॥४०॥

बालाकसे करें करी तु ।भ०। नीवी छोडंता लाजी नारि तु ॥
रतन दीवा नव्य उलवाय तु ।भ०। करे जेहू कमल प्रहार तु ॥४१॥

एणी पिरि भोग भोगी भला तो ।भ०। भोगवता जाणे इन्द्र तो ॥
रतन सोगठे खेलतां तो ।भ०। बोहोत्तर कला समुद्र तो ॥४२॥

बत्तीस लक्षणेऽलकरा तो ।भ०। नगरी तणा सहू लोक तो ॥
रोग शोक दीसि नही तु ।भ०। पुण्य तणा फल जोयतो ॥४३॥

नारी दीसि पदमनी तो ।भ०। बोलती मधुरी वाणि तु ॥
मुख परिमल भमरा भमितो ।भ०। नयणे खलणी आण तु ॥४४॥

बीछीया सोहि रतने जड्या तो ।भ०। झंझरनु झमकार तु ॥
रतन मेखला कटि खलकती तु ।भ०। घूघरीनु धमकार तु ॥४५॥

चपकली मोतीहार तु ।भ०। पतकडी जडी अतूल तु ॥
मुख तबोल अधर राता तो ।भ०। नासिका मोती अमूल तो ॥४६॥

झालकाने खरी खीटली तु ।भ०। फूली राखडी सिसफूल तु ॥
वेणी गोफणो भाखि भणी भाली तु ।भ०। भमेरते कांम जसूल तु ॥४७॥

कर कंकण चूडी रूडी तो ।भ०। विहरखा बीटी हाथ तु ॥
घाट ऊढी चाली मलपती तो ।भ०। सेरीये सही भर साथ तो ॥४८॥

अमर ठाम ठाम धूपतो ।भ०। अगुरू न दीसि लोक माहि तो ॥
अवीनय नही वली को दीसि तो ।भ०। अविनय अगनी तु बाहे तो ॥४९॥

अबीभव नहीं को वसि तीहा तो ।भ०। अवीभव मेरवज होय तो ॥
मलीनाबर कुमती नही तो ।भ०। मलीनांबर निसि जोय तो ॥५०॥

द्वीज दुसि संकज नही तो ।भ०। द्विज संकनी नारी उष्ट तो ॥
वादि बढवू नही तु ।भ०। वाद वीणा सही गोष्ट तो ॥५१॥

राति चोर नामवि नही तो ।भ०। नारीनां वस्त्र हरि नाहु तु ॥
केली करता को जन नही तो ।भ०। कंतसूं निसी मांहितु ॥५२॥

कठन पशु स्त्री स्तन विवेतो ।भ०। नही ते कठिन वचन तो ॥
वांके भमरँहि कामीनी तो ।भ०। वांकू नही तेह मन तु ॥५३॥

मंदगति छी मानवी तु ।भ०। मती मंद नही तेह तु ॥
जठर कटी हि दूबंली तु ।भ०। नीतंब दुबले नहीं तेह तो ॥५४॥

काला केश भमर सका तु ।क०। कागा कुल नाम होइ तु ॥
नीची नाभि हि नार नी तु ।भ०। नीची रमत न ल्यजोय तो ॥५५॥

वेल मालंबि विटपी सूं तो ।भ०। नारी नीट सूं न संम्य तो ॥
कुमाणि जाय पंथी पशू तो ।भ०। मध्य नर नारी कुमम्य तो ॥५६॥

अनेक लोक तीहा वसि तु ।भ०। धन कण रयण मंडीत तो ॥
अनेक कला कुशली काइ जो ।भ०। बोलता चतुर पंडीत तो ॥५७॥

वनवाडी सूं सरोवर तो ।भ०। कमल छाया भरया नीर तो ॥
पालिनी हालि कतूहली तो ।भ०। चतुर नारी गंभीर तु ॥५८॥

सही समाणी साहेलडी तु ।भ०। गोरडी करती नीर तु ॥
सिर घट घट एक वाय सु तो ।भ०। आवती भरवा नीर तु ॥५९॥

कनक कुंभ वायु वसि तो ।भ०। भौं भो मालय भासतो ॥
सही नारी संगें रसीया तो ।भ०। कोसनो हि विकृत नीवास तु ॥६०॥

नारी ठवण गमन तणी तु ।भ०। ऊभा जूह हंसराज तो ॥
मोतीयडा चरवा त्यजीय तु ।भ०। जाणे मत्य शीखवा काज तु ॥६१॥

पेखि पंखी साखा विरठा तु ।भ०। नारी नयण विनाण तो ॥
फल खाते ते वीसरया तु ।भ०। ते सोभा लेवा धरि ध्यान तो ॥६२॥

देखी नारी मुख चांदलो तु ।भ०। विकसि कमल मेलाम्य तो ॥
नारी नयण कमलें वीकया तो ।भ०। जाणे माणे कोमलाय तो ॥६३॥

नारी नयण चपल पणुं तो ।भ०। सांभी वनी मातंली जोय तो ॥
चंचल पणुं आपणुं छांडीयतु ।भ०। चावें नांवती जोय तो ॥६४॥

बीहीनी बोलि केटली वाला तो ।भ०। ऊससी वचन अपार तो ॥
सात वंचें कमल त्यजी तो ।भ०। भमरें वीटो तेणी वार तु॥६५॥

भमर वारंता कंकण खलके तो ।भ०। सारस सरस सुर्णत तो ॥
कोयल नारी वचन सुणीय तु ।भ०। मांजी वचन न भणंत तु ॥६६॥

भमर वारंता कंकण खलके तो ।भ०। सारस सरस सुणंत तो ॥
कोयल नारी शबद सुणीय तु ।भ०। लाजी वचन न भणंत तु ॥६७

चतुर नरनि नीहालती तु ।भ०। भरतां घट न भराय तु ॥
निज अवगुण नविलेखती तो ।भ०। घट पेर रोस कराय तो ॥६८॥

नारी भरी करी चालती तु ।भ०॥ चालती नयण विचित्र तु ॥
जाणे लक्ष्मी चालती तु । चालती चतुरनां चीत तु ॥६९॥

हसिते उत्तर वालती तु ।भ०। मालती कंचहु ओढ तो ।
ताली देकरि बालकी तो ।भ०। हींकनी बाहुडी रोलती तु ॥७०॥

सोना ऊंडण फूमती भालीतु ।भ०। पालती मचका मोडती तु ॥
भारन लेखती सही साहामीतु ।भ०। बडी वार बात करि कोडतु ॥७१॥

वीव्य वणी कमलें भरीयतु ।भ०। सामला रतन ना थंभ तु ॥
नीलरतन पगथारीया तु ।भ०। भरी छि निर्मल अंभ तो ॥७२॥

देखी नारी मुख चंद्रमां तो ।भ०। रोवि चकवी अपार तु ।
वियोग भय राति लेखती तो ।भ०। श्याम किरणि अंधकार तु ॥७३॥

कूपि कूपि यंत्र नाटां नवा तु ।भ०। नीर नि फेरावि नार तु ।
करि चीतकार फेरा माटि तु ।भ०। जाणें ते रोवै गमार तु ॥७४॥

कणु कुण नर फेरव्या नहीं तु ।भ०। नारी नयन विक्षपे तो ॥
कर धरया कोण नव्य फरै तु ।भ०। एछिवात संक्षेप तु ॥७५॥

जीहां कुया कृपण गुण तु ।भ०। कसे घच देई नीर तु ॥
दोरें बांधी काढीयितो ।भ० हठि करी तेह नीर तो ॥७६॥

लोक मांहि को तेहवा नहीं तो ।भ०। कृपण धन दीपि थाय तु ॥
पीडया स्नेह न को त्यजे तो ।भ०। तिल पील्या स्नेह थाय तु ॥७७॥

जिन चैत्यालां जिहां घणां तो ।भ०। उन्नत सीखर छि तास तु ॥
कनक कलस धज जहां लहि तो ।भ०। बिंब छि कोड रवि भास तु ॥७८॥

सीखर पासि सिंह देखी तु ।भ०। चंद्रनो हरण डरत तो ॥
तेह माटि चंद्र नमी करी तु ।भ०। दक्षण ऊपर फीरंत तो ॥७९

संत सज्जन श्रावक वसा तु ।भ०। नित भावि जिन ध्याय तु ॥
सदाचार नारी वसे नारी तु ।भ०। पूजी सफल करि काय तु ॥८०॥

पंचवरण मलके घणु तो ।भ०। नगरी मांहि धज कोड तु ॥
जाणे अपीनें तेडती तो ।भ०। नाखुं दारिद्र मोड तु ॥८१॥

दूहा

एणी विधि नगरी सोहामणी, उजेणी शुभ नाम ॥
कनक रयणें भंडार भरया, सम्पत तणो निवास ॥१॥

पापलि करतां पुरां थयां, जाणा नगर कही ताव ॥
फुलें चम्पोवति वहूटयो, कुशल तणो घणो भाव ॥२॥

भास रासनी

उज्जयिनी का राजा यशोध

ते नयरीनु राजीए । भावीयो ज्यासें नृपेन्द्र तो ॥
प्रबल प्रतापि मंडीयो ए । सेवी मनिक नरेंद्र तो ॥१॥

नाम यसोध तेह जाणीयिए । अमीय वंश विशाल तो ॥
हस्ती हय रथ छि घणा ए । लक्षि अनेक बहू भीत तो ॥२॥

सामंत सभी सीटीयोए । सुभट सेवंता कोड तु ॥
रण मोम्य जय लक्ष्मी वरयो ए । वैरीतणा मान मोड तो ॥३॥

सोमगुणि जाणें चन्द्रमाए । प्रताप गुणि जाणें सूर तो ॥
वैरी मद मछर त्यजिए । कोमलता रण सूर तो ॥४॥

सहस्त्राक्ष जानि गुणि सही ए । क्रूर गुणि यम रूप तो ॥
दान गुणि धनपती समोए । रूपगुणि रती भूप तो ॥५॥

जाणे दश लोकपाल तणा ए । विधाता रच्यो तेह अंगतो ॥
देश विदेश जस विस्तरयोए । सोहाण्यु [illegible] ॥६॥

लक्ष भट कोटिमटिए । परवरयो राव सोहंत तु ॥
ग्रह तारादि सोहीयो ए । जाणे चन्द्र महंत तो ॥७॥

रानी चन्द्रमती

तस कामिनी मनमानिनीए । नामनी कनक सुदेह तु ॥
पंकजवदिनी नामि चंद्रमती ए । रूपतणि छि रेह तु ॥८॥

बोलती कोमल [illegible] ए । [illegible] तो ॥
नेह सरीसी सीलवतीए । तिन सीस छि [illegible] तु ॥९॥

हरीचंदन विलेपन समीए । हरती राय संताप तु ॥
मणी सम हृदय धरिजवए । होइ कामकशी विषय व्याप तु ॥१०॥

अनेक शृंगार करि वणूं ए । वेलाडि मयन वीकारतु ॥
जाणे मोहण वेलडी ए । मोहती रायनि अपार तु ॥११॥

जिम नि धान ना कुंभने ए । भोगी मनूं किजगारतु ॥
तिम राणानि राजा भोगीयोए । मूकीन सकि वडी वार तु ॥१२॥

चन्द्रमती गुण था हालतीए । चालती नूं जाणे फूल तो ॥
बहुगुण जाण राणो सणोए । भमर समो मनूं कूल तो ॥१३॥

चन्द्रमती जाणे पदमनीए । राती नृप गुण वृंद तो ॥
कनक वरण मती कोमलोए । राय जाणे मकरंदतु ॥१४॥

चन्द्रमती आंबा मांजरीए । मत्त कोकिल समोराय तो ॥
रंग रमंतो रस भरयो ए । कुंजि मधुर सुठायतो ॥१५॥

चन्द्रमती जाणे सुभ मती ए । संपदालाभ सम नृपतो ॥
सुख संतोषि पूरीयोए । भोग्य सोभाग्यनु कूपतो ॥१६॥

चन्द्रमती जाणें सिधि समीए । भाव समो जाणे नर नाथ तु ॥
प्राण योगि प्रेम अती वणोए । राज्य भोग बि राणी साथ तो ॥१७॥

न्यांय प्रजानि पालतु । सुकवि विद्वांस विश्राम तो ॥
कामधेनु कल्पवृक्ष समोए । पूरतो वांछित काम तु ॥१८॥

नवरस नांटक नव नवाए । नित नित्य जोवि रसाल तु ॥
हस्ती कृष्णादि प्रति बलीए । मेघ महीप विकराल तु ॥१९॥

एणी पिरि राजा सुख भोगविए । करय ते पर उपकारतु ॥
मान मोडी वेरी तणाए । धन मणी भरया भंडारतु ॥२०॥

धर्म करि जिणवर तणोए । दांन पूजा अवतार तु ॥
सह गुरु वाणी सुणि भलीए । करि रूडो आचार तु ॥२१॥

पुत्र जन्म

ते देह कूखि हूं ऊपनो ए । कुंवर सुलक्षण वखाण तु ॥
बीज चन्द्रमम सोहीयो ए । दिन दिन वाध्यु सुजाण तु ॥२२॥

जनम समय दांन दीयुं ए । कनक रतन नीधांन तु ॥
पंखी पशु बहु छोडयाए । छोडया बहु बंदी वान तु ॥२३॥

यशोधर नाम रचना

नाम यसोधर तेह दीउए । बहु पिरि करी उछाह तो ॥
रतन जडीत भूषण भलाए । पहिराविं भरी उमाहतो ॥२३॥

क्षण हरखि बालइ हसिए । मांडि क्षण क्षण आलतो ॥
राय राणी नीज मन रलीए । वेलावि तेह बाल तु ॥२४॥

रतन तणु बहू आगणु ए । पूरय मोती चौक तु ॥
धसमसहीडु रीखती ए । चोक मांजी करू फोकतु ॥२५॥

वली वली रचे मोंडि वलीए । मोती साथीया भरयां रत्न तो ॥
अनेक सजन लीधि फरिए । करय ते अती घणु यत्न तु ॥२६॥

कुमार का बाल्य काल

कुंमर सहीत हीडु खेलतु ए । जाणे नागकुमार तु ॥
अमर घणे जाणे परवरयोए । इन्द्रनो जयंत उदारतो ॥२७॥

पंच बरसनो जेठो हुवो ए । कुंमर हूं यसोधरराजि तो ॥
महोछव करी पाठक घरिए । मुंक्यो भणवा काज तो ॥२८॥

अनेक प्रकारि शास्त्र भण्याए । शस्त्र तणो अधीकार तु ॥
धनुष विद्या आदिक करीए । सीषवीयो अपार तु ॥२९॥

विद्याध्ययन

व्याकरण छंद अलंकारए । तर्क छह दर्शन भेद तु ॥
सामुद्रिक संगीत सहीए । सालिहोत्र पत्र छेद तु ॥३०॥

न्याय नाटक नृपनीत घणी ए । वास्तु शास्त्र सूत्रधार तो ॥
जोतीक वैदक रुवडी ए । रत्न परीक्षा वीचार तु ॥३१॥

काम शास्त्र कोक कतूहल ए । आसन चोरासी प्रकार तु ॥
धनुर्विद्या शस्त्र चालवाए । धर्मशास्त्र सुखकार तु ॥३२॥

दंडनीती भयी लहुए । प्राज्ञकाकी चतुरतातो ।
वार्ता वीका विवेक बहू ए । बुद्ध पंच प्रपंचीट थतातो ॥३३॥

राजनीति निपुण थयोए । अनेक कला विलास तु
कुंमर तणा गुण देखीया ए । सहू जन हुयो उल्हास तु ॥३४॥

काला सीदली माला कुंतलाए । सोहिय दीहीं अपार तु ॥
वदन कमल सिर भमर लाए । जाणे करत प्रसाद तु ॥३५॥

अष्टमी ससी सभी सोहीयोए । भालस्थल झलकेय तो ।।
मल्लयुगल विधिये रच्योए । ससि दो खंड करेय तो ।।३६।।

नयन जाणे दोय माछलां ए । लावण्य जलिकरि खेलतु ।।
अथवा चपल गुणि करीए । भमरा तणों.ए बोल तु ।।३७।।

कर्ण दीसि कोडमणा ए । जाणे अनोपम राय तो ।।
नयणह सीम चापी रह्या ए । मोती भरवणनो ठाय तो ।।३८।।

सुक चचू सम नासिकाए । अथवा जाणे तील फूल तु ।।
भमरी मयण धनुष समीए ।। हर हाथनूं असूल तो ।।३९।।
कठ जाणे हरी हाथ नो ए । शख मडीत त्रय रेख तु ।।
हृदय वीशाल कुअर तण ् ए । लक्ष्मी वसवा वीसेष तु ।।४०।।

अमुलक मुक्ताफल तणो ए । उर वर हार लसत तो ।।
राजलक्ष्मी विवाहनें ए । वरमाला सम सोहंत तो ।।४१।।

लाबा भुज भुजग समाए । जाणे पराक्रम रूप तो ।।
भुज अद्‌मुत बल पीडीआ ए । बीहीना सेवे बहू भूप तो ।।४२।।

रतन जडीत कंकण धण ्ंए । कनक सांकला संजुततो ।।
उन्नत खंध खभा भण ्ं ए । भूषरा चरण अद्भूत तू ।।४३।।

कटिलंके जीत्यो सिंहलो ए । वली मृगराज अभीमान तो ।।
महाराज राज प्रताप जाणी ए । लाजीयो गीयो तेहरात तो ।।४४।।

जंघा कनक थंभा जसी ए । वाटली कोमली चंग तु ।।
कमल जीत्यां चरण तलेए । लाज्या जल करं संकतो ।।४५।।

रूप सोमथि हू आगलोए । लावण्य जल तणो कूप तु ।।
जसोध राजा मझ देखीयो ए । मनोहर मनोहर रूप तो ।।४६।।

दूहा

युवराज पद प्रदान करना

तब राजा मन रीझीयो, चीतवे चतुर सुजाण ।
अनेक मोहोछवि थापीयो, युवराज पद वखाण ।।१।।

वीवाह मोहोछवि कारणें, उद्यम करी अपार ।
मंत्री पाठव्यो आपणो, देश वराड मझार ।।२।।

एलापोर नगर भलु, अमरावती सम जाण ।।
राजा राज करि तीहां, सामल वाहन सुख खाण ।।३।।

दूहा

सालकी राणी तेहु तणी, रूप सोभा धनि रेहु ॥
ससी वयणी मृगलोचनी, अनेक कला गुण गेहु ॥४॥

ते बेहु कूखि ऊपनी, बहूतमती तेहु नाम ।
कुंयरी मतीही कोडामणी, रूप योवन गुणठाम ॥५॥

ते मंत्री रायनि मल्यो, राय दीधो बहुमान ।
कीधी वात वीवाहनी, आपी सेष नीधान ॥६॥

लेख वांची भाव आणीयो, आणीयो राय आनंद ॥
चंद्रिका सम ए कुंयरी, यशोधर कूंयर ते चन्द्र ॥७॥

इम बोली महोछव घणि । नीश्चय वचन ते कीध ॥
कुंकुम केसर छांटणां, श्रीफल फोफल दीध ॥८॥

वाने मंत्री पूजीयो, लगन लेई करो चंग ॥
मंत्री उजेंणी आवीयो, रा प्रति कह्यो सहु रंग ॥९॥

ढाल वीवाहलानी

युवराज का विवाह

रंगभरी वीवाह मनो । मत मणो माडयो उछाह ॥
धवल मंगल बहु गावता । पूर्व लीयां भरी उमाहु ॥१॥

मंडप थंभ रचना तणा । मणी मणा कीसि महंत ॥
फटकमणा वनी मोभला । पाट वीचीत्र दीसंत ॥२॥

पंच वरण रचना तणा । तण विस्तीर्ण वीसाल ॥
परवाली तणां गावीया । वालीयां मोती माल ॥३॥

तोरण नील रतन तणां । कनकनि मतीही अपार ॥
चमर ठाम ठाम बांधीया । सोहि ताहां फूलहार ॥४॥

चोक रतन तणा मनोहि । रचनि मोतीनी वाम ॥
कनक कलस बहु लसकि । बहुकि चमर ठाम ठाम ॥५॥

नील उत्पल रचना करी । तोरणा बांधीया सार ॥
बहुकोलि बहु आरती । सोहीत चंदनादिक गुणीसार ॥६॥

ठाम ठाम चंद्रोवा करी । अनेक हेडाउणा राम ।
पकवान विर पोढी दीधि । बंधोई बहुरानी घाम ॥७॥

अनेक प्रकार जमण तणी । सामग्री भरया भंडार ।।
कामनी मंगल गावती । कुंअर तणा गुण विस्तार ।।८।।

सजन सगा आवि घणा । रायाराण नही पार ।।
साहा मां मानदेई करी । आणे ए नगर मझार ।।९।।

वाजित्र वाजि बहु परी । ताल कंसाल रसाल ।
मादल दुमी दुमी वाजिए । डम डमि ढोल वीसाल ।।१०।।

सरणाई साद सोहामणा । भामीणी भंभा वाजत ।
झीमी झीमी झल्लरी मुंगल । नफेरी गगन गाजत ।।११।।

झण झण करि वेणा घणां । तण तण रबाब समाज ।
तत आनंद सुरिघर घन । वाद्य चतुर्विध वाज ।।१२।।

संगीत शास्त्र प्रमाण ए । गायण गायसो छाजि ।
तान मानदीक सुं मूर्छना । नटवा गर्व सूं गाजि ।।१३।।

आणे रंभा तीलोत्तमा । उत्तम अपछरा निहराचि ।।
पात्र नाना विध नाचे ए । हस्त कमाल आणाचि ।।१४।।

ताता थेई थेई बोलती । ठविण ठवि पद छंद ।।
नाटक साला नाचंता । तिहां उछे प्रति छंद ।।१५।।

भमरी देयंता मेखला । घूघरी नू घमकार ।।
नयन कटाक्ष नीहालती । चालती कुंडल झलकार ।।१६।।

फूले काहोयि पोळी परे । घरे घरे मगल सार ।।
राज मारगि शेरी चोहटां । सोहतां चीवामण उद्धार ।।१७।।

घिर घिर गुडी ऊछल । पंच वरण धज सोहि ।
पवनें पताका लहिकती । पुरी आणे नाचीती मोहि ।।१८

तलीया तीरण झगमगे । सोहिए रचा सुथम ।।
ठामे ठामे तान गान सूं । माचि नाना विध रंभा ।।१९।।

रतन जडीत गलि हांसलो । हांससुताजी अमूल ।।
मोती ताखि मरवीआरर्ण । पाखर अतीही अतूल ।।२०

कनक घडां रतने जडा चोकडी उंछिलगाम ।।
हेम पलाणछि खवडूं । खवडी सोभा सुठाम ।।२१।।

मोतीय झवका झूबसा । झूमतां हीरना दीसि ।।
पगे नेउर झमकार । हिंसारतो हय घणुं दीसि ।।२१।।

राय राखल महाबल बहू । बहु देवी दीधा कोल ॥
श्रीफल कोफल पूर । कपूर देवाय सू सू पांन ॥२२॥

केसर कपूर छांटणा । मनि वरणा चूआ चांपेल ॥
तिलक करी मोती चोटियां । अबीर नाखि करे गेल ॥२३॥

ढोल नीसाण घू घू किए । घू किए रीघू तुणी मान ॥
सणगार सू गजगामिनी । कामिनी करि गीत गान ॥२४॥

मोती थाले वधावी करी । कॅरि उहरयो तेणी वार ।
सजनिहू बोडि बहलवयो । मारोवलय मनवार ॥२५॥

कुंकुमे पूजी वधावीओ । हय गलि टोडर लालकि ॥
घूघर माल कनक तणी । चालतडा चरणं चलकि ॥२६॥

तबहूं वहू सणगारयो । मारयो सणगार भार ॥
रतन मुगट अति झलकि । ललकि कुंडल सार ॥२७॥

नल वट दीउ पिरवरू । सिरि मसाचि अमाओल ॥
आंजी आखडी पदम पांखडी । पव कही कीरणे उद्योत ॥२८॥

विभिन्न उत्सव

आंमला म न मुक्ताफल । लांकिउरवर हार ॥
रतन जडित बाजू बिहिरखा । करें बीटी वेढ अपार ॥२९॥

कटि तल के कटि मेखला । रतन पाउली सोहि पाय ॥
सहथी आरा असवांर । पालनु पार नही पाय ३० ॥३०॥

गज अवगाहु चमर ढले । रमणीया सिर बहु छत्र ॥
पंच वरण भज फर हरि, पटकुल तणी अ विचित्र ॥३१॥

वाजींम नाद संभ्रम करी, घिर घिर नारी उछाह ॥
वरजो वररचि आरती । लाव करि वाहोवाह ॥३२॥

एक ओढी मोतीहारनी । बोरडी बीटीने पायें ॥
चालंतां चांपो चडो । बू विजे मोती चंपाय ॥३३॥

एक आभूषण करी तीन । बलीय झलाकली पाव ॥
कानें कंकण करें कुंडल । पिहिरती बलीय संकाय ॥३४॥

एक बालका सलाकाकरी । आंबीऊं नवलसि एक ॥
जोवा आवते झलावली । विकस निओहि वीवेक ॥३५॥

एक चावंहू मूकी बालक । बालका जोवानि जाय ॥
पोहानि धानें वीणे वेणी । बोपक चीर कीस बीजाय ॥३६॥

एक यमती साथि छोकरां । कूल्यरपू ं बलगूआई माथि ॥
विहिलांजमो ओईयि गू ंभू ।घ। पंपू आलती बोलि वाण ॥३७॥

एक मेलती वाछरू ं । कूतरू ं बांधीऊं ठांम ॥
दोहीसू ं पछि कही चालती । वाछरू नू ं सरघू ं तव काम ॥३८॥

एक रावती रावणू ं । लूण घणू ं घाली धान माहि ॥
दाल वधारी अलूणी । सलूणी वेगि वर चाहि ॥३९॥

एक प्रीसती भरतारने । बारनि भिखारिनि भावि ॥
भारी नाखी वर जोवती । सही घरनि मने भावि ॥४०॥

मेडी जोवि सवे पदमनी । धसमसी साख भरत ॥
भमर भमि मुख परीमलि । कमलनी शोभा धरत ॥४१॥

मचकुंद मोगरो मालती । माहालती लाजा वधावि ॥
जय जय वाणी उच्चरें । जिहां वर मारगि आवि ॥४२॥

एणी पिर फूलि काहोयि । जूयिकोवि देवी देवी ।
जसोधर राजा सुत परणीइ । वरणना कोणि कहेवी ॥४४॥

दूहा

इत्यादिक उछव घणा, नित नित जमणवार ॥
मागण जननें देवता, वांछीत दान उदार ॥१॥

जान सजाई होइ घणू ं, हय गय रथ सुविसाल ॥
पाला पार न पामीइ, पालखी बहू गुणमाल ।,२॥

भास धूलनी

हाथी बहु सणगारयां । कनक सांकलि घण भारया ॥
घंटा तणी टणकार । घूघर मालाना घमकार ॥१॥

अंबाडी रूडी वीसि । रतन कवल सोहि जीसि ॥
सीदरें रच्या सीसे । मोती जाली मनहीसि ॥२॥

अंबाडी धज लहिके करी । कांन वद बिहिके करि ॥
तिहा भमरा भणकार । अंकुस सहीतकुंतार ॥३॥

अनेक कुंअर तीहां बिइठा । रूपें रंभणी मन पिइठा ॥
चमर सोहे गज काने । दतूसल सीस वाने ॥४॥

चंचल गिरि चाढ़ै चालता । भारि भरणी झालंता ॥
मलपता महीमल माहोलि । ऊंची धूज हूसलि ॥५॥

आजानीय घोड़ा जाति । बब्बर तुरुक्कीय भाति ।
बानायुज खिखिनीत । वायुवेगी खिंखीपीत ॥६॥

घोडा भलि कि कांबोज । पाणीपंथी कि पीरोज ॥
पचकल्याण पारसीक । वाह्लीक बलीया कच्छीक ॥७॥

गंगा जल गुण जाणुं । हासला घोर बखाणुं ॥
एह आदि आव्या घणा घोडा । सणगारया नहीं थोड़ा ॥८॥

रतन जडया हेम पलाण । पाखिलि पाखर बखांण ॥
हरीनां घणां फूमतडा । मोती प्रवाला ना झबकडा ॥९॥

मखी आरणि मोती ललकि । लगाम घोकडे मणीझलके ॥
झूरि वेणी श्रोणी भाण । रजि रूंध्यो रवि भाण ॥१०॥

रथ रूडा वस्ति भरया । घोरीयडा घोरि जोतरया ॥
केटला राजा बैठा रथ । जूता घोडा समरथ ॥११॥

अनेक राजा तीहा बिइठा । सुरवीर सुभट गरीठा ॥
पतीय तिहा हथी आर । छत्र चमर के नहीं पार ॥१२॥

पचवरण लिहिकि धज्ज । चिन्ह कि उलखवाने कज ॥
पाला घसि थइ गज्ज । अरी भणि भय करी भज्ज ॥१३॥

पंचवरण पिहिरया वस्त्र । धरया बहुवीध शस्त्र ॥
एणी पिर चतुर्वीध सैन्य । राय असोध सुधन्य ॥१४॥

हस्ती उपरि । बिइठु सार सांथि सहू परिवार ॥
एणी पिरि चालिए जांन । मधकीधू संपल बीवान ॥१५॥

हस्ती उपरि बिइठु बाण । नारीदत्त सुणो वाण ॥
छत्र चमर घणी सोभ । पगलि नाचिए रंभ ॥१६॥

ढम ढम ढोल झ झूकि वैरी नाकसहू चुकि ॥
भौं भौं भंगल नाद । वरणाइ सुभ साद ॥१७॥

दालसी कनकपि सोहि । वणीव सीमा मन मोहि ॥
कटक वसमसी चाल्यो । नहीं कंपी सेष हाल्यो ॥१८॥

गिरीवर धरणा द्रमद्रमया । ग्रह तारा भ्रमे समया ॥
नदीय सायर उलटया । बाघ सैंघ द्रूरव टया ॥१६॥

तब पाम्यो बराड देश । अनेक सोभानु नीवेस ॥
आवयो आणी नरेस । अमित पूजा करि बीसेस ॥२०॥

ऊनत तरु बाये ह्लालि । भांतनि आणी बाम बालि ॥
तरू वेल थी फलफूल । आणे बधावि अतुल ॥२१॥

रतन सिला छि ठाम ठाम । आणे आसनवि अभिराम ॥
सरोवर नीर नीझरण । अमोलरण दीयि वूयि चरण ॥२२॥

पिर पिर तरु भर फलया । आणे भेटणा आगल धरया ॥
द्राक्षा मंडप ठांम ठांम । आननि दीयि आणे विश्राम ॥२३॥

श्रीफल फोफल लवंग । कपूर एलची दिए चंग ।
चंदन तिलक तसु दाधि । इक्षु खंड रस राखि ॥२५॥

तरशा अक्षु रस पीवाय । भूखा अनेक फल खाय ॥
सेलडी पशूनि नीराये । दूध दही पार न थाये ॥२६॥

ढूकडां ढूकडा गाम । लोक सजन ना विश्राम ॥
नगर पाटण पुर झाझा । बनयणि वर्ण प्राजा ॥२७॥

मंजलि मजल चालंतां । चौविध सैन्य महंत ॥
एला नगरीयि आव्या । सहू सजन तणि मन भाव्या ॥२८॥

जान वधामणी यानि प्रसीध । पंचपसाय रायि दीध ॥
वन उद्योतें ऊतरया । सूत्र धारि धर करया ॥२९॥

मंडप मोटा विसाल । पटकुल तणा गुण माल ॥
जान सासैं यानि कानि । वाजित्र बहूपरि वाजि ॥३०॥

हय गय रथ सूं असंख्य । पाला चपल छिलख ॥
रुजथ सभ्रम साथ । साहामो आवि नरनाथ ॥३१॥

जन नि दीधला मान । श्रीफल फोफल पान ॥
छांटणां तीलक अबीर । कीधु विनय गंभीर ॥३२॥

नगर प्रवेस इम होवि । नर नारी बरजि जोवि ॥
कहिए आचंज रूप । जाणी किए नल भूप ॥३३॥

चंद्र नरेंद्र नागेंद्र । सूर मुक मुरके चन्द्र ॥
के अवतरयो ए काम । गुण लखण केरो ठाम ॥१४॥

जाणे व्यापयो अमोह । दीठि ऊपजि मोह ॥
जाणे प्रगट्यू सबी धर्म । एणी पिरि करि वर्णो मर्म ॥३५॥

नगरी पोलि प्रकार । सात खणां घर अपार ॥
चहूटा चौकिहू वाच्यु । नारी फूलि वधाव्यु ॥३६॥

मेडी मुलसू दीवार । चोवि बहुवीध नार ॥
नगरी सोभा महंत । वच तोरण झलकंत ॥३७॥

चंदन छाया बीमाम । जाणे नगरी हुवि सकाम ॥
गूडी लहिकि सहूरांचि । जाणे नगरी हरषि नाचि ॥३८॥

रतन तणी जगा जोत । निशी परिण वणो उद्योत ॥
राय कलहूरडि रूडो । जाणे नगरी नारी नो चूडो ॥३९॥

कारंजे नीर झरए । जाणे अमीपण वरए ॥
पांजरि पोपट पढिए । जाणे विनय मुक दृढए ॥४०॥

नगरी मांहि सुभ ठांम । थान उत्यारा विश्राम ॥
धवल हरे सहू उतरयो । मानवी मंगल करयो ॥४१॥

दूहा

स्नान विलेपन मुक हवां । हवो बहुरीता चार ॥
लगन दिन मानें वरी । नमरिण न वाडि नार ॥चा॥१॥

रतन जडीत आसन धरयूं । मारणक मोती चोक ॥
कनक कलश वर्णूं वलि भरया । पल्लव आंबा असोक ॥२॥

नारी नवरंग चीर सूं । वाजरी आलोचार ॥
सवे सोहि सरणगार सूं । वाजि वधावा भाट ॥३॥

वास फागुणी

रागवेराग

नारी नामें चारंमवे । वाजि नव नेह ।
मुरावे मुख मोरडी । चीतावे नेह ॥१॥

हीरा वेढे विहुंसि । हरखि हुलरावे ॥
सणगार सूं सींगार दे । गर्भकि परचावे ॥२॥

गोमादे गोरी गुणि । गंगांदे गरवीसरी ।
प्रादेसही सोभती । सीलें नही वर वी ॥३॥

भावल दे मानि भली । भोमादे भोली ।
चतुर चालि चगा दे । चम पंचरंग चीर चोली ॥४॥

मोहणदे मारिणक मोहती । मल्लाणदे मोटी ।
लक्षमादे लक्ष्मी समी । लक्षरिण नही खोटी ॥५॥

कमलादे कोमल वदी, कोडादे नही कूरी ।
रतनादे रलिग्रा मणी । ग्रछबा देजि छि छोटी ॥६॥

ग्राजादे ग्रावि ग्रलज्जइ । रस भरी रगादे ॥
वहलादे विहि वारणी । वाहाली कथवजादे ॥७॥

रुपादे रुपि रस भरी । रमादे रूडी ।
रंभादे रभा समी । करि सोभती चूडी ॥८॥

रगादे रग राषती । राजलदे राणी ॥
ग्रमरादे ग्रमरी जसी । धनादेवि वषाणी ॥९॥

वनादे वन देवता । वीरादे वारु ।
ग्रर्घादि ग्रर्वकारी । रघादे रती सारु ॥१०॥

हासलदे हंस गामिनी । हसा दे हसी ।
सोभाग दे सौभागणी । प्रेमादें प्रसंसी ॥११॥

तेजलदे तेजि तपि । जसमादे जाणि ।
एणी पिरिनारी वहू भली । रुपगुण तणी खणी ॥१२॥

तिलककरी एक कामिनी । एक मोती चुहुटि जिएक ॥
सीख देती सोहामणीं । मीठूं बोलतीं मोडि ॥१३॥

एक मोतीडे वधावती । एक नयन सुग्रंजि ॥
एक ग्राभरण पिहिरावती । एक हंसती रंजि ॥१४॥

एक ऊंडी पीडी करि । एक टीका कतारि ॥
एकज लूण उतारती । एक मंगल उचारि ॥१५॥

एम भली सोभागिणी । मगल गाए वा ।
सहूरीत होमि राय सुणो । चालु परणिवा ॥१६॥

वाजित्र वाजिवे हू परी । घणी नाचि पात्र ।
ग्रश्व बिइठोहूग्रपतो । ढली चामर छत्र ।

अनेक जनी करी परवरयो । आव्यु तोरण बार ।
सालो सन्मुख रही वलि । भरणा श्लोक विस्तार ॥ १८ ॥

प्रत्य उत्तर श्लोका भरणा । भरणाबि उलंभ ।
सुणावि नयर नर नारीनि । आव्यु बहुरंग ॥ १९ ॥

वस्तु

जस वस्तरयो भव तणु । सार हार सुधार ॥
नयर मझार जस विस्तरयो उच्छव
बंदी जीरद्य बोलि भला । गायरण गावि गीत मंगल ॥
दान देइ तव मन रली । राय असोभ अपार ॥
तोरण रीतह विकहू ।नारीजन अविचार ॥१॥

भास साहेलिनी

सालो मांडप थी आटलोए । सहेलिरे श्रीकृष्णो देइ दान ॥
मान तोरण आयलि कनकनुए । साहेलीरे सिंघासन सुं निधान ॥१॥
लीला सुं आलबली नटकनुए । सा० । कनो रह्मो तेणीवार ।
पुंहुकवालणी सजाई लेइए । सा० । आवी पदमनी नार ॥२॥
मसाएण बधावतीए । सा० । पुंहुकती चतुर सुजाण ।
धूसर मूसल आदि करीए । सा० । सरीउत्राक बषाण ॥३॥
गेवा सूत्र सांपक उतारतीए । सा० । लहिका सुं बांधि हाथ ॥
घाट घाली नाकताणतीए । सा० । हसयो तब सहू साथ ॥४॥
माहिरु घडा रतन तणु ए । सा० । सिंघासन पर कीध ।
हुं वेसारयो मामसिए । सा० । आडु अंतर पट कीध ॥५॥
कन्या आणी कोडामणीए । सा० । ताहांथी विसारी रसाल ॥
मोती रतन फूल तणीए । सा० । कीठि घाली वरमाल ॥६॥
पंडित मंगलाष्टक भरिएए । सा० । चोखी करि सावधान ॥
घर्म मझार पासा दाखविए । सा० । भाखिए दिन निसीमान ॥७॥
शुभ महूरत लग्न सहीए । सा० । वेगि वजावी थाल ।
जय जयकार तब हुवोए । सा० । भणीय पडुलडे पाठ ॥८॥
कन्यावर हथेवाल जोए । तब मलवो मुवराव ।
अंतपट दूरि कियाए । सा० । तबहूणी तंबोल छांट ॥९॥

वेहूजण नयण मेलावडोए । सा० । हूवो तब यती सुविचारण ।।
माह्यो माही वेहू जण हरखीयाए । सा० । निधान पाम्यो एम जाणि।।१०।।
ढोल नीसाण प्रसूकीयाए । सा० । नफेरी भूंगल कोड ।।
भाट भटाई बहु भणिए । सा० । गायण गायण कोड ।।११।।
कामिनी गीत गावि घणू ए । सा० । बहुगुण यश विस्तार ।।
नयण विकार विस्तारतीए । सा० । हरषती अतिहि अपार ।।१२।।
कुंअर इन्द्र समो जाणिइए । सा० । कुंआरी इंद्राणी बखाण ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । अति घडी बींता सुजाण ।।१३।।
कुंअर जाणे चंद्रसमोए । सा० । कुअरी ते रोहणि जोय ।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । रखेरे यशोहि कोय ।।१४।।
कुंअर जाणे सूरज समोए । सा० । कुअरी प्रभावती सार ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । बन बन ए अवतार ।।१५।।
कुंअर जाणे काम समोए । सा० । रतीदेवी कुअरी विख्यात ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । भली रची एस विधात ।।१६।।
कुंवर जाणे ईश्वर समोए । सा० । कुंअरी गौरी समान ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । अनोपम अवनी निधान ।।१७।।
कुंअर जाणे नरहरि समोए । सा० । कुंअरी लक्ष्मीवान ।।
अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । बन बन ए अभिधान ।।१८।।
कुंअर जाणे बलभद्र समोए । सा० । कुअरी रेवती एह ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । रूप सोभागिनी रेह ।।१९।।
कुंअर जाणेए नल समोए । सा० । कुअरी दमंती रूप ।।
अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । रूप सोभागनो कूप ।।२०।।
माणिक उपि अध्ली घणूं ए । सा० । हेम मूंदीपिरहोय ।।
अमृता जसोधरा जोडलीए । सा० । संयोग सोभति जोय ।।२१।।
यम मोती अमूलकए । सा० । गुणकरी अतिहीं सोहंत ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । संजोग मन मोहंत ।।२२।।
यम राजा बल रूपवूंए । सा० । राजनीति बुधिशाल ।।
अमृता जसोधर जोडलीए । सा० । तिम संजोगि विशाल ।।२३।।
कंकणविरी छीत्या तह्म करिए । सा० । कठण लक्षण सुविचार ।।
कुंअरी कर कोमल घणोए । सा० । वेरे आंकडा अपार ।।२४।।

तहाँ कल्पतरु वृक्ष सनीए । सा० । कुंवरी वेल प्रतिसार ॥
तव वैसना कुसुम मन धरिए । सा० । मधुकर पीठो मल्हार ॥२५॥

अमृता के साथ विवाह

एरणी थिर मंगल गावताए । सा० । चोरी रतनमि थंभ ॥
नीला थंभ हीर दोरडीए । सा० । रचित कनकमि कुंभ ॥२६॥

चोरी सारि ब्राह्मण मनाए । सा० । अग्न थापी घृत होम ॥
मंगल काज कर्या सोहिए । सा० । वहू वर रोहणि सोम ॥२७॥

सालु सूप ताहीं रह्यो ए । सा० । लाजा मूंकि मूठवार ॥
वर वधू कर संपुट करिए । सा० । होमे अग्नि मझार ॥२८॥

पहिलूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्यादान देवाय ॥
मलपता माता हाथी भर्या ए । सा० । दीइसा मलवाहन राय ॥२९॥

बीजूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्या दान देवाय ॥
हींसता हय वर हींसला ए । सा० । दीइ सामल वाहन राय ॥३०॥

त्रीजूं मांगल वरतीइए । सा० । कन्या दान देवाय ॥
रथ समरथ धरथि भरयाए । सा० । दीइ सामल वाहन राय ॥३१॥

चूथूं मांगल वरतीदूए । सा० । कन्यादान देवाय ॥
गाम पोर पाटण भलाए । सा० । दीइ सामल वाहन राय ॥३२॥

मांगल फरता बहु सोहिए । सा० । कुंमरी झि दक्षण हाथ ॥
मेरु प्रदक्षण देम तोए । सा० । जाणे सूरज प्रभा साथ ॥३३॥

सालो अंगुठू चांपतुए । सा० । सोहि मती अपार ॥
जाणे मच्छ रूपे की क्रियोए । सा० । काम पाप लागि विचार ॥३४॥

सप्तपदी साते थिर करयो ए । सा० । कुंवर अंगुठा ताए ॥
गुरु आशिर उलंघयाए । सा० । सशीकर कुमुदनी जाण ॥३५॥

कन्यादान होम थयएं ए । सा० । सजन सहू परीवार ॥
भोजन वाहूली पार नहीं ए । सा० । देव वाजन अपार ॥३६॥

सासू श्रीती सोहागणी ए । सा० । सोवा थाल कंसार ॥
कुंमरीय वाकती मनविं ए ।सा०।। को लीयल मोटेरा वार व्यार ॥३७॥

वाहिरूवां पीथि मंरी थएूं ए ।सा०।। हाथ वांधी वाहि कांन ॥
हाथ वाही चोरियमता ए ।सा०।। हूकमा सवे सुजाण ॥३८॥

चन्द्रसाथि यम रोहणीए ।सा०।। सूर यम्पारानिस साथ ।।
अमृतमती सु ं तेम जमी ए ।सा०।। तहाँ जसोधर नरनाथ ।।३६।।

विसल्या साथि यम्या लक्मण ए ।सा०।। राम जिम सीता साथ ।।
अमृतमती सू तम यमो ए । सा०।। तम्हे जसोधर नर नाथ ।।४०।।

सुलोचना सु ं जयकुंमार ए ।सा०। भरत स्त्री रत्न जु हाथ ।।
अमृतमती सूं तम यमो ए ।सा०। तम्हे जसोधर नर नाथ ।।४१।।

अंजनी सूं पवनजमो ए ।सा०। सुग्रीव तारा साथ ।।
अमृतमयी सूं तम पयो ए ।सा०। तम्हे जसोधर नर नाथ ।।४२।।

सावित्री सूं ब्रह्मा यमा ए ।सा० श्री हरी लक्मीय साथ ।।
अमृतमयी सूं तम जमोए ।सा०। तहाँ जसोधर नरनाथ ।।४३।।

एह आदि मंगल मननीए ।सा०। गावती गीत रसाल ।।
मिजमाडी कुमरी ए ।सा०। वार च्यार गुणमाल ।।४४।।

च्यार सोहासणी वधावयोए ।सा०। मोती माणिक तेणीवार ।।
गौरी सावित्रीयि अहिवा तनए ।सा०। कहि बली जय जयकार ।।४५।।

दूहा

एणी पिरि वेहेवा महोछव हावाए । हवु हरष बहुरग ।।
रायकरि उलट भरी । पियहिरामणी उत्तम अंग ।।१।।

सोना पाट सोहामणो, मोती चुक पुराय ।।
अनेक सगा सज्जन बहु, विनय सहित ते ठाय ।।२।।

भास रागवेलावल

राजा रत्न बेठडा मेडीयिए । तिहा लखन लेबानी जोसीं तेडीयिए ।।

भास महाधवलनो

पाट पाथरया पटोलडेए । तिहां राय बोलि बोल मीठडे ए ।।
माणे कणय कभाय घणीए । पीछोडी पामडी कनक तणीए ।।१।।

सेला सालू झूना झीणलाए । बहू मैरव परकाला भलाए ।।२।।

पीला पीताम्बर ऊपताए । रूप तारा कणा ससी झीपताए ।।
देवांग वस्त्र झीणां घणांए । फलवंस शोपी नव गुण्या ए ।।३।।

पंचवरण मसरू बहुए । कसबी अंग तिहां पिरि पिरि बहु ए ॥
मखमुल मुकबल धूप सकलातए । एह आदि देवडू देसनी जात ए ॥४॥
नवरंग चीर पटोलडां ए । सांकी लाल्लाट पट चोलडाए ॥
फूंदा फोलां झापरा मलांए । कमखा आदि लावटू बोहो जलांए ॥५॥
कडक कुंडल मला विहिरखाए । हार चाठीया रतन माणक सरखाए ॥
एह आदि पिरभूषण बहुए । पिहिरामणी पिर विसारया सहुए ॥६॥

बरात की पहरावणी

रायराणा मंत्रि घणाए । वर तात काका मामा भय्या ए ॥
भाई भतीजा पीत्राइये वा ए । मोहोसाल मासा मसी भाई भाए ॥७॥

वर माय मोसी काकी भलीए । वर विहिन भाभी भावे भलीए ॥
एह आदि कुटुंब मिल्यो बहुए । पिहिरामणी काज बिइठा सहुए ॥८॥

राय दूधें पाय पखालतु ए । राणी साथि वीनय जाणें चालतु ए ॥
कुंकुम तिलक काढी करीए । वली पाय पीलित्ते बहु परीए ॥९॥

एम सहु सजन पिहिरावया ए । वरबहुनि आभूषण दीयां ए ॥
बहु रीति मांडव वधावयो ए । वणू पाय लागी नि मनावयो ए ॥१०॥

कुंमरी कुंकुं टीलां काढीयाए । भि माणक मोती चोडीयां ए ॥
वाजित्र वाजि तब घणां ए । हुइ मंगल मान माननी तीणां ए ॥११॥
जान चाली ऊतावली ए । राय प्राप्यु वलावा मन रली ए ॥
दासी दास साथि दीयां घणाए । सा विनय कीधा बहु तेह तणा ए ।१२।

मागण सहु संतोखया ए । घरि घरि पात्र शुभ पोखीयां ए ॥
मंगल कलश थाल चलती ए । वली ढोल नीसाण बजावती ए ॥१३॥
सघा संघ साथि संतोषा सवे ए । राय असोथ जैन कुल परणीइए ॥
समकित दृढ देवेन्द्र विनय कीछ ए, गुरुनाथ प्रसाचंद्रवन रलीइ ॥१४॥

मार्गेण पासी छांटवा ए । घरमांहि धामा देह संपदता ए ॥
चोक कवे पाये पडयां ए । माज बापनि वस्या बोहू जवयां ए ॥१५॥
जिनवर पूजवी वधावणुं ए । कीधा पूजा अभिषेक घणा घणा ए ॥
संघ पूज संघ वात्सल्य कर्यो ए । तिहां राय असोथ जस विस्तरयो ।ए।१६
सजनें सहु सनमान कीधो ए । वहु दान मान तेहनें दीधो ए ॥
विनय करी संतोषीया ए । राय राणा सोहला निज घिर गया ए ॥१७॥

गुरबीहु प्रभाचंद मनि रलो ए । वादी चंदनें सेवि जयदेव बली ए ॥
राय जसोधर कोडामणो ए । राजभार धरयो सोहामणो ए ॥
सामंत अनीयें परवरयो ए । सपतांग राज अलंकरयो ए ॥१८॥

काल घणो राज भोगविए । रणि वैरीयनां दल जोगवि ए ॥
प्रगट प्रतापि पूरयो ए । बहुदानें दुखीयां दुःख चूरयो ए ॥१९॥

राज्याभिषेक करना

एक दीवसिहूं देखीयो ए । रायप्रबल प्रतापि लेखीयो ए ।
राज्य देवा उद्यम करिए । बहू जोसी तेडी मुहूर्त धरिए ॥२०॥

राय राणा तेडा बयाए । बहू भेट लेइ ते आवयाए ॥
जलदेवता पूजी करीए । घणा कनक कलस आण्या जल भरीए ॥२१॥

कनक सिंघासन आपीए । वणि उछवि हू तिहारो पीयोए ॥
मोतीय चोक पूरावयोए । नारी तिलक करी वधावीयो ए ॥२२॥

वाजित्र वाजता बहू पिरिए । राय कलस हाथि लेइ करीए ॥
सुभ लगनि सीर ढालीया ए । तव जय जय कार सहूयें कीया ए ॥२३॥

पट्टबंध सीर बांधीयो ए । तब राय राणें आराधीयो ए ॥
मुगट माथि काने कुंडल ए । तेजि जीत्या रवी ससी मंडल ए ॥२४॥

कनकमाला मोती सोहिए । आमला प्रमाणि मन मोहिए ॥
हाथ साकला राज मुद्रका ए । सोहासणि कीधी आरातिका ए ॥२५॥

राय जसोध उभो रह्यो ए । गुरू आगलि कनक दंड ग्रह्यो ए ॥
राय राणा आचंभीयाए । तव ऊभा रह्या जाणे थंभीया ए ॥२६॥

विनय करीय सोर्चे वदिए । लाज्यो हूं पीता देखी नीचे पडिए ॥
राय गुरू वचन श्रीकारीयिए । राय राणा जूहार अवधारीयिए ॥२७॥

राज्याभिषेक में विभिन्न देशों के राजाओं का आगमन

अंग नमी मूंके भेटणूं ए । वंगरायनि मांन दीधो घणूं ए ॥
राय कुंतल केरल तणाए । एह नि दृष्टि प्रसाद कीजि घणाए ॥२८॥

कोसल मगध देस राय नमें ए । एहनि अति नमीजि जो मन गमे ए ॥
गौड कणाड द्रवड धणी ए । एहनें वचन कृपा कीजे घणी ए ॥२९॥

कलिंगराय निमें पीत दीधीयिए । नीकमरायनु जुहार ले कीजीयए ।
नमन नयन वचन रसिएं । केता हस्ति भूमंगि पोषि हसिए ॥३०॥

मानीया राय मन पूजीयाए । राय राणी मिल हेमाकि गया ए ।
एणी पिरि राज हुं पामीयोए । राजा जसोध तणो भार वामीयोए ।२१।

दूहा

राज जसोध ते नीर्मलो, राय पालि गुणमाल ।।
सल्य रहीत ते जिन तणीं, धर्म करे सुवीसाल ।।१।।

षट् कर्म्मह श्रावकतणां, पालिते मन शुद्ध ।
समकित पालि निरमलु, भव्य तणी ए बुध्य ।।२।।

जसोध राय एके समि, बिठो सभा रसाल ।
श्ररी सिमुख जोयंता, दीठो पल्यो मोभाल ।।३।।

तव्य राजा मन चीतवि, तनुभव भोग विरक्त ।।
काल तणी स्थिति छि असी, करय विचार सुभुत ।।४।।

नमः

आचार्याः परमेष्ठिन सुतपसो नित्याद्भुतावश्यकाः ।
पंचाचारविचारचारुचतुराः सद्धृतसौरव्यप्रदाः ।।

सद्धर्मामृतवर्षहर्षकरणा भव्यकायविलासयुताः
श्रीदेवेंद्रसुविक्रमस्तुतपदाः कुर्वंतु वो मंगलः ।।१।।

इतिश्रीयशोधर महाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिछंदेः ।।

भूदेवकवि विक्रम सुत देवेन्द्र विरचिते । यशोधराय वर्णन
यशोधर विवाह पूर्वक राज्याभिषेक वर्णनो नाम तृतीयोधिकारः ।।३।।

चतुर्थ अधिकार

ढाल माहबाहूनी

वृद्धावस्था का प्रभाव

राय भणिए पली छिहूवी ।
जाणो यम तणीए दूती ।
झोळी थामीए लेड्याए ।।१।।

अमचा योवन वन आणुं रह्यो,
काल महानल बैठि वह्यो।
रह्यो मनमनो इम चित्तो ए ।।२।।

जाणे अथवा जरा ए राखसी,
तनू ससमान मांहां आवी वसी,
हसीत दांत सभी लेखीभए ॥३॥

देह तलावरोमावली झाड,
काल पीसाचि जाणे नाखूहाड,
वाडव कांमनें वारवाए ॥४॥

सरीर दीसि जाणे मोटो वडए,
अनेक रोग पंखी आछिजड ।
वडवाई समा दीसोयि ए ॥५॥

सरीर जाणे सायर सरीखो,
रोग मगर दु:ख लेहेरी परीखो ।
सख सीपोनी फीण भलूं ए ॥६॥

जाणे देह ए मोटी वाडी,
पसी हाड तीहां भूकूं ऊभाडी ।
वीहाडया भोग सीम्पालने ए ॥७॥

जाणे जरा अथवा ए वेल,
सरीर वृक्ष पामी करे गेल ।
कील ततु सम एह भणो ए ॥८॥

रूप लावण्य ए धान्य प्रसीधो,
विखय इंद्रि जाणे लूहसी लीनो ।
कीधो ठगए परालनो ए ॥९॥

अथवा जरा रूपिणी ए नारी,
परस्त्री रत पर कोपी भारी ।
केशधरी दात पाडती ए ॥१०॥

काला केसते अंधार घोर,
कुचटि पाडि वीसया जोर ।
भूर जरा उद्योत भला ए ॥११॥

बूहूं गरढु भणां होय रसाल,
वांखड़ु दीसि विकराल,
चांडाल समान परिस्त्री त्यजिए ॥१२॥

नवयौवन देखि दूध आकर करी,
दूधनि त्यजि मूधल अवगहु परी।
परी कामनी एहवी कही ए ॥१३॥

दूकती कारनें दीवी परसी,
स्नेह दीवे करि जाते हरखी।
घर पर पुरुषनि अवगरिए ॥१४॥

घोलानी माला केसराली कूड,
अनवलि भमि केसरी समो मूढ,
किम धीरे नारी हरणलीए ॥१५॥

अथवा अबली अवलि ए मूढ
भमि कूच जाणिए मूढ।
धरवा दीहि नारी हंसलीए ॥१६॥

अबली नदी दूध मगरली वाल,
वांकी डाढ सीर उज्जवल जाल।
पासि न आवि नारी माछली ए ॥१७॥

हाथें लाकडी वलकी दूध वांकी,
गीची नयर अवलो वल्लु वाकी।
यौवन रतन नीहालतो ए ॥१८॥

दूजि हाथ धरा थे लाठी,
अचेतन थी पणहीडि ना हाठी।
त्राठिन स्त्री केम चेतन ए ॥१९॥

दूध देह कर वली वली रही,
लावण्य रस वरनाति वहुवो।
वहुवो जासे जरा डाकिनी ए ॥२०॥

नयन झरि मुख लाला वहए,
लोभ विलय वाघो बल भग ए।
करम तृष्णा काल नाहि कवो ए ॥२१॥

दूध हाथ वली सीस धूणावि,
जाणि केम देखि करानावि।
हुंनिकणा एकसी हवे कहिए ॥२२॥

राजा यशोध द्वारा चिन्तन

मिवली घणो रचयो आरंभ,
विचारी जूइ होंथि आचभ ।
कुंभ भरच् पापि आपणो ए ॥२३॥

कुटब काजि राज विस्तार कीध,
तनु गोर्ले चीटी मंकोडा दीघ ।
लीध कुगत दुःख में घणो ए ॥२४॥

मेघ पटल सम ए परिवार,
विघंटता नवि लागे बार ।
गवार फोकि जीव मोह करिए ॥२५॥

भव वनि कालि सँह भीकराल,
मुख पडया जाणों जीव मृग बाल,
सबल सरण ते कुण राखेए ॥२६॥

समुद्र मध्ये वाहांणथी ऊडयो सूडो,
सरणि तेहनि जिम को नहीं रूडो ।
जीवडो कष्ट पडयो धर्म राखिए ॥२७॥

द्रव्य क्षेत्र भव्य भावनि काल,
पंचप्रकार संसार विशाल ।
काल अनंतो जीव दुःख सहिए ॥२८॥

मोहु गत माहि जीव एकलु भमिए,
सुख दुःख काल एकलोनी गमिए ।
समय एक साथे को नहीए ॥२९॥

करम कलंक काया थको भिन्न,
ज्ञान स्वरूपी आत्मा छि अंश ।
अनोपम तेजनो पूंजलोए ॥३०॥

असुची रुधीर मांस नें देह,
हाड भरयूं कर्म चांडाल गेह ।
नेह देह सूं ग्यानी किम करिए ॥३१॥

दुर्गन्धा देहू देहू सब जाणो,
मह भारयो कमाड़यो बंधाणयो ।
भावना आपणों पण ए किम मोहिए ॥३२॥

सोभणी कुबी किणारी बोरची,
मलमूत्रादिक असुचीनी कुरकी ।
गडीयो पाखि कृष्ण अवतरिए ॥३३॥

पंच प्रकार आश्रव सतावन,
मलि पावन नें करि अपावन ।
बन्ध ते जे एथी बेभुल ए ॥३४॥

आश्रवरोधन करय महंत,
गुपति सीमय जय व्रति गुणवंत ।
संतते संवर आदरिए ॥३५॥

तप करी कर्म करें जे जर्जर,
उभय प्रकारि करय जे नीर्जर ।
निर्जर थई मोक्ष ते लहिए ॥३६॥

घन रज्जू अभ्यासि त्रिताल,
पुरुषाकारि लोक विशाल ।
अनादि अनंत द्रव्यं भरय् ए ॥३७॥

पार्जै संज मनुष उत्तम कुल,
दुर्लभ समकित जिन धर्म नीर्मल ।
निश्चल पालि ते धन धन एह ॥३८॥

त्रिकरण शुध करि दस धर्म,
सात तत्वनु जाणि मर्म ।
कर्महणी सिव ते लहिए ॥३९॥

एणी पिरि चिंतवतां अनुप्रेक्षा,
जसोधराय मन देखि दीक्षा ।
दीक्षा लेवा उद्यम करिए ॥४०॥

राय सहू बुलमतर्वं कीध,
साथि एक सत नृप लि प्रसीध ।
लीध दीक्षा बाम पुन्य करीए ॥४१॥

यशोधर राजा एवं अमृता का जीवन

प्रजालोक हर्षित सहू, करिते मुझ गुणगान ।।
मारीदत्त मंत्रीयारीयि, जाणी पाम्यों नीदान ।।२।।

सांमंत क्षत्री राय घणा, मंत्री आदि परीवार ।।
मझ तणी आगन्या सिर वहि, प्रबल प्रताप विस्तार ।।३।।

अनेक रायमि वश करया, रण अंगण करी झूझ ।।
उपचीता रीपू बीटीया, कोन लहि मुझ बुझ ।।४।।

सुष्ट ते आण मनावया, दुष्ट ते कीधु नाश ।।
मुझ नीसाण सुणतडा, रिपु वनमि पडि त्रास ।।५।।

अनेक राजा तणी कुंअरी, परण्यु हूं उतंग ।।
रूप सोभागि आगलो, तेह सूरमूं मनरग ।।६।।

अमृतमती सूं अतिघणु, निसदिन रास विलास ।।
सुख भोगवू हू मनरली, करतां कुतुहल हास ।।७।।

अमृतमती कूंखे हवो, कुअर जसोमती नाम ।।
दिन दिन ते मोटो हवो, रूप विलास गुण ठाम ।।८।।

इम करता दीन बहु गया, आव्यु मास वसंत ।।
अष्टाह्निका व्रत आचरि, भवि जण लोक महंत ।।९।।

मास वसंतनो फागुणनो, राग अंदोला गुडी

लोक सवे उलसत, वसत सू आव्यु मास ।।
घिर घिर नारी कोव मणी, भामिनी गावि रास ।।१।।

मत्रीयि मझ मन जाणीऊं, आणीयो मन विवेक ।।
वसत कीडानि काज, साजि कटक अनेक ।।२।।

हाथीयि घाली अंबाडी, देवाडीय मंगल तुर ।।
निसाण नादे ऊमटयो, ऊलटयो सागर पूर ।।३।।

अनेक सुजात वखाणी, पलाणीया चपल तोरंग ।।
कीध धजा घणू सतरा, संचरघा रथ उतंग ।।४।।

पालाखो सट बसमसि, धमधसि करि न लगार ।।
पालखी अनेक सुखासन, रासनि काज अपार ।।५।।

दूहा

अंतःपुर सब आवीए, पावीए मन आनंद ॥
विसी सुखासन पालखी, चालीयां सखि वृंद ॥६॥

कंचूकीया अनुगामी, आगिं कनक दंड धार ॥
धाडी धवलहर माहि ऊभाहि रमिकुविचार ॥७॥

राय चाल्यो तब खेलवा । खेलवान हि साथ ॥
हाथी घंटा चालि गजपती । गजपती झूम नर नाथ ॥८॥

अनेक राय घणू मंडीयो । संडीयु रीपु बलवान ॥
उडी रज बरणया मही । रहीयो ऊंपाई भान ॥९॥

बसन्तोत्सव मनाने राजा का बाहर आना

राय चाल्यो तब जाणीयो । जाणीयो लोकि आणंदो ॥
क्रीडा कर वा उछक हुवा । कि हिवा लागा नारी वृंद ॥१०॥

तह्मे आवु मह्म सांथि । ए नामि दीधी सीख ॥
आगि नारी बली प्रेरीय । पिहरीय चीर सरीख ॥११॥

पिहिरा मोती भरी कांचली । कंचली सांजें संवेस ॥
बैठी करवा आभूषण । भूषणस बहु वेस ॥१२॥

बीछीया पायडी घूघरा । नेउरनू झमकार ॥
हंस गामिनी चाली अंगल मेखला नु चमकार ॥१३॥

मोतीयुनु हार भलकि । डलिकि टोडर कंठे चंग ॥
एक दाणीउ वली पद कडी । जडीय हि रतने सुरंग ॥१४॥

बांहोडीयि सोहि बिहिरखी । बिहिरखी चंपाकली हार ॥
करयली कंकण चूडीयं । रचीय मुद्री सार ॥१५॥

नाके अमूलक मोती । पनोती कानें सोही झाल ॥
ललवट टीलू जडाव । सोहावि ए चीवलवो भालि ॥१६॥

लियो फूली वेण फूल । अमूलक राखडी वेण ॥
गोफण फूलनकावि । कोचलीं काजली नेण ॥१७॥

खेलवा चाल्या ऊमसि । घसमसि सहू नर नारि ॥
हार गलिथु तूटिए । छूटे आभूषण भार ॥१८॥

वगथीय सगर वगरी ठीय । हेठी थैं नव्य सेय ॥
कही भमरी कहीं सांकलां । मेखलां छूटी पडिय ॥१६॥

बहूटा सेरी भूषणि भरी । पहिरी जाणे भूम नारि ॥
नीज स्वामी नें नरखेए । हरखी करि सणगार ॥२०॥

राए ऊद्यान जब दीठो । मीठु होइ पंखी नाद ॥
जाणी राय देखी आवतो । आवतु वन करि साद ॥२१॥

केसूअडा फूल्या रातडा । रातडा अशोक अपार ॥
आबां माजरे मोरीया । मोरीया कुंद मदार ॥२२॥

पीला फूल्या रुडा चपक । नीप कदंब अतूल ॥
पाडल परीमल अवसर । पसरि पगार अमूल ॥२३॥

बसन्त बहार

परीमल वेध्यो जायने । जाइ नही अलीदूर ॥
रातडी पण णासू वने । सूंबनी पिरित्यजय भूर ॥२४॥

जूखडी जूइ वखाणए । आणिए केतकी चग ॥
मयण गज वतूसल । उज्जल केवडु रंग ॥२५॥

मधूक फूल्या फूली माधवी । बांधवी अली रह्यो श्रेण ॥
रूपि रूडी रूप मंजरी । मंजरी छि बहूतेण ॥२६॥

पारजातक रुडी रेवती । सेवती सोहि गुलाल ॥
कमल मलावली कैरव । रवकरि भमर रसाल ॥२७॥

बकुल छि परीमल गरुउ । मरूउ मोमरु चंच ॥
टगर अवती सीदूरीयो । छे बपोरीयो बहूरंग ॥२८॥

वलसरी वालो वसंत । दीसंत मनोहर रूप ॥
भमर भमि जाणे किंकर । तरु अर सेवि भूप ॥२६॥

आंबां वन बहु मंजरी । पिंजरी दीसि चंग ॥
कोयल करि टहूंकडा । टूकडी कूंजि सुचग ॥३०॥

तरु अर ताल तमाल रस । लिहीं ताल अपार ॥
रायण रातडा रुवडां । सूयडा सेवि विचार ॥३१॥

ऊंडकी सूका तरणी नीली । पुंकेसरि नीलंत रसाल ॥
घर वाली नाथि नीतमहिा । कवंत तरणी कंठमाल ॥३२॥

मसोद वदाम चीजोरडी । अंबीरकी मंबु नाम ॥
नाग केसर नारंग । लवंग एलची तरणी ठाम ॥३३॥

नालीकेरी करणा एम । दाडम पही छिन भेव ॥
तुंबी किरनि करमदी । भरम हरम तरणो भेय ॥३४॥

मंडप लीहा द्राक्षा तरणी । प्रतीपतणा छि पम्पीर ॥
नागवेल नवरंग । सौरंग सोपारी बीर ॥३५॥

फरण सफल्या भल्ला तकी । जातकी पाक पारोली ॥
खेलिय राग धूं रंग भरी । भतेवरी करि रोल ॥३६॥

प्रचुरकी केसर रसभरी । भरी भरी कांटि अपार ॥
मूठडी भरीय गुलालनी । लालना मुख परि सार ॥३७॥

अबीरी नाखती नयन पुरी । रस भरी हुवती नरलाल ॥
चलती कमल करीहूं हणं । स्तन ऊपरि कुसमाल ॥३८॥

फूलभीडू हणि कलधरी । लखीकरी पडि मुखे संग ॥
वलि ऊठी धंधि आसंधि । रंगि रमि उत्तंग ॥३९॥

दोए कर भरी दोए अबली । हंसती सखी सोहंत ॥
तूबी तूं आणे वेरण वल्लकी । वल्लभ मन मोहंत ॥४०॥

एक करें पीडी वोधि पडी । पालनकी बीडी बाथ ॥
चंपाणी अमेलन रही । मुखे कहियो भो नाथ ॥४१॥

एक अधरि मधु, चंडीधि । मंडी रही दूर दृष्टि ॥
एक पयोधरि पीडीय । वेडी नारि करि कष्ट ॥४२॥

वेणी भरी एक रीति करि । रहि रहि [illegible] [illegible] चोर ।
महारी [illegible] तनु कोमल । [illegible] [illegible] किशोर ॥४३॥

[illegible] [illegible] [illegible] । रमती [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥४४॥

तक डालि एक वलगती । हींचती वारीवार ॥
घणी तीहा वाथी हींदोलडा । जोड लहीवि अपार ॥४५॥

तव कटी मेखला खलकती । धरती आणे श्रुती सार ॥
गावती गीत रसाल । विशाल ए रति अवतार ॥४६॥

डाले वलगी करे खाचती । उठे विसे बहू वार ॥
सुरत वीसरयो संभारती । करती नयन विकार ॥४७॥

फणाभिर रही डाल खाचवा । चांचवा कुसुम अतुल ॥
कर्ते रसोली हसीवली । डाल ऊछली पडया फूल ॥४८॥

जाणेह सबूं देखी लाजीआ । फूलिऊं पाव्युं आज ॥
डाल तालणता एक चीर खस्यो । हस्यो तब सही सहू राज ॥४९॥

फूल मुकुट फूल टोडर । फूल पछोडियि राय ॥
फूल चरणा फूल चाटडी । गोरडी फूल हटाय ॥५०॥

जाणे प्रतक्ष ए बसंत । खेलंतो वनदेवी साथ ॥
वन क्रीडा करी नारसूं । मारिवत्त सुण नरनाथ ॥५१॥

सहू नर नारी बहू बोलि । केले ए वनें वसंत ॥
चदेन केशर छांटणां । कुंकुम तिलक महंत ॥५२॥

फूल टोडर बहू परीमल । पसरे दस दिस सार ॥
परीमल लोभीया भमरा । रणभण करी अपार ॥५३॥

जल सूखडो कली दीठीय । पीठीय फूल पगार ॥
वन क्रीडा श्रम फेडीय । तेडीय राणी सराय ॥५४॥

खल करी मुखपरी छाटता । छूंटता कमल सुवास ॥
माहोमाहि वणू भूवता । करतां हास विलास ॥५५॥

जल खेलें इम नीसरया । पहिरया वस्त्र विवेक ।
पहिरयां अनेक आभूषण । दूषण नहीं अंगि एक ॥५६॥

नगर आवा सहे सज थया । वाजियां विविध वाजित्र ॥
संभ्रम सहीत पुरी आवीया । सोभा दीसि विचित्र ॥५७॥

वस्तु

नवर मझारी । नगर मझारी । हुय सुविचार ।
वन क्रीडा करी आवीओ । वनिता सूं सार मनोहर ॥
स्नान पूज जिन भोजन सजन सरसुं कीध सुखाकर ।
खोल आन्यु निज घर सहू करि आनंद अपार ॥
एहवी पिर हुं राज भोगवूं । वारीयत्त सुविचार ॥१॥

दूहा

अमृतमती रानी का कुबडे के गान पर आसक्त होना

एक समय अमृतमती, धवल गृह मझार ॥
सही घर सूं करि गोठडी, मीठडी चतुर अपार ॥१॥

तेणि अवसरि सेवक अधम, कुबडो अति हि विसाल ॥
मालव पंचम आलवे, सुरांगि सुरसाल ॥२॥

तव ते कान अवसर पडयो, पडिहररवाली जिम पास ॥
दूती चतुर भली सदा, पठावी ते पास ॥३॥

कुरूप देखी पाछी वली, चीतवि चित्त अपार ॥
काम चरित्र अचिन्त छि, दुस्सह काम विकार ॥४॥

देवं आणे अपछरा, होय विस्मय देखी रूप ॥
ते देवी कुबडु एहनि मन धरि, दुर्जय काम ए भूप ॥५॥

दूतीइ देवी वीनवी, देखि कुरूप अपार ॥
नीचनिकृष्ट निठोर तनु, तेह सूं मोह निवार ॥६॥

तव अमृतमति एम बोलीवूं, सांभिल सखी मन सच्च ॥
कुकुल कुरूप कुबडु कहयो, जे कांई तेह कुबुध्य ॥७॥

ये हूंनि काम पुरुष थयो, त्रिभुवन [illegible] ॥
तेह नर निदु आसाये, कामिनीनि कामदेव ॥८॥

रूप यौवन [illegible] , [illegible] सखी मन रत्न ॥
[illegible] , [illegible] ॥९॥

[illegible] ॥
[illegible] ॥१०॥

तब तेणवि तेसूं बाऊव्यूं, अवसर जोई रमेव ॥
मारीदत्त अवधारतूं, हूं नवि सहुए भेव ॥११॥

भास रासनी

राजा यशोधर का राज दरबार

दिन दिन प्रति राजपाल तो ए। करतां पर उपकार तो ॥
प्रजालोक नें सुखी करूं ए। होइ मुझ यश बिस्तार तो ॥१॥

एक समि सभा मंडपि ए। मध्य उन्नत अद्रपीठ तो ॥
उज्वल रतन नो शोभतु ए। जाणे निज यश पीठ तो ॥२॥

परवालीना थंभ भला ए। मंडप अती बिसाल तु ॥
फरती बिचित्र वर्णं पूतलीए। रुडी नाटक मालि तु ॥३॥

तेह परि कनक सिंघासन ए। पचवरण मणी बद्ध तो ॥
अमूलक मूडा गादी भली ए। रचना अतिहिं प्रसिद्ध तु ॥४॥

तेणि अवसरिहूं आवीयो ए। सभा मंडप मझार तु ॥
सामंत मंत्री ऊठी नम्या ए। विनय तु करय जुहार तु ॥५॥

सिंहासन बिठो सोहीयो ए। यम उदयाचल सूर तु ॥
रतन कुण्डल तेजि करीए। कीधु तिमर अती दूर तु ॥६॥

उलबद्ध धणा राजीया ए। ऊभा रह्या तेणीं वार तु ॥
यथायोग्यनि सभालीया ए। ते जिणे कीधां जुहार तु ॥७॥

जेहनि बिसवा आग्राहती ए। ते बिठा सुविचार तु ॥
अनेक राणा ऊभा रहया ए। कर जोडी तजी हथियार तु ॥८॥

नयण चलावि को नही ए। को नही चालि हाथ तु ॥
को नही आंगली चालवि ए। वात न करि कोय साथ तु ॥९॥

को माहोमाहि नव्य हसिए। नव्य करि कोय संकेत तु ॥
चरण चलावि को नहीं ए। को नहीं अठींगण देत तु ॥१०॥

सीस हलावि कु नही ए। को नही सीस कराय तु ।
कर कंपावय को नही ए। आंगली कोय न मरोय तु ॥११॥

को कटका मोडि नहीं ए। को बंगाई न देय तु ॥
को खासि खंखारें नही ए। को नही दे को नही लेय तु ॥१२॥

कोकि कोई जिहां नहीं ए । कोय न सोक अराग तु ॥
को किलुनि करि नहीं ए । कोय न जीव वैराग्य तु ॥१३॥

को कामि मोकलाय नहीं ए । कोय तीहां न सेकायतु ॥
कोई स्तुति साथि नहीं ए । को काई मध्य काम तु ॥१४॥

प्रण बोलाव्यु बोलि नहीं ए । नवि कोलाहल थायतु ॥
बोलाव्यु बोलि वीर नई ए । भाखेह कुछु पसाय तु ॥१५॥

को मूछि हाथ घालि नहीं ए । मध्य भमरी न चलाय तु ॥
अजासण आसिको नहीं ए । परताप्यि कंप्या रांव तु ॥१६॥

चीनामण पिर सबे रह्या ए । लख भट कोटीभट वीर तु ॥
जाणे सभा सायर समी ए । वायु वीना वाह वीर तु ॥१७॥

छत्र उज्जल वीर सोभतु ए । कनक कलस उतंग तु ॥
गज प्रवगाह चमर भला ए । नीरमल गंग तरंग तु ॥१८॥

वारंगना ढालि घणी ए । हुइ कंकण झनकार तु ॥
रुपि अपछरा जीपती ए । रूपि अतीही अपार तु ॥१९॥

अनेक राणानां भेटणां ए । आव्या लेख सहीत तु ॥
विनय सहीत मंत्री वांचए । राय सुणु वीर चीत तो ॥२०॥

लेख सुणी प्रति उतर ए । वेयूं हूं वीर बुध्य तुं ॥
मंत्र मति गुप्ती करं ए । भाखि नमराय रीत्य तु ॥२१॥

क्षण एक कवित्त अलंकरचा ए । सुकवित्त तणां सणुं घंग तु ॥
क्षण एक वाद वीद्यासनाए । सोभतू मनि तणि रंगतु ॥२२॥

क्षण एक नव रस नाटक ए । जोऊ भेव संगीत तु ॥
सारीगमपधनी सप्त स्वर ए । अनेक ताल भली रीत तो ॥२३॥

मूर्छना भेद भला लहु ए । नदूआ नचावि पात्र तु ॥
ताता थेई थेई उचरे ए । नाचती मोडे गात्र तु ॥२४॥

क्षण एक भाट बखाणीत भलाए । कवित्त कहां सुरसाल तु ॥
वीर रस विविध परि ए । निज पराक्रम गुणमाल तु ॥२५॥

इन्द्रजाल वीर जाचके ए । बंध साधक कला कोड तु ॥
वस्त्र साधक आगमू जोड ए । तहुकुण वनगुण जोड तु ॥२६॥

मल्लयुद्ध क्षण एक जोउं ए । मत मतंग यूद्ध तु ॥
मीढा महीष कूकड़ा जीउए । ते बढि झिलती कु च तु ॥२७॥

इम करतां कतूहल ए । सुण संगीत सभा माहि तु ॥
कलपतरु चिंतामणी ए । कामधेनु मऊ चाहि तु ॥२८॥

दान देखी सहू लाचीए । अपूरहवां इम जाण तु ॥
सारद चन्द्र कुमुद समु ए । यश विस्तरयो वखाण तु ॥२९॥

दूहा

विरह वर्णन

तेणि अवसिरि मुझ सांभरी, अंमृतमती सुवीचार ॥
रूपयोवन गुण देह तणा, चीतु रुदय मझार ॥१॥

वीरह व्याप्यो मूझ मती घणो। क्षण एक रहुण न जाय ॥
अमृतमती गुण अमृत सू , रह्यो हुं चित्त लगाय ॥२॥

विरह संतापि व्यापयु, मझ कोमल अतीकाय ॥
अमृतमती गुणचन्द्रका ए । रहयो हृदय लगाय ॥३॥

विरहतणी घणी वेदना, तब उपनी मुझ देह ॥
अमृतमती गुण रुवड़ा, रसाय रस पिर रच्यो सनेह ॥४॥

विरह तण अति दुःसहू , हृदय पिड्ड साल ॥
अमृतमती गुण शस्त्रधर, वैद्यनि काढ विसाल ॥५॥

वीरह दावानल तनुबले, लागो अति विकराल ॥
अमृतमती मेघ पयोधर तदा, ध्यांऊ अती ही रसाल ॥६॥

विरह तृषायि व्यापीयु, हु बापीहु अपार ॥
अमृतमती गुण चीतबु , जाणें जलधर धार ॥७॥

विरहए मातो मतंग जो, तनु पाटण भजेय ॥
अमृतमती गुण अंकुसि, चितधरवी गंजेय ॥८॥

विरह भुजंगम मुझ नडयो, वेगण वीखहवूं व्याप ॥
अमृतमती नूं मनकरू, नाम मंत्र तणु जाप्य ॥९॥

वीरही वीछी विखं व्यापयो, मझ शरीर मझार ॥
अमृतमती गुण ऊष धी, धरी करूं सीतकार ॥१०॥

विरह अंगारि [illegible] । हूं [illegible] लपूर ।।
अमृतमती [illegible] कर यसी, पीतमू हूं सुख सूर ।।११ ।

ढाल [illegible]

अमृतमतीना गुणवर्णाए । महीलतडे ।
पीतमू अतीही वरणाए । सुण सुन्दरि ।।
विरहवेदण अति उपसमिए । मा० ।
हृदय वसीयिम वाल्ह । सु० ।।१।।

चरणें कमलघणां जी कीयाए । मा० ।
लाजी थाकी उज्जलि वास ।।सु०।।

गजवली गमनें जीकीयो ए । मा० ।
देह वनें रह्यो उदास ।।सु०।।२।।

घूंटण विरह हरणवे मलाए । मा० ।
जंघा कनकमय थंभ ।। सु० ।।
जघन जाणे करी कर सोभा ए ।।मा०।।
जीके रंभा प्रदंभ ।।सु०।।२।।

अमृतमती सौन्दर्य वर्णन

कटालके जीत्यो सिंह लोए ।मा०। लाज्यो गयो वन ठाय ।।सु।।
नीठा परभव पामीयाए ।मा०। दूर देसांतर जाय ।।सु०।।४।।

मध्यवली उपरि सोहिए ।मा०। रोमावली वन जाण ।।सु।।
मयण मातंग जम जुयाए ।मा०। नाभी ए द्रह वखाण ।सु०।।५।।

कनक कलस जासे ऊपताए ।मा०। अमृत भरया सम जोय ।।सु०।।
पीन स्तन मुखे मेघ कन ।मा०। जाणो मुद्रा दीधी होय सु०।६।।

अथवा पयोधर जाणं सोहिए ।मा०। रचे लागि एह त्रिदृष्ट ।सु०।
इम जाणी करयो सिर सांकल ए ।मा०। चतुर विधाता दृष्ट ।सु०।७।।

अथवा कनक कलस परि ए ।मा०। पीण उत्पल सोहंत ।सु०।।
कमल डोडा सम स्तन जाणं ए ।मा०। ऊपरि भमर मोहंत ।सु०।।८।।

चकवा चकवी जोवडू ए ।मा०। एहना स्तन रसाल ।।सु०।।
मुख चंद्र देखी भय तणीए ।मा०। जाणे रोमावली सेवाल ।सु०।।९।।

अथवा हृदय सिव संकर ए ।मा०। [illegible] [illegible] जाणे ।।सु०।।
स्तन ऊपरि [illegible] ।मा०। [illegible] [illegible] [illegible] ।।सु०।।१०।।

पातली मारए जाडए ।मा०। कोमल स्त्रीए कठीण ।सु०।
स्त्री सुमुखी स्तन कालमुखाए ।।मा०। बाहेर काढया काटि तेण ।।११।।

कठिण कालमुखा वर्ण होइए ।मा०। पण यपि त्यपि न लयार ।सु०।
कठिण थंइ नही छूटीयिए ।मा०। कृपणए जाणो विचार ।सु०।१२।

जाणे कनकनी विष वडीए ।मा०। पातलडी मली वेल ।।सु०।।
गिरिपर होइ पण कोतकए ।मा०। वेल धरे गिरि वेल ।सु०।।१३।।

लावन्ये सांच्यो कनक तणो ए ।मा०। अमृताए दवणा छोड ।सु०।
वेल बीलां लागां लहूंए ।सु०। ए मक कौतक कोड ।सु।१४।

केटली स्तन सोभा कहूं ए ।मा०। जाणो ए मोटा राय ।सु०।
पासमुद्र हूं कर ग्रह्यू ए ।मा०। तेहनिमि कर देवाय ।।सु०।१५।।

कनक दंड समा भुज कहूं ए ।।मा०। कल्पवल्लीनूं वितान ।।सु०।
लांबी पांमली वली कोमल ए ।मा। कर पालव समान ।सु०।१६।।

कंठ सोभागी रेखसूं ए ।मा०। देखीय वर्ण सुवर्ण ।।
संख डकयो जलि जै पडयो ए ।मा०। लाज्यु हृदय विशीर्ण ।।१७।।

हडवटी सूदणं छि मसूं ए ।मा०। चंद्रमाहि जसुं नक्षत्र ।।
दांत दाडिम कुली कहूं ए ।मा०। रतन के मोती पवित्र ।।सु०।१८।

नासिका मसिए सुक लहू ए ।मा०। बेठो मोती धरेय ।।सु०।।
कान पासि ए भमिर धनुं ए ।सु०। ग्रह्यू सूक कोंडयो पण नडरेया ।।१९।

अधर पाकांटी ब्रूरडां ए ।मा०। दांत दाडम कली जाण ।।सु०।।
ए मांहि पहिलूं कहनें ग्रह्यूं ए ।मा०। बरधई चीते वखाण ।।सु०।२०।

आंखडी कमलह पांखडी ए ।मा०। थाजी छि अणी बाल ।।सु०।।
अथवा राता कमल असूं ए ।मा०। काला भमर छिनीसाल ।।सु०।२१।

अथवा मच्छ युगम समीए ।मा०। रहीया लावण्य सर मांहि ।सु।।
धीवर देखी पीडा धरे ए ।।मा०।। ए बहु अचरर्य ठाह ।सु०।।२२।

[illegible] सोभागए गंवीमाए ।मा०। खंजन वली चकोर ।सु०।
थंनि भमंता हींडता ए ।मा०। नाचते वेम चोर ।।सु०।।२३।।

अर्थ चंद्र समो सही ए ।सु०। तेह लावण्यनल हीय ।सु।
नयण बाण भमरी धनु ए ।मा०। सांची कंदावल जोय ।।सु०।२४।।

कोन ए काम हींडोलना ए ।मा०। अथवा वयन सुख पास ।।
केश चारे चीकणा चोटला ए ।मा०। तेणि वसा अरघू वनवास ।।सु।२५

जाने कनक तणी पूतली ए ।मा०। पातली सोहन्त नेत्र ।।सु०।।
ससार सुख मांहि सूखु ए ।मा०। नैण्ह सु कहे वेन ।।सु०।२६।।

यमलाजमल वेधि करिउ ।मा०। अस्यए अमृता कटाक्ष ।सु०।
अणविनय चोका चीर होइए ।मा०। अमृता केरा अभिलाष ।।सु०।२७।

घाटला कोमल पीरोजवा ए ।मा०। चोडा अमृता कण साथ ।सु०।
रतन मोती परवालडाए ।मा०। अमृता चीना ए काय ।।सु०।२८।

माता मेमल मोटका ए ।मा०। ए मझ मन न सोहाय ।सु०।
अमृता चीना एव लेखवू ए ।।मा०। तब आवा मीरी ठाय ।सु०।२६

रथ आसे एगी हिंडीया ए ।मा०। दारकरि अती कूर ।।सु०।।
रथ रीम मझ मन मन्यू ए ।मा०। अमृता मती रिहि रंच ।सु०।३०।

अनेक राणा राय देखसूं ए ।मा०। मंडार सहीत ए राज ।सु०।
अमृतमती नारी विणए ।मा०। एणि मझेसूं सरि काज ।।सु०।३१।

दूहा

अेणी पिरि चींता आकुल्यो, आकुलयो जिम नाग ।
अंतर मदें नयन तरें, पण उठवा नहीं लाग ।।१।।

तेणि अवसिरि दिनकर सही, लोक बांधव इम जाण ।।
अस्ताचल सन्मुख थयो, जाणे मुझ करुणा आण ।।२।।

भास भूपाल रागनी

सूर्य अस्त होने का वर्णन

दिनकर रे आथमतु हवो रातडो ।।
निशि नारी नु रे, जाणे किं कुंकुम चांतडो ।।१।।

जिम आथमतो रे, तिम ते थयु रातो पडयो ।।
सही महाजन रे, रोगमु कि कष्ट पडयो ।।२।।

मम ऊगतो रे, तिम आथमतु रंग धरयु ।।
सहि सज्जन रे, मन सुख दुखे सममुख करयो ।।३।।

अस्ताचलें रे, सूर जाजतो जाणीयो ।
निज सिर धरि रे, मुकुट तणी बणावी ।।४।।

पश्चिम दिसि रे, तणी जाणि हवो रातडो ।
पंखी तरुवर रे, बीज जाणि करि बासडो ।।५।।

दिन अंतरे रे, रवि घणं मान पामयूं ।
उत्तम नेंरे, कोशि एक सीस न नामयूं ॥६॥

व्यभचारिणी रे, गमन रोवे रीसि चढी ।
रवी उपरे रे, वेषाडि आंखि रातडी ॥७॥

जाणे तेहस्यापेंरे, सूरज अस्तांगत गयो ।
अबला तणि रे, स्वापें कोहोनो नही क्षय थयो ॥८॥

जेह उदय थीरे, धर्म कर्म चालें घणो ।
तेह आथमे रे, जाणे शोषा काल तणो ॥९॥

रवि आथमेरे, कोमलाणी घणी पदमनी ।
देषी नव्यसकिरे, आल मीची रही घणी ॥१०॥

निज मीत्रनो रे, दुःख देखी अती दुर्धरो ।
दुखीयो थाय रे, कोण नही ते उधरो ॥११॥

रवि आथमे रे, कमल माहि भमरो रमि ।
सही कामनी रे, निचसूं संग करिसिमि ॥१२॥

कमल तणी रे, सोभा तव क्षय पामीई ।
जिम व्यसनी रे, विद्या सरीली वामई ॥१३॥

भमे भमरा रे, दीन थया विलखे घणू ।
जिम विद्वास रे, कुजन माहि पामे दीन पणू ॥१४॥

अंधकार ए रे, लोकनि पीडि पापीयो ।
जिम कुस्थिती रे, भूप घणं लोभि व्यापीयो ॥१५॥

सहू लोकनारे, नयन तदा नीफला होवां ॥
जिम कृपणनाए, जनम वली धन सोचवा ॥१६॥

तव दीवी रे, ठाम ठाम घणं प्रगट ई ॥
अंधकारनी रे, व्याप्त ते वारें विघटई ॥१७॥

जिम जिनवाणी रे, ज्ञान कीरणि करी व्यापती ॥
घणू करी रे, मिथ्या तीमरनि का पती ॥१८॥

चन्द्रोदय वर्णन

तीणि अवसरि रे, ऊग्यो पूनम चांदलो ॥
पूरव दिसा रे, नारी सिर जाणे चांदलो ॥१९॥

जाणी उज्जवल रे, पूंज दीसि कपूर नो ॥
छे समरथ रे, ताप निवारवा सूर नो ॥२०॥

पूरव दिसें रे, ए नारी मुख वखाणं करे ॥
सभी श्रीफलरे, चलान तारा तंदुल भरे ॥२१॥

पूरव दसि रे, मुक्त भक्यो ए नीसरी ॥
गमन वनें रे, संचरयो शशी केसरी ॥२२॥

किरण नखे रे, अंधकार गज विदारयो ॥
जाणे तारा रे, मुक्ताफल विस्तारयो ॥२३॥

उग्यु चांदलु रे, भवनीयि जाणे वाकडी ।
काम सापनें रे, जमावि कीरणें लाकडी ॥२४॥

अथवा ससि रे, जाणे नीसाणा नोखंडो ।
बांण छूटडारे, मसिए काम पुलंवडो ॥२५॥

शशी सीतल रे, अमृत मय कहिवाडतो ।
लांछन मसिरें, हर दह्यो काम जीवाडतो ॥२६॥

देखी ब्यरहणी रे, संताप पामी अतघणी ।
चन्द्रप्रति रे, कहिवा लागी तेह भणी ॥२७॥

शशी सीतल रे, दाह सकल ए किहां हती ।
केहर गले रे, विलखणी हवि संगती ॥२८॥

सागर माहि रे, वडवानल थी सीखीयो ।
तूं कलंकीय रे, दोसाकर जड लेखीयो ॥२९॥

तूं कुमुदनी रे, साथि केलि मन रली ।
गोत्र वालीयि रे, परस्त्रीनि सवे वली ॥३०॥

अमावसे रे, अमृत पीता पतिबिब तु ।
तूं नालव रे, परनारी मुख, चंबनु ॥३१॥

सागर मथीरे, कोर्के वैर्य कमाडयो ॥
जई वांचन रे, सागर कुल तिलचाबीयो ॥३२॥

मंदर वसि रे, सिद्धिसिद्धि नही चंपावयो ।
अपयश तणी रे, ग जालिनि न पीवाईयो ॥३३॥

एणि परें रे, अरहणी सखी सुं कीजती ।
संजोगणी रे, किरण लागि घणुं रीझती ।।३४।।

दूहा

तव मे सभा सज्जन सहू, आवेस्या नीज ठाम ।
हू ऊठघो ऊतावलो, मन्दिरइ अमृता नाम ।।१।।

रतनदंड करतीरिण समि, कंचुकी आव्यो जेम ।।
अमृता अवासि पधारीयि, हरख उपनो मुझ तेम ।।२।।

भूख्यो दिन बिच्यार नु, पंचामृत लहि जेम ।।
तरसो सीतोदकि लहि, हरख उपनु मुझ तेम ।।३।।

तावडि घणुं संतापनो, फलो तरु लहि जेम ।
बिनयवली दान गुण लहि, हरख उपनो मुझ तेम ।।४।।

रूपवंत निवली भण्यो, भण्यो विनय गुण जेम ।।
विनय वली दान गुण लहि, हरख उपनो मुझ तेम ।।५।।

दूध वली साकर भली, मूदी भली मणि जेम ।।
धन अर्थि निधि पामयो, हरख ऊपनु मुझ तेम ।।६।।

श्रीमत. परमेष्ठिनो भूषणगुणाध्यावाः कृताध्यापकाः ।।
शिष्याणां प्रतिशिष्यकाधिमुनिनामेकादशांगानि च ।।
पूर्वाण्येव चतुर्दशादृतदृणाचाराः पठंतः सदा ।।
श्रीदेवेन्द्रसविक्रमस्तुतपदाः कुर्वन्तु वो मंगल ।।१।।

इति यशोधरमहाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिछदे
भूदेवकवि श्रीविक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते
बसतक्रीडाराजसभास्थिति प्रकटित विरहपट्टराज्ञीवर्णन
सूर्यास्तचन्द्रोदयवर्णनो नाम चतुर्थोऽधिकारः ।।४।।

पंचम अधिकार

भास आसंवारी

क्रीडा वर्णन

तबहूं चाल्यो रंग भरीं । आणंदारे । मनवचन करमाहि तो ।
मंगरस सांचि सही ।आ०। पोल ऊलंगी आहितो ।।१।।

हु चढ्यो पैली पोलि ।आ०। मालता हुन्त अनेक तो ॥
ओपी पैद निपुण जन ।आ०। विनय सहित सुविवेक तो ॥२॥

बीजी भोम सोहावती ।आ०। नील रतन तणी सार तो ॥
संगीत नाटक गीतगीतार ।आ०। पापकी नाम उदार तो ॥३॥

बीजी भोम्य देख कहू ।आ०। पीला रतन में ओपती ॥
कंचनरतणी थंभ बाव ।आ०। कुमती हरख बहू ओप तो ॥४॥

चुथी भोम्य बहुकमसू ।आ०। स्याम रतन मय जाणु ।।
रतनदीप झबकें घणा ।आ०। जटयो कुमतां बंस जाण तो ॥५॥

राता रतन तणी पांचमी ।आ०। चढ्यो हु सुखमालतो ॥
ज्याहां मोती ना झूबका ।आ०। राता जाणे परकाशतो ॥६॥

फटिकतणी छठी कही ।आ०। दीठी निज प्रतिछायतो ॥
जाणे हरखवि मणो भयो ।आ०। कही जणे अंग न माय तो ॥७॥

सातमी कही सोहे भली ।आ०। पंचरतन मय थंभ तो ॥
पंचवरण स्वस्तिक भला ।आ०। अनेक चित्रामण रंग तो ॥८॥

तीहां चढ्यो हु रंग भरयो ।आ०। भरयो कुंवारकी हाथ तु ॥
सहीं सहूए जय जय कीयो ।आ०। तिहाथी चाल्यो सहू साथ तो ॥९॥

आठमी भोम घनोपम ।आ०। उपरि अनेक चित्रामतो ।
राता रतन भीत भली ।आ०। अमूल रतन मया ठाम तु ॥१०॥

तिहां चढ्यो हु मलपती ।आ०। हर्षित वदन हुवो जाण तु ।
जाणे नीवाण में पामीहु ।आ०। अथवा अमृत वरजाण तो ॥११॥

अमृतमतीह जाणे हु ।आ०। मंदिरे पधारया राय तु ॥
चंद्र वणी चमकावती ।आ०। पायनी साहामी ऊझाय तो ॥१२॥

बीछीयडा झमकावती ।आ०। नेवर नो चमकार तु ॥
हंस चमकती जाणे हंसली ।आ०। हु हंसगति जाणे सार तो ॥१३॥

कटी मेखला खलकावती ।आ०। पायलकी खिड़कावतो ॥
गजगामिनी जाणे हसतीनी ।आ०। हु हसती प्रति चालतो ॥१४॥

स्तन मानो कलश तणी रही ।आ०। चीवंत चाली जाए खीनतो ॥
मदरि आपती रहे कूदती ।आ०। कटी कली मांहि बीहु नमतो ॥१५॥

सरवर हार त्रिदिकावती ।आ०। लालकावली चुनी हार तो ॥
हसती हे जिहां वा वरि ।आ०। लेमसिंह साहू मुजावतो ॥१६॥

नयण बाण वर्णं ताणती ।श्रा०। नयण श्रोऋवती सूर तु ॥
वदन शशी एह देखतां ।श्रा०। विरह संताप गयु दूरतु ॥१७॥

काने कुंडल झलकावती ।श्रा०। सेसफूल फूली उद्योत तो ॥
वेणी गोफणो लहिकावती ।श्रा०। रालडी रतनहु जोसतो ॥१८॥

वदनें सुभ सुणगावती ।श्रा०। आवती जय जय वाण तु ।
आवती हुं आलंबीयो ।श्रा०। लेई चाली करताण तु ॥१९॥

रतनपलंग छत्री आलो ।श्रा। हंसतूलका पडि रम तो ॥
कर धरी सेजि हे जिसू ।श्रा०। विनय सुं उभी उसंग तो ॥२०॥

।श्रा०। लीधी तब तेणी वार तु ॥ श्रालंदारे
चीर छाडता लाजती ।श्रा०। रतन दीवे फूतकार तु ॥२१॥

विफलथया कमलें हण्या ।श्रा०। तेहूं नवीवानदं देवाय तो ॥
मान मोडाइ माननी ।श्रा०। रही मुझ सूं तनु लावतो ॥२२॥

भेद चुरासी आसन ।श्रा०। कीधो तब संयोग तो ॥
नख दीधा जे स्तन परी ।श्रा०। काम प्रसस्ति जाणें जोग तो ॥२३॥

अधर खंडते ऊपतु ।श्रा०। कामध्वजाए लांछन तु ॥
हृदय हृदय मुख परीमुख ।श्रा०। तनु करी भीड्यो तस तो ॥२४॥

गाढ आलंधन देयतां ।श्रा०। मनपरि तनु महां पेठतो ॥
विपरीत सुरत खेलतां ।श्रा०। बीजपेर चपल ते दीठतो ॥२५॥

अमृता मालती महालली ।श्रा०॥ हू भमरो इम जोयतो ॥
अमृता जाणे कमलणी ।श्रा०। हूं मकरंद सम होयतो ॥२६॥

अमृता वदन चोडूउ ।।श्रा०। हूं भोगी इम जाण तू ॥
अमृता सरस तलावडी ।श्रा०। हू मेगल बखाण तु ॥२७॥

अमृता जाणे बीजली ।श्रा०। हू वली मेघ समान तो ॥
अमृता जाणें मीठी झाजडी ।श्रा०। हूं जाणे मडपवान तु ॥२८॥

अमृता ए कल्प वेलडी ।श्रा०। हूं कल्पद्रुम विचार तु ॥
अमृता रती रमती रुडी ।श्रा०। हू कामह अवतार तु ॥२९॥

इम सुरत सुख भोगवतां ।श्रा०। परसेनजम लीनतो ॥
हू सुतो तब रंगभरी ।श्रा०। अमृता कंठे कर दीन तो ॥३०॥

तेण गुण जाय क्षण चीतवूं ।श्रा०। सुरतकला प्रेम भाव तो ॥
अमर भार उपर नीद्रडी ।श्रा०। आव बाज सहे लावतो ॥३१॥

प्रभात समय हु कुंअर ने ।।भा०।। पामी पंचनाम राय आर हु ।
अमृता मिरधु मिद बहू ।।भा०।। चोम ओलखु इविचार तो ।।२२।।

राय ए नीझामना मयो मयो ।।भा०।। जाणी नीसरी सभे लेता हु ।।
भुजपंजर थी चंपली ।।भा०।। कोजलीची वय न सरा हु ।।२३।।

दूहा

अमृतमती का कुबड़े के पास जाना

तब हु मने भाजंजीयो, एणी वेला किहां जाय ।
अबलाए चली एकली, कुण कारण कुण ठाय ।।१।।

तब सेज्याथु उठयो, चाल्यो हु तेह साथि ।
उठी अंधार पछेड लो, खडग धरयु निज हाथ ।।२।।

सनें समें ते नीसरी, कमाड युगम उघाड ।
मारीबल अवधारिये, रही कुबडो उठाड ।।३।।

भास जीवडामी

रागवेलाउ, नगर चूलारा हो लोक नी चालि ।

कुबड़े के शरीर का वर्णन

कालो कोढी कसमलो हो । कठिला काजल वांन ।।
लूषो कोयल समान । काग केरी चांच मुख्यो हो ।
नारी असरथ कूरडी ।हो। नारी नासे संसार हो जीवडा ।।१।।

हो जीवडा चूड चूड नारी नीचार ।।
पग आंमली ठाम नही हो । कूटी घूटण मान ।
घूहवनी पिरि चर भरि हो । चालतु रीछ समान । हो जीवडा ।।२।।

ऊभे घूटण जब बेसें हो । तबक माथा देखाय ।।
कोट केवी दीसि नही हो । चोम माथा थि सहाय ।।हो जी० ।।३।।

रोम जसा कांटा समा हो । चांच ए बाउल बांभ ।।
पेट मोदु क ढोल सबो हो । पिर पिर पापाल जांघ हो जी० ।।४।।

कटीरांफड़ा मुख समी हो । हैमा मुयें सच्चो पाड ।।
हाथ सुका मोटी नसा हो । गुनु मन वसतु फाड ।।होजी०।।५।।

पीहु मत्या काठ वेंउ सामा हो । नांतो कटनी समान ।।
कंडि मांमिड पडे चल्यो । जाणें हुंडक संस्थान ।।हो जी० ।।६।।

कान कोहुरी जाणे सुपडां हो । नाक ताकिणी तु दोष ।
पडे जाणो नीझर जोडा हो । वाजलि दीसि आम हो । जी० ।।७।।

आंख ऊंडी कुंडी पडी हो । सघरी फेयल व्याय ।
पांथरिए परा पापी त्यधो हो । ए पापसी मेह धाय ।हो जी ।।८।।

दांत बखर दांता समा हो । कांई बाहिर कांई माहि ।।
मुख दुरगंधे रहिवाय नही हो । होठ तरणी नही माहि ।।हो जी० ।।९।।

कपाल ऊडूं सीप समू हो । वही वली सीसमुं बाल ।।
माथूं जाणे कागि टूंब्यूं । कोह्या करत सूवाल ।।हो जी०।।१०।।

हाथीनि मूत्रि हाथ बल्या हो । आंगली वली मई वांए ।।
जाणे बल्यु ए थांभ हो । मारिवत्त सुणो वाण हो जी० ।।११।।

कह्यु कूतरो निकाने कीडा । मुंडो नि मूषाल ।।
अधमाने अधां बोलु हो । तेहनूं मोटुं बाल ।।हो जी ।।१२।।

पगफाटा जिम भांखडा हो । हलना पड्या बाहाल ।
पायतला सी आगव्यु हो । तेऊ थो जिमकाल ।।हो जी०।।१३।।

रानी का कुबडे से निवेदन करना

राणी परती बोलियो हो । कठण वचन बीकराल ।
का असुरी आवई हो । झोटें झाली ततकाल ।हो जी० ।।१४।।

धीगे धपोई ढीकें करी हो । पगधरी ताणी चाहि ।।
कुं अली पातली लह्नी जिम हो । चंद्रकला नितराहे ।हो० ।जू ।।१५।।

वली बोल्यो ते कुबडो हो । कायन बोलि नार ।
शिरनामी पाये पड्ड हो । तुम मन मांहि विचार ।।हो जी० ।।१६।।

हास सहित बोल सांभली हो । ते वली बोली वाण ।।
राय ते मुरु घेरह आवयो हो । तेरिए बार लागी जाण ।हो जी० ।।१८।।

राजा जो पहुरो भरि हो । तो न चीतहूं नार ।
स्वामीनी तो भगत करुं हो । मझयो कोप निवार ।हो जी० ।।१९।।

हूं तुझ पगनी वांणो ईहो । तुं मुझ हे या हार ।
हूं तुझनी दासी समी हो । तूं मुझ कांम अवतार ।।हो जी०।।२०।।

हूं तुझ ऊजीठा समी ए । तूं मुझ मुख तंबोल ।।
हूं छूं पतंग तूं मझ मन हो । बस्तरंये वा चोल ।।हो जी०।।२१।।

तूं मुझ मर्में करकंकरा हो । हूं मुझ चरण-तूरेण ।।
तूं मुझ कोटि काठलो हो । को पत कवच नरेश ।।हो जी०।।२२।।

तूं मुझ सिरै केसफूल वसो हो । तूं मुझ चोटलड़ी वेस ॥
हूं मुझ सिणगार सिरदारी हो । कोपते कवण सुरेस ॥हो जी०॥२३॥

तूं मुझ कंठ टोडर वसो हो । मुझ गुण गुथ के वेस ॥
गुणसागर तूं नाही लाहो । कोपते कवण सुरेस ॥हो जी०॥२४॥

तूं मुझ चीवतो जीवन हो, तु मुझ योवन वेस ॥
तूं मुझ तनु सणगार सही हो, कोपते कवण सुरेस ॥होजी०॥२५॥

तव ते कुवडी हरखीयी हो, कामी नारी अंतरंग ॥
ते नारी तेणि आवरी हो, कोय भोगवि मनरंग ॥होजी०॥२६॥

तव हूं मन माहि चीतवूं हो, धिग धिग नारी एह ॥
हूं सरीखो राय परहरी हो, नीच सूं मांडयो नेह ॥होजी०॥२७॥

नारी चरित्र

नारी चरित्र सायर समु हो, कोय न जांणि पार ॥
हाथ धरैं पण थीर नही हो, पारा रस सम सार ॥हो जी०॥२८॥

नारी नदी बेहू समी हो, सहजें नीचा संग ।
कोय उपनी सायर घरी हो, मल भरयो सुहल सूं रंग ॥हो जी०॥२९॥

बनें दावानल दीपयो हो, सूकूं नीलूं नव्य कोय ॥
तीम कामनी कामें बली हो, ऊंच नीच वव्य अवलोय ॥होजी०॥३०॥

नारी निबली वेलडी हो, ए बेहु एक समान ॥
मोटा तरुनि अवथली हो, चाड कांबरा पिरमाव ॥होजी०॥३१॥

नदी घणी सायर ते भलि हो, तो हु ते ऊलो अपार ॥
नारी नर बहुसूं रमि हो, तुह गुहि तुपत लगार ॥होजी०॥३२॥

जिम अगन अन बनमें भसतो हो, तोहू न हो संतोष ॥
तम नारी बहु नर साथि हो, रमतां अधिक होइ सोख ॥होजी०॥३३॥

न्यायें नारी ए कुंकि पवि हो, न्याय पाचि नवि पाय ॥
साहसिक कूची विहिनि हो, माना तणो विनाव ॥होजी०॥३४॥

कूड कंपट कूठ तणी हो, नारी ए मोटी खाण ॥
बावड़ा नर नें छोलवती हो, कुमि मोटी पाण ॥होजी०॥३५॥

नारी चीकली वेलडी हो, नारी अनूप आम ॥
नारी नरकनी बावडी हो, नारी बीजा आराम ॥होजी०॥३६॥

नारी बाघण वन वसती हो, नारी अशुची नीधान ॥
नारी प्रत्यक्ष राक्षसी हो, ग्रसती मन तनु मात ॥होजी०॥३७॥

नारी पापनु पोटलो हो, नारी लोभनु पुंज ॥
नारी नामि व्यसरी हो, जाती नरनि मुंज ॥होजी०॥३८॥

दूहा

नारी अन्या देषी करी, कोप उपनु अपार ॥
ए बेहूनि हणिहूं हणूं, हैयि एहवूं विचार ॥१॥

राजा द्वारा तलवार निकालना और पुनः शान्त होना

खड्ग काढ्यो पडी आरयो, वली वीचार मन लीन ॥
आ अबला अवध कहीं, ए कुबडो मृत दीन ॥२॥

एह हण्यो मझ ऊपज सहसि, काई न सीझसि काज ॥
खड्ग साहमू वली जोइउं, मारिवत्त सणो राज ॥३॥

भास नरसूआनी

खड्ग के गुण

तव खडगह गुण चीतवूं ए । नारे सूमा रण आंगण वीकराल ॥
अरी दल मलि अती घणूं ए । जाणीइ कोप्यो काल ॥१॥

रणभेरी रणकाहल ए ।ना०। वाजि जव रण तूर ॥
तव मझ हाथि उलसतो ए ।ना०। जाणे रोमाञ्च्यो सूर ॥२॥

चपल तोरंगम वाय वेगी ।ना०। चपल साधकहूं अपार ॥
सनाहि हूं जाणी मेघलो ए ।ना०। खड्ग बीज झलकार ॥३॥

खड्ग ए जाणें तीरथ ए ।ना०। धारा बहु नीर ठाहि ॥
द्विजनि देता धन तनू कापी ।ना०। अरि हरि हरि करी नाहि ॥४॥

खड्ग जाणें राहु समुए ।ना०। कालो तेह वीकराल ॥
गृह्यो अरि वैरी तणूं ए । ना०। राजमंडल ततकाल ॥५॥

खड्ग जाणे सही मेघलो ए ।ना०। धाराजल वरसाय ॥
मीना बीना वली नाह्या सता ए ।ना०। राजहंस कोतरे जाय ॥६॥

खड्ग जाणें जम जीभडी ए ।ना०। लल लल लांबी होय ॥
मोटा कुटा लोटा वेरीडाए ।ना०। सुभटां चाटती जोय ॥७॥

प्रताप वंसवानरि भणभणिए ।ना०। खडगए मोटी ग्रास ॥
हुं सूरसही अरी इम कही ए ।ना०। बीज काढि चाटि ऊवास ॥८॥

खडग करि करयो पूजिइ ए ।ना०। पाखि मरी मणि सवाद ॥
वैरी रुधीर पीअंतडाए ।ना०। सीव पुरणी नमाखि सवाय ॥९॥

खडग ए तेजनो पुजलोए ।ना०॥ झलकि झलकि ए सूर ॥
तेज सही नहीं सकिए ।ना। नयणि फीरि नील पूर ॥१०॥

खडग ए मोटो दीवडो ए ।ना०। अरीयण सोखि मंग ॥
तेज तेहनूं सहि नही ए ।ना०। पडि वैरी पतंग ॥११॥

खडग दीवा काजल रेखाए ।ना०। काजी रणांगिण जोय ॥
तेह देखी अरीइएं मुख ए ।ना०। काला कुरूपी होय ॥१२॥

रुधीर भरयो हय गय तरीए ।।ना०। रण सायर गरजंड ॥
तीहा विरीदल बूडयाए ।ना०। खडग एम करंड ॥१३॥

खडग खडके मुंयि ग्रम ग्रमइ ए ।।ना०।। कम कमि कायर कोड ।
पडथाथि गीरीवर प्रसिए ।ना०। मझधर वानूं वाथि कोड ॥१४॥

खडग सहूखि संजोगथी ए ।ना०। ऊठि अग्नी फूलींग ॥
सग्राम खेत रुधीरि सींचू ए ।।ना०। प्रताप बीज वावू चंग ॥१५॥

खडगमांहि प्रतिबिंबऊ ए ।ना०। हूं सोहूं रण भोमि ॥
जय लक्ष्मीवर बाजणेण ।ना०। नील वहिन बीटयो जिम ॥१६॥

विरी करी कुंभस्थल ए ।ना०। मोंयथा खडगि जागि ॥
मंगलकाजि ए खडगनि ए ।ना०। मोती वडें हवूं स्नान ॥१७॥

हूं ए हवो प्रतापियो ए ।ना०। खडगए हवो विशाल ॥
किम हणं एसि करी ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥१८॥

राजा का चिन्तन

कोप्यों घुइ बहु सिहलो ए ।ना०। पसु नम्ब हरिण सीयाल ॥
तिम हूं कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडोए अबला बाल ॥१९॥

कोप्यो सूर संग्राम माहिए ।ना०। न होय ना झाळानो काल ॥
तिम हु कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२०॥

प्रचंड वायु तृण नथ्य ऊडे ।ना०। वेतस पाडिक बाल ॥
तिमहु कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२१॥

उसलासूं हाथी कोपिनहीए ।ना०। वे पाडि गिरीवर माल ॥
तिम हूं कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२२॥

बाणवकारयो वीर सूं वडिए ।ना०। स्वान सूं सज्ज हीथि बाल ॥
तीमहू कोप्यो किम हणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ॥२३॥

फूफूतो फणपती जेम ए ।ना०।। अखैं नहीं अल ब्याल ।।
तिम हूं कोप्यो किम हुणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ।।२४।।

विद्या विनोदी वादीआए ।ना०। जबसूं न अपि विसाल ।।
तिम हूं कोप्यो किम हुणं ए ।ना०।। कूबडो ए अबला बाल ।।२५।।

अगी आळ पेर नम्य कोर्ते ए ।।ना०। चंद्र तेज हे रसाल ।।
तिमहू कोप्यो किम हुणं ए ।ता०। कूबडो ए अबला बाल ।।२६।।

अंद्रवजा गीरीवर मोहे ए ।ना०। नम्य ऊकरडा पराल ।
तिमहूं कोप्यो किम हुणं ए ।ना०। कूबडो ए अबला बाल ।।२७।।

एम वीचारी चीत्त सूं ए ।।ना०।। वळण कीधु पडी मार ।।
पेखी चरित्र पाछु वल्यो ए ।।ना०। आव्यो उपरडे तेणीवार ।।२८।।

मोहि आवास लेख्यो प्रतिभौमि ए ।ना०। स्वर्गतणु आकार ।।
हवें साते नरक सम लेखीए ।ना०। तूं मारिदस अवधार ।।२६।।

देख्यां सूंतो चींतवू ए ।ना०। नारी चरित्र अनेक ।।
रक्ताराणीमि जे रच्या ए ।ना०। सुणो श्रेणिक सुविवेक ।।३०।।

रक्ता राणी का कथानक

कोस्यल देस हे रुवडो ए ।ना०। साकेता पोरी जाण ।।
देवरति राजा तिहा रूवडो ए ।ना०। तस रक्ता राणी वखाण ।।३१।।

रजे रमन्ते रस भरी ए ।ना०। रूपयोवन फल जेम ।।
राणी रूपि राय मोहीयो ए ।ना०। अवर न जाणि तेम ।।३२।।

अनेक राजा उलगें आवि ए ।ना०। आश्रीय केरी कोड ।।
राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३३।।

सामंत मंत्री अती भलाए ।ना०। सभा आव्या कर जोड ।।
राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।

महेता मोटा महुतरा ए ।ना०। बेसे दफतर छोड ।
राय रुडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३५।।

हाथी घोडा रथ घणा ए ।।ना०।। पाला बहु करे कोड ।।
रारा रूडो पण मोहोल नही ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३६।।

ठाम ठाम ना लेख घणा ए ।ना०। भेटणा आवि कोड ।।
राय रुडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३७।।

सीमाडी वेरी राणीया ए ।ना०। जाय समर धुर मोड ।।
राय रुडो पण मोहोल नहीं ए ।ना०। ए तेह मोटी खोड ।।३८।।

परवादि मरवान पाडक्यो ए ।ना०। मोहोल्यु ते आवास ॥
दूर थको राय दीनव्यो ए ।ना०। मधुरीय सु ललीत वास ॥३९॥

राय वचन अवधारीइ ए ।ना०। दीनवे बहुलीन परीवार ॥
मोहोल देई संतोलीयि ए ।ना०। देस प्रजा सुविचार ॥४०॥

दूर ऊग्या देखु जिम आपे ए ।ना०। चोरटा मस्तु प अंधकार ॥
तिम स्वामी मोहोल वीना ए ।ना०। लोक पीडयि अपार ॥४१॥

मंदिर मोहां माली थाए । दीप बिना दुःखकार ॥
तिम स्वामी मोहोल वीना ए ।ना०। लोक पीडयि अपार ॥४२॥

मंदिर नवनीधी भरयं ए । पुत्र बिना दुःख भार ॥
तिम स्वामी मोहोल बिना ए ।ना०। लोक पीडायि अपार ॥४३॥

पुत्र पीताधि कुटुंब घणां ए ।ना०। धन विण दुःख विचार ॥
तिम स्वामी मोहोल बिना ए ।ना०। लोक पीडायि अपार ॥४४

बहु सणगारी गोरडीए । ना० । विण नयणांजन सार ॥
तिम स्वामी मोहोल बिना ए । ना० । लोक पीडाय अपार ॥४५।

देस सीमाडा राजीया ए । ना० । आंबि पाडण पुर गांम ॥
प्रजा उपरी दया करिए । ना० । मोहोल दीयो अभिराम ॥४६॥

तब राणीसु विचारीयु ए । ना० । राणी किहि सुणो राय ॥
तह्म दीठा विण क्षण एक ए । ना० । नव्य रहिवाय जीवाय ॥४७॥

तब राय प्रधान प्रति किहिए । ना० । संभालो तह्मे राज ॥
लोकनी रक्षा तह्मे करो ए । ना० । पह्मारि नहीं राज काज ॥४८॥

मंत्री किहि राज सुख घट ए । ना० । धनयोधी सवे आकार ॥
किम तेहनि दुख भाखवो ए । ना० । राजन हृदय विचार ॥४९॥

राय किहि राजपद नहीं ए । ना० । नारी सु कि सुख काज ॥
किहि मंत्री सुख एण भणिए । ना० । तो राज मुको राय ॥५०॥

तब नारी मोहो राजीयो ए । ना० । राय तजी वाधि नारि ॥
रतन मोती सांचि लीधाए । ना० । चाल्यो अटवी मकार ॥५१॥

रत्नासु रंगि रमें ए । ना० । घणि अनेरे देस ।
यमुना नदी कांठि कपनाय ए । ना० । तिहां उतरयो नरेस ॥५२॥

सीलाईक भर थाहीनी ए । ना० । रत्ना मोति पोरमोहोल ॥
थांन राणा तिहां वीसम्यो ए । ना० । तिहां आवीसे वेल ॥५३॥

वाडीयेंरेहेटज हाकतो ए । ना० । पंगु अपंग अपार ॥
तेहनू बांम कांमली धरणं ए । ना० । रत्ना बेची बमार ॥५४॥

तीहां अ पांगलो जोईयो ए । ना० । बोली नोलबतें बार ॥
तु मुझ बु अगीकरिए । ना० । तो हूं होऊ तुझ नार ॥५५॥

तब द्रढी भावी राय कहे ए । ना० । वात करि धरी बेद ॥
राज विना किम कीजीयिए । ना० । बरस गांठना भेद ॥५६॥

राय कहि ते विध कहोए । ना० । कीजि अमणधार ॥
महोछवि तह्यानि बधावीइ ए । ना० । कोटि घालीयि फूल हार ॥५७॥

तब नगर लोकनो हो तरयुए । ना० । लोक अमें अपार ॥
रत्नायिहार रच्यो वलीए । ना० । पास सरचो विचार ॥५८॥

वली एकव्रत मांनीयू ए । ना० । तंतू व्रत एम जाण ॥
तांत भांणी तह्य बांध सू ए । ना० । नदी कांठे दीऊ पग झांल ॥५९॥

राय रीझ्यो सामग्री मेलीए । ना० । अंगूठा कंठसू तदी कंठ ॥
हसतीयि रायद्रुढ बाधीयो ए । ना० । पायहण्यो तेणे उलंठ ॥६०॥

पोतें तीलक करी बधावीयो ए । ना० । कंठे घाल्यु पास हार ॥
कंठे घाली ते ताणीयो ए । ना० । पास घलि बिहठो ते बार ॥६१॥

तब राय नदी माहि नाखायो ए । ना० । गई रत्ना पांगला पास ॥
चालि वीहिलो हवि जाईयिए । ना० । मम चूकसनीज आस ॥६२॥

तब ते शीयि भाण्यो टोपलो ए । ना० । पांगलो बीर पेर लेय ॥
गाम गाम भमती फरि ए । ना० । सती सती एह कहिए ॥६३॥

लोक मानि अम्वानीया ए । ना० । पग पीसें बीर कुंकुमाय ॥
भली भली गोली भणिए । ना० । केता कहि माव जाय ॥६४॥

मायाबिणी मुख भोगविए । ना० । पांगला सू दीन राति ॥
लोकय माडि करुन दीयिए । ना० । ए रही अहीयि बात ॥६५॥

तांत ओडी तेह माछले ए । ना० । राय तरी पाम्यो पार ॥
मंगलपुर राज पामीयो ए । ना० । राजपालि वीरा नार ॥६६॥

रत्नाआवी तेणि पोरें ए । ना० । लोक पाम्यो आचंभ ॥
राजभुवनें तेडी वलीए । ना० । बोली ते करी दंभ ॥६७॥

राय बोलि ते उलखीयिए ।ना०। सही म सती यिम जाण ॥
भेव कही वीरत्न हवो ए । ना० । संसार दुःख घनें आण ॥६८॥

चरीत्र चीतयू वीरवती तणू ए । ना० । राजप्रहुँ मनमिन साह ॥
वारित्री तस सुत दत्त नाम ए । ना० । वली भूमि पुहपुरी माहि ॥६९॥

वीरवती कथानक

आनंद साह तिहां वसिए । ना० । मित्रवती तस नारि ॥
तस पुत्री सु वेवाहयोए । ना० । दत्तनामा कुमार ॥७०॥

वीरवती नाम तेह तणू ए । ना० । सुखि रहि परीवार ॥
एक समि साहा घरि गयो ए । ना० । धन पच गयो अपार ॥७१॥

दत्तकुमर दुःखी हुयो ए । ना० । पीहरि मूकी नार ॥
धन कार्जे ते चालयो ए । ना० । रत्नद्वीप तेणी वार ॥७२॥

वीरवती मन्या करे ए । ना० । पाप कोई विकराल ॥
अंगारक सूं सुख भोगवि ए । ना० । ए बनी वसि घणी काल ॥७३॥

व्यसनी चोरी करंतणो ए । ना० । धरयो ते कोटवाल ॥
सूली दीधु ते पापीयो ए । ना० । पाप फल्यो तवा काल ॥७४॥

वीरवती नो जार सही ए । ना० वीरवती मोहि जाय ॥
तेह मलवाविण तेहनो ए । ना० । जीवन जाय वरवाण ॥७५॥

तेणि काह्यम्यु वीरवती प्रति ए । ना० । तुझ विण प्राण न जाय ॥
वीरवती मलवा तणो ए । ना० । चींतवें तव ऊपाय ॥७६॥

तव उद्यम करी आवीयो ए । ना० । वीरवती भरतार ॥
सजन सहु आनंदीयू ए । ना० । हुउ ओ प्रोहोणा चार ॥७७॥

निशि तेहू सूतां सेजडीए । ना० । सूतो नाहू सहेय ॥
वीरवती चाली जार मलीए । ना० । हाथें खडग धरेय ॥७८॥

सहुडम्बह चोर कौतकी ए । ना० । एसी वेला ए नार ॥
कवण ठाम जायिसे चोकं ए । ना० । पूठि चाल्यो तेणी वार ॥७९॥

मध्यान चायेसंक सही ए । ना० । वांसे नो फेरयु बाकंम ॥
वस्तीक वांसली चडाईपडीए । ना० । मदनाईमि पत्ता लग्ग ॥८०॥

तेणें मसाण माहि वेईए । ना० । जारवें तन्म पोहोचाय ॥
उपेर ऊपेर मडा धरीए । ना० । जार आलगी जाय ॥८१॥

जार कहि मूं बन करीए । ना० । तेह मुखें अधर देयंत ॥
जीव गयो तेह चोर नु ए । ना० । जीकाया मुख तेह दंत ॥८२॥

पगथी मडांव सीचक्यां ए । ना० । पडी बोले ते वार ॥
होट चोरनें मूखें रह्यो ए । ना० । नारी आवी घर बार ॥८३॥

नाह कहू ने सूती अणी ए । ना० । करी उठी पोकार ॥
ईणे होठ मझ खड कीयो ए ।ना०। हुवो कोलाहल अपार ॥८४॥

परभातें राय जाणीयूं ए ।ना०। वीरवती भरतार ॥
वीरवई कही काढयो मारवाए ।ना०। नव्य कीयो न्याय विचार ॥८५॥

तब चोरें राय वीनव्यो ए । ना० । देखाडयो मंत्री छेव ॥
नारी चरित्र को नव्य लहिए ।ना०। कह्यो हुवो जे भेव ॥८६॥

तब रायें सेवक मोकल्या ए । ना० । चोर तणूं मुख जोय ॥
उष्ट काढी रायनें देखाड्यो ए ।ना०। आचंभ पाम्या सहू कोय ॥८७॥

नारीनें दंड कीयो घणो ए ।ना०। साहूनें दीधूं मान ॥
गोपवती चरित्र वीतवूं ए ।ना०। भारीहल सुणो सुजाण ॥८८॥

गोपवती कथानक

वर ध्यान देश छि रुवडो ए ।ना०। पलाशग्राम पुर नाम ॥
सिंह बल क्षत्रीति वसे ए ।ना०। तस नारी अभीराम ॥८९॥

गोपवती नाम तेह तणूं ए ।ना०। रुपसोभाग अपार ॥
सिंहबल क्षत्री तिहां गयो ए ।ना०। सेवा काजि विचार ॥९०॥

पदमपुर त्यांहा थी वेगल्यूं ए ।ना०। नृसिंह सेन तिहां राय ॥
वल्लभा राणी तेह तणी ए ।ना०। पुत्री तेहनें गुण ठाय ॥९१॥

सुभद्रा छिनाम तेह तणूं ए ।ना०। सोहि भली हूी अपार ॥
सिंह सेवानि आवीयो ए ।ना०। सहज बहू कुमार ॥९२॥

नृसिंह सेननें भेटीयो ए ।ना०। रायदीधं बहू मान ॥
गाम ठाम दीधां भला ए ।ना०। कुंमरी दीधी निधान ॥९३॥

ते सार्थे सुख भोगवि ए ।ना०। वीसरयो ते नीज नार ॥
दीवस घणे तेणी जाणीयूं ए ।ना०। नाह तणो विचार ॥९४॥

तब ते कोप चढी घणूं ए ।ना०। आवी तीहां ते जोय ॥
भेद वाल्या सहू नाहना ए ।ना०। गोपवती क्रोधी होय ॥९५॥

घर उपरि चढी करीए ।ना०। कतरी ऊरडी मांहि ॥
सोच कसीर छेदी लेईए ।ना०। शिर आवी निज ठाहू ॥९६॥

सिहुबल तब बाबीबीए ।ना०। नारी नूं वीर बन्ध दीठ ॥
कमाव दीधा वेसी करीए ।ना०। बलि आवंम पईठ ॥९७॥

आलमूंठमेर आवसि ए ।ना०। इम काढी नाहाठो ठाम ॥
चकित थयो मनि चीतवे ए ।ना०। आव्यो ते सिव ठाम ॥९८॥

नारी कपटि वीनय करे ए ।ना०। स्नान भोजन प्रकास ॥
ममता कोल करें करीए ।ना०। रात्र आवंज विचार ॥९९॥

तब ते मोषवती वदिए ।ना०। धन न आवि नाथ ॥
इम कही सिरमांहि ठवीए ।ना०। हवें अमो आवनि साथ ॥१००॥

पोकर करतो तब ना सभु ए ।ना०। हुलावी काढी तरवार ॥
सोर करंती रोवती ए ।ना०। कोलि हुयो भरतार ॥१०१॥

नारी नूं बांधूं मावयो हुतो ए ।ना०। ते माटि मारयो आस ॥
इम कही हर हर कही ए ।ना०। वीहा बाहि बली दुःख पाया ॥१०२॥

वस्तु

एम चींतत एम चींतत । गई बहु रात ।
नारी रमी पापी प्रथमसूं । सूती सुख पंजर पइठीय ।
मन कारण सुख दुःख तणं । पडम एह भावंत मीठीय ।
पछे लीमल तव लमी । कयूं चेतनूं सूं अपार ।
इम रजनी भणी नागमी । नारिचरित्र अपार ॥१॥

भाषा–सोल सयम गामी तमी

प्रभात वर्णन

मधुप गुंजित कुमुदनी सूं रातो । चांदलो जाणे नींचि पथें जातो ॥
रजनी नारी अति चतुर सुजाणी । चंद्रमूं कीजाप्रि कलंकी जाणी ॥१॥

चंद्र भांखो नमतो हुयो पाए । अंबर अति बलयो न मनाए ॥
जाणी नारी कीहो कोलिर साथ । चंद्र रह्यो इम सही नीज ठाय ॥२॥

जाली रात्रि रोती चकवई बीणी । कुमुदनी कमलणी भणी प्रसीनी ॥
पारके दुःखे सजन दुःख पावि । दुष्टनों वाक काज हलूं न आवे ॥३॥

वायु वाजि सुगंधी भीणो । कमल परागनें चार्ने कीणो ॥
नारी भणी वेर खुलेंव ओखो । पेढ पेर पंखी ताक लघूणो ॥४॥

पूरब दिस कांई कांई होई पीली । रवि आवि बाट पीठी करें भोली ॥
तारा खीण थया थया जाणे । उत्तम हीन राय थेर बखाणे ॥५॥

थिर थिर दीवा कांई गया सोहि । भीबंन गुण जिम जन तणा मोहि ॥
थिर थिर काम कतूहल जोता । ऊं जागरणा कीधा सीस डोलंता ॥६॥

सूर आवसे तहां सल थया सोम्या । रवि न करे थवनें थया खोम्या ॥
वाजे विविध वाजित्र रसाल । तेणि वाज्यो बली परभात काल ॥७॥

प्रबल बीरुद बुझि बोलि बंदीयण । गीत गंभीर गुण गावये गायण ॥
बार बांध्यां मात्ता हाथीया डोलि । मद लोभी भमरा भला बोलि ॥८॥

पायगे थिरथिर हय रहा हींसि । सार सकल आगल पडया दीसे ॥
सूर ऊग्यो जाणे कुंकुम रोल । पूरब दिसि थालडीरंग घोल ॥९॥

अथवा उदयगीरी रातूं वन । पाकूं दाडिम फल जाणे विचित्र ॥
सिरिवरें वानरा लेवा धाय । अरुण हाकंतो दु:खीयो थाय ॥१०॥

देवांगना पील्यो पूज्यो गिरिठो । उदयगिरि रवि राय बईठो ॥
रातां किरण करी सिरसूं प्रचार । सींदूर लेपता छेत राया पों तार ॥११॥

रांडी सिरसिया सम लेखें । लोक फोकि कुंकु करयो देखि ॥
रांडा एग मंडन ए करती । कुहुन कुहु किम नही व्यभिचरती ॥१२॥

सूर ऊगि पणि दुर्जन अंधा । प्रण मनगुण बोल वातणा धंधां ॥
दान पूजा धर्म सुजनें कराय । इम ऊग्यो रवी जाणीयो राय ॥१३॥

प्रात:कालीन क्रियायें

उठीअ जिन गुण चिंतन कीधूं । नीवोधीयि दंतधावन कर दीधूं ॥
मंगल स्नान आदि आचार । मुकुट आदि कीधो सणगार ॥१४॥

सबे सणगार सूं आवीय नारि । अमृता देवी कमल मुखपोम वारी ॥
कमलधाय मोयि पडी विचीत्र । कूमऋतु असंभम नारी चरित्र ॥१५॥

मने बीलखो पण भेद न दाखूं । दीसा तणूं मन केहेन कहूं भाखूं ॥
मंगल तिलक मानयि वधाव्यो । राज मंडील सभा माहिहूं आव्यो ॥१६॥

यशोधर का राजसभा में बैठना

रयण संघासणे बेठो तेणी वार । राय राणा मंत्री कीध जुहार ॥
जैन उपाध्यायनि दीधू मान । बेठो आसनें तब कीधूं आसमान ॥१७॥

तत्त्व पदार्थ की जिनवाणी । ओपसी सांभ सहित सुखकारणी ।।
दीक्षा लेवानों चीतु उपाय । कुंवरनि लेवाकी निज ठाय ।।१८।।

चन्द्रमती का आगमन

तीणि अवसरें चन्द्रमती माय । मावती देवी हूं लागो पाय ।।
दक्षण आणि सिंघासणि बेठी । आसीस दीयि सुत देवी संतुठी ।।१९।।

जीवतु नंदन सुत चीर काल । मंगल नित नित होऊ विसाल ।।
जयो जयो सुत परक्रमें पुरो । सुन रक्षा करो जगतो सुरो ।।२०।।

चन्द्र सम सोम्य तुम्ह जय करो चंद । मंगल नित नित करो आनंद ।।
बुध त्रिभुवनपती करो तह्म रक्षा । गुरगुरुशुक दीयो शुभ शिक्षा ।।२१।।
राहु सनैश्चर पीडा निवारो । केतु कल्याण सदा विस्तारो ।।
हरीहर ब्रह्मादीक सहु देव । दीयो आयुष्य घणों तुह्म देव ।।२२।।

सकल ताहारो अरी अरण भयहारी । जयो जयो राज प्रजा सुखकारी ।।
राज ताहारु जयो सिंधु मर्याद । तूं चिरजीवो सुत आसीर्वाद ।।२३।।

दोहा

दीक्षा लेवा उपायने, वितथ वचन विस्तार ।।
माय आगल में बोलयूं । आप वचन मनधार ।।१।।

यशोधर द्वारा रात्रि स्वप्न का वर्णन

तह्मे जे आयु घणूं कह्यं, किहां थी आयु विसाल ।।
रातें सपन में देखयूं, राक्षस एक विकराल ।।२।।

हाथ त्रिशूल वीहामणों, बोल्यो करकश वाण ।।
कुटंब सहीत तुझ क्षय करूं, वचन कह्यूं मुझ जाण ।।३।।
दीक्षा लीधियों जीव तरणी, तुमकूं आ जीवंत ।।
तेह थकी दीक्षा लेयसूं, किम मुझ आयु महंत ।।४।।

चन्द्रमती द्वारा देवी पूजन

चंद्रमती तब बोलयूं, देवी कोपी सुत ।।
विघन कुम्मटे ए मटता, सपन देखाति विचित्र ।।५।।

पूंजी आयुंधा तहीं, कुंड जयनी जबी जोत ।।
कालीं कात्यायनी तही, कुल देवी अहु सोच ।।६।।

ज्यूं हो तेह याणो नहीं, समकीत करयूं काज ।।
करो जिन धर्म सदा करो, केम चालि राज काज ।।७।।

देवी पूजा कीजिये, होइ विघन विनाश ।।
माई मंबा ए कही, तूठी पूरि प्रास ।।८।।

छाग महीष आदि जीवडा, बल दीजि सही राय ।।
आयु वाधि राज विस्तरये, विघन तेहि घटी जाय ।।९।।

साधुश्रीपरमेष्ठिनः सकरुणा षड्जीवरक्षाकरा ।
आत्तीयद् व्रतगुप्तिसत्समितिका षड्‍क्रियाः सात्विकाः ।।

लोचास्नानविचेलको स्थितिमुखो पूजद्विजंकाशना ।
श्रीदेवेन्द्रसुविवेकयुतपदः कुर्वंतु वो मंगलं ।।१।।

इति श्री यशोधर महाराज चरिते रासचूडामणी नाम
काव्यप्रतिछदो भूदेव कवि श्री विक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते

कामकेलिस्त्रीदुश्चरिता दर्शन शोर्यान्वित
सज्झर्णनप्रभातवर्णनो नाम पंचमोऽधिकारः ।।५।।

षष्ठ अधिकार

भास हींडोलडानी

यशोधर द्वारा देवी के सामने बली का विरोध करना

वचन सुनी हू बोलीयो; मात सुणो मुझ वात ।
ऊतम कुलना ऊपना हींदोलडारे । केम करीयि जीव घात ।।१।।

उतम मध्यम कुले कह्या, जीव हिंसा ना भेव ।
उत्तम जोई हिंसा करे ।ही०। उत्तम गुण होए छेद ।।२।।

जीव हिंसा वीघन टालि । ए मुझ वज्र समान
पर ना प्राण विघन करे ।ही०। विघन विशेष होंयें मान ।।३।।

दीन दुखी जे बापडा । अन्न वस्त्रादिक रहित ।।
परभव जीव बध्या तणां ।ही०। फल वाण्यो इह चीत ।।४।।

प्रांधलां बिहिरां पांगलां । मूगा महिला जेह ।
जिनवाणी मांहि इम कह्या ।ही०। जीव हिंसा फल एह ।।५।।

कोढी करुपा रोगीया । इष्ट वियोगीया बेह ।
जिनवाणी मांहि इम कह्या ।ही०। जीव हिंसा फल एह ।।६।।

अभिनव कांचि रोम केस टलि । अथवा कस्तूर रोम काज ।
ब्राह्मा उत्तम आणता ।ही०। अमेध्य कहो किम काज ।।७।।

विघन वारवा कारणें । न करू हींसा कर्म ।
वचन सूणी माय बोली यूं ।ही०। पुत्र मोह्यो जिनधर्म ।।८।।

निः कर्म मार्ग बल गयो । न लहि वेदना भेद ।
कामें करनें जीव हिंसवां ।ही०। नही होये धर्म नु छेह ।।९।।

जीव हिंसा धर्मह होय । इम कहि खोटा लोक ।।
दान पूजा तप व्रत कीया ।ही०। जीव दया विणु फोक ।।१०।।

मुझ सूं आग्रह घणो करयो । एक जीव हणवा जाण ।
खडग काढ्यो तब आपणो ।ही०। देवामें आपणा प्राण ।।११।।

राय मोटे मुझ कर थकी । लीधो तब ते कृपाण ।
बिलखी थई माय एम वदे ।ही०। सांभलि पुत्र सुजाण ।।१२।।

चन्द्रमती द्वारा आटे के कुकड़े का वध करने का प्रस्ताव

मात पिता वचनहतणो । भंगकीधि हुई पाप ।
पीठ नु दीजि कूकडो ।हीं०। जिम टालि सोक संताप ।।१३।।

लाजि हूं चुनि रह्यो । सांभली दीन वचंन ।।
वीनय करी मन गह वरयो ।ही०। नीगम्यु धर्म रतन ।।१४।।

पीठनु कूकडो करावयो । चीत्र वीचीत्र अपार ।।
देवीमठ हूं चालीयो ।ही०। माय सहीत तेणी वार ।।१५।।

डम डम डमरू डाकलां । खडग तणा झबकार ।।
रण काहलवली वाजतां ।ही०। पोहोता देवी मठ बार ।।१६।।

अश्वन मास प्रभु आलको । अष्टमी मंगलवार ।।
देवी नमी हूं बोलीयो ।ही०। बली लेई करो जयकार ।।१७।।

खडग काढी कुकडो हण्यो । सबल हुवो असार ।।
आखे मुझ जि देवरी ।ही०। देवलें दुर्लभ नार ।।१८।।

माय कहे ए आखाका । लीधे होय कल्याण ।।
जे जे मार्ग मिथ्या कह्यो ।ही०। तिमि करयो मि अजाण ।।१९।।

जेहवीं होय भवितव्यता । बुध्य तेहवी होय ।।
कर्म आधीन प्राही जीवडो ।ही०। पापकरंतो न जोय ।।२०।।

कुंमर दे राज निपजावी । रोप्यु धर्म भंडार ।।

रानी द्वारा यशोधर से प्रार्थना

तप लेवा जब चालीयो ।ही०। तब आवी ते नार ।।२१।।

तेह्यं तप लेवा चालवा । मुझ नें सुं की लाज ।।
एकलडी मोरघार में ।ही०। मझ घरि रहें कुण काज ।।२२।।

एकलडा केम जाळे सो । मुझनि नांखी संसार ।।
हु तह्य सरसी तप करुं ।ही०। सफल करु अवतार ।।२३।।

मझ ऊपरि तह्य दया घणी । वचन न लोपु एक ।।
मऊ मंदिर भोजन करो ।ही०। पछि तब लेसुं वीवेक ।।२४।।

कुअर तणुं राज जोईनि । क्षमा तम कीजे राय ।।
पछि बेहू जरण तप लेसुं सही । इम कही लागी पाय ।।२५।।

पतिव्रता जे कामिनी । कंत सुं तप लीधि सार ।।
तप करी फल हुं मागसुं ।ही०। भव भव तुम्ह भरथार ।।२६।।

आज तह्य स्वामीनुहो तसी । छे हेलुं यमण यमो राय ।।
माय सहीत जमो मन रली ।ही०। प्रभाति आसुं वनठाय ।।२७।।

भोजन आन्या दीजियि । कीजीयि करुणा एह ।।
माया वचने हु मोहियो ।ही०। मान्युं वचन वलीतेह ।।२८।।

स्वपन न दीठु इम लेखवु । नीसी दीठुं जे अन्याय ।।
नारी माया वन माँहि ।ही०। पख्या कवण न भूलाय ।।२९।।

राय सहीत हुं चालीयो । भोजन काजे चंग ।।
जाणे जमेंहुं तेडीयो ।ही०। नारी मंदिर गयो रंग ।।३०।।

रानी द्वारा विविध पकवान बनाना

हरखीत हुवी मायावनी । स्नान विलेपन दीध ।।
कनक थाल हेम बेसणुं ।ही०। प्रीसणुं हरष सुं कीध ।।३१।।

लाजा सेव सुंहालडा । फेणी सेंजोरी सार ।।
घेवर साकर फेणीका ।ही०। हेसमी लापसी अपार ।।३२।।

पूडा वडां मांडा वेडमी । घृत वली शाक अनेक ।।
माय सही जमतु हवं ।ही०। पण देखुं वीलख वीवेक ।।३३।।

आयसुं पाछमुं भाग करी । जासे करयो मुझ छेद ।।
बधुकी बुध्य करी रही ।ही०। बेहू मारवा किम भेद ।।३४।।

विषय सहित सुदर्शन कहि । आवी साहामी बाल ॥

विषयुक्त लाडू खिलाना

लाडू कर्यो मावणो ।हीं०। मोकलयो मुझ मात ॥२५॥

माहु बंधीजे मावरे । ते सही नारि कुनार ॥
पीहर केरी सूखडी ।हीं०। श्री राजनि अधीकार ॥२६॥

प्रीछु जो परवण्यां होय । हसी करी प्रीसो तेह ॥
बाई जी तह्मे आरोग सो ।हीं०। थोडो एकलीयो एह ॥२७॥

एम कही मायने मूंकयो । बेहु जमया मने रंग ॥
समय समय विष व्यापयूं ।हीं०। दीसयूं अमि मुझ अंग ॥२८॥

राजा का सिंहासन पर जाकर बैठ २ चिल्लाना

चतू करी हूं उठीयो । बेठो सिंहासन जाय ॥
बंद बंद करी ओमि पडयो ।हीं०। तव नारी आवी धाइ ॥२९॥

राजा की मृत्यु होना

वस्तु

धाई आवी धाई आवी । तबहते नार । रे रे कंत कसूं हवूं ।
इम कही धरे वचन धरी धरी । केश कलाप विस्तारयो ।
धसमसीती पडी मुझ ऊपरि । आसू वेव नीलकाल जि ॥
दंति कठ पीडेय । जीव गयी तेणि खणि । नारीयस सुखी तेय ॥१॥

राग धन्यासिरी

रानी द्वारा विलाप करना

वणझारे तव ते नारी आण । पामणी मिथ्या तणीं ।वि०।
लेई जसोधर नाम । रोयि ते मायावणी ।वि०। ॥१॥

जसोधर रे हूंवि ए बाल । जसोधर रे । दूर सनो हूं राय ॥
उनयो निवली याऊस्यो । जसोधर रे । राय ए कमलसपी जाल ॥
कुमलाणी ए सूं तुझ बन्यो । जसोधर रे ॥२॥

व्याप्यो हूंवि अंधकार । हुं एकली किम रहूं ।ज०।
वापडी अबला बाल । विरहनी वेदना किम सहूं ॥ज०॥३॥

तई घर जणि विण वेल । डांव अंकल विण किम रिहि ॥ज०॥
तिम सही अबला जनाम । स्वामी विना कहो किम सोहि ॥४॥

विनय विना यम शीष । विवेक विना जम वातडी ॥ज०॥
कंत विना तिम नार । किम हूं सोभु वापडी ॥ज०॥५॥

तारा विण जिम चन्द्र । चंद्र विना जिम रातडी ॥ज०॥
कत विना तिम नार । केम सोहूं हूं बातडी ॥ज०॥६॥

आंखडी विना यामि मुख । अंजन विण जिम आंखडी ॥ज०॥
कंत विना तिम नार । केमहूं सोहूं वापडी ॥ज०॥७॥

दया विना जिम धर्म । श्रावक विण जिम आंखडी ॥ज०॥
कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं वापडी ॥ज०॥८॥

सरोवर कमल विहीन । कमल विण जेम पांखडी ॥ज०॥
कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं वापडी ॥ज०॥९॥

मुकुट विना जेम भूप । मणी विण वीटी कनक घडी ॥ज०॥
कत विना तिम नार । केमहू जीवूं वापडी ॥ज०॥१०॥

मोहुत विना जीम प्रेम । प्रेम विना जिम भेटडी ॥ज०॥
कंत विना तिम नार । केमहूं जीवूं वापडी ॥११॥

दान विना जिम कीर्त्ति । कीर्त्ति विना नर गोरडी ॥ज०॥
कत विना तिम नार । किमहू जीवू वापडी ॥ज०॥१२॥

परिमल विण जिम फूल । फूल फल विण वन जिसो ॥ज०॥
गुण विण हार विचार । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१३॥

पुत्र विना जिम वंश । हंस वीना देह जसो ॥ज०॥
मद विण हाथी जेम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१३॥

वेग विना जिम अश्व । धन विन नवयौवनजसु ॥ज०॥
न्याय विना जिम राय । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१५॥

रामा विण जेम गेह । गेह सुपात्र विना जसो ॥ज०॥
विद्वांस विणा सभा जेम । नारी भव कत विण तसो ॥ज०॥१६॥

कंठ विना जेम गान । ध्यान क्षमा विण मुनी जिसो ॥ज०॥
समकित विण आचार । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१७॥

देवल विण जेम गाम । देव वीना देउल जसो ॥ज०॥
वाच कला विण शास्त्र । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१७॥

लवण विना जिम पाक । घृत विना भोजन जिसो ॥ज०॥
भाव विना शुभ काम । नारी भव कंत विण तसो ॥ज०॥१९॥

सील बिना नर नार । भक्ति बिना श्रीवक जसो ॥ज०॥
गुण बिण उत्तम वंश । नारी जब कंत बिन तसो ॥ज०॥२०॥

एकलडो नर बार । अबलानि नरब नारखीइ ॥ज०॥
लीला भूपाल नरेन्द्र । बोल हवो एक वारजीवि ॥ज०॥२१॥

नाहानको जसोमती राय । दीक्षा दीक्षामण दीधिवि ॥ज०॥
क्षम लव करी बहु साथ । बालो दीक्षा लीधीवि ॥ज०॥२२॥

इन्द्र सभा तुझ काम । सही त्यांहां तु बोलावीवो ॥ज०॥
स्वर्गे महीए हुवो राय । तेह भणी तु मावीवो ॥ज०॥२३॥

हवो तझने स्वर्गवास । दीक्षा भाव तुझनि भणो ॥ज०॥
किम लेता तप भार । कमल कोमल तनु तह्म तणो ॥ज०॥२४॥

तुं थयुं तुझनि नाह । रोग भर्णीतो आवीवो ॥ज०॥
पेट माहि हवु दुःख । औसधू मन न भावियो ॥२५॥

मझ सरज्यो नहीं लाभ । तुं सावर्णी कम्यो नहीं ॥ज०॥
सामी भने वली स्वामी । एहे भी जोग सवि कही ॥ज०॥२६॥

भगतन जन्म वैरी नाथ । ए मोटो रह्यो सोझक ॥ज०॥
वरत करी कहुं नाह । भव भव तुं वर वांछत ॥ज०॥२७॥

समकित धारी तुं देव । देवी पूजा कम करि ॥ज०॥
करुणावंत महंत । जिनवर धर्म सु मनरमि ॥ज०॥२८॥

कपट करयु देवी साथ । दीधो पीठनो कूकडो ॥ज०॥
कोल देवी कोपी ते माट । विषम वेलाकयो कूकडो ॥ज०॥२९॥

चिमजारा । रे पापणी दुष्ट तै नार । रही भोति केतहू तणी ॥
लोक धारवि किहि रूप । मायावणी मिथ्यातणी ॥चि०॥३०॥

सासू मंगुठो देव । मारी नें काहि तह्मो सुं वधू ॥चि०॥
रोग बिना कीहो वाच । जीव तह्मारो कम गयो ॥चि०॥३१॥

गरबपणा माटि जाण । कोलीयो कंठे वेने रह्यो ॥चि०॥
चीक चीक बहु अवतार । जीव तह्मारो कमें सह्यो ॥चि०॥३२॥

कवण देखि हुवि जीव । देवीयो राय नहीं पुन भी ॥चि०॥
बुधि बिना किम होय । स्वस्ति पणुं नर सुन भी ॥चि०॥३३॥

तव हुवो कुकुडवर । मरण यशोधर पामवी ॥चि०॥

राजकुमार यशोमती द्वारा विलाप

साम्भि मोटा राणा राय । कुंवर जसोमति धामयो ॥वि०॥३४॥

हा हा तात तूं भाण । बिरी तिमिर क्षय कारणो ॥वि०॥
हा हा तात तू चन्द्र । प्रजा संताप निवारणो ॥वि०॥३५॥

हा हा तात तू इन्द्र । लीला लक्षणि मंडीयो ॥वि०॥
हा हा तात नागेंद्र । भोग भरयो भलो पंडीयो ॥वि०॥३६॥

हा हा तात सुधीर । रण अगणों रीपू दडयो ॥वि०॥
हा हा तात तू वीर । साधु तणो भय खंडीयो ॥वि०॥३७॥

हा हा तात कल्पवृक्ष । कामधेन चिंतामणी समो ॥वि०॥
हा हा तात तुम्ह दान । बिलखो बनद दिन नीगम्यो ॥वि०॥३८॥

हा हा तात प्रचंड । प्रताप पुंज तुं उत्तमो ॥वि०॥
हा हा पराक्रम पूर । सूर सूर्लि गगनें अम्यो ॥वि०॥३९॥

छत्र भंग हवो आज । राजभार कोण धेर धरयो ॥वि०॥४०॥

मांधाता नले राय । नघोंष सगर आदि गया ॥वि० वि०॥
हरीहर बल चक्रवर्ति । काल आगल कोन व्यहा ॥वि०॥४१॥

खल भलयो तबलोक । हा हा कार नयरे पडयो ॥वि०॥
आकंम्या सहु कोय । यमीतो रायनें जम नडयो ॥वि०॥४२॥

प्रबल वायु जम जाण । दुर्धर सायर खल भल्यो ॥वि०॥
तेम बाजारी लोक । लोटो तब बलोक भल्यो ॥वि०॥४३॥

नयरी लूटीय अपार । लोक बूंबा रव बहू करि ॥वि०॥
फाटि हाटनी श्रेण । बहुटो लूटाइ बहू धिरि ॥वि०॥४४॥

यशोमतीनी फरी आण । नयर लूटातु वार यूं ॥वि०॥
आव्या मोटा राणा राय । राय मरण अवधार यूं ॥वि०॥४५॥

रौद्र वाजि वाजिंत्र । रण काहल बीहामणो ॥वि०॥
बू बा रव हाहाकार । रीर पोकार करि घणो ॥वि०॥४६॥
संस्कार काजि राय । काढीयो तब मोटी परें ॥वि०॥

अन्तःपुर में विलाप

अंते उर ते धार । हा हा कार घणो बिस्तरयो ॥वि०॥४७॥

एक रडि कहीं नाह । एक पूर्वा कही मोधि मनि ॥वि० वि०॥
एके ते हैयुं हृसेय । एक मोधि सूं चीर फाड़टि ॥वि०॥४८॥

एक ते फाडि चीर । नयण नीरें तनु सींचवि ॥वि० वि०॥
व्यरह दावानल व्याप । तनु बलते बालो बूझवि ॥वि०॥४९॥

एक त्रोडि मोती हार । एक ते कंकरण मोडती ॥वि० वि०॥
एक मोधि कूटती हाथ । एक ते आपच मोडती ॥वि०॥५०॥

एक ते चोली चूंथेय । एक ते वेणी छोडती ॥वि० वि०॥
एक सती थाबा काज । हरी हरी कही हाथ जोडती ॥वि०॥५१॥

एक ते धसती जाय । ऊंची थई तनु नाखती ॥वि० वि०॥
एक वलवलती बाल । दैव दैव इम भाखती ॥वि०॥५२॥

विष खाती बली एक । एक कटारी चांपती ॥वि० वि०॥
पास घालती गलि एक । एक खडगि सीस कापती ॥वि०॥५३॥

केटली चाली समसान । चीहा माहि झंपलावती ॥वि० वि०॥
जैन राजा तर्णी वेष । केटली वैराग्य भावती ॥वि०॥५४॥

केटलीक दीक्षा लेय । प्रतिमा अग्यार केटली धरे ॥वि० वि०॥
पांचसि राणी बाल । एणी पिरि बली दुःख करि ॥वि० वि०॥५५॥

जेहनि चाल्या राय । मित्रबली सेवक घणां ॥वि० वि०॥
सांभली मरणनी बात । प्राण गया केता तणा ॥वि० ५६॥

केता कटारी करंत । केता मरंत विषखही ॥वि० वि०॥
केता पडयां चीहा मांहि । माला वाहाला चाल्या सही ॥वि०॥५७॥

केता खडगें सीस छेद । कमल पूजा केता करें ॥वि० वि०॥
केता साथर्मी राय । वैराग्य लेइ दीक्षा धरि ॥वि०॥५८॥

यसोधर हुवो संस्कार । स्नानादिक सहूए कह ॥वि० वि०॥
मोहो कासि मोटा राय । तीरिण जसोमती आतमें धरयो ॥वि०॥५९॥

ब्राह्मणे दीधो आसीर्वाद । राय चीहा हुति करो ॥वि० वि०॥
ब्राह्मणनि दीधो दांन हवें । यसोधरनि उद्धरो ॥वि०॥६०॥

तब जसोमती दीधि दांन । चीता दीधी तब सुख तणी ॥वि० वि०॥
पि काई नब्य तब । दूर चति नहीं वेयणा घणी ॥वि० ६१॥

यशोमति द्वारा दान देना दूहा

ठाम ठाम थी ब्राह्मण मल्या, बहु पेर दान देवाय ।।
धन कांचन कण घृत घणा, मणि वस्त्रादि प्रपाय ।।१।।

गज अश्व रथ गो महीषी, आदि बहू दीधां दान ।।
बछ वाछरडी देवाहेयां, बहु भोजन विधान ।।२।।

भूम्य देव्या ग्रामज दीया, पाप घटादि विख्यात ।।
ब्राह्मण बहू परणावया, लहे नो जसोधर तात ।।३।।

तुला दांन घिर घिर तणा, काल पुरुष यम भात ।।
कृष्णा जिन दासी दीधि, लहि जो जसोधर तात ।।४।।

तिल गुड हेम रूपा तणी, गाय दीधी बहू जात ।।
वृषभ महीष बहू लोह दान दीयूं, लिहिजो जसोधर तात ।।५।।

खासडां घोतीया करवता । जल कुंभहसी वात ।।
नित्य अन्न बहू गृह दीया । लहू जो जसोधर मात ।।६।।

कुंभ कनक केरा करया । भरया सामग्री अपार ।।
राय जसोधर स्वर्ग थी । पामजो ए सुविचार ।।७।।

पणमे कांइ न पामयूं । मारीदत्त सुण राय ।।
दुरगती दुःखज पांमयूं । अचेतनि हिंसा पसाय ।।८।।

इम जाणी सुजनं सवे । त्यजों हिंसा सकल्प ।।
फल उत्तारण फल हनन । पूतलो तेह विकल्प ।।९।।

जीव बध्या ना पाप तणो । कोहो कोण दाखि पार ।।
हणवो अचेतन कूकडो । तेणि वाध्यु ससार ।।१०।।

इम जाणी नीश्च्यु करी । पाल्यो श्रीजिनधर्म ।।
हिंसा पातिक पर हरो । जिम पामो सीव शर्म ।।११।।

सील समूं भूषण नही । समकित सम नहीं रत्न ।।
बंधु नहीं को धर्म समो । करो दयानूं यत्न ।।१२।।

मिथ्यात सम को रीपू नहीं । विष न मिथ्यात समान ।।
ते भणी मिथ्यात दूरि त्यजो । पालो दया निधान ।।१३।।

ढाल गुजरातनी

हेमवंत पर्वत एवं वन का वर्णन

हेमवंत ए पर्वत मांय । नगरी पासि छि गिरिवर ए ॥
गुफा माहि ए सिंह रीछाल । माटता माठा वनचर ए ॥१॥

गजवरणाए । [illegible] कहि समा । दंतू सकेमीरी मोकला ए ॥
गजतणाए कुंभविदार । महीसूं मुक्ताफल ओडता ए ॥२॥

फणधर ए करय फूत्कार । वाघ घणूं बबकती रह्या ए ॥
सूकर ए घूघूंर नाद । डाढ बांकी जम सम कह्या ए ॥३॥

हरिण ए नाहाठडा जाय । बाघ क्रूर बहु घली घणाए ॥
वांनरा ए फाल पसंत । बूतकार करय बीहामणाए ॥४॥

गूंजा ए पढी ठांम ठांम । दव जाणी हरीणी त्यजे ए ॥
सीआलीया ए फालू पोकार । मांस जाणी खग तें भखिए ॥५॥

भीलडीए गूंजा हार । फूल फल काजि वनि भमें ए ॥
भीलडाए कामठा हाथ । भमता जीवनें घणूं दमें ए ॥६॥

टाढडीए पीक्या जाण । वानरा चीस पाडि घणूं ए ॥
घणो ठीव ए उन्ध करिय । तेवि जाणे ए तापणूं ए ॥७॥

घूघूयिए घूहडजाण । समली तींघाणा [illegible] भमें ए ॥
माहोमांहि ए वंस घसाय । दवलागि एह संचरें ए ॥८॥

दवें बल्या ए फूटि वांस । तण बले वन घणूं व्यापीओ ए ॥
तेह वनें ए मोरडी गर्भ । अवतर्यो पापें संतापीओ ए ॥९॥

राजा का मोर के रूप में जन्म

जठरनीए भोगिडुं दुख । नारकी सम्यखिं कुंडे जस्यो ए ॥
मलमूत्र ए वारज्यो अपार । दुख तरसें घणूं कस्यो ए ॥१०॥

मोरडी ए जनम्यो जाण । ताम पंखमांहि राखीओ ए ॥
हूं फेंणह्यो पुष्ट अंड । इहूं फूटि तब तनु [illegible] ए ॥११॥

जीवडे ए पोसतो तन । तब [illegible] कान्यो [illegible] ए ॥
मनुष तब [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१२॥

मोरडीए नाखी खांच। हूं लीधो कांठि सहीए ।।
वाटिए घावतां मोरी। कोटवालें लीधी सहीए ।।१३।।

पारधीनें दीधी माल। ठालु ते घिर आवीयो ऐ ।।
नारीय ए देवे पास। गलुते गच्छ आवीयो ए ।।१४।।

खासे ए मोटा पाहाण। हारणवासीर सीव थयो ए ।।
घालीयो ए चहूटा माँहि ।। कोटवाल मेहूं वेचीयोए ।।१५।।

थोडीए मूलज माठा। हूं राय चहूटें वेचाईयोए ।।
संसार ए मंडपें एम। करम नटावे नचावीयो ए ।।१६।।

कोटवालें ए जसोमती राय। भेट काजे घरे लेई गयो ए ।।
जतननें ए काजे तेरण, पांजरा माहि हूं ठव्यो ए ।।१७।।

कण भखा ए। चणीपीयू नीर। सनें सनें योवन हुवों ए ।।
सोभतो ए मभ कलाय। पचवरण तव अभीनवो ए ।।१८।।

एक वार ए जसोमती राय। मागलहूं भेट धरयो ए ।।
देखीयो ए मभ स्वरूप। मोह राय मनें वीस्तरयो ए ।।१९।।

आमणे ए हीडूं खेलंत। मोती चोकनि मंजतु ए ।।
बोलतु ए मधुरी भास। राय तणुं मन रंजतो ए ।।२०।।

नारीनें ए नेउरि नाद। पाय पाय हीडूं नाचतु ए ।।
ऊडीय ए बेसूं अवास। मेघ देखी घणुं राचतु ए ।।२१।।

श्वान का जन्म लेना

चन्द्रमतीय ए जे मभ मात। मरी करी श्वान हुवो ए ।।
चंचल ए क्रूर अपार। अवतरयो जाणे जम जूवो ए ।।२२।।

यसोमती ए आवयो भेट। रावनें तव मोह ऊपनो ए ।।
घामतो ए बाघनी फाल। पारथ तारखी नीपनो ए ।।२३।।

सो वन ए सांकल कोड। पंचवरण फूल सोहयो ए ।।
दीसे ए अति विकराल। नयण बीहामणो ओपयो ए ।।२४।।

मोर का कुबडे पर आक्रमण

एक दीन ए मोर हूं जाण। अमृतमती अवासि चडयो ए ।।
कूबडो ए राणी संघात। खेलंतो दृष्टे पडयो ए ।।२५।।

झालयूं ए वेर अपार । कउक वेई कुकडो हुण्यो ए ।।
थोंवनाए कीधा प्रहार । मारीयूं वीह्नल कीधो घणो ए ।।२६।।

कटी तणी ए मेकला छीड । मारीमि गांसी बक घणी ए ।।
मोडीयो ए पण तेणी वार । सोजतो नाह ठो मन घणो ए ।।२७।।

कोणीए के ए हुण्यो चमरलें दंड । कोणो कपूरमि दावडे ।।
कोणीए कें ए दीधा दंड । मारयो कोणि हेमदंड वडि ए ।।२८।।

यसोमती ए लाक्यो स्वान । सांकल मोडी ते धावीयो ए ।।
हाहा ए करतो तेण । कंठे धरी धुब चावीयो ए ।।२९।।

जीवडो ए गयो तेणी वार । मोर मुओ राय जाणीयो ए ।।
कर धरीए चोकीयो उतंग । राय वली स्वान हणीयो ए ।।३०।।

यसोमती ए करि बहु सोक । हा हा मोर तूं कहो भावतु ए ।।
हींडतो ए मांगणे बेसंत । तुझ कलाप देखावतो ए ।।३१।।

मोतीय ए रतनना चोक । फूल साथीयारो हों भ्रमणकाए ।।
नाचतो ए तूं अपार । नेउर नाद सोहें नाचका ए ।।३२।।

चडी करी ए ऊंचो प्रवास । मेहो मेहो कुण बोलसि ए ।।
जाणे ए जसोधर राय । आज मूओ एम मन वसे ए ।।३३।।

हे हे ए स्वान कलिष्ठ । इष्ठ एक कोकेंनि मारयो ए ।।
धावतो ए वाघनी फाल । वन मांहि बकारयो ए ।।३४।।

हरीणाए सूणि रहो रांन । तुझ वेण हुवे कुण सांभलेए ।।
ससलाए तू उजाल मांहि । तुझ वीण कोण विचारसि ए ।।३५।।

तेडीयए परोहीत ठास । संस्कार कीधा करी ए ।।
ब्राह्मणनिए दीधलां दांन । उजावनां बेहू बहू फिरिए ।।३६।।

दूहा

जहूमे कांई न पामयुं । पामयुं केवल दुःख ।।
सरचीयि ते पूरन जाणिहि । जे कहि ते सही मूर्ख ।।१।।

कुवेस जाण जाणी तुझि । जीव भाव जनमजक ।।
बेहेली गहवें दुःखडो । जवजाबहूज जाण ।।२।।

मोर का सेहेली के गर्भ में उत्पन्न होना

जणायो मूळें पीडयो । सूल तणी तेन होय ॥
मोरनि भवे जे दुःख सह्यां । तेथी अधीकां जोय ॥३॥

मूंडो तनूं कांठि मरण् । जीव तणो वली आहार ॥
पार्पे पाप ज बाध्यो । मारीबत्त अपार ॥४॥

स्वान का सर्प होना

स्वान मरी सापज हुवो । तेह वनि अती विकराल ॥
बल बलतो भूखो भमे । अनेक जीवनो काल ॥५॥

तब ते मछ नजरें पडयो । ग्रह्यो ने में पूछ ॥
खाधा मांडयो अती बलो । हऊउ तेह बल तुछ ॥६॥

थोडे थोडे खायतां । तडफड करि ते सांप ॥
करि फूतकार चालि नही । नडयो मिथ्यात पाप ॥७॥

तरविरु जीव एक आवयो, तेणि हणयो हूं जाण ॥
पाप फलें वली अति घणुं । पाम्यो हूं दु:ख खाण ॥८॥

वैर ते दुखनीड रुडी । वैर वधारि संसार ॥
वैर ते धर्म विनासणो । वैर दुर्गती दातार ॥९॥

गुण तरु वैर कोठारडो । वैर सुमति वन अग्नी ॥
दयावल्ली वैर हिम समो । तेह भणी वैरम लग्नी ॥१०॥

मन जाणी निश्चो करी । वैर मत्सरसो कोय ।
क्षमा रमा सु रंगे रमो । यम भव भमण न होय ॥११॥

आस अष्ट चोवीसीनी

उज्जयिनी की शिप्रा नदी का वर्णन

उजेणी नयरी ने पासे ।
नदी ऊंडी नीर्मल जलें भासे ।
सीप्रा नाम छे तासे ॥१॥

वेहु तटिय पंच वरण पारवाण ।
ऊपिर कोमल माहि कठण सुं जाण ।
दुर्जण समा वरवाण ॥२॥

सूर्य कांति सूरज में झलकि ।
दीसि कहीं एक नवली झलके ।
मृग धावंता तके ॥३॥

चन्द्रकांति निसि चंद्रने लेजि ।
जल पर वाहु झरण होइ सिहिजि ।
नदी वाधि सखी हेजि ॥४॥

कही एक राता किरण विस्तरए ।
जाणी सीमाल चकोर कही करए ।
जण नाटता फीरए ॥५॥

कहीं एक पीला किरण विस्तार ।
हरणी दव भय न करे संचार ।
भूली तापें गमार ॥६॥

नीलकिरण विस्तरए दीहि ।
चक्रवाक वियोग मुंयविहि ।
निसि समय लेखिलीहि ॥७॥

भीलते चंचुक लीलायि अपार ।
चलतां बाण बलवे ते वार ।
वेधी कही नाथि संसार ॥८॥

तरु फूल रेणु पवन वशें उडए ।
नदीय नीर मांहि ते पडए ।
कनकह उपमा जडए ॥९॥

वनवाडी तेह कांठे सोहि ।
अनेक वृक्ष लता मन मोहि ।
कोए तरु निःफल नांहि ॥१०॥

नदी कांठि तरु फल्या अपार ।
जलिमिसि प्रतिबिंब विचार ।
कर वा प्रति उपकार ॥११॥

तह कांहि चपल वेलांता मच्छ ।
मोती सीपच काढे पुंछि ।
नदि तटि मोती अनुच्छ ॥१२॥

मछ पुंछ कहीयि जल उछालि ।
मकर कपाट सूं जल अफाले ।
बीहींना वानर दीयि फाले ॥१३॥

तीहां थकी मरी सेहेलनो जीव ।
रोहीत मछी गरमें अतीव ।
दुःखें पाडूं रीव ॥१४॥

रौहीत मछ महा तनुं मोटो ।
बहु परी मछ गलंतो खोटो ॥
चपल परिण वर्णं छोटो ॥१५॥

जाडूं गलू मुख छि विकराल ।
अनेक मछ तणो ते काल ।
खेलूं जलि विसाल ॥१६॥

चन्द्रमती जीव हूतो जे साप ।
मरणो दुःख तणो हवो व्याप ।
तेह द्रहि हवो ते पाप ॥१७॥

मछली मरकर संसुमार होना

सींसुमार मछी ने पेटि ।
गरभ वेयणि दु.खीयो हवो नेटि ।
नही क्षण एक सुख भेटि ॥१८॥

ससूमार ते वेणीयि जणयो ।
वाधतां निज कुल सहू हणयो ।
कुपुत्र ते कुल क्षय भणयो ॥१९॥

मोटूं सरीर वदन अति गाढ ।
क्रूर दुष्ट बांकी तस डाढ ।
उदर जाणो गिरि खाड ॥२०॥

जल माहि हूं दीठ फीरंतो ।
ससुमार मुख भरयो तरंतु ।
डाढ वचे चूरत ॥२१॥

राय तणी नृतकी तिहां आवी ।
रमझम करती सखी मन भावी ।
अनेक भूषणि सोहावी ॥२२॥

कुबडी कहीतिय कोमल अंगी ।
पिहिरी चीर चोली नवरंगी ।
संगीत नाच अभंगी ॥२३॥

वासंती मेखला खलकावि ।
चूडी सहीत बांहोडी लहकावि ।
लहकि मधुर गावि ॥२४॥

नदीय देखामें मणुं संमूठी ।
चरणा सूं जलि वेगि पेठी ।
सीसूमारि ते दीठीं ॥२५॥

वदन पसारी ग्रहीते बाल ।
हूं रोहीत ना हाठो ततकाल ।
मूक्यो आवे काल ॥२६॥

राय आगल तब कीधी राव ।
सेवक सर्व जणाव्यो भाव ।
वेगें धीवर तेडाव ॥२७॥

जाल सहीत माछी बहू मल्यो ।
जाल नाखि जलचर खलभलयौ ।
तबहूं कपाटि भलयो ॥२८॥

सीसुंमार मुख थी हूं बांध्यु ।
नदी कपाड लही तब राख्यो ।
चपल पणुं घणुं चाख्यो ॥२९॥

सिसुमार को पकडना

जाल माहि पड्यो ससूमारं ।
कांधी नाठें नासु ते बार ।
टलवल करय अपार ॥३०॥

लाकडि दगडे मूं'कलि मारयो ।
काप्यो लोहि घणुं विदारयो ।
मरण पाम्यो दुःख भारयो ॥३१॥

नगरी समीप आवी उपनी ।
अत प्यार मेर हुवी संपनी ।
मोटी तब नीकली ॥३२॥

मर कर बकरो होना

किहां जसोधर राजानी राणी ।
किहां ए छाली दुःखनी खाणी ।
पाप तणां फल जाणी ॥३३॥

पीठ कूकडा हण्यानां फल भासि ।
मारीदत्त बहू जीव तूं विणासि ।
न लहूं वे दुःख तूं पासि ॥३४॥

दिवस केता हूं रह्यो द्रह माहि ।
जलचरने बहू ग्रसंतो ताहि ।
तब नीपनूं ते चाहि ॥३५॥

अनेक माछी जाल लेई आव्या ।
द्रह देखी नें मनें सोहाव्या ।
जाल नाखी घणूं फाव्या ॥३६॥

तेह जाल माहि हूं पडयो ।
पीठ कूकडा नो पाप ज नडयो ।
तडेनाक्षु प्राछडयो ॥३७॥

मारवा माछी आव्या अनेक ।
तब वृध नसी आव्यु एक ।
म मारो बोल्यो बिवेक ॥३८॥

मि आव्यूं मुझनें मूकेसि ।
गरडोएं को दयालूं दीसि ।
पण राजस हम भासि ॥३९॥

रोहीत मच्छ सह्य ए आणो ।
पितर सराववें जोग्य बखाणो ।
एणि भेटूं हूपिराणो ॥४०॥

रोहित मच्छ का पकडा जाना

तब सहूए मली ऊचली लीधो ।
माछी वाडा माहि नाखी दीधो ।
मच्छ हावें तनूं दीव्यो ॥४१॥

इम कीधि तणु मझह फेरा ।
माकणों पांच ठामे ठाम घेरया ।
हाड तणा ऊकेरा ।।४२।।

मोटा मच्छ वांसानां भोग ।
मच्छ पांसलीनां दीधां थोग ।
सीनीच बेरि कहूं लोग ।।४३।।

आल तणां जिहां मांकण बेसू ।
करंड मोटा मच्छ भरया बेसू ।
नरक पटल पीकीसेसू ।।४४।।

हाड पाथरि थली भोम्य कठीण ।
थलेना छोहयो थणुं खीण ।
करमें कीधु दीण ।।४५।।

भमर पलंक हंसतु ले सूतो ।
फूलसीच पण तनु नवि सूतो ।
करमें हूं एम वमूतो ।।४६।।

भूडकां मोहि करे मुक बात ।
स्वान नाम बामख बवि बात ।
इम आव्यूं मे परभात ।।४७।।

गवथमी नार तणां सती पाय ।
वाजित्र वाहनें नायण माय ।
इम चालतो हूं राय ।।४८।।

हयडा प्रभात एणी पिरि आव्यो ।
पाप तणो परताप प्रमाणो ।
मारीतत मन आव्यो ।।४९।।

दूहा

मरछी सहू मली मुम्कनें, राज भुवन मेरें जाय ।।
राय आपणडूं मेहेलीयो । राज दीधो कलाय ।।१।।

वेद पाठक स्तूत जाणीनि । बालको तेणी वार ।।
मस्तक थापि ते बोलता । राजाजु थुं जयकार ।।२।।

रोहित मछए आणीयि । उज्जल छि शीर मध्य ॥
हव्य कव्य कार्जे कह्यो । उत्तम मछह मध्य ॥३॥

पचवरण तनु दीसिवि । प्रगट चपल भ्रूभंग ॥
साहामी भारिए चढि । एह पवित्र छि अंग ॥४॥

एहवि रूपि नरहरी । वाल्या केद वार ॥
अंग सहीत इम आणयो । आहारत्र माहिंछि वीचार ॥५॥

श्राद्ध कीजि जो पीतरनूं । कीजि ब्राह्मण भोज्य ॥
अखय तृप्ती पीतरनि सही । स्वर्गे जसोधर राज्य ॥६॥

तवहूं रोहित पाठव्यो । अमृतानि घिर जाए ॥
माय प्रति जसोमती कहि । रोहित मछ वखाण ॥७॥

पितर काज ए कल्पीयि । सराध कीजिए जे आज ॥
चन्द्रमती साथि तृपती होय । जेम जसोधर राज ॥८॥

रोहित मच्छ को तल तल कर मारना

तव तेणीयि पापणी । पूंछ छेधूं ततकाल ॥
हीग म्यरी मीठूं मली । मूख भरीयूं वीकराल ॥९॥

ताता तेल माहि तल्यो । फेर फेर पाडू रीव ॥
नारकी पिर दुःख देखीया । कष्टि गयो मुझ जीव ॥१०॥

कुंअरे ते मछ कल्पीयो । खाधो लेइ मुझ नांम ॥
पिंड पाडी किहि चन्द्रमती । जसोधर स्वर्गे ठाम ॥११॥

माहारी तृप्तानि कारणि । हूं खंड खंड कीयो जाण ॥
आपनि आपज कलपयो । जो जो लोक अयाण ॥१२॥

अहो तो काई न पायूं । मारीदत्त सुण वात ॥
फल पाम्या पापज तणां । कीधु ते जीव घात ॥१३॥

इमजाणी म कलपसो । मूंआ ने सहू कोय ॥
गतो अतर जीवनि सही । संबल सुकृत ज होय ॥१४॥

ढाल हेलानी

हू रोहीत इम आण । विविध वेदना पामी मूंओ हेल।
चन्द्रमती नुं जीव । संसूमार मरीने आवी हूओ ।हेल।१।

संसूमार का बकरी होना

तेहूनि कूखि हूं धंग । गरभ उपयो दुःखि भरयो ।हेल।
गरभ तणां तणां दुःख । जनम्यो मल मूत्रि भरयो ।हेल।२।

वृधि पाम्यु हूं धंग । अनुक्रम यौवन पामयो ।हेल।
मद करी तनु दुर्गन्ध । धूतकार करता दिन वामयो ।हेल।३।

मायनो जीव वली माय । छाली सूं संगम कियो ।हेल।
दीठु बडेरे छाग । सींगि करी पेट बींधीयो ।हेल।४।

बकरी मर कर फिर बकरी होना

मरी करी तेणी वार । तेह ज छाली गर्भि उपनो ।हेल।
आपो पानि वीर्य । ते माहि आपि संपनु ।हेल।।५।।
जूउ जूउ कर्म वीचार । पीति पीता पुत्र स्त्रि हूंवो ।हेल।
धिक धिक गति तीर्यंच । मातप्रति भाव कीउ जूवो ।हेल।।६।।

वीखवा वाहीयो जीव । सुभ असुभ जाणी नहीं ।हेल।
हृदय तणा सगा नेह । काम अगन लागि सही ।हेल।।७।।

चतुरन जाणि वीचार । तु पसुनि वीवेक हुयि किम ।हेल।
पसु पामी मिथ्याती । एनहणे भव नीस्फल गम ।हेल।।८।।

देवी काजि दीन अचेतन । तेह पापि बांधीयो ।हेल।
पांमी पसू अवतार । ते पाप बीज यिम बांधीयूं ।हेल।।९।।

विखय जलि सींचाल । आतमा मडप वीस्तरि ।हेल।
पाप वेल यिम जाण । दुःख फल वेई नीस्तरें ।हेल।।१०।।

गरभ मोटु हुवो जाम । ताम राजा पारध चढयो ।हेल।
जीवह हणवा काज । परजीव तेह हाथि नव चढयो ।हेल।।११।।

भमतो भमतो जाण । नगरी समीपि आव्यु फरी करी ।हेल।
राय तणी तेणी वार । दृष्ट पडी छाली चरी ।हेल।।१२।।

तेह उपरि मूक्यू बाण । जीव गयो तेहनो सही ।हेल।
गर्भ जु पाम्यो दुःख । संसारिको कहि नु नहीं ।हेल।।१३।।

राय छाली दीठ । करणारी चीरि जोइ पछी ।हेल।
ते देखी तेणी वार । रायनि मन दया पछी ।हेल।।१४।

पेट पीरी करी जाण । हूं काढी पाल वाबीयो ।हेल।
अयोनी संभव माट । मळ मतन वीमेख कीयो ।हेल।।१५।।

ध्याव्यो मनेरी झालि । दिन दिन हूं मोटो थयो हेल।
लसकि मोटा कान । लांबू मुख भव पामयो ।हेल।।१६।।

विवि बोल नु बाणु । येसा बरतु वन माहि फरं ।हेल।
हवि जाणु छूं भेद । तेरिण भांवे साधू न उच्चरं ।हेल।।१७।।

बेछे जीवनि साथ । पुण्य पाप सही जाणयो ।हेल।
अवर कुटंबनि आय । डाहा मोह म आणजो ।हेल।।१८।।

जसोधर सरखो राय । बोकडो थई वन मांहि भम्यो ।हेल।
कीधो मिथ्यात पाप । तेणे भव मांहि सही एम दम्यो ।हेल।।१९।।

एक बार जसोमती राज । राज काज चिंता वामीयो ।हेल।
देवी काजि जाण । महीष तणो बल मागीयो ।हेल।।२०।।

सहजें सीझ्यो काज । मूढपणो नीरच्यो वरी ।हेल।
महीख आण्या अपार । देवी आगलें हींसा करी ।हेल।।२१।।

मूढ मिथ्याती अथ । एमहणे जाणो सरखां सही ।हेल।
हींडि आप मुराद । धर्मनु मर्म न सुनही ।हेल।।२२।।

ज्ञान नयन विहीण । डगि डगि संकष्ट मांहि पडि ।हेल।
भव मांहि भमे अपार । सूधो मारग नही सपडे ।हेल।।२३।।

हणवा महीख ते लेब । राज भुवन मांहि आणया ।हेल।
सूपकारें तेणी वार । केलीम ते न बखाणया ।हेल।।२४।।

कूतरा काग अपार । ए पाका विटलीया ।हेल।
केम पचवा अधिकार । ए ऊचीष्ट न सोचवलीया ।हेल।।२५।।

ब्राह्मण तेड्या तेणी वार । वेद स्मृती जाण बाभीया ।हेल।
पूछयो महीष विचार । बोलता राय मनें भावीया ।हेल।२६।।

अजोनी संभव जे आय । ते शु थे जो एहवें सही ।हेल।
तो ए मारवि जोय । जाह में एम स्मृती कही ।हेल।।२७।।

राय बोल्यो तेणी वार । अयोनी संभव जाणो कही ।हेल।
केमें थयो तेह । तेणे ए सुभवो हम सही ।हेल।।२८।।

वेगि मरू मरावेय । तू बावना महीक सवे ।हेल।
कूबड़ा महीक विचार । मारिवस कर्म एम परज्यौं ।हेल।।१९।।

ते महीक पचाव । खाधि तेह बहु मरी ।हेल।
राज भुवन मझार । हूं तेई जई बांध्यो बली ।हेल।।२०।।

चीतवूं मन मझार । के मोर्ड नहीं पापणी ।हेल।
मंच उठी छि अपार । दासी किहिए पाछा तणी ।हेल।।२१।।

बीजी कहि तेणी बार । माझी वाली राणी लोभणी ।हेल।
ऊपनो तेहथी कोढ । ते संघाय सणी सही ।हेल।।२२।।

त्रीजी कहि सणो बेहेन । तहाँ ए भेद जाणो नहीं ।हेल।
राय जसोधर मारी । कूबड़ा साथि संगम करयौ ।हेल।।२३।।

शील महात्म्य

नाह हण्यो विष देय । प्रेम पापि पिकलो ।हेल।
तीणि पापें हुवो कोढ । सरीर सबे गली गयूं ।हेल।।२४।।

सील न पाल्यो जाण । तेह पाप फलें रोग भयो ।हेल।
सही सुख कारण सील । सील संसार सूं तारण ।हेल।।२५।।

सहु गुण सागर सील । सील सील सयल दुखवारण ।हेल।
सरीरह मंडण सील । सील ते दुरगति खंडण ।हेल।।२६।।

निरमल जस होय सील । सील संसार विहंडण ।हेल।
सील त्रीलोकें पूज्य । विकट संकट सील थी टले ।हेल।।२७।।

सीलें देव करि साह्य । सालि पुन जल रीय मलि ।हेल।
इम जाणी नर नार । सील पालो मती ऊजलो ।हेल।।२८।।

जिम लहो संसार पार । सीघ सुख पाम्यो नीरमलो ।हेल।
सील न पालि जेह । नरनारी ते मूरख भण्यो ।हेल।।२९।।

अपकीरत पामे लोक । लोक मांहि बतावीयो भण्यो ।हेल।
उत्तम कुल [illegible] । [illegible] पूकीयो ।हेल।।३०।।

अनेक आपदा कष्ट । जाणो [illegible] कीजो ।हेल।
सरस सुन्दरी कुमार । बार नीम लता [illegible] कीयो ।हेल।।३१।।

त्रिभुवन [illegible] । सील [illegible] ।हेल।
[illegible] । [illegible] सील न [illegible] ।हेल।।३२।।

नीफल हुवो तस जन्म । मनुष भव वली रालीयो ।हेल।
पाम्यो चींतामणी रत्न । तेह सही नांखि गम्यो ।हेल॥४३॥

पामी मनुष्य जन्म । जिणे रूडो सील न आगम्यो ।हेल।
इम जाणी नरनार । सील तणो लोप म करो ।हेल।
जिम पाम्यु बहु सुख । संसार सागर हेलांतरो ।हेल॥४४॥

दूहा

शील नष्ट होने से अमृतमती की दशा

तव तेणि सहू सांभल्यूं । कोढणी तेण विचार ।
जो अंता द्रष्टि पडी, मारीवस्त अवधार ॥१॥

झलतो भरी पगि चालती । राता पगलां पडंत ।
हुवि पगलां पद भरयां । कूबडा चित्त मडत ॥२॥

वीछीयडा झमकावती । जाती कूबडा सूं जेण ।
ते आंगली गली गली पडी । पग्ग थकी पायेण ॥३॥

घूंटी पामी राती हती । मांस गली थयो आस ।
हाड उघाडा दीसीयि । कांकसा चरण न ठास ॥४॥

पग पींडी सडी पडी । नसीथि कीडा कोढ ।
कूबडो चरतु जे हीन । तमास ऊपर करी कोढ ॥५॥

जांघ भरी सासमी हती । घूंटण हुतो सुसोभ ।
हाड ऊघाडा दीसियि । टाकी तणो टल्यो मोभ ॥६॥

नीतंब रयो परीवेसतो । कूबडो वेढतो जन ।
मांस मोटिम गली गई । हाडखाकरणो तन ॥७॥

उदरें नाभी द्रह हुतु । ते पसयि गराय ।
स्तन कूबडो कर झालतु । ते तो गली गली जाय ॥८॥

कंठ संख सभो हुतो । हुवि वातां थस न थाय ।
अधर कूबडो जे चूंबतो । गली गया नहीं ठाय ॥९॥

नाक तेहनो गली गयो । रह्यो डंडी बहु वाम ।
श्रोण ते कुर्बा समी हती । कूबडा श्रोती अघद्रष्ट ॥१०॥

कूबडा पग वेणी गोंहती । ते सीरथू वक्रवर्ण ।
कुंडल जिहां जिहिकावती । गली गया तेह कर्ण ॥११॥

करें कूबडो आलंबती । ते कर रह्या झाव ।
दांत उजाड़ा सवा रिहि । काजल बाढ्ये रोड ॥१२॥

रूप एह वो हुतो किहां गयो । कोढ्योयो सरीर अपार ।
ठाम ठाम कीडा कणवणि । पासि कूबडो गमार ॥१३॥

तेह्न पण दीठुते हवु । हुं हरखो मन मांहि ।
हवि ए बोहूं सरपूं थयूं । देवतणी गत्य चाहि ॥१४॥

महिष मांस में रुचि नहीं । मम बोली ते दुष्ट ।
कुंअर जसोमती मन रली । बलतु बोल्यो द्रष्ट ॥१५॥

अयोनी संभव ए बोकडो । पितरानि कह्यो योग्य ।
जसोधर नि चन्द्रमती । एहि स्वर्गि पामि भोग ॥१६॥

तव तेहि आंच छेदावई । मम्फ तणी मतीव ।
भूष तरस दुःखि पीडियो । पिर पिर पाडू रीव ॥१७॥

ते सेकी सराव करय । मुम्फ निकलप्पु चंम ।
खाधु मातु तुतै मली । सेई मुम्फ नाम दतंप ॥१८॥

मित्थु काई लहूं नहीं । सहवूं तीर्यंच गति दुःख ।
मिथ्यातहि साफल सही । सहूं तृषा बहू भूष ॥१९॥

भास मझवाहुनी

चन्द्रमती नु जीव स्वानमें साप ।
मरी हुवोसिसो मार वे बाप ।
मरीनि आली वे हुवीसणी ए ॥१॥

जसोमती कुंअर हणी वे जाण ।
कलिंग देस हुवो महील वखाणो ।
वरदत्त साह्रा घेर भारवहिए ॥२॥

वरदत्त व्यापारी का महिष

तीयणां दीज मसता छि रातो ।
मोटी मभोडी दीसि मद मातो ।
जातो हाथी सम मलपतीए ॥३॥

थनू मोटुं मुख मोटूं विसाल ।
महिष हूं अकरो मातो काल ।
मावनी नाव ते वड करयो ए ॥४॥

भार भरी बरदल एक वार ।
महिष लाव्यो उजेणी मझार ।
जमण काजे नदीं कंठ रह्यो ए ॥५॥

तेह सहीख तीहां जल मीलि ।
सीस उछालि जल घण लीलि ।
खलो कराड खणि जल करीए ॥६॥

तीणि अवसर राय तणा घोडा ।
आव्या तिहां चपल नहीं थोडा ।
रोडा देता खली नदी तटिए ॥७॥

घोडे एवं महिष की लडाई

बडो घोडो तीणि महीषि दीठु ।
पूरब जनमनो वैर पईठो ।
बैठो जात वैर बखोए ॥८॥

तेह साहामो महीख बसी थाल्यो ।
जठर मध्य तस सींगज घाल्यो ।
माहाल्यो जम वेर वे गलें ए ॥९॥

ततखण रायनि हवू जाण ।
सूपकार बोल्याव्या जाण ।
प्राण मर्यो महीख करयो ए ॥१०॥

महिख आण्यो ते राज दुआर ।
लोह तणा आण्या खीलाची भार ।
पगे दृढ करी बांधीयो ए ॥११॥

चोर चाल्यो ते नाक मझार ।
ऊभू मुख बांध्यु करय पोकार ।
मारबस पाप केम छूटसो ए ॥१२॥

हेठल पोढी अगन प्रजाली ।
तीणि अवसरिं एक बोल्यो हाली ।
बोली लूं ए हीग अगदू मासी ए ॥१३॥

महिष को भून कर खाना

सारै बल करी मेहुली कढावे ।
हेठल अग्नी बली बलाव ।
बलि महीष मारू री मकारिए ॥१४॥

तरसे ते बली नीर पान करंतो ।
मथीक मधी तेरिए लोक भरंतो ।
नरक वेदना जिम दुःख सहिए ॥१५॥

अमेर पापी थलिव कापि ।
सारि जल छाटि दुःख व्यापि ।
पापें फल एहा दाखव्यांए ॥१६॥

पीठनु कुकडु हएयो जोय ।
देवी पूज्यानां फलए होय ।
कोयम करणु मिथ्यात मसोए ॥१७॥

जन्म पर्वो रहयो हूं जोय ।
वेणी परकार रच्य करां रोय ॥१८॥
कोय न सार मम्हारी करिए ॥१८॥

मारज नीरे नीर न पाय ।
अमृतणो सराब करी बहु खाय ।
घणा रासा रावमो होमरचार ए ॥१९॥

ब्राह्मण घणा मली सराब सरावे ।
राय कहि अंजली भरावि ।
न आवि नाम माहारो लेईए ॥२०॥

वाँक अंगूठें पीड पमावि ।
पिडि पिडि बाधि वेचावि ।
मिहिली मस्वारिक बल करूं ए ॥२१॥

बालनु काची कहि एम कहो ।
हाय रायनी माय परतणी लहों ।
जिम करीहु तिम कूआर करिए ॥२२॥

सूत्राणीव नोई मुद्रिका दीधि ।
आध्यात्म संकल्प करी द्विज लीधि ॥
जसोधर पामो प्रिय किहे ए ॥२३॥

मि जोय्यु माहारा तनू साहाम्यू ।
पण आभरण एक नही पाम्यू ॥
दाम्यु दीठु गलि दोरडू ए ॥२४॥

मांस तणा तेणे पिंड पडाव्याए ।
सजन साई मांस खवराव्या ॥
वली वाडवनि ते दीयू ए ॥२५॥

छेदवी छेदवी दीध लुलाय ।
एणी पिर मीन पलादिक खाय ।
नाम श्राद्धा दलेई करीए ॥२६॥

अन्य खाथि अन्य जो तव्य पामे ।
वाडवेलोक चाल्या एम श्रामे ।
कामें वाह्या ते प्रापणिए ॥२७॥

पुत्र जमे माता रही भूखि ।
मात जमें पुत्र थाय दुःखी ।
मूआ थकां कोहो किम लहे ए ॥२८॥

पूरव भव आपणा संताम ।
श्राद्ध करी देतां हवि दांन ।
किणजिमें आपण भूखा सहीए ॥२९॥

एणि दृष्टांतिं पूरव जे मरया ।
पाप पुण्य लेई अवतरया ।
निज करणी सहू भोयवि ए ॥३०॥

गारीदत्त श्रह्मो कांई अपलप ।
मिथ्यात पापि पिर पिर खप ।
दय सुधा अगनें थएं ए ॥३१॥

कुमर तणी हू दृष्टि पडयो ।
जाणे यम मक कालज नडयो ।
कहयो वचन सूपकारनिं ए ॥३२॥

महिल भनि तीहा वेकीजयो ।
वेगसिंए बालाने जाल्यो ।
वाणी सुणी अकलि केई थयो ए ॥३३॥

प्रवच साहि तेणि फिर फिर बाल्यो ।
अचेतन कूकडें जाले वैर वाल्यो ।
जाल्यो महिल सूं भम धरिए ॥३४॥

नगरी बाहिर फलीहा बांकाल ।
घर घणां दीसि तेह पूमाल ।
बाल बरम मस्ती भरयां ए ॥३५॥

भस्ति तणां छि कोडा लाख ।
मोटा मस्ती तणी बार साख ।
पाखल कमरि चरम वीटी ए ॥३६॥

बाप्या ते तणां पसूआ नेस ।
रुधीर मांस करि रह्यां बस क्स ।
कसमसे मन वीठे घणुं ए ॥३७॥

पसूआं करंक दीसि ठाम ठाम ।
भाण्यानि ते वेसणां वेठाय ।
थाय ममोडीना परटलाए ॥३८॥

घूंछ बाहारडी चमर चमराल ।
मांस तणा छन छि बहु ठाय ।
लाख कूलरा करं घूजड़ीए ॥३९॥

सुख काल सनली घणू फरए ।
मांसनें काई में कल कल करए ।
दीसि करी भति बीहामणुं ए ॥४०॥

साग महीस वेहू सर्वे सूमा ।
तीहां कूकडी पेठि घरही बा ।
ऊदर अपन वाघा घणुं ए ॥४१॥

कूकडी तब हुवी नारखंडी ।
बांभाई तब बाभा मंडी ।
ईसां तब तीसरी पखपां ए ॥४२॥

चांडालणी कबरे बंधायो ।
सम्कूडं हूं फेंहूं कायो ।
काया लह्यो केटले दीनें ए ॥४३॥

माय पोल वहूणां नीपंना ।
पीडां फूटां पार्खे संपना ।
हलू हलू तिहां वा वाधयां ए ॥४४॥

माय वहूणां मह्यो ऊजरयां ।
करमें अपारव दुःखी कर्यां ।
भूख तरस पीड्यां सही ए ॥४५॥

चांडालणी ऊपरें कबरथ नाख्यु ।
तव वेहुए कांई कांई बोल भांख्यु ।
पगें कबरो तेणी खोलयो ए ॥४६॥

मह्यो बेहू कूकडो तेणीयि देखां ।
रुडां गरज मावंता लेखां ।
कर धरी घिर लेई गई ए ॥४७॥

कण खवरावी तेणीयि पाल्यां ।
खोक्नी पेरे संसाल्या ।
हींडीयि कृमीनें खायता ए ॥४८॥

जेहू एवडो जसोधर राणो ।
चांडालणीयि पगें हुथ्यो आणो ।
प्राणो मारीदत्त मानें पाप फल ए ॥४९॥

सिर पेर छत्र चमर वीजतो ।
ते कबरि चरणें लखंतो ।
जंतुनि एम पाप पीडंतु ए ॥५०॥

राय सामंतहूं हाथ कासंतु ।
रतन पावडीयि नही माहालतो ।
चांडालनीयि ते पनि हुथ्यो ए ॥५१॥

रतनभूम्य वसहरं घिर रमतो ।
लीला करतां चिन नीगमतो ।
भमतो हींडे हूं ढेढ मांगणो ए ॥५२॥

सरस अन्न पंचामृत जमतो ।
भमर पलंग ऊपरतो सूतो ।
जमतो कंडाल फिर वेदना ए ॥५३॥

फूल मुकुट शशि फूल हार ।
सुगंध वस्त्र तनु लातो अपार ।
ऊकरडेति हूं पड़ी रहूए ॥५४॥

अमूलक भीणां वस्त्र पहिरंतो ।
अनेक भूषण हूं देह धरंतो ।
ते हु सीतादिक दुःख सहूए ॥५५॥

मिथ्यात जीव हिंसा करवावें ।
जीवडा कोण कुण दुःख न पावे ।
पावे न कुण कोण वेदना ए ॥५६॥

इम जाणी मिथ्यामत टालो ।
जीव दया मन वच कम पालो ।
जिम दुःख जाल पडो नही ए ॥५७॥

वस्तु

वेहू कूर्कट वेहू कूर्कट पाप्या तिहां जाण ।
गली सीखा सिर सोमती । पीत पुंछ पांख पीठी होइय ॥
पाछली रात्रि तह चडीय । कूकू कूहू बोलंत सोहीय ॥
कमी कीटक चणं खावंता । पाप्यां तीहां विचार ।
पापे पापज बाधवो मारिवत समचार ॥१॥

श्री तीर्थंकरसन्मुखांबुजभवासीताभ्भवावासिनी ॥
या माता जिनवाहनी सुभरवा वेणाक्षमालाधरा ॥

पुस्तकाभूषित हस्तकाजिनवरा हारांबरा भूषिता ।
श्रीदेवेन्द्रसुविक्रमस्तुतपदा कुर्यात् सदा मंगलं ॥

इति श्री यशोधर महाराज चरिते । दासकूबामस्त्री काव्य प्रतिच्छंदे ।
बुदेव कवि श्री विक्रमसुत देवेन्द्र विरचिते यशोधर चन्द्रमती ।
रचित कृत्रिम कुक्कुट दत्तोद्भूतपाप प्राप्त कुष्ट खंड भव भ्रमल ।
वर्णोनोनाम षष्टोऽधिकारः ॥

सप्तम अधिकार

भास पटुलडीनी – राग रामगिरी

कोतवाल का राजा के पास आना

तिणि अवसरि तिहां आवयो । पटुलडीए ।
रायतणो कोटवाल । सलूंणडीए ।
अह्मे दीठां तीहा तिणि कूकडा । पट० ।
हाथे लीधां ततकाल । सलूंणडीए ।।१।।

लेई करी ते चालयो । पट० । रायनि भेटनि काज ।स०।
राजा आगल आहे धरयां ।प०। हरषो जसोमती राज ।स०।।२।।

अह्म दीठी मोह उपनो ।प०। वली वली जूई राय ।स०।
करें करी अह्मो पपू आलया ।प०। पूरव स्नेह पसाय ।स०।।३।।

ये अह्मे पाली पोढो करघो ।प०। ते अह्मे करे सभाल ।स०।
अवलीगत जूउ करम तणी ।प०। ते करि अह्म प्रतिपाल ।स०।।४।।

राय रली आयन बोलीयो ।प०। भलो कूकडा सुख ।स०।
राखो राय कही अती रुडी परे ।प०। भलां करमेतो यूथ ।स०।।५।।

कोटवाल नें अह्मे सोपया ।प०। पोढा करे वा काज ।स०।
कोटवाल घिर लेइ गयो ।प०। राख्यां पांजरा ठाम ।स०।।६।।

कण चरणू अह्मे अति घणूं ।प०। पीयू रुडू नीर ।स०।
दिन दिन डीले वाधयां ।प०। यौवन पाम्यां धीर ।स०।।७।।

टूंकडी कोटवालूं सो मनूं ।प०। वरण कठण कंटाल ।स०।
माहोमांहि वढंतडा ।प०। रीस भरयां जेम काल ।स०।।८।।

मधुरि स्वरे वली वासतां ।प०। राती सीखा ललकंत ।स०।
कोटवाल घिरे सहू जणा ।प०। घणूं अह्म जतन करंत ।स०।।९।।

यशोमती का वनक्रीडा के लिये प्रस्थान

एकवार जसोमती ।प०। चालु वन संभार ।स०।
अंतेउर सूं मनरली ।प०। क्रीडा करवा उदार ।स०।।१०।।

पढो बजाव्यो ते वेला ।प०। ऊमह्यो नाद नीसाण ।स०।
भागो अरी हृदय घट ।प०। ढलया वेरी प्राण ।स०।।११।।

अरी नारी मदन चल्यां ।प०। ए मोटं आवंभ ।स०।
अवर हुव्या अवर आगा ।प०। अचरयी नलयां अंभ ।स०॥१२॥

हय गय पार न पामीयि ।प०। रथ धजा सेहे कंत ।स०।
पाला बहु तब चलमलें ।प०। चतुर्विध सैन्य महंत ।स०॥१३।

वसंत क्रीडा रमवा चल्यो ।प० जसोमती कुमार ।स०।
अतः पुर आदर घणो । ।प०। सार्थे कुसमावली नार ।स०॥१४॥

राव बालंनो जाणीयो ।प०। बनि चाल्यो कोटवाल ।स०।
अह्मे बेह छूं तो पांजरे ।प०। ते लीधं सु विसाल ।स०॥१५॥

वनमांहि छि रायतणो ।प०। सात घणो आवास ।स०।
डेरो आगलि विस्तरयो ।प०। तिहां अह्मे पांजर निवास ।स०॥१६॥

वन के फल फूल

कोटवाल तब जोअंतो ।प०। अनेक तरु छि रसाल ।स०।
आंबा रायणा आंबली ।प०। राय आमली विसाल ।स०॥१७॥

कोठ करणीके कदमदी ।प०। लीबूं साकिर लीबू ।स०।
लीब बकायन बीजोरी ।प०। फणस फोफल नें जंबु ।स०॥१८॥

रातिं फर्ने फलया बड ।प०। गंभीर आय अपार ।स०।
पीपल पीपर चारोली ।प०। बालामी बदीसार ।स०॥१९॥

नालकेर खजूरडी ।प०। ताल्न तमालहें ताल ।स०।
अखोड बदाम नागकेसरा ।प० सुफिल तरु गुणमाल ।स०॥२०॥

मोगरो मालती मंदार ।प०। मरुआ मांटा मचकुंद ।स०।
पीला फलें फूल्यां चांपला ।प०। पाडल वलसरी कुंद ।स०॥२१॥

जाई जूई जोई जूसडी ।प०। रूपमंजरी गुणमाल ।स०।
केसू जासू असाफणी ।प०। केसर टगर गुलाल ।।स० ॥२२॥

बकुल केवडो केतकी ।प०। रयल कमल असोक ।स० ।
पंथीयकस पंथ देखता ।प०। आगे आरहू करि सोक ।स०॥२३॥

ठाम ठाम घर वेलना ।प०। मंडप फूल्ल बहोल्ल ।।स०॥
वेचे आरहूणी हरसणी ।प०। रह्यो अंधारि काम भील्ल ।स०॥२४॥

मवती रेवती सही ।प०। सेवन्ती संदुकार ।।स०।।
मंचुकराता फूलीया ।प०। करी भमरा रण झणकार ।।२५।।
केलवणी कोडामणी ।प०। द्राख मंडप विसाल ।।स०।।
एलचि फूलि लची रही ।प०। भरी झूबका गुलमाल ।स०।।२६।।
नागवेलना मंडप ।प०। छाया शीतल होय ।।स०।।
ईक्षु दंड वाडी घणी ।प०। मरहं बहू पेर जोय ।स०।।२७।।
रायतणी अतेउरी ।प०। साथी कचुकी साथ ।।स०।।
पालखी मोती झूबका ।प० वस्त्र बीछा बहू भात ।स०।।२८।।
राय आव्यो वन खेलवा ।प०। ललवाक सजूत्त ।।स०।।
हाथीयडा बहू आगल ।प०। रथवालिहा सजूत ।स०।।२९।।
सणगारया घणा जलमती ।प०। गज अवगाहू छि कोटि ।।स०।।
सामंत छत्री परवरयो ।प०। आगल पाला कोड ।स०।।३०।।
हय बैसी राय चालीयो ।प०। उजल छत्र सोहता ।।स०।।
गज अवगाहू चमर ढालि ।प०। जाणे इंद्र मोहंत ।स०।।३१।।

राजा की सुन्दरता

के रूपि काम कहूं ।प०। के नल कहूं कुवेर ।।स०।।
नाग कुंमर कं चांदलु ।प०। धीर गुणि कहू मेर ।स०।।३२।।
सायर समए गंभीर ।प०। चिम चींति नरनार ।।स०।।
ठाम ठाम नृप जोअंती ।प०। करे ए जय जय कार ।स०।।३३।।

राजा की सेवा

एक मोती के वधावती ।प०। एक ते भामणा लेय ।।स०।।
एक ते फूलि पूजती ।प०। एक ते आसीस देय ।।३४।।
एक ते लाजा वीखरती ।प०। सेती नृप गुण एक ।।स०।।
जीवनंद एक बोलती ।प०। एक ते विनय विवेक ।स० ।३५।।
नगरी पोलथी नीकल्यो ।प०। दीठु तव उद्यान ।।स०।।
पखी साव सोहामणी ।प०। वन जाणे दीधि मान ।स०।।३६।।
श्रीखोबाम्र तरुवर लहिकि ।प०। फूलहू रज उडाय ।।स०।।
अमसीन जाणी राय ने ।प०। ए बीजणे वालि वाय ।स०।।३७।।
फूल पडि तिहां परी परी ।प०। उद्यान जस्यो वधावनी ।।स०।।
झलहल कलश सोना तणो ।प०। सिखर धजा लिहिकावि ।स०।।३८।।

कुमरी मयुं आशी वनमझें ।प०। धासे राज पुण्य पामि ।।स०।।
मेडी मीटो मतवारणां ।प०। राय वेसी सुख पामि ।।स०।।३९।।

अश्व चढी राय उतरयु ।प०। शीख अपावि माधि ।।स०।।
सर्व सैन विदा हुवी ।प०। कुसुमावली मने भावि ।।स०।।४०।।

राणी सुरंगे रमि ।प०। टुलवीए शयि आसन भेद ।।स०।।
सुरत रमतां श्रम हुवो ।प० पवनें नीगमयो खेद० ।।स०।।४१।।

दूहा

कोतवाल द्वारा मुनि दर्शन

कोटवालि उद्यम करी । जोयु बहु आराम ।।
असोक वृक्ष हेठल रह्यो । मुनीश्वर दीठु ताम ।।१।।
नासा अग्रे थापयूं । अर्द्धोन्मीलीत नेत्र ।।
शुद्ध चीद्रूप ने ध्यायतो । अभ्यंतर पवित्र ।।२।।
अतरदृष्टे नीहालतो । अनोपम आत्म स्वरूप ।।
शत्रु मित्र समलेखतो । समता रसनु कूप ।।३।।
बावीस परीसह जीपतो । मूकतो चोवीस संग ।।
रत्नत्रय करी मंडीयो । मुगती रमा सुरंग ।।४।।
दश दिशि अंबर पेहेरणे । मलमलीन तेह गात्र ।।
ध्यान करी अंकरपी । जाणे दया नो पात्र ।।५।।

कोतवाल की चिन्ता

कोटवाल मानंमीयो । चिंता मने बहु थाय ।।
मज्झ ऊपेर बणु खीजसे । जो देखसे एह राय ।।६।।
ए नागो अकंपतो । अशुची दीसे एह देह ।।
किहां थी ए अही आवयो । लाज तणो एह गेह ।।७।।
वेस धरम वली देखतो । धरण सरण मंदे वेद ।।
ए समज्ञो आय अहीं बकु । तो आवे मुज्झ छेद ।।८।।
एहनि नीकलवा तणो । मांडु काई उपाय ।।
काम सरे जेम मझ तणुं । ए अहीथी जाय ।।७।।

कोतवाल की कपट भक्ति

कर जोडी मुनि वांदवें । बेठो कपट सभाव ।।
चित्त बक विधि गयी तटि । धरि बीजु अनुराग ।।१०।।

प्रणाम करयो विनय करी । भव्य जाणी मुनिराय ।।
धर्मबुधि तेहनि कही । कपट रहीत गुण ठाय ।।११।।

भास चोपईनी

कोतवाल मुनि का उत्तर प्रत्युत्तर

चंडकरमा बोल्यो कोटवाल । धर्म बुधि तह्मे कही विसाल ।।
ते अह्मनें छि सदा मुनी जाण । भेद कहूं तेहनो वखाण ।।१।।
धर्म अनुब पण अगुण होय होय । वाणह मोक्ष छे नित मित जोय ।।
तेह भणी अह्मो धर्म इम लहू । कवण विशेष वचन तह्मे कह्यू ।।२।।
मुनिवर बोल्यो मधुरीय वाण । नामि अरथ न होये जाण ।।
हेम धतूरो कनक कहेवाय । पण गुण जाणी वीसेख जणाय ।।३।।
मुनी कहि धर्म भेद छि भला । धीरथं सांभलो कह्यू केटला ।।
ससार माहे पडतां जेह । धारे धरम कहीजे तेह ।।४।।
वली तह्मे सरीरें दीसो काक्षीण । वस्त्र रहीत कां दीसो दीण ।।
मल मलिनकांतनु तह्म तणो । चालो वस्त्र भूखण दीयू घणो ।।५।।
भूम्य सयने खेदायि देह । सीत उष्ण लागि वली एह ।।
स्नान वीलेपन धर आदरो । फोकि कष्ट तह्मे काय करो ।।६।।

मुनि का उपदेश

मुनीवर बोला मधुरीय वाण । साभलो कोटवाल सुजाण ।।
वस्त्राभूषण धर भवे भवे लह्यो । पण रत्नत्रय कहीयन ग्रह्यो ।।७।।
सूं ध्याउ जे कह्यू वचंन । ते भेद कहूं सुणो सज्जन ।।
जीव कर्म मल्या अनादि काल । पाखण हेम संजोग गुणमाल ।।८।।
पाखाण थकी कनकउ धरे । तेहनो काज घणो जेम सरे ।।
तिम आतमा कर्म एकठा मल्यां । ध्यांने करी करसूं वेगलां ।।९।।
तेह भणी आतम ज्ञान स्वरूप । अछेद अभेद अनंत अरूप ।।
चेतन तेज तणो पूतलो । जनम मरण भयथी वेगलो ।।१०।।
एहवो आतमा ध्याऊ जाण । वाञ्छु लहवा सास्वत ठाण ।।
अजरामर पद लहवा सार । असह दुःख छे ए संसार ।।११।।
अनादिकाल जीव भमतो जोय । पुरुष नारी नपुंसक होय ।।
चंद्र सौम्य हवो जय समतूर । के वारें राहु सम के वारें सूर ।।१२।।

कै बार राय प्रतापह ठाय । कै बार पालो आगल पलाय ॥
कै बार काम रूप एम जोय । रूप बिहोरण कै बारें होय ॥१३॥

कै बारें उत्तम कुल हूवो । कै बारे नीच नीच प्रिम जूवो ॥
कै बारें हूवो जीव जीव बलीसा । कै बारि रांकह वो दीरा ॥१४॥

आर्यखंड म्लेछ खंड मझार । नरभव पांम्यो जीव कैं बार ॥
धनहीन हूवो वली धनवंत । हुवो जोगी चंडाल दुरंत ॥१५॥

भवनगति दुकह जाणो कोटवाल । सोक वियोग सताप त्रिकाल ॥
तिर्यंच गति वाघ सिंघ ज हूवो । तृण चर रंजारणी जीव मूवो ॥१६॥

नरकों के दुःख

रत्नप्रभा आदि नरक उपन । छेदन भेदन घणा सपंन ॥
नारकी माहोमाहि छेदे तन । भूख घणी मले नही सीथ अंन ॥१७॥

तरसें जाणे सायर सोखवो । पण पावयें नही जल बिंदूवो ॥
गीरी समो लोह गोलो गली जाय । एहेवू उष्ण ने सीत सहिवाय ॥१८॥

सहश्र बीछी वलगायी घणो । दुख ऊपजे मृतीका स्पर्स तणो ॥
सूला कंटक मंडित मही । इम भोगव्यां जीवें पाप फल सही ॥१९॥

मृतिका गंध सही नव्य जाय । भूखें बल यो तेह ज खाय ॥
वेतरणी रुधीर मय नीर । पीनो बल तो पाडय रीर ॥२०॥

करवतें नारकी छेदे काय । ए कतरवू कहूनू करी पाप ॥
एक अगन थंभ सू करें भेट । साते व्यसन तणा फल लेट ॥२१॥

बलयो असीपत्र वन तलि जाय । पत्र पडंता छेदें काय ॥
गिरि प्रस्येंमयें गिरि तूटी पडे । जीव नें नरकें कर्म एम नडि ॥२२॥

तिर्यञ्च गति के दुःख

वली तिर्यंच माहिं भमतो जोय । जलचर थलचर वली वली होय ॥
नभचर गरुड भेरंड आदि भम्यो । भूख तरस छेद भेदे दम्यो ॥२३॥

देव गति के दुख

सुरगति पाम्यो मानसीक दुःख । इम भमतो किहीं नही लह्यो सुख ॥
इम आदित्य मोहो भती संसार । मंडमें कर्म नट्याव्यो अपार ॥२४॥

बहू परी वेश लेवाडे जाण । जीव नृत्यकोनि नाचावे वखाण ॥
इम जीवि जीव विम वली मरे । थावर जंगम माहि एम फरे ॥२५॥

संसारी जीव

जिम संसारथी बीहू घणुं । विसय सौख्य नेहू अवगणुं ॥
बारभेद वली तप आचरूं । पर घर फासुक भीक्षा करूं ॥२६॥

वर्में नीरंजन ठामे वसूं । आगम तत्त्व घणुं अभ्यसूं ॥
धर्म कहूं वली मौनि रहूं । निद्रा जीतू मोह निग्रहूं ॥२७॥

क्रोध मान माया लोभ त्यजूं । कपट हास्य रति अरति न भजूं ॥
चिंता सोक उद्वेग न धरूं । मद तणो मद हूं दूरि करूं ॥२८॥

अंध हूं नारी नीहालवा । हृदय सून्य अवगुण जाणवा ॥
राग गीत सूं बहेरो आंण । पर अपवाद मूंगो बखाण ॥२६॥

कुतीरथ जावा ने पंगली । कामकेलि विखय टूंदलो ॥
आश्रयो अचेतन चेतन तनु होय । चेतने वहीयि सकट इम जोय ॥३०॥

वृषभ विना सकट नवि चली । तिम तनु चेतन सरिसोमलि ॥
जीव अन्य कलेवर अन्य । इम लहि दिगंबर हुवो धन्य ॥३१॥

परने न नींदू मोक्ष ईछंत । ध्यानामृत रस पीयूं नचींत ॥
आर्त रौद्र दोए मूकुं दूर । झीलूं धर्म सुक्ल ध्यान पूर ॥३२॥

केवली कहयो लीयूं आहार । रु.धू हूं पापाश्रव द्वार ॥
इम यही बल ने जीतऊं । कर्म कलंक नहीं छीपऊं ॥३३॥

कोतवाल का पुन प्रश्न

कोटवाल इम जपे चंग । गोस्तन मूंकी दूहि कुण शृंग ॥
ठेली कनकथाल मिष्टान्न । कवण करि भीक्षा थिर मन ॥३४॥

प्रत्यक्ष ससार सुखनि त्यजि । मूरख जे मोक्षकारणे भजि ॥
विण छत्रि छाया नवि होइ । विण जीवें मोक्ष पावे कोय ॥३५॥

फोकि देह संतापु आज । मुक्त कह्यं करु तु सीझि काज ॥
देह जीव ए भिन्न न होय । जिम तरु कुसुम परीमल जोय ॥३६॥

फूल विनासे गंध विनाश । तिम तनु नासे जीव निरास ॥
भूत चीहो बंधायो देह । पवन योगि यंत्र फिर फरे एह ॥३७॥

गुड मह छाल उदक धावडी । मलि उन्माद सक्ति तिम चडी ॥
तिम ए जीव देहे धार कहिवाय । किहां थी न आवी किहां थी न जाय
॥३८॥

दीप सिखा पवनें लोप । कहो ते कवरण दिसि ते जाइ ॥
तह लोपावें दीपादि ज्याम । तिम तनु मध्ये जीव न जाय ॥३९॥

पवन ते पवन करीसो मंदि । मानो तत्व भेद ए बुध छंदि ॥
जीवन संप्रापत मनु काय । कौंकि एहवी प्रोतम पाय ॥४०॥

सुक गलीका पर बैठो चैत । चिरत अंचि बंध बैठे एम ॥

मुनि का उत्तर

मुनीवर बोल्या बोल बीचार । कहूं ए जीव मरयो मूल ब्यार ॥४१॥

माटी पात्र जलिकसी भरयु । पवन अतीत जाय अपरे घरयो ॥
ज्वार मलि सु उपजि जीव । माटी पात्र तो होय अजीव ॥४२॥

जे धुत भाषि कह्यु दृष्टांत । ते दुर्मति छे मोटी भ्रांत ॥
जीव चेतन ज्ञानमयु पूतलो । अचेत गए दृष्टांत न भलो ॥४३॥

चली मद शक्ति चेतन ने जोय । काठ पूतला नैं मद नव्य होय ॥
मूल बंध दृष्टांत जे दीध । अवना काल गोपाल प्रसीद्ध ॥४४॥

फूल लकडी बंध तेल सु रमि । अवर देह लेइ तिम जीव भमे ॥
जो पूर्व भव जीवनें न होइ । तौ तु बालक दु धावे न कोय ॥४५॥

जण्यु बालक जाणि स्तन ठाय । मरण तोलभ्यु वलभिते जाय ॥
जाणे काम अनादि जीव भमें । करमें सीखवयो काल गीमामि ॥४६॥

जीव तनु प्रति जूजूवा जाणवा । साधु असाधु भेद आखवा ॥
एक राव एक किंकर जाण । वाहन एक चढीया वखाण ॥४७॥

धनवंत एक एक धन हीण । एक सुखी एक दीसि दीन ॥

कोतवाल की पुन शंका

कहि कोटवाल सुणी अणगार । चोर एक धरयु मेंइ मझार ॥४८॥

लाख दिखो न राख्यो ठाम । त्यांहां कह्यो चोर मरी गयो ताम ॥
तौलन पकड्यो एकज रती । तौ तु गयो जुआ आतम पती ॥४९॥

एक चोर लोखी मारयो । वली तोलवी तें तु भारयो ॥
हलवो न भारे हुवो लगार । तो किम जीव छि तनु मझार ॥५०॥

एक चोर करयो खंड खंड । जोयो कुए तत्व नहीं प्रचंड ॥
जीवन जातो दीठो तेह मध्ये । एह उत्तर भाड़में मुक्त मध्ये ॥५१॥

मुनि का उत्तर

मुनी बोलि एक आणी मजूस । संख सहित नर रहयो पेस ।।
लाक्षा बीडी तीरणें संख वाजयो । लोक कानें सबद छाजयो ।।५२।।
छीद्रन पडयो तीरणि लगार । स्थूल शब्द वली छे अपार ।।
नाल ने शबके नीरीखर ग्रसि । आप अमूरत केम द्रष्टी ग्रसि ।।५३।।
चर्म मसक ठाली तो लेय । वायू भरी पुनरपि तो लेय ।।
भार समान जो पवन प्रचंड । तरु जेऊ मेले करे खंडो खंड ।।५४।।
रूपी वायु जे नव्य देखाय । आत्मा केम दृग गोचर थाय ।।
समडी काष्ठ खडो खंड करयो । जोयो अगनी पण नही नीसरयो ।।५५।।
जे वन तरुवर नगर वहेय । एहेवा अगत ने नयण नग्रहेय ।।
मूर्ति पदारथ ने दृष्टी ज ग्रहे । क्षयोपसम योग्यता ए लहि ।।५६।।
खडग धार तीखी नभ न छेदाय । चपल बालके नीज छच न वढाय ।।
तीम नीर्मल ए दृष्टि छि घणी । आप रूप न देखि आपणी ।।५७।।
नव्य देखीयि ते नथी जे कहि । तह मूर्ख माहिव उपरा लहि ।।
मात तात लघु पण थी मूर्वो । विण दीठि तिणे केम मानवो ।।५८।।
भूत प्रेत व्यंतर राक्षसो । विण दीठि छि केम भाखसो ।।
दूर आवतो सबद न देखाय । पण कान सूं मलयो थी जणाय ।।५९।।
इंद्रि निज निज विखय ग्रहेवाय । अमूरत ज्ञानीनिधी लख थाय ।।
ना केसू कुणि रूप देखाय । काने सूं भोजन स्वाद जणाय ।।६०।।
जीणीयि निज निज सही योग्यता । रूपीयि रूपनी योग्यता ।
सूक्ष्म आप स्थूले न जणाय । हाथी सूंडे राई न लेवाय ।।६१।।
तिल माहि तेल भली जेम रह्यो । दूध माहि यम घृतित कह्यो ।।
काष्ट माहि यम अगनी समाय । तिम तनु माहि जीव जणाय ।।६२।।
सूरज कांति मांहि जिम अग्नी । चंद्रकांति जल रह्यो विलग्नि ।।
पाखाण मांहि जिम छि धात । तिम तनु मांहि जीव विख्यात ।।६३।।
सुखदुखादि दृष्टांत अनेक । चेतना लक्षण जाण विवेक ।।
बुद्धि व्यापार जू जू आजोय । आतमा उपजी ममय होय ।।६४।।
केम जीव चेहुतर वरि । किम संसार मांहि ए फरि ।।
मुनीवर कहि सांभलो धीर चित्त । जिम होइ तह्म जीवह हित ।।६५।।
आठ करम अठलाल सुप्रकृत । अनादि मल्यो पण एहुछि विकृत ।।
ज्ञानदर्शनावरण ए वेहो । वेदनी मोहनी आयुछि मेह ।।६६।।

नाम गोत्र कहीयि अतराय । आठ करम ग्रागमे कहियाय ॥
भेद कहु एहुना वेगला । संक्षेपि जाणि जो भला ॥६७॥

ज्ञान आवरें ते ज्ञानावरण । पंच प्रकारि तेह विस्तरण ॥
सिद्ध इष्टपद नव्य वेसीयि । देवगुरु परी करम लेसीयि ॥६८॥

दर्शनावरण देवाख्यान जेम । वरसन आवरे ते नवभेद ॥
इष्ट वस्तु देखी नव्य पामीयि । राज पोलीयानी रिरवामीयि ॥६९॥
सुख दुख नि जणावि जेह । बे प्रकार वेदनी कही तेह ॥
खडगधार मधुलीप्त छि जेम । सुख दुःख जीवि लहीयि तेम ॥७०॥

आत्मानि मोहि जे थए । मोहनी नाम कहीयि तेह तणुं ॥
भेद अठावीस तेहना ते सही । मदिरा माच्या कोइ वपिरत कही ॥७१॥

आयुकरमि भव माहि राखीयि । च्यार प्रकार केवली भाखीयि ॥
हुड घाल्या नरनी पिर जोय । भवथी नीकलवा नही दीयि सोय ॥७२॥

नाना रूप कारण ए लह्यो । ताणं भेद नाम करम कह्यो ॥
चीत्रक पिर परिनवे चीत्राम । नाम करम एहुवा परीणाम ॥७३॥

गोत्र कम्मना छे बे भेद । ऊंच नीच जाणो त्यजी खेद ॥
कुभकार भाजन परी जेम । जीव ऊंच नीच कुल लहै तेम ॥७४॥

इष्ट वस्तु पामता जोय । अंतरकरि अंतराय कर्म होय ॥
पंच प्रकार आगम माहें कह्यो । भंडारी परि गुणें ते लह्यो ॥७५॥
ए आठ करमि करी ए जीव । अनाद कालनो बांधो अतीव ॥
मिथ्यात अविरत प्रमाद कषाय । बंध हेत कह्या मन वच काय ॥७६॥

एकांते प्रथम मिथ्यात विचार । अस्त नास्तना ते जाणि प्रकार ॥
केम खटमास अवधि कहिवात । पुण्य पाप कुण्य लहि वात तात ॥७७॥
विपरित ते जे दयामुखे कहि । विधि वीसेखि हिंसा नें ग्रहि ॥
सात व्यसन शास्त्र माहि आदरि । ते केम पर तारि आप तरे ॥७८॥

खर कुतर जो महीषह तणो । अकवर पत्थर पीडीनो भणो ॥
विनय करि कुसाधिण देव कही । विनय मीथ्यात कह्यो ते सही ॥७९॥
नर तिंमुगति स्त्रीनि सिं नही । यह जाणि संसय कहि सही ॥
धर्म माहि करि संदेह । संसय मिथ्यात कहीयि तेह ॥८०॥
अज्ञान मिथ्यात पंचेंद्री हणें । एकेंद्री जोकलो थण कणि ॥
देव धर्म प्रतिमा उछेद । पंच पापना कहुया भेद ॥८१॥

क्रोध मान माया ने लोभ । सोल प्रकार दीथि अब थोभ ॥
कूड कपट वली काम विचार । पंचेंद्री वली विकथ विकार ॥८२॥

कृष्ण नील कापोत जे नाम । जीव ने दुष्ट करें परिणाम ॥
आर्त्तरौद्र ए बहु दुर्ध्यान । जीवनि अभाडिए भवरान ॥८३॥

प्रकृति स्थिति अनुभाग प्रदेश । बंध तणो भेद कह्या विशेष ॥
ईम्में बधायो जीव भमु भमे । चारों गति मांहि काल निगमें ॥८४॥

नाम करम नाना रूप करि । आनुपूर्वी भवांतर धरे ॥
जीवनो ऊर्द्ध गति छे सभाय । कर्म बलि विचीत्र गत्य जाय ॥८५॥

ऊर्द्ध गमन जेम अगनीही झाल । अही पही वाय भघोलि विसाल ।
अथवा मंकड संकलि भरथो । जिम फेरवीयि तिम जीव फरयो ॥८६॥

संहार विस्तार कर्म प्रमाण । कू थू आसमो वली हाथी समान ॥
जिम लघु घट माहि दीपक धरयो । घटमांहि धरयें घट उद्योत करयो
॥८७॥

ते बडो देहते बडो व्याप । कह्यो केवलीयि नि:पाप ॥
घाति करम क्षय होय ए प्राप्त । दोष रहीत गुण त्रिभुवनि व्याप्त ॥८८॥

जीवनमुक्त अर्हंत भगवंत । सर्वज्ञ ते कहीयिए संत ॥
तणि आगलि कह्यो जेह । जीव स्वरूप कह्यो ड्याहा एह ॥८९॥

द्रव्य नये छे आत्मा एक । पर्याय भावे कहीयि अनेक ॥
कर्म कलंक रहीत जब थाय । अछेद अभेद अनंत कहिवाय ॥९०॥
नित्य कहियि द्रव्यिं सही । पर्यायि अनित्यज कही ॥
नित्य कहितां नव्य मरण न होय । अनित्य कहितां गगन सम जोय ॥९१॥
जिनवर कहि जीव नाना भेद । छ काय एह जाणि भणि सखेद ॥
एक रीसाल कहियें एक साध । एक अरोग अने एक न व्याध ॥९२॥
एक छे गुरु अनेक छे सीष्य । एक मूर्ख अनेक छि दक्ष ॥
एक छे राय अनेक छे भृत्य । एक करि पुण्य अनेक अकृत्य ॥९३॥
रागद्वेष विवर्जई कहि जेह । वचन प्रमाण न कहीयि तेह ॥
जे पितृवनें नाचंतो भमि । निज महीला सुं रंगे रमि ॥९४॥
जेह करे गदा सकति त्रिसूल । क्रोध कपट के राखे मूल ॥
तेह वचन प्रमाण केम होय । स्वयं सीव आगम एम जोय ॥९५॥
लोक ए स्थिरकेम कहिवाय । न करे कार्य तो नास न थाय ॥
बंधायो ते कहीयि नमु काय । गुर सीक्षादी भेद न जणाय ॥९६॥

इंद्रि बुद्धि कारज जो करयो । हंस शरीर कीधो नहीं करयो ॥
विण तनु हंस को कारज करै । विणु तनु देव वाणी उच्चरि ॥९७॥

मगन फूलै कंठ हार जु होय । व्यध्या सुत मारो ए जोय ॥
सस सृंग बहु धनुष कर धरी । मृगतृष्णा जल नाही करी ॥९८॥

कचरणा हंस जननी थाय । एक सुखी एक दुःखी को थाय ॥
मात तात सीसु भक्ष नारेय । तो किम कहीजि संहार करेय ॥९९॥

एक ब्रह्म बहु व्यापी रह्यो । सबे घट चंद्र जिम वेर कह्यो ॥
ब्रह्म ते वेद कहि नीकलंक । जग ए जीव मलिन सकलंक ॥१००॥

एक कहि जो मन बंधाय । जीव कमल परें रहयो जल ठाय ॥
सुक नलीका पेर उपजि भ्रांत । कोकि देखाडो ए दृष्टांत ॥१०१॥

मन बंधन कारण सही होय । सुक पत्रिजीव बंधातो जोय ॥
कोसीयो बंधाय जिम नीज लाल । तिम जीव बंधातु स्वयं जाल ॥१०२॥

जो ए जीव बंधाय नहीं । तो दीन दुखी को दीसि नहीं ॥
आतलो जीव करमि बांधयो । विषय तणुयो दुखि बाधयो ॥१०३॥

इन्द्रियों के कारण बन्धन

स्पर्शन विषय बांध्यो हाथीयो । खाड पडयो अंकुश वश थीयो ॥
बहु पेर मार लेहुवे भम्यो । विषय तृष्णाथि ए गर्या दम्यो ॥१०४॥

रसना विषय माछीयो होय । माछलो दुःख सहतो जोय ॥
रसना विषय जीत्या विण जीव । माछला पिर दुःख पावै सदीव ॥१०५॥

नासिका गंध तणो लोभीयो । भमरो कमल माहि थोभीयु ॥
बांस कोरि एहुी कठण सभाउ । तिहां मूउ विषया अनुराउ ॥१०६॥

नयण विषय के तराबु पतंग । दीवा माहि नाखे निज अंग ॥
काई पंख काज सरंतम मरणो । कोकि सोहि जीव आपणो ॥१०७॥

पारधी गीत भाव बन सुणी । बंधाया हरणा हरणी ॥
श्रवण विषय जीतम्यार्ये पतंग । अर्थ न जाण्यो प्राणे जाय ॥१०८॥

इम जाणी विषया मन लायो । सुख नीरंजन जाणे मयो ॥
जिन पाम्यो सुख केवल नाण । अजीपत पद पाम्यो निर्वाण ॥१०९॥

व्यसनों के कारण दुःखी हुये मनुष्य

जूव जसन युधिष्ठर राय । राज रम्य हारि कहेवाय ॥
पाम्यो वन माहि फिर फिर दुःख । जूवं कीडाइ नवो लहु सुख ॥११०॥

मांस तणो लोभी बक हुवो । भीमसेन हाथि ते मुवो ॥
मुनिव्य खातो काहाव्यों राक्षसु । नरकगति ते कर्मइ कस्यो ॥१११॥

मद्य नियोगि यदु राजीया । माहो माहि वढो क्षय गया ॥
मद्य निषोद पातिक नो ठाम । जीवनि नरकि थापि विश्राम ॥११२॥

प्रकटि मूक्यूं जेहेवूं ऊलारणूं । वेश्यानि ते सरखी भणूं ॥
कूंतरा एक थाकि एक जाय । चारुदत्त पेर दुःख सहाय । ११३॥

पारध वसने ब्रह्मदत्त भणो । हिंसा दोषि नरक गयो भणो ॥
बापडा तृण चर किहिनू न खाय । दुर्जन प्राण लेवा पूठि धाय ॥११४॥

परदारा व्यसनि जाणजो । रावण क्षय गयो मन आणजो ॥
अवर पुरुष कहू केही मात्र । व्यसन व्यलूधो नरकह पात्र ॥११५॥

चोरी व्यसन ते मूक्यो दूर । तीणि पाप लागि अति क्रूर ॥
मरी नरकि सिवभूती गयो । परधन हरतां दुखीओ थयो ॥११६॥

सात व्यसन ए मुकि जाण । प्राणी पामि सुखनी खाण ॥
एह लोक परलोक जय होय । अनुक्रमि शिवपद पामि जोय ॥११७॥

दया धर्म का प्रभाव

समता रस सहूसूं आदरो । क्रूर चित्त कोई पर मत करो ॥

क्षमा धरंता जीवनें जोव । पदे पदे परम अनोपम होय ॥११८॥

कोमल मन आपणूं कीजीइ । जीव जयणा करी धर्म लीजीइ ॥
मार्दव त्रिकरण शुधि धरो । भवसागर भव हेलां तरो ॥११९॥

आर्जव कहीइ कपट रहीत । जीव दया उपरि धरजें चित्त ॥
कलुष भाव टालीजे जोय । तश्चेतो अविचल पद होय ॥१२०॥

सत्य वचन बोली जें सही । एटला ऊफर्क पुण्यवा नहीं ॥
पर अपवाद विकथा नें त्यजो । मुगती नारी सूं वेगिं भजो ॥१२१॥

लोभ रहीत कीजि अतरंग । परमातम सूं लीजि रंग ॥
बाह्य अभ्यंतर शौच धराय । मुगति नारी लीला वस थाय ॥१२१॥

कीजे संयम करत विचाल । इन्द्रिय रोधी धर्म निहाल ॥
काम महागज वश आणीइ । संयमि मुगति टूंकडी जाणीयि ॥१२३॥

बार भेद ये तप आचरि । धीरवीर भेद ऊद्धरि ॥
कर्म महावन अग्नी समान । पामइ नीर्मल केवल ज्ञान ॥१२४॥

सर्व परीषह जीति स्याद्य । अथवा त्रिविध पात्र दान आप ॥
आकांक्षा रहित जे करि । ते संसार माहि नम्य करि ॥१२५॥

परीषह सहु दूर मूकइ । अथवा अनन्तवर डूकए ॥
तृष्णा नदी जलधि जेह । मुगती मारग सही लामो तेह ॥१२६॥

निकरण सूध धरि ब्रह्मचर्य । व्रत आचार माहिये वर्य ॥
तेहि आचारचके सही सहु धर्म । करिहु मुगति मानवी सुख सर्म ॥१२७॥

दूहा

दस प्रकारि धर्म कह्यु, मुनीवरनि उत्कृष्ठ ।
अंस परिए जो पालए श्रावकनि पण सुष्ट ॥१॥

लेश्या वर्णन

पीत पद्म शुक्ल कही, भव्या लेश्या बे धन्य ॥
सुगति आवा कारण सही, जे जाणि ते धन्य ॥२॥

धर्म शुक्ल बे ध्यान ते, आपि अविचल वास ॥
मन पवन रूंधा करी, करहू तहे अभ्यास ॥३॥

अनुभवाता सिद्ध सौख्य ने, स्वाधीन नीरव जे जेह ॥
इन्द्रीय रहीत ते अनुपमू, शास्वतू कहीयि तेह ॥४॥

कोटवाल तब बोलियो, जाणं हुं सिद्ध भेद ॥
गुटिका सिद्ध अंजन सिद्ध, प्रहस दीसि नही भेद ॥५॥

सिद्ध स्वरूप

मुनि कही ते कपटी सही, व्यसनी खोटा अपार ॥
सीध नीरंजन नीरुपमो, ज्ञान तणो आधार ॥६॥

सर्वोत्तम तेजस रूपए, कोणि ते तेज न हणाय ॥
ते तेज कुही नैन दूखवे, रह्यु चरस्वर समाय ॥७॥

ज्ञान तेज मोटिम परिण, रही सहु भव्यि राज ॥
किहिनि नही प्रामाडि, जल कमलहु पेर भाज ॥८॥

केवलीनि गोचर होय, जीव मुक्त विशेष ॥
तेह विना गोचर नही, जोहु जाणि छि अशेस ॥९॥

मूको ते साकर खावता, करसीर मुखी देखाय ॥
स्वाद जाणि हरखीत होय, जिन जीभि न कहिवाय ॥१०॥

ब्रह्म सिद्ध स्वरूप छि, व्यापक सकल अनंत ॥
ज्ञानी वचनि आराधवो, अजर अमर छि महंत ॥११॥

विष्णु संभु संकर कह्यो । ब्रह्म सुगुण वली होय ॥
सलख निरंजन अकलए । नाम अनंता जोय ॥१२॥

भोला विष्णु व्यापक कहि । जल थल गिहि सु अपार ॥
माया मोहथी वेगलो । वली कहि धरि अवतार ॥१३॥

भगत उद्धरवा कारणि । निरंजन काय धरि रूप ॥
करम काया थी वेगलो । ब्रह्म वो सहज स्वरूप ॥१४॥

एम जाणी मन दृढ करउ । ब्रह्म न धरि अवतार ॥
ब्रह्मि हण्यो ब्रह्म अलिहि । ए छि वचन व्यापार ॥१५॥

ध्यान बलि कर्म जीकीयि । होय ब्रह्म ज्ञान अभ्यास ॥
तेज सु तेज जई मले । काल अनंत विलास ॥१६॥

पुत्र कलत्र मित्र नहीं । नहीं नगर पुर हाट ॥
परण तणी सेवक नहीं । नहीं चीता उचाट ॥१७॥

भोजन भाजन सजन नहीं । नहीं प्रभु सेवक भेव ॥
पगतलां सभा सूबूं नही । नही सुख नो वली छेद ॥

इत्यादिक गुण सिद्धना । गुण गातां होय पुण्य ॥
जिनमत देखिने स्तव्यो । तेह कई होई धन धन्य ॥१८॥

भास अभ्याकलीनी

कोटवाल की स्तुति

तव कोटवाल मनें हरखयो तो । अभ्याकली । धनधन मुनीवर भासतो ॥
वेद मद पीकी वेगलो तो ।भ०। अभातणो आवास तो ॥१॥

जीव द्रव्य एणि जलत तो ।भ०। ब्रह्म न स्वरूप लह्यो पोय तो ॥
थाल फूलावे वीया सही तो ।भ०। तत्व ज्ञानी एह सही होय तो ॥२॥

मेलीचवयो बहु परी तो ।भ०। पांमु वचन बोलव तो ॥
जीवड पाम्यो बहु परी तो ।भ०। धारवाक मत सेव तो ॥३॥

वलीए निश्चो में ब्रह्म तो ।भ०। नाघो पक्षुनी प्रकाशतो ॥
पण ए हरी समधी नही तो ।भ०। ए सही मनीही गुणमल तो ॥४॥

समु मित्र एह गमे समा तो ।भ०। लोष्ट कनक सम भावतो ॥
विकार मन एहवें नहीं तो ।भ०। ए भवसागर नाव तो ॥५॥

कामकल्प एह आणीयि तो ।भ०। कामलणो अनेकार तो ॥
काम करें ए आपणुं तो ।भ०। कामतणो दातार तो ॥६॥

इम कही दीए कर जोडीया तो ।भ०। बीक नमावी शाषो पामतो ॥
मऊ जन्म सफल हूवो तो ।भ०। हुं दीठ मुनीराय तो ॥७॥

हूं पश्चूं कर सही मझ तणो तो ।भ० अम्ह तण्ड्रं दीयो कामतो ॥
जिम मुझ देह सफल होय तो ।भ०। तूं कही मुनीश्वर राज तो ॥८॥

धर्म की महिमा

मुनीश्वर स्वामी बोलीयो तो ।भ०। मधुरीय मुखनील वाण तो ॥
काम कहूं एक सम्पू तो ।भ०। कोटवाल सुंणो सुजाण सु ॥६॥

धरम करो तम्हे नीरमलो तो ।भ०। त्रिभुवन तारण हार तो ॥
जिणि फल वस्तु पामीइ तो ।भ०। जीव दया भंडार सु ॥१०॥

धर्मि भवनीधि समजितो ।भ०। हरीबल पद धर्मे होइ सु ॥
चक्रवर्ति पद धर्मथी सु ।भ०। धर्म समो नहीं कोय तो ॥११॥

लाख चोरासी हाथीया सु ।भ०। रथ तेता हूं जोय तो ॥
कोड अढार तुरंगम तो ।भ०। धरम फलें तणो लोय तो ॥१२॥

कोड चोरासी पायक भला तो ।भ०। चउद रतन घर मांहि सु ॥
छनऊ सहस्र अंतेउरी तो ।भ०। धरम तणा फल मांहि सु ॥१३॥

बत्तीस सहस्र मुकुट बंध तो ।भ०। राय करे निज सेव तो ॥
सोल सहस्र गणबध देवता तो ।भ०। अंगरक्षक सेवें देव तो ॥१४॥

छखंड तणो ते राजीयो तो ।भ०। ग्राम छे कनक कोड तो ॥
मागध वर्तन छे मावि तो ।भ०। आवस्या देव तेवि कर जोड तो ॥१५॥

एणि मार्नें अवर रीध तो । भ०। शास्त्र कह्यो बहु भेद तो ॥
धरम फलि एहवां सुख लहो तो ।भ०। नहीं सोक संताप खेद तो ॥१६॥

धर्मि तीर्थंकर पद वली तो ।भ०। लहीइ पंच कल्याणक तो ॥
मेरु सीखर पूजा लहि तो ।भ०। धरम तणि परमाण सु ॥१७॥

बत्तीस लाख विमान धणी तो ।भ०। इंद्र होवि जीव जीव तो ॥
वाजें किंकर घर तणों तो ।भ०। अगत आज्ञा करी जीवतो ॥१८॥

आंबं धरम परकासने तो ।भ०। करीये मुगती सार तो ॥
त्रिभुवन जस विस्तारयो तो ।भ०। धरम तणि विस्तार तो ॥१९॥

इन्द्र भावीक उपसमी तो ।भ०। पद पामीइ धर्मि जाणतो ॥
देवांगना सूं क्रीडा करता तो ।भ०। अनेक देव माने आण सु ॥२०॥

विद्याधर विद्या भली तु ।भ०। धर्मिचंद्र सूरय थाय तो ॥
देवांगना नाटक रचि तु ।भ०। नारद किन्नर गुण गायतो ॥२१॥

कामदेव सरखूं रूप तो ।भ०। नारी मन मोहंत तो ॥
रूप देखी देवी भूलि तु ।भ०। धर्मि होइ भूप महंत तो ॥२२॥

क्षीर बर अन्न उजलो तो ।भ०। चमर ते गज अवगाह तु ॥
गज तोरगम रथ घणा तु ।भ०। पराक्रम जय तणो ठाह तो ॥२३॥

धर्मि सात तणा घर तु ।भ०। रतन तणीं सोहि भींत तु ॥
धन कण कचण रयणें भरया तो ।भ०। पट कोल वस्त्र वीचीत्र तो ॥२४॥

धरमि नार सोहागणी तो ।भ०। रूपें रती अवतार तो ॥
मुनीवर ना मन मोहती तो ।भ०। सोहती सील भंडार तो ॥२५॥

नमती सासू नणद ने तो ।भ०। गमती नाहनें मने तो ॥
रीस न करती रती भरी तो ।भ०। हरख वदन दिन दिन तो ॥२६॥

हंसगामिनी मृगलोचनी तो ।भ०। धरमि बहु गुणवंती तो ॥
जीव तणूं जतन करती तो ।भ०। कोमल वचन महंत तो ॥२७॥

निज कुलनि मधू भावती तो ।भ०। चालती लक्ष्मीय होय तो ॥
वरत विधानमि पालती तु ।भ०। धरम करंती जोय तो ॥२८॥
दान देती सुपात्रनि तु ।भ०। मानती सगा सजन तो ॥
जिनपूजा करती रंगे तो ।भ०। निरमल करती मन तो ॥२९॥

थोहोणा सगानि संतोषती तु ।भ०। चतुर पणानु ठाम तो ॥
भाग्यवंती विनयवंती तो ।भ०। कंतना पूरती काम तु ॥३०॥

धर्मिं पुत्र भला होय तो ।भ०। मातपीतानि आनंद तो ॥
धरमवंत गुणि आगला तो ।भ०। नयनें आणंद देय तो ॥३१॥

धर्मे पुत्री पामीयितो ।भ०। रूप सोभागनी रेहतो ॥
सीलवंती गुणि आगली तु ।भ०। विनय विवेकनो गेहं तो ॥३२॥

धर्मि मित्र भला लहितु ।भ०। पाप थी वारय जेह तो ॥
हीत मारगनें उदेसि तो ।भ०। अमर अंबर भावि जोग तो ॥३३॥

धरम तणे फल पामीयि तो ।भ०। अनेक ईष्टनो संजोग तो ॥
मणि माणिक मुगता फल तो ।भ०। मोती नवसर हार तो ॥३४॥

पालखी रथ सुखासन तो ।भ०। धरम तणो विस्तार तो ॥
कनक सांकल हींदोलार भला तो ।भ०। हीचोलि हींदोलि दास तो ॥३५॥

माननीसूं मननी रली तो ।भ०। सहमि लीला विलास तो ॥
पकवान बहुजात सु ।भ०। रस्ता भख अनेक प्रकार सु ॥३६॥

भोजन सजाई भोजन सकि तो ।भ०। दधि दूध घृत सुविचार सु ॥
बलो राय कपूर नाग वेल दल तो ।भ०। फोफल पूलनी सबंध तो ॥३७॥
ए आदि भोग उपभोग तो ।भ०। धरम फलि उत्तम ।भ०॥३८॥

वस्तु छन्द

धरम ना फल धरमना फल । तणो विस्तार ।
भव भव जीव सुख लहि । दुःख वेद एक अरण न पावि ॥

दूर देसांतर पावतां । धरम एक सखाय आवि ।
जल गिरि रण वन मांहि पडयो । जीवनें राखि धर्म ॥
इम जाणी धर्म आचरो । दूर मूको पाप कर्म ॥१॥

भास जीवडानी—राग देशाख

पाप के कारण विभिन्न गतियों में भ्रमण

पापतणि फल भव भवे हो । जीव भमें अपार ।
दु.ख सहि जीहो गती मांहि हो । सुख न पावि लगार हो ॥
पापें दुःख दालीद्र सहि हो । भव माहि भमतो जोय हो० ॥१॥ जीवडा

नीत्य निगोद सात लाख कहि हो । इतर निगोद तेनी होय ।
नील फूल कंद मूल माहि हो । जीव अनंतो जोय हो० ॥

पाप तणां फल होय । पापें दुःख दालीद्र सहि होय ।हो०॥
भवमांहि भमतो जोय हो० ॥२॥जीवडा॥

मद्य मांस सरीरि माहि हो । कंद मूल मांहि जेह ।
फूल फल छाल पल्लव हो । भीजोवे भम्यो जीव एह हो ॥३॥

सात लाख पृथ्वी काय हो । मृदु खर पृथ्वी भेद ।
भेद भीरी मांटी पीला हो । जीव ऊपनो लह्यो खेद ।हो जी० ॥४॥

सात लाख अपकाय मांहि होय हो० । जीव अनंती वार ।
नदी सागर सरोवर कूवा हो । ऊपनो एह मझार । हो जी०॥५॥

तेजकायक सात लाख कह्या हो । अगनी काय वर्णन ॥
काय अनंतो जीव भमतो हो । कहीं कहीं सुख संपन ।हो जी०॥६॥

वायकायक लाख सात हो । तनु धन धनोदधी धाम ।
धर वायु मांहि वली हुवो हो । जीव भम्यो ठाम ठाम ।हो जी०।।७।

अनेक वेल्ल तरु तृण आदि हो । वनसपती दस लाख ।
जीव अनंतीवार अवतरयो हो । केवली बोलि भाख ।।
पाप तणां फल होय । पापि दुःख दारीद्र सहि हो ।हो जी०।।८।।

बिलाख बिइंद्री माहि हो० । अलसीयां शंख सीपोरिण ।।
कीडा लालीया मेहर आदि हो । जीव भम्यो बहु जोण ।हो जी०।।९।।

त्रेण्द्री बेलाख लेखा हो । बीछी कीडी मंकोड ।।
जीव एह भमतो बापडो हो । कर्मि लाई मोटी खोड ।हो जी०।।१०।।

बे लाख चोरेन्द्री कही हो । हुवो जीव अनतीवार ।
माखि गोमाखि डंस मशाहो । भमरा आदि मझार ।हो जी०।।११।।

च्यार लाख नारकी जोनें हो । धतूरा फूल आकार ।
हुडकू संस्थान हुवो हो । सह्यो दुःख अपार ।हो जी०।।१२।।

तीर्यंच च्यार लाख माहि हो । वन नभ जलचर जात ।।
वार अनंती अवतरयो हो । बेसमेई बहु भात ।हो जी०।।१३।।

चार लाख देवगती माहि हो । भावन व्यंतर जाण ।।
जोतषी कल्पवासी हुवो हो । मानसीक दुःख बखाण ।हो जी०।।१४।।

चौद लाख मनुष गती हो । आर्य म्लेच्छ नू जोय ।।
भोगभूमीया बिद्याधरा हो । भमतो जीव अवलोय ।हो जी०।।१५।।

लाख चोरासी योनि भम्यो हो । थावर जंगम हो एह ।।
सूक्ष्म बादर तन धरया हो । दुःख तणो नहीं छेह ।हो जी०।।१६।।

पंच परावर्त पूरयां हो । भमतो वार अनंत ।।
संसार वनी भीतरि हो । करमनि कलि महंत ।हो जी०।।१७।।

खोडा पांगला आंधला हो । मूगा बहिरा देह ।
पूरव भव पाप करयो अति हो । उदय आव्यो सही एह ।हो जी०।।१८।।

पाप का फल

कोढी डाह कांठा बाछा हो । बीबची पामा भाय ।।
गज चर्म बात रक्त आदि हो । पाप ऊपजे घाय ।हो जी०।।१९।।

कंठमाला मकवूंबका हो । पाठो हरष आदि व्याधि ।।
मक कफ रोग पीडयां हो । कहूं न कर्मि समाधि ।हो जी०।।२०।।

मूर्ख मणुं मणुं [illegible] हो । [illegible] सरीरि जेहु ॥
[illegible] जाणंता [illegible] मरैं हो । [illegible] [illegible] [illegible] एह ।हो जी०॥२१॥

[illegible] [illegible] [illegible] हो । [illegible] [illegible] ॥
भोयैं पडिया [illegible] हो । फूटो [illegible] [illegible] ।हो जी०॥२२॥

कोढ़ी [illegible] [illegible] [illegible] हों । नीरस [illegible] [illegible] ।
परदेसी [illegible] हो । पापैं [illegible] [illegible] ।हो० जी०॥२३॥

पाप तणइ फल होय । पापि दुःख सरीर सहि हो ।
भवें भव [illegible] जोय ॥

फाटां फूटां लूगडा हो०। [illegible] भरया [illegible] ॥
[illegible] [illegible] मसान डि । [illegible] ए दिन [illegible] [illegible] ।हो जी०॥२४॥

नारी [illegible] [illegible] हो । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
मोर पनी रीछ गती हो । पाप तणे पसाय ।हो जी०॥२५॥

नख कूपा मांगली [illegible] हो । फूटी मोटी [illegible] ॥
जांघ ऊर रोम [illegible] हो । दौर्भाग्य तणी [illegible] ।हो जी०॥२६॥

मादल ढोल सम पेट हो । महिषी जेठनूं [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो । [illegible] [illegible] पाप पसाय ।हो जी०॥२७॥

उत्तर दक्षिण स्तन न्यम्या हो । कोटिते मल तणो ठाय ॥
[illegible] [illegible] [illegible] हो । स्त्री लहीइं पाप पसाय ।हो जी०॥२८॥

होठ काला [illegible] [illegible] हो । नाक ते [illegible] [illegible] ॥
कान फूटा [illegible] [illegible] हो । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।हो जी०॥२९॥

सिहिंघि भमरा कातरी हो । [illegible] [illegible] [illegible] कपाल ॥
सरीर कठण [illegible] सूकी हो । [illegible] [illegible] विकराल ।हो जी०॥३०॥

सोभिण में [illegible] [illegible] हो । [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] करैं हो । [illegible] न [illegible] [illegible] ।हो जी०॥३१॥

होठ [illegible] [illegible] हो । [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] करि [illegible] हो । [illegible] दुर्गंध [illegible] ।हो जी०॥३२॥

प्रलय काल [illegible] [illegible] हो । [illegible] तणी [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो । पाप [illegible] [illegible] एह ।हो जी०॥३३॥

[illegible] [illegible] [illegible] हो । [illegible] [illegible] [illegible] ॥
मुख [illegible] [illegible] [illegible] हो । [illegible] [illegible] [illegible] ।हो जी०॥३४॥

दान पूजा नथ्य गमि हो । धरम कथा न सुहाय ॥
विकथा कूटि कपटणी हो । जीव जतन न कराव ।हो जी०॥३५॥

पुत्र पुत्री होइ नही हो । होइ तु मरीवि जाय ॥
धर्म कहीं करें नहीं हो   व्यसनि भूंडा सहाय ।हो जी०॥३६॥

मित्र तेछि तारा मलि हो । लायि पापह बाट ॥
इष्टतणा वियोग होइ हो । परि परि पामि उचाट ।हो जी०॥३७॥

नीच कुलि वली अवतरि हो । करतां नीच ते काम ॥
पोखि पिंड पापि आपणो हो । न जाणि धर्म्म नू नाम ।हो जी०॥३८॥

लांच लेइ चाडी करी हो । धूतारी भरे पेट ॥
पर अपवाद जूंठा दीयि हो । पापनूं कारण नेट ।हो जी०॥३९॥

पाप आरंभ पोढा करि हो । करि पाप व्यापार ॥
पापी सू संगत करि हो । पाप कारण ए बीचार ।हो जी०॥४०॥

साधु साधर्मीनी नींदि हो । धर्मनी वाटि न जाय ॥
दान पूजाये कलेश करि हो । तीणि किम सुखलहाय ।हो जी०॥४१॥

दूहा

कोटवाल द्वारा धर्म के स्वरुप को कहने के लिये प्रार्थना

कोटवाल कहि धर्म नो । कोहो स्वामी स्वरूप ॥
जिम भेद जाणं भणो । धरम लेऊ सुख कूप ॥१॥

मुनिवर स्वामी बोलीया । दया धरम करु सार ॥
सुरग मुगती फल पामीयि । जिम तरीयि ससार ॥२॥

कोटवाल का पुन: प्रश्न

कोटवाल तब बोलीयो । ब्राह्मण कहिते क्यंम् ॥
दान दीजि विप्र लेवकी । सूइ लहि धर्म एम ॥३॥

जग्गीनि हीसा कही । पारधे आदिक कर्म ॥
मास खायते दोष ज नहीं । न्याय पालि होय धर्म ॥४॥

मद्य मास दूषण नहीं । वेस्या सम प्रवृत्ति ॥
ए जीव सहित छि वली भस_। नो करे एह थी नीवृत ॥५॥

ब्रह्माई पशु सरजया । समृति कहि यज्ञ काज ॥
वेद कहि पशु यज्ञ थी । लहि ते स्वर्गह राज ॥६॥

मास साहेलडीनी

मुनि का उतर

वलता मुनीवरउ । उत्तर बोलि सुणो तह्मे कोटवाल ॥
क्षत्रीकुल उत्तम सहू मध्ये । क्यंम हिंसा करि विकराल ॥

सूध धरम विचार । जीवदया मंडित सही जाणो ।
सुरग मुगति सुखकार ॥१॥

क्षत्री धरम रक्षांकरणे भाख्यो । जीतवो साह्यमोपकारी ॥
नाह्या जता थकता दांति तृण धरता । तेहनें क्षत्री कदा मारी ।साहे०॥२॥

बापडा हरण दांति तृण धरता । नाहासता थकता अपार ॥
क्षत्री पारथ किम एहनें मारि । चतुर करी विचार ।साहे०॥३॥

तीर्थंकर हरी हलधर उपजि । क्षत्री वंश पवीत्र ॥
मांस भक्षण जीव हिंसा । किम बोली । सूध वीचारी मीत्र ।साहे०॥४॥

जीव हणंतां धर्म जो होय । तो माछी पूजीयि ॥
मांस खाधि जो धर्मी कहीइ । तु मातंग गुरु लीजि ।साहे०॥५॥

ध्यान मौन जीव हिंसा करता । पामि सु उत्तम ठांम ॥
तु नदी कांठि मीन ध्यानी । बकनि दीजि मुनी नाम ।साहे०॥६॥

जीव वधंतां धर्म जो कहिइ । प्रथम कहोनि कहिवाय ॥
केवल स्नानि जो धर्म होय । माछला तो सीध जाय ।साहे०॥७॥

ब्रह्मादि पशू यज्ञ निसरज्या । वे तह्मे बोली वचन ॥
वाघ सिंह तरख पशूनि कह्या । ते हणवान करि मंन ।साहे०॥८॥

ते क्रूर जीव वलती सील देवे । पज बापडा वंस हीण ॥
तेहु धर्मु धर्मनि आदरवा । देवे धम्नावे दीन सा०॥९॥

जीव अहिंसा परम धरम कहियो । वेद स्मृती मझार ॥
जीह्वा लंपट जे विप्रह । व्यसनी व्यपरीत थापि विचार ॥
सूध धरम वीचारी । जीव दया मंडित सही ।सा०॥१०॥

जीवत दांन एक जीवनें दीव । भूप दीयि एक धरेश ।
एक मेरु सम कनक देयंता । जीवत दांन विसेस ।सा०॥११॥

एम जाणी किम धूर्त मन आणी । छांडो मिथ्या भ्रांत ॥
केवली भाषीत धर्म वली जाणो । त्रिभुवन मांहि विख्यात ।सा०॥१२॥

अष्ट मूल गुण

मद्य मांस मधुवर जीपि । वली पंचुंबर परीत्याग ॥
आठ मूल गुण एहने कहीयि । श्रावकनु ए मार्ग ॥सा०॥१३॥

बारह व्रत

अहिंसा व्रत पहिलुं कहीयि । बीजुं सत्य वरतह मन आणरे ॥
अचोरीज व्रत पञ्चं मूक्यूं न चोरीयि । स्वदारा संतोष वखाणो ॥म.॥१४

परिग्रह परीमाण वली कीजे । रात्रि भोजन टालीयि ॥
जीवदया आदि तह्यें जाणो । अणुव्रत एह पालीयि ॥सा०॥१५॥

दीगवरती देसवीरती अनरथ । दंडव्रती ए देषो ॥
गुणव्रत त्रुहि गुणे व्रत पाले । संसार तारण लेखो ॥सा०॥१६॥

सामायक पदर्वे उपवास । भोग उपभोग संख्या ॥
अतीथविभाग ए च्यार प्रकार । सीक्षाव्रत सुभ सीक्षा ॥सा०॥१७॥

समकित सहीत बारि व्रत कह्यां । संलेखना तनु त्याग ॥
दृढ मन करी तह्यें ए पालो । सरग मुगती नु मार्ग ॥सा०॥१८॥

षडकरमा बलतूं इम बोलयि । ए सहू पालूं सुंजाण ॥
जीव दया मण नवि पलयेमे । होयि कुल धर्म हाण ॥सा०॥१९॥

विकट लोटा चुरटा जे मोटा । निग्रह करु तेह करे ॥
भली परीहु नगरी ने रालूं । क्रूर कर्म छि महारो ॥सा०॥२०॥

मुनी बोलिहुवी तह्य मह केरी । भ्रांत बे काम न आवे ॥
कुलि पांगलो कोढो को व्यसनी । तिम आपणी सुं थवाय ॥सा०॥२१॥

वली राजानो भय तह्य होसि । कुटंब भरण लणो सहू ।
खावा काजि कुटंब सहू मलयूं । दुःख सहिसि जीव बहू ॥सा०॥२२॥

परतक्ष तह्य निदृष्टां तन वाखू । सांभलो मन थिर राखी ॥
जसोधर चन्द्रमती भव भमयां । ए कूकडा बेहु साखी ॥सा०॥२३॥

पीठ कूकडो हणयो देवी आगलि । तै पाप बहु लागो ॥
अमृतामि जसोधर चन्द्रमती मारया । मोर कत्यरा भव भव भाग्यो ॥सा.॥२४

यशोधर एवं चन्द्रमती के जन्म

तीहां थी मरी सिहिली साप हुवा वली रोहीत संसुमार ॥
चन्द्रमती खाली हवी । तेह अजि राय छाग हवी बै वार ॥सा०॥२५॥

चन्द्रमती महित मोनि पाम्यो । तिहां थी ऊकलो हुवो देह ॥
कुमिण जीव हिंसा फल पाम्यां । मनि अमतां नहीं छेह ॥सा०॥२६॥

कोटवाल का संसार से भय

तब कोटवाल आचंभ मनि पाम्यो । कांप्यो थर थर देह ॥
राज राख करुणा करी मुनीवर । किम होशि पाप छेह ॥सा०॥२७॥

कोटवाल मुनी पायें सीर नामी । वरत मागि मनि सुध ॥
समकित सहित श्रावक व्रत दयां । मुनी करुणा करी बीच ॥सा०॥२८॥

तब बहु देहू कुकडे सहु सुणयूं । वर मनि भवांतर सार ॥
जाती समर ऊपनूं सही । बहु पण लीधा वरत भवतार ॥सा०॥२९॥

जाती समर थकी भरतज पाम्यां । हरष ऊपनो अपार ॥
कूकू कूकू इम मधुरज बाल्यां । मारीदत्त सुण्यो बीचार ॥सा०॥३०॥

कुसुमावली सूं रंगि रमतां । काने पड्यो सहु सब्द ॥
जूउ जूउ सबद बेधी बाण मूकनूं । बाल लीमू करी बाह ॥सा०॥३१॥

बाण बेधि राजाइ मूक्यूं । मूक्यो बहु जीव प्राण ॥
कुसुमावली गरभे ऊपनां । जोडूं सुत प्रमाण ॥सा०॥३२॥

कोटवाल मुनीवर पद वांदी । लक्षण करपु तब रंग ॥
धन्य धन्य मुनीवर तह्म तणी वाणी । नीरमल गंग तरंग ॥सा०॥३३॥

पापकलंक महारा पखलावा । सुक वाणी जल पूर ॥
भव भव पाप कादव बहु सूको । मुनिवर दीठु सूर ॥सा०॥३४॥

संसार सागरि बूडतां । मुक्त तह्मे दीधु हाथ ॥
हूं पाप लहिरी भंपावु भलीफिरे । मोहि भावत्यों अनाथ ॥सा०॥३५॥

आज चिंतामणि रत्न मैं पाम्यूं । पाम्यो धर्म कल्पवृक्ष ॥
जिनवाणी जिनवर जिनशासन । जिहि पाम्यो ते दक्ष ॥सा०॥३६॥

सूहू जीव कुल भवतारण । तु सुख माम्य जिवाल ॥
समकित रयण वरय मिल हुवो । जीव दया कुलनाथ ॥सा०॥३७॥

कोटवाल मुनी नमी निज स्थान के । पोहोतो मुनी मुख वालो ॥
मुनीवर चोटी वदत महंत । पहुतो पीहूप ज्यालो ॥सा०॥३८॥

वस्तु

बेहू कूकड बेहू कूकड मरीते जाए ।
कुसुमावली गरभिहूवां । सने सने ते गरभ वाध्यो ।
गरभ वेदना व्याकल हूवां । नवमासे अवतार लींधु ॥
अभयदानजो होलो हूवो । अभय अभयमती नाम ।
पुत्रनें पेटेज पुत्रज हूयु । भव एहवु दुःख ठाम ॥१॥

श्रीमंतो वृषभादयो जिनवरा वीरावसानाः सदा ।
संसारार्णवनौसमाः समदमध्यानात्सद्बोधका. ।
सद्भव्यप्रतिबोधकाबुधनुता यशेवेंशु सद्गुणाः ।
श्रीदेवेन्द्र सुविक्रमस्तुततपदा. कुर्वंतु वो मंगलं ॥७॥
इतिश्री जसोधरमहाराज चरिते । रास चूडामणी काव्यप्रतिछंदे ।
भूदेवकवि श्रीविक्रमसुत देवेंद्र विरचिते । यसोमती कुमार ।
वसंतक्रीडावनागमन कोटपालमुनीविवाद कर्कुट लब्ध ।
सद्धर्मप्राप्ताभयरुच्यभयमत्यवतार वर्णनोनाम सप्तमोधिकारः ॥७॥

अष्टम अधिकार

ढाल रासनी

अभयमति एवं अभयरुचि का शिशुकाल

सने सने मोटां हवाए । अह्म बेहू सुंदर बालतु ॥
बत्तीस लक्षणि अंकरघांए । चन्द्रकला गुणमालतो ।वरमाहें हीडीयो ॥१॥
रीखतांए मोतीचोक चूरंततो । रतनसाथीया वेरंतडांए ॥
वली वली तेह पूरततो ॥१॥ वरमाहे हीडीयो ॥२॥
रतन आंगिणि खेलतडांए । दीखि अह्म प्रतिछांहीय तु ॥
नागकुमर नागकुमरीए । जाणे अह्मसूं खेलायतो ॥३॥
क्षण खीजता क्षण हसतडाए । क्षण क्षण बरणी पडंततो ॥
रतन खेलणां आगल धरिए । तेहूं पण आछे चडंततो ॥४॥
अनुक्रमि अह्म मोटां हवांए । सुललीत तनु सुकुमाल तो ॥
विविध वस्त्रे भूखणे भराए । कंठि मुक्ताफल मालतो ॥५॥
मोटा उछव संभ्रम करीए । मूंक्या भणवानी सालतु ॥
अक्षर अंक राजनीत भण्यांए । लेपसक्षण विसालतु ॥६॥

सातवरसना अहूं हुआए । मऊ लघु परिण बहु साजतो ।।
यसंभली राय देखी चीतवेए । ओहोणापारति काजतो ।।७ ।

पारध तूर बाजीयाजा ए । वाज्या अनेक प्रकार तो ।।
पारधी सहुए सज थया ए । हाथ अनेक हथियार तो ।।८।।

पाश केटला हाथ धरीए । केटला मूसल प्रचंड तो ।।
कंजडां हाथें धरि केटलाए । केटला लोढां दंडतो ।।९।।

गर्ज लोह लाकडा धरीए । हाथ बरची कलीहार तो ।।
पानवाटी ओडण धरयाए । सीचाणा बेहेरी प्रकार तो ।।१०।।

धुष अनि सकरा धरी ए । चीजी रथ पिर बिठतो ।।
कनक साकल भूण पचवरणी ए । दीठें मन भय पेठतो ।।११।।

पांचसि स्वान बीहामणा ए । बल बलता आगे काल तो ।।
लांबी राती जीभ ललकि ए । नयण पीला विकराल तो ।।१२।।

लाबा कांन वण दीसिए । बेहू पेर टूंका काम तो ।।
केता धोला केता रातडा ए । केता दीसि पंचवन्न तो ।।१३।।

वकारधा बाघ साथि वढिए । वांकडे पूंछ रीसाल तो ।।
दात ते जम डाढ समा ए । मुख मोटू विकराल तो ।।१४।।

कनक साकल वण साकल्या ए । रतनपाटी गलि सोहि तो ।।
झल झलकि पचवरणंनी ए । राजानूं मन मोहितो ।।१५।।

राय चाल्यो तब वेगजि ए । आव्यो वन समीप तो ।।
कूर बाजिम सुखसडा ए । तीरीयंच पंखी कपतो ।।१६।।

मुनि सुदत्ताचार्य पर पांच सौ शिकारी कुत्तों को छोड़ना

सुदत्ताचारज मुनीवरए तीणि अवसरें भूप दीठतो ए ।।
अपसुकोण पारधनें हुआ ए । राय मन कोप पईठ तो ।।१७।।

पांचसि स्वान मूंकावयाए । मुनी ऊपेरं तेणी वार तो ।।
मुनीवर चर्यते धामयाए । आखे वन आकार तो ।।१८।।

मुनीवर तेणी बीटीयो ए । सोहिते गुणमाल तो ।।
सिह पंसकम पुंजणी ए । जिम दीठो सीआल तो ।।१९।।

मुनीवर तणी तप बलिए । स्वान नम्या थया सांत तो ।।
विजलख्या सम देखी करीए । राय अती हुवो भ्रांत तो ।।२०।।

मक्क पारध विघन करयू ए । स्वांन सील्या एणि काल तो ॥
ए कपटी को दीसीमिए । एहनैं मार्कु विहाण तो ॥२२॥

तब खडग करें धरीए । झसमस चाल्यो भूप तो ॥

कल्याण मित्र की मुनि वन्दना

राज मदें जीव मांधलोए । न लहि न्याय सरूप तो ॥२३॥

तीणि अवसरें मुनी वंदवाए । कल्यांणमित्र वन मांहि तो ॥
आव्यो भावसहीत भलो ए । राय दीठो तणि ट्यांहि तो ॥२४॥

अपूरव भेट लेई मल्यो ए । राय दीधो बहुमान तो ॥
चालो नरेंद्र मुनी वंदीयिए । कीजि धर्म नीधानलो ॥२५॥

राजा के विचार

तब राजा कहि मित्र सुणो ए । बहु कीधो अमसोस तो ॥
पारध कारेवा तणो ए । एह बांधि मुझ कोस तो ॥२६॥

वली एणि स्वान सीलीया ए । मझ तणा अति क्रूर तो ॥
वली नागो अमंगलो ए । कुल एहनूं जसाचतु ॥२७॥

हूं कुलवंत राजा सहीए । किम एहने नमावतो ॥२८॥

कल्याण मित्र का उत्तर

तब कल्याण मित्र बोलीयो ए । राज सणो मझ वात तो ॥
पारध अपसुण तह्मे कह्यो ए । ते बोल सत्य वीख्यात तो ॥२९॥

पाप कारज एणी नाव होय ए । होय पुण्यनो एणी काज तो ॥
स्वान सील्या ते लोक कहोए । कपटनो न लहि नाम तो ॥३०॥

तप परभाव एह मन गल्यो ए । सांत हुवा ए अपार तो ॥
नागो कह्यो ते ऊत्तर कहूं ए । सहूजन सहिजि विचार तो ॥३१॥

लोक नागो जन्मे नागो मरिए । नागो लाजि जीव मोक्ष तु ॥
जीव स्वभाव नागो होय ए । पहिरयो ए विकृत भेस तो ॥३२॥

वली ईश्वर नागु कह्यो । नागो वह्यो क्षेत्रपाल तु ॥
सुरविद्याधर एहनि नमें ए । नवन काजि गुणमाल तो ॥३३॥

वेद धर्मथी वेगलो कह्यो ए । वेद कहीजि एह ज्ञान तो ॥
ब्रह्म विद्या उपनिषद ए । ब्रह्म लहि जेम ज्ञान तो ॥३४॥

मलमलीन शरीर सही ए । मस्तु वस्तु सोवन सोय तो ॥
सात धात मल मूर्ख भरयो ए । पवित्र कुलीन नहीं होवे तो ॥३५॥

सील संयम तप पालतां ए । एहु होवे पवित्र तो ॥
मसुची कह्यो ए किम हुवो ए । आह नदी पीये सीलतो ॥३६॥

सील प्रवाह तट सत्य तो । दया कलोल सीतल कहूं ए ॥
आत्मां नदी संयम जल ए । मांहव तामूं सीलतो ॥३७॥

कुल एहनु कहूं सांभलो । कलिंग देशनु रायनु ॥
सुदत्तराय नाम कहूं ए । अजीव कुल गुण ठाम तो ॥३८॥

सपताग रांजे मंडीयो ए । राजपाल तो एक वारसु ॥
कोटवालि चोर धरी आणयो ए । रायप्रति कहि वीचार तो ॥३९॥

एणि चोरि गृहपती मारयो ए । वित चोरयुं समंप तो ॥
दंड देवा ब्राह्मण पूछीया ए । ते बोल्या सुजांण तो ॥४०॥

नाक हस्त पग खंड करो ए । राय कहि कोहि पाप तो ॥
ब्राह्मण कहें पाप रायनें ए । मूंक्या करि पाप व्यापतो ॥४१॥

ते पाप पण रायने सही ए । तव राय लह्यो वैराग्य तो ॥
राजभार सुतनें दीइए । संजम लीयो मोक्ष मार्ग तो ॥४२॥

मोक्ष करि नहीं तहू तयो ए । पाप फूल हार तो ॥
सुर नर खग विद्याधर ए । पूजि चरण सुखकार पु ॥४३॥

राजा द्वारा वन्दना करना

तब राजा बोल मानीयो ए । मुनीवर वांदल जाय तो ॥
नमोऽस्तु करणु वेहु वासिए । धीम धारयो मुनीराज तो ॥४४॥

प्रासुक अन्नें वेदीआए । धर्म वृद्धि देहु वीगतो ॥
राय सहु आनंदीआए । मस्तु वीचार तव कीजइ ॥४५॥

दूहा

मुनीश्वरनिं राजा कहि, कारण देह कल्याण ॥
रायनें पं दोषि नहीं । क्षमा तणो नीधान ॥१॥

ब्रह्मा कहुं तो सर्वनो पालो । हरि तो गोपी सुजाण ॥
शीव कहुं तो गौरु भर्ये करि । रवि कहुं तो ताप कोप ॥२॥

चंद्र कहूं तो कलंकी सई । गुरु पतनी दोष इन्द्र ॥
सगर हूं तो खारो करे । मेरु तो जड लोभ मंद्र ॥३॥
नारद कहू तो कलह करे । दुर्वासा तो बहु रोष ॥
विश्वामित्र वसिष्ट कहूं । मातंगी उर्वसी सुत दोष ॥४॥
कपिल सगर सुत बालया । जमदग्नी रीसह ठाय ॥
व्यास कहूं तो चूको अपछरा । धीवरी सुत कहिवाय ॥५॥
सुक तु अपसरा सुडीयि जन्यो । हरणीयि जन्यो एक शृंग ॥
इम जोतां कुल सील थी । अनोपम मुनी उत्तम ॥६॥
वली एहनि स्वान मूकया । कोपि चढ्या विसेस ॥
हूं पण खडग काढी धरयो । रीस न चढी लवलेस ॥७॥
साधु तणी निंदा करी । किम छूटसूं ए पाप ॥
सिर छेदी मुनी पावे धरूं । तो टलिए संताप ॥८॥
इम चिंतें राय कोटि भट । खडग्य चालि जव हाथ ॥

मुनि द्वारा सम्बोधन

राय प्रति वली बोलियो । दयावंत मुनीनाथ ॥९॥
भाखो भूप भलूं नहीं । सिरछेदवानूं काम ॥
आप हत्या ए मानीयि । दुरगति केरो ठाम ॥१०॥
तपि करी पाप पखालियि । तप करि छूटि पाप बंध ॥
तप करी सरग मुगतो सुख । अवर आले सहू धंध ॥११॥
राय मनें आश्चर्य हवो । कल्यणमित्र तूं कहो बात ॥
मुझ मन भाव किम जाणयो ए तह्मे कहो मझ भ्रात ॥१२॥

भास अंजिकानी

कल्याण मित्र द्वारा राजा को समझाना

कल्याण मित्र बोल्यो तेणी वार । राय सुणो वाणी मुझ तणी ए ॥
ए कारण तो थोडु विचार । ए मुनीवर ज्ञानी घणी ए ॥१॥
तप करतडा अती रूपो । रीष ऊपनी कि अती घणीए ॥
रिधि सकति जे मुनी कन्हे होय । विस्तारी कहूं कोडामणी ए ॥२॥
जो जिन नाम रुधी स्मरण करत । विसुचिकायादि रोग टलेए ॥
अवधी जिनमुनी स्मरण थी नाण । सर्वज्वर रोग मले ए ॥३॥

परमावधि मुनी स्मरण विशेष । रोग मस्तकनी जाय बली ए ॥
सर्वावधि मुनीने जन्ममूर्त । जाणे बहु रोग हरिए बलीए ॥४॥

अनंत अवधि जाणे जग स्वरूप । भव्य बहु रोग हरिए ॥
कोष्ट बुधी रची परमाव । सूत्र गुणधर भाव करेय ॥५॥

सर्वशास्त्रनूं बीज अक्षर लही जाणि सर्वशास्त्र ॥
बीजबुधी स्वामी सही हवोए । सूत्र लही माहीमाहि वैर सहीत ॥
वैर तजि पदानुसारी बुधिए ॥६॥

संभीन श्रोत बुधी रीध्य व्यापत । स्वाद बोलत अंग रोग हरे ए ॥
सर्व बुधी रची मुनी तणूं ध्यान । कवित कला फल करि कोविए ॥७॥
वाद विद्या होय जेहनि ध्यान । प्रत्येक बुधि मुनी कह्या ए ॥
बोधीत बुधि बुधी गभिर । तत्व पदारथ जाणी रह्या ए ॥८॥

सरलपणें मन चींत्यो पदारथ । जाणे ऋजु मनी रचो बलीए ॥
विपुलमती कहि कुटिल विचार । मन अर्थ चिंता बली ए ॥९॥

जेहनी भक्त नर सहूं जाणि सग । दशपूर्व रची गुण जाणीयिए ॥
स्वसमय पर समय सहि भेद । चौदस पूर्व बखाणीयिए ॥१०॥

अनेक प्रकार जाणे निमित्त । अष्टांग निमित्त कुशल मुनीए ॥

ऋद्धियों का वर्णन

अणीमा महिमा आदि रीधी दातार । विकुर्वण बधि छि पावनी ए ॥११॥

लघु अणु सम मोटूं मेरु समान । सरीर करि रिधी बलें ए ॥
आकाशगामिनी ध्याता दीधि । सीधी विद्याधर रिधी फलिए ॥१२॥

हस्तचीता मुष्टीगत वस्तु । धारण रची जाणि सहीए ॥
अंग आदि जाणि श्रुत मुनीन्द्र । पण समरणा रची कही ए ॥१३॥

मेरु शीखर जई स्पर्श करंत । आकाशगामि सब तणुं फलिए ॥
आपी मीठि रीधि दात पीसंत । चक्रवर्ति सैन्य अग्नि बलिए ॥१४॥

जो करपति लघु करे वैतांव । कोप न करें सही क्षमा बलिए ॥
दृष्टि विष जो क्रूर करि दृष्टि । चक्रवर्ति सैन गो ठाम टले ए ॥१५॥

बहु बल मुनीए बली क्षति सक्त । पण को प्रति कोप न करिए ॥
तेह रुषी मुनी ध्याता सुणो राय । अनेक प्रकारें विघ्न हरिए ॥१६॥

धीर पहिण तप थी न चलंत । उग्र तपि ते थी फल वह्यो ए ॥
शरीर कांति थाए प्रचकार । जिनवाणी जिके विख्यात कह्यो ए ॥१७॥

तप तणो पाप संजम सहू जाय । त्रिस तप रिद्धि वखाणुं ए ॥
एहवि ध्यानि करतां फल होय । स्तंभन फोडी सेन्या तणुं ए ॥१८॥

ताता लोहा पिर पडयो जल जेम । तम धन पाप विलटी जाय ए ॥
तप्त रुधी क्षमा विख्यात जाणो । भिन्न तणुं स्तंभन थाय ॥१९॥

छट्ठ अट्ठम पक्ष मासोपवास । मन वीकृती पामि नहीं ए ॥
महातप रीधी तणों परीणाम । जलस्थंभन व्यापना सही ए ॥२०॥

सिंह व्याघ्र क्रूर आक्रम्याए । वा सर्पही मुनी वीकृती रती न भजेए ॥
घोर तपि घोर गुणिवली रुधि । परीसह कीधि नष्ट बुझिए ॥२१॥

घोर गुण पराक्रम जोय । कर्म विरी साधि वहिए ॥
घोर गुण ब्रह्मचारी गुणाम । नारी परीसहि नवि पडे ए ॥२२॥

आमोसहीए पत्त परभाव । आमय पिर पिर ना टलिए ॥
खीलो सही रुधि थूंकने स्पर्श । रोग सहू दूरें पलिए ॥२३॥

सर्वांग मेलथी ताप विस रोग । कीस आंती फीफक जाय ए ॥
जल्लोसही पवि मरकी विनास । रोग जाय रुधी व्यापतां ए ॥२४॥

सर्वौषधीय पत्त गुण जोय । सर्वाय उपव आव्यो व्यापतांए ॥२५॥

अंतरमूर्त्ति द्वादश अंग । प्रस्वन मरकी हरणि तेणि कहीए ॥२६॥

कायबली जु अंजलि त्रीलोक । तर्कें अन्य स्यानकि धरिए ॥
हस्त पास्यूं ते दूध सही होय । खीरस खीरा रुधी करिए ॥२७॥

हस्ति खीपादी तें घृत सही थाय । सर्पीसखीरा रुधी धीर कहीए ॥
हस्ति अक्ष अमृत गुण होय । अमी अ सखीरा गुण कहीए ॥२८॥

अखीरा महानसीवध्य मुनींद्र । जेह घेर आहार लेई आवए ॥
च्यार हुग्ग चक्री सैन्य समाय । अक्षहाण अक्षय थाय ए ॥२९॥

वर्द्धमान रुधि गुणि धन धान्य । विद्या तणी वृधी थाई ए ॥
सर्व्वसिद्धायत तणा प्रमाण । सर्वोत्तमी जाहा पुण्य वीक्षिए ॥३०॥

वर्द्धमान बूधी रुधी नाम । सर्वार्थ सीधी जोडाली देहए ए ॥
एह रुधी मुनी कहि विसार । विनय करी गुण लीजीयिए ॥३१॥

सुर असुर नर जोडि हाथ । ए मुनी मोटी राजीव ए ॥
अनेक शास्त्र छि करण भंडार । नव नम करुं ए भाजीड ए ॥३२॥

सुकल ध्यान करि करम करीय ।। मोह मिथ्यामति अरूपे ए ।।
काम क्रोध मद माहुठवा जाय । पाप पाटल नाम प्रकपो ए ।।२३।।

करम वैरी रखे रोकवा जैगा । रत्नत्रय निरमल कीधू ए ।।
त्रिभुवन मांहि एकल मल वीर । बहु मोकि जय जस कीउ ए ।।२४।।

समाकायी सू रंग अनंत । ध्यान निवाहु निधि सुधेए ।।
नित्य नव पदारथ बाख । आतम तत्त्वनिवही बूझिए ।।२५।।

अठार सहस्र शील रत्न राशि । चौरासी लाख उत्तम गुण ए ।।
सुभट सबे पंचाचार प्रधान । एह सवु पूरि कुशलए ।।२६।।

उपसम गज चढी करे काम । ठाम विखय वैरी नी टालिए ।।
पोठी प्रजा चतुर्विध संघ । वचन धर्म करणे पालिए ।।२७।।

पुण्य पाटण राजधानि जाण । सरस बचन पुह सोभता ए ।।
व्यंतर ज्योतिक विविध विमान । परबाक्रमसीत पुर सोभता ए ।।२८।।

एणी पिर राज करे मुनीराज । आतमा चिंतन राजवट चलीए ।।
पापी अभव्य ने मोहोल न होय । न्याय मारगे चालि वलीए ।।२९।।

दूहा

भवांतर पूछू तवका, मात पिता तणा आय ।।
ए मुनीवर न्याने जाणलो । सुणो जसोमती राज ।।१।।
तब जसोमती कर जोडीनि । मुनीनिं लागो पाय ।।
मिथ्याजाणि अविनय करयु । तम्हे खमजो मुनीराय ।।२।।
मुनीवर कहि राजा सुणो । लाख चौरासी जीव ।।
ते ऊपरि समता तवा । समता करूं सदीव ।।३।।
भवांतर मेऊ मात तातना । कहो सबे ताम वीचार ।।
मुनीवर कहिसे पू पूजा । सुणो जसोमती कुमार ।।४।।

भास वैन बनाजोजी ।।ढालनी।।

जसोमती राजा के भवान्तर

राय जसोधर तुम्ह पिताजी । अमृतमती तम मात के ।।राय जसधारोजी
सम्बन्ध सुण जसोमती जी । कहूं हवा पुण्य प्रभाव के ।।राय।।
सांभलता सही आशीषिजी । पुण्यनि पाप विचार के ।।
जसोधर तम्हारो दीक्षावर जी । देवी जसोमती पामती ।।
वैराग्य धरी तप आचरी जी । सुरग पाम्यो पुण्यनाम के ।।१।। राय

पूरव करम पसाय थी जी । राणी कुबजा सू लब्ध ।।
जसोधर मन तेह सूं सहीं जी । बहु परलोहिं बद्ध के ।।२।। राय०

राणी अज्ञानी ही जाणीयो जी । राय हूवो मन संध के ।।
रति वैराग्य भावती गई जी । प्रभात हवूं उतंग के ।।३।। राय०

सामंत क्षत्री मंडीयो जी । राय सभा बईठ ।।
चन्द्रमती तिहां आवई जी । सुत दीठे हरख पईठ ।।४।। राय०

जसोधर दीक्षा लेवा सही जी । कहिं कूर सपन उपाय ।।
चन्द्रमती बलती वदे जी । देवी कोपी राय ।।५।। राय०

देवी मङ्ग जीव बल दीजिये जी । जिम होय विघन विनास ।।
उत्तर प्रति उत्तर कहिवा लगी जी । जसोधर दया निवास ।।६।। राय०

माथि प्रेरयो लाजिं पडयों जी । पीठ कूकडी करेया ।।
भाव करयो हुंसा तण्यो जी । देवी में बलि देय ।।७।। राय०

देवी तूं स्वकल करणू जी । मक्त विघन करो दूर ।।
तूं चन्डी कात्यायनी जी । सींह वाहनी तू कूर ।।८।। राय०

ते समरथ केम राखवा जी । जो प्राण्य मृत पास ।।
भोला फोकि मिथ्यात करी जी । पडिते पापनें पास ।।९।। राय०

देव स्वरूप जाणि नही जी । तुम बांछि गंमारि ।।
जे पर जीवना प्राण हरि जी । ते किम तारि संसार ।।१०।। राय०

फिर आवी तुम्ह राज दीयूं जी । संजम लेवा अवसायें ।।
तव अमृतायि चींतवूं जी । जाण्यो मुक्त अन्याय ।।११।। राय०

ते आवी विनय कर बोली जी । दीक्षा लेस्यूं तुम्ह साथ ।।
माय सार्थि मुक्त मंदिर जी । आज जमो मुक्त नाथ के ।।१२।।राम०

रायें वीसवास तेम करयुजी । जेमूं पछी चीत बाज ।।
वली वसेखिलदी बली श्री । नारी मानु साज के ।।१३।। राय०

विश्वास करवो नहीं जी । राय ते मर्यो मूत्राण के ।।
पण तेह फिर जमवा गयो जी । कर्म तणो परमाण के ।।१४।।राय०

विष देई तीणि बेहूं जणां हण्यां जी । अचेतन कूकडा ते पाप के ।।
राय मोर माय स्वान होई जी । पापें पाम्यो संताप के ।।१५।।राय०

मोर मरी सेहलो थयो जी । स्वान थयो ते साप ।।
सेहलो मरी रोहीत हुयो जी । सापते अनुसार पाप ।।१६।।राय०

पामि सापणि नागनी जी । हुओ कचोमती सुप के ॥
माय बेटा फिर बिस्तरयु जी । संसार दु:खनो कूप ॥१७॥राय०

माछाधि तह्य ने भेट करयो जी । वे रोहीत विख्यात ॥
अमृता ए वे तैल माहि तल्यो जी । ते सही जाण्यों तह्य तात ॥१८॥
राय०

सीसु मार जेरणी कुमडो हुसी जी । मृत्यकी नाचली सार के ॥
माछी लेवी तेमारयु जी । तातो बेलू समार के ॥१९॥राय०

पोतां जीरव पोति तह्यां हुवो जी । संसार ए हुवो विपरीत के ॥
तह्यें काली हुसी तिहां । तह्य पिता जी । पोति पीता पोति पुत्र के ॥
२०॥ राय०

छाली मरी महिख हुवो जी । तह्य मध्य हुसो जेरण के ॥
अजोनी संभव छाग तह्य पिताजी । दु:खी हुवो जांघ हुणेरण के ॥२१॥
राय०

महिष मारयो माल्यो बच्छमतो जीवजी । छाग वाल्यो फिर तरण के ॥
छाग महिख ताचि मूआ जी । कूकडा हुवा पायेरण ॥२२॥राय०

वन कीडा तह्ये आवया जी । वन सीची कोट पाल के ॥
मभसू वाद करंतडां जी । प्रतिबोधायो विसाल के ॥२३॥

कुकडे तब बच सांभल्या जी । मुनि वचन श्री सार के ॥
कोटवालें साधे हुत लीयां जी । हुरकें नासा ते मार के ॥२४॥

कुसुमावली सूं बोलंतडां जी । मुनसूं शब्द बेंच बांणा के ॥
कुसुमावली गर्भे जोडि अवतरयां जी । कुकडें मुकि प्राण के ॥२५॥राय०

अभयमती अभयरुची जी । रूप सोभाग अपार के ॥
मिथ्या पाप तणि फलि जी । हम बांच्यो संसार के ॥२६॥राय०

अमृतावि पाप करयो घणुं जी । नाह मारयो वेई विष के ॥
सील न पाल्यो मिथ्या करी जी । पांचमें नरकें पापी सील के ॥२७॥
राय०

राजा को वचन

राय मनें तब पहि करयो जी । नयणे आंसू नायके ॥
झूरी झूरी आपने नंद वो जीके । रा०। थरथर कांपि काय के ॥२८॥

माहारो मात पिता तणो जी । महारि हाथि ध्यव कीध के ॥
जीविण हुं पाल्यो पोठो करयो जी । तेहनें मैं दु:ख दीध के ॥२९॥ राय०

कल्याणमित्र प्रति बोल तो जी । मि कीधां बहु पाप के ॥
जलचर नभचर थलचर जी । हणीया कीध संताप के ॥३०॥ राय०

ते पातिक हवि छेद सूं जी । लेसूं संजम घोर के ॥
तनु भव भोग विरक्त हुवो जी । दुर्धर तप करी घोर के ॥३१॥राय०

दुःकर्म विरोजी पसूं जी । जीकूं इन्द्रिय चोर के ॥
तनु भव भोग विरक्त हुवो जी । दुर्धर तप करी घोर के ॥३२॥राय०

मयण मान मर्दन करू जी । करूं मन ए थिर के ॥
कल्याणमित्रनि भणी कह्युं जी । कूंअर नें देवो राज के ॥३३॥राय०

अहीछत्र राय कूंअर धूं कूंअरी नी । करवो वेहवानू काज के ॥
बलतु कल्याण मित्र वदि जी । नीज हाथि देयो राज के ॥३४॥राय०

यम कूंअरने राज भोगपडिजी । परजाना सरि काज के ॥
राजाधि राज स्वस्त होइ जी । स्वस्ति मुनी तणा योग के ॥३५॥ राय०

स्वस्ति बहु शास्त्र सांभलि जी । सांभलि धर्म संयोग के ॥
राए तेह बोल मानीयो जी । तव आण्युं नगरी मझार के ॥३६॥राय०

जसोमती के वैराग्य भाव के चारों ओर चिन्ता

जसोमती राय वैराग्य हवो जी । तब हवु हाहाकार के ॥
तय अंतेउर सल मल्यूं जी । एक ऊतावली आय के ॥३७॥ राय०

मोती प्रोती तिम रह्यो जी । ते पण वन मांहि आय के ॥
एक अरीसे मुख जोती जी । एक सणगारती काय के ॥३८॥राय०

एकनें अंजन करि धरयो जी । वेगुलि वन मही आय के ॥
एकते वेणी गूंथती जी । एक ते पीठी लायके ॥३९॥राय०

एक हार पिहिरवा करि धरयो जी । वेगुलिवन मांहि आयके ॥
एक सिहिथी सीरें रोपती जी । एक करि तिलक धराय के ॥४०॥ राय०

एक फूली करि ग्रही जी । वेगुलि वन मांहि आय के ॥
एक चंदन तनु लावती जी । कचोली हाथि लेआर्वें के ॥४१॥राय०

एकें भोजन थाल त्यजी जी । वेगुलि वन मांहि आयके
एक अधुरे पान बीडी धरी जी । अधूरी ग्रहि मुख ठायके ॥४२॥राय०

चीर पिहिरी चोली बीसरी जी । वेगुलि वन मांहि आय के ॥
एक अवलिं चीर पिहिरतीजी । एक आटवी वीसराय के ॥४३॥राय०

[illegible] बुढि बेणी [illegible] जी । वेगुलि वन मांहि जाय के ॥
एक [illegible] [illegible] जी । [illegible] [illegible] के ॥४५॥राय०

एक केडेवी मेखला [illegible] जी । वेगुलिवन मांहि जाय के ॥
एक [illegible] [illegible] [illegible] जी । एक [illegible] [illegible] जाय के ॥४६॥राय०

एक मूंदडी करि थी [illegible] जी । वेगुलि वन मांहि जाय के ॥
एक मोती हार मोकली जी । एक [illegible] [illegible] के ॥४७॥

एक वेणी [illegible] जी । वेगुलि वन मांहि जाय के ॥
एक [illegible] [illegible] जी । एको [illegible] [illegible] के ॥४८॥राय

एक [illegible] [illegible] जी । वेगुलि वन मांहि [illegible] के ॥
नयन काजल [illegible] [illegible] जी । मोती हंस [illegible] जाय के ॥४८॥

एक नाहुना [illegible] [illegible] जी । वेगुलि वन मांहि जायके ॥
एक [illegible] [illegible] [illegible] जी । [illegible] [illegible] [illegible] के ॥४९॥

नयण नीर करी नाहली जी । वेगुलि वन मांहि जायके ॥
कुसुमावली राणी [illegible] जी । सुणो जसोमती राय के ॥५०॥

तप फलि स्वर्ग पामीइ जी । तेणि तह्य [illegible] काज के ॥
नगरी अमरावती लही जी । तूं जी [illegible] [illegible] के ॥५१॥ राय०

हूं इंद्राणी अपछरा जी । राणी केरो वृंद के ॥
[illegible] योवन रस [illegible] । राय [illegible] मन रंग के ॥५२॥राय०

[illegible] [illegible] तप करूं जी । दीक्षा लीउ उतंग के ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जी । मन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के ॥५३॥ राय०

[illegible] एकला [illegible] मूं कीयि जी । कीजीयि सील [illegible] के ॥
फूलहार [illegible] समा जी । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के ॥५४॥राय०

नयण दावानल तनु दहि जी । [illegible] [illegible] अपार ॥
तह्य [illegible] [illegible] सेजडी जी । [illegible] [illegible] जाय के ॥५५॥राय०

किम [illegible] एह्वी प्रीतडी जी । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाय के ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जी ॥५६॥राय०

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के । राय [illegible] [illegible] [illegible] जी ॥
[illegible] तनु [illegible] [illegible] जी । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के ॥५७॥राय०

[illegible] [illegible] [illegible] जी । [illegible] [illegible] न [illegible] के ॥
[illegible] [illegible] [illegible] जी । [illegible] [illegible] [illegible] के ॥५८॥राय०

कुण कारणा तब मांडवो जी । किम तेरही पचनी बहुलाय के ।।
मारदित मनघारदीपि जी । यहुं आव्यो राय निवार के ।।५९।।

पालखी बेसी बेहु जणां जी । आव्या वनह मझार के ।।
मुनीवरनि पाये पड्यां जी । वीनव्यो यशोमती भूप ।।६०।।राय०

तहु त्रिण परकार सोहि मही जी । तारा त्रिण सभी रूप ।।
अंतीवरी सहु वीनवी जी । एह तनु तहुं सणगार के ।।६१।।

मदन दावानल बली रह्यो जी । तुं उपरि मांडो संसार ।।
तुझ नयनें अमी झरें जी । तुमही मेघमल्हार । ।।६२।।राय०

प्रेम जल वरसी करी जी । एह संताप निवार के ।।
महानें लघु पणि किम तजो जी । केम सरि प्रजा नो काज ।।
निमित्त हवं ते बल कहो जी । दीक्षा लेवा आज ।।६३।।राय०

दूहा

राजा का निश्चय

राय कहि कुंअर सुणो, सुण्यो यशोधर भव जाण ।।
मोर आदि तहु लगि सही । पाप पुण्य भेद प्रमाण ।।१।।

भव सुणतां अह बेहुनि । हवो जाती स्मरण सार ।।
सात भव दुःख सांभलयां । मूर्छा आवी तेणी वार ।।२।।

सीतल वायु पवनें करी । बहुं कीधां सावधान ।।
मूर्छा कारण बहुं कहुं । तीहि गुरु धर्म निधान ।।३।।

राय कहि वहुं राजि लीउ । पालो प्रजा परिवार ।।
जम तम बहुं साथि करी । बहुं लीउ संजम भार ।।४।।

दीधो राजपि तहुने । बलसां केम लीउ प्राज ।।
राजनीति इम रहित नहीं । आवि यती बहु लाज ।।५।।

अथवा तहुं तात गुरु तणा । वांछीउं जोड़वि हीत ।।
मोह कलक निवारो तहुं । ए दीसी वीपरीत ।।६।।

बाप जोवनि सुख करि । गुरु कहीवि ते वाट ।।
ते राय राम माहि भोलवि । बलि नाविक घाट ।।७।।

जु बाप तहुं हीत करयु । तो देखाड़ो दीक्षा सार ।।
काज सीझि मन आपणो । दुस्तर तरीयि संसार ।।८।।

राज सहूं जो तहा बसे । तो ए थोडी थाय ॥
योनि बालक के तारीयो । चतुरसो चारवो न काज ॥९॥

कल्याणमित्र मुनि कहुं । राज कीधो तहुं पाय ॥
जिम नीसत्य राज तप लीधो । भवि कीधो आतम काज ॥१०॥

तब में तेहू बोल मानीयो । रायें दीध पद दीध ॥
दान पूजा जप तप करी । सत्य रहीत मन कीध ॥११॥

इति श्रीमद्दर्शनमष्टया निपादितं ज्ञानं सम्यक्त्वकं ॥
वृत्तं तत्त्विवधार्चितं शिवपदसद्भूवैभवोद्भूवक ॥
सद्गुणबोधसुवृत्तकानिगदिता स्मार्थैः सुरत्नानि वै ॥
देवेन्द्रसुविक्रमसुतपदं कुर्वंतु वो मंगलं ॥८॥

इति श्री यशोधरमहाराजचरिते रासचूडामणी काव्यप्रतिबद्धे ।
भूदेव कवि श्रीविक्रमसुत देवेन्द्रविरचिते । यशोमती राज-
पायाद्विनीर्गमनमुनिदर्शन प्राप्तबोध कल्याणमित्रबोध ।
नृपलब्ध प्रतिबोधयशोमती वैराग्य लक्ष्मणस्यवर्धिय ।
राज्यांगीकारवर्णनोनाम अष्टमोऽधिकारः ॥८॥

नवम अधिकार

× × × × ×

भास गीता छंदनी—गोर गोरे तहा वीनवूए ॥
मुनीवर स्वामी बोलीया ए । मधुरीय सुललीत वाण ॥
यशोध यशोधर यशोमती ए । तहा आपि भवांतर वाण ॥१॥

पूर्व कथा

पुण्य पाप फल बूझया ए । भवतणु विस्तार ॥
गंधर्वपुर छि सोहामणुं ए । गंधर्व राजन सधार ॥२॥

गंधर्वी राणी छि तसतणी ए । रूप सौभागनी खाण ॥
ते बेहू कुखि उपनोए । गंधर्वसेन कुंवर सुजाण ॥३॥

वली तेह पुत्री हुवी सहीए । गंधर्वश्री नाम ॥
रूपसौभाग सोहामणीए । सकल कलागुण धाम ॥४॥

तेहू राजानी मंत्री सहीए । राम नाम विख्यात ॥
तस नारी चन्द्ररेखा सहीए । रूप लावण्य सुजात ॥५॥

तस मेंहू कूंखि अवतरयो । सुंदर बेटा बेय ॥
जीतसत्रु पहिलो कह्यो ए । भीम नाम दूजा होय ॥६॥

बेटी राजनी वेह कहीए । गंध्रव सेना सार ॥
जीतसत्रु कूमति स्वयंवरे वरीए । प्रीत ऊपनी तै बार ॥७॥

राजमंत्री सुख सुख भोगवे ए । राजकूमरी सुमाहंत ॥
गंध्रवराय एक बार गयो ए । पारध काज कुलात् ॥८॥

वन मांहि मृग देखीयो ए । बांण सांधतु देख ॥
हरणी वेगें आडी रही ए । हरण मरंतो देख ॥९॥

बाण तेणि ओरि मूंकयूए । वेधी हरणी अपार ॥
बांण नें वाह मोड पडी ए । प्राण गया तेणी बार ॥१०॥

जो यो प्रीत हरणी तणी ए । नाह आडि धरय् देह ॥
प्रीत राखी प्राणनी गम्या ए । एहवु कहीइ सनेह ॥११॥

मरणें भाखी बाणे प्रीतडीए । हरणीनें देह वेह ॥
प्रीत राखी प्राण नीगम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१२॥

प्रीतडी जाणे वन समीए । मन पेई माहि धरी एह ॥
प्रीत राखी प्राण [illegible] ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१३॥

प्रीत कहीइ खीर नीर समीए । जलवहि नाखि वेह ॥
प्रीत राखी प्राण नीगम्याय । एहवो कहीइ सनेह ॥१४॥

रखेलीअम्राम प्रीत रसकर्ं ए । जाणे ऊनालो आरण्यो एह ॥
प्रीत राखी प्राणनी गम्या ए । एहवो कहीयि सनेह ॥१५॥

माणस राक्षस सरीखका ए । कोपता वार न होय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणलीए । पशुआं तणो नेह जोय ॥१६॥

केटला खोटाखा पाखो मिलडिए । प्रीत करीहित सोय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणली ए । पशुआं तणो नेह जोय ॥१७॥

केटली नारी आयामनी ए । नाहनि वंचती जोय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणली ए । पशूआं तणो नेह जोय ॥१८॥

नाह मेहें प्राण पाभरे ए । पापणी अवतार जोय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणली ए । पशूआं तणो नेह जोय ॥१९॥

भाई पुनाली कुटंब बहुए । माहो माहि बंधि बहु जोय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणलीए । पशूआं तणो नेह जोय ॥२०॥

कान्हडे आंकड आवें मृग ए । कवण कवीसरा होय ॥
प्रीति प्राण दीधो हरणली ए । पशुआं तणो नेह जोय ॥२१॥

बांधी हरणी मूलें तणा ए । जाणि चाली तेणी वार ॥
राय नगर भणी पाछो वल्यो ए । हरणो न दीठो भार ॥२२॥

राय पूठि मृग पाछो वल्यो ए । राय दीठो ते आण ॥
हरणली तणि मोहि व्यापियो ए । पामीयो दुःखीयो जाण ॥२३॥

आंसू धारि मेह सींचतु ए । दस दिश जुए अपार ॥
नभ देखिने हरणली ए । व्यरह व्याप्यो अपार ॥२४॥

पंथ पडयो पूठि आवतो ए । रडतो दुखीयो होय ॥
राय वीचारे नीज मनें ए । मोह तणी गत जोय ॥२५॥

न्यान विहूणडो ए पसु ए । भाषा रहीत ते होय ॥
विरह थकी ए दुःख धरे ए । मोह तणी गत्य जोय ॥२६॥

संसार वन ए दुःखे भरयु ए । जीवने अमाणि सोय ॥
जीवन वसें जोहुल करी ए । मोह तणी गत्य जोय ॥२७॥

संसार सागर ए दुस्तरयु ए । जीवनें बोलि सोय ॥
कुटुंब पाषाण कंठे करीए । मोह तणी गत्य जोय ॥२८॥

लाख चोरासी जोन वहूटडाए । संसार नगर ए होय ॥
छेतारि जीवनें लोभि करीए । मोह तणी गत्य जोय ॥२९॥

लाख चुरासी रुप धरया ए । जीवने नचावि सोय ॥
आपें नटूवो थई करीए । मोह तणी गत्य जोय ॥३०॥

क्रोध मानादिक चोरडाए । संसार कूप ए होय ॥
जीवने मंझावी प्रेच करीए । मोहतणी गत्य जोय ॥३१॥

संसार तणी गत्य जोय । संसार अटवी जीव मृग ए ॥
वेगें पीडे सोय । आसा पास नाखी करीए ॥३२॥

राजा मृग देखी दुःख धरे ए । एहनें कीधु संताप ॥
विषय केरे संकट पडि ए । कैम छूटे हु पाप ॥३३॥

वैराग्य मन मांहि चींतवतो ए । पुत्र ने दीधु राज ॥
दीक्षा लीधी वनें जई ए । करवा आतम काज ॥३४॥

तप करी मती ऊजलो ए । जीते इन्द्री चोर ॥
ध्यान जोगें करी संकारयो ए । कर्म हुआ घन घोर ॥३५॥

कुंअर राजे पालि न्यायसुं ए । बांधवो रूपलावं राज ।।
गजघोडा रथ भंडार घणों ए । परजानी सारि काज ।।३६।।

एक वार कुंअर दीठो मुनीवरें । ए गज घोडा बहु परिवार ।।
ते देषी मोह ऊपनो ए । नाणुं बांध्यूं तेणी वार ।।३७।।

तपकरी व्रत आचरी ए । नाणुं म बांधसो कोय ।।
नाणि तप नीःफल थाइए । कोडी हाथी वेच्यो जोय ।।३८।।

ते रतन आपी काच लीजीयिए । घोडा साटि खर लेवि तेह ।।
आमलां मोती साटि लीयि संबलो ए । तप करी नाणुं बांधि जेह ।।३९।।

परधन पर रामा पर रूषी ए । नाणुं ज बांधि देख ।।
हाथ चींतामणि सांपडिए । काग ऊडाडतो लेख । ४०।।

तपें कर्म क्षय ईछीयि ए । ससार दुःख विछेद ।।
मोक्ष तणां सुख वांछीयिए । नव्य धरीयि मन खेद ।।४१।।

मरण पाम्यो मुनीवर तणाए । मालव देश ऊछेरण ।
जसोबंध राजा तणो सणोए । जसोर्ध हवो गुण तेह ।।४२।।

गंधर्वराय राणी च्मीऊणीथी ए । मीथ्यात तप करयो आण ।।
चन्द्रमती हवी ते सहीए । जसोधनी राणी बखाण ।।४३।।

देवीनें दीधु पाठनु कुकडो ए । ध्यानें करीमोई तेह ।।
मिथ्यात पाप उदय हवो ए । सात भव भमी जेह ।।४४।।

गंधव्रसेना पुत्री राजनी ए । सील लोप्यूं दुःख खाण ।।
भीम देव रमू अति घणुं ए । विषयासक्त ते जाण ।।४५।।

नार तणो अणाचार लही ए । जीत सनु हवो वैराग्य ।।
मोह मछर राग परहरीए । दीक्षा पामी भलो भाग ।।४६।।

तप करी तेणे भवी घणोए । पाल्यूं संयम सील ।।
संन्यास लेई प्राण मूंकयाए । पाम्यो आहाराव लील ।।४७।।

राज जसोधर ते हवो ए । राणी वीरिस मरेय ।।
पीठ कूकडा पाप उदय हवो ए । भव साते एम करेय ।।४८।।

राम मनीमि बहु वीचार सुण्यो ए । जीव कीन काम असार ।।
नारी सहीत तीणे आचरयो ए । सील वरत अवतार ।।४९।।

सील अतिचार विण पाली मूआए । हवां विद्याधर तेह ।।
रूप सोभाग विद्या भलीए । सीलतणां फल एह ।।५०।।

पुण्य प्राप्ती तेहने घणी ए । सफल महाबिल जोग ॥
रोग संताप दीसे नहीं ए । पामवा पुण्य संजोग ॥५१॥

गंधवसेन राजा एं जाणो ए । तेहेन तणो अन्याय ॥
तप वैराग्य मन धर्यो ए । कीधो सब गुण ठाय ॥५२॥

संयम पाल्यो अति निर्मलोए । नाणं बांध्यूं असार ॥
पछी करी एह अवतरयो ए । नारीवस्त विचार ॥५३॥

मघव की बेटी रायनीए । तप करी तोली काय ॥
ते मर करि ऊपनीए । अमृताहुवी रूपठाय ॥५४॥

भीम देवर जे तेहनोए । तेणें भवें करयो जार ॥
पोढा पाप तणि फलिए । कूबडो हूवो गमार ॥५५॥

पूर भवि आसक्त हती ए । नाह त्यजी अपार ॥
एणें भवि नेह तिम करयो ए । मारी निज भरतार ॥५६॥

राम मंत्री विद्याधर हूवो ए । पालीय श्रावकाचार ॥
ते मरी करी अवतरयो ए । जसोमती कुमार ॥५७॥

चन्द्ररेखा राजे दीक्षाधरीए । तेणें करयो धर्म बखाण ॥
कुसुमावली सही तेहवी ए । परणी जसोमती जाण ॥५८॥

चित्रांगद नाम तहा तणो ए । तेणे बांध्यूं राज ॥
तापस दीक्षा आदरी ए । कुतप करय कुकाज ॥५९॥

कुनीर्थयात्रा कीधी घणी ए । आपसो दीधी प्राण ॥
देवी देवी मोह बांध्यो ए । तपणो बांध्यु अज्ञान ॥६०॥

मरी करी ते देवी हुवोए । नारीवस्त हुवो विचार ॥
नाणं अमृत महाराजेए । मोह मार व अपार ॥६१॥

चीत्ररेखा नाम तहा तणीए । तीणि पाप करयो दीन रात ॥
अंरभूतद मरी ते हुवो ए । तणो करणो जीवघात ॥६२॥

माया जीव नाहि मोह घणोए । तहा जाणो सही राय ॥
संसार माहि जीव भमें अनेए । मिथ्या तणो पसाय ॥६३॥

यशोध पिता जे यशोबंधु ए । रूपाश्रु सह परिणाम ॥
ते मरी मयादत्त राय पुत ए । हुवो सुपत्त सुनाम ॥६४॥

गंधर्व राणी कोय मरी हुवी ए । कुंभवती यशोधर नार ॥
मिथ्यात फलें मरी कोढी हुवीए । नहीं के ये हुवो विचार ॥६५॥

ते वली श्रेष्ठी थिर थया हवोए । भरतां पाम्यो नवकार ।।
ते मारीदत्त बहु सुत हविए । जिते राणी गर्भ सार ।।६६।।

मुनीवर तणी वाणी सांभलीए । मारीदत्त हुवो वैराग्य ।।
ससारनी स्थिति भावतो ए । सरग मुगति तणो ठांम ।।६७।।

भैरवानन्द आदि को वैराग्य होना

राणी ते राज बेसाडी करीए । पंत्रीस राजा सहीत ।।
दीक्षा लीधी निरमलीए । जीव तणुं करण्ं हीत ।।६८।।

भैरवानंद जोगहि वरघो ए । जीव हिंसा करयो पाप ।।
तेह हवे किम छूट सूं ए । मुनिवर टाल्यो संताप ।।६९।।

आयु थोडो जाणी करीए । दीक्षा अणसण लीध ।।
बावीस दीवस लगि तिणए । अणसण पाल्यो प्रसीध ।।७०।।

पापएवडो जो नो क्षय करण् ए । अणसण करवा माट ।।
जोगी टली देव हवा ए । घन घन करम महत ।।७१।।

पाप एवडो जो नो क्षय करण् ए । अणसण करया माट ।।
उपवास वरत संजम तप ए । सही सरग मोक्ष वाट ।।७२।।

ब्रह्मचारी भाई बेहतीए । प्रतीबोध्यो जेणि मारीदत्त ।।
हिंसा ठाम उछेदीयो ए । देवी संबोधी महत ।।७३।।

तीणि महाव्रत आदरो ए । आचरियो तप अपार ।।
सील संयम घणुं पालीपूं ए । अणसण लेई तेणी वार ।।७४।।

बीजो देव लोक पामीयो ए । संपुट सीला अवतार ।।
सातधात रहीत तनए । मोती पिर विचार ।।७५।।

कनक कुंडल मुगट आदि ए । पहिरया भूषण होय ।।
अंतरमुहूर्त मांहि होय ए । सात हाथ तनु सोय ।।७६।।

जय जय कार देवी करीए । वरे वाली फूल माल ।।
देवीय सूं क्रीडा करे ए । सोख भोगवि विसाल ।।७७।।

अकृत्रिम चैत्य कल्याणकि ए । यात्रा करे मनरंग ।।
पूजा अभिषेक भली करणुं ए । पुण्य जोडे उतंग ।।७८।।

सुदत्ताचारय मुनीवरे ए । अणसण लीधो उदार ।।
समाधि सरीर मूंकी करीए । सोलमि सरग अवतार ।।७९।।

सुख भोगवि तिहां थकी चवी ए । [illegible] ॥
अनेक यात्रा कल्याणक करे ए । पुण्य तणो संयोग ॥८०॥

मारीदत्त आदि मुनी सहीए । तप कीधो महंत ॥
आपापणा तप फलीए । सरग साध्यु गयवंत ॥८१॥

वस्तु

राय जसोधर कथा विस्तार । गौतम स्वामी एम कह्यो ॥
दया तणो भंडार कारणो । पंचेन्द्रिय जीव [illegible] भली ॥
सात भवांतर भम्या बखाणो । पुण्य पाप फल प्रकास्यो ॥
स्वामी ज्ञान भंडार । बार सभा सहीत तदा ॥
श्रेणीक हरष अपार ॥२॥१॥

भास यशोधरनी—राग धन्यासी

भगवान के धर्मोपदेश का प्रभाव

वीर स्वामी तणी सार । वीव्यध्वन सती नीरमलीए ॥
गणधर गौतम स्वामी । विस्तारी सती सोहामलीए ॥१॥

सुरवर फणधर स्वामी । व्यंतर ज्योतिषि सहूमलीए ॥
वली तिर्यंच नर नारु । विद्याधरें घणो सांभली ॥२॥

हरख पाम्या सहु कोय । आनंद घणो मन माहि धर्यो ए ॥
चन्द्र पूरण जिम जोय । सागर कल्लोल उल्लस्योए ॥३॥

केता सीख [illegible] । केते अहिंसा व्रत [illegible] ए ॥
केता मिथ्यातनि जीव । केते अणुव्रत महाव्रत आचरयो ए ॥४॥

सांभली श्रेणीक राय । हरख [illegible] मनमाहि [illegible] ए ॥
जिनवाणी पुण्यठाय । [illegible] करि [illegible] ए ॥५॥

वीर वाणी [illegible] मेह । [illegible] गाजती ए ॥
वरसि धर्मामृत मेह । [illegible] ए ॥६॥

[illegible] । [illegible] ए ॥
ज्ञान प्रवाह [illegible] । [illegible] ए ॥७॥

सुरपति आदि [illegible] । [illegible] ॥
संसारतापनें [illegible] । [illegible] ए ॥८॥

वल्लहाक्षति नहीं वरसी । बाद अपरंपर नीपजे ए ।।
सहु जीव संसय हरणी होय । ए आश्चर्य ऊपजे ए ।।९।।

मध्यलोकगति न होय । पुष्पादि व्यापारन नीपजे ए ।।
प्रीछि जीव सहु कोय । मोटू आश्चर्य मने ऊपजि ए ।।१०।।

सूरज प्रभा जिन वाणि । मिथ्यात तिमिरनि टालती ए ।।
भव्य कमल सुख खाण । पातक पंकनि टालती ए ।।११।।

चन्द्रकांति सम जिन भास । भव भ्रम वेदनि वेदती ए ।।
हरख समुद्र उल्लास । कुवादीयां मान ऊछेदती ए ।।१२।।

मेरु सुदर्शन जाम । चैतालासू नादिज अलगिए ।।
पूरती भवीयां काम । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ।।१३।।

लवणादि स्वयंभू समुद्र । द्वीप सहीत नादि जब लगिए ।।
मेघ समीए मन्द्र । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ।।१४।।

विजयारध गिरि जाम । बेहु श्रेणसु नांदि जब लगिए ।।
तत्व रतन तणी खाण । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ।।१५।।

कुल गिरि हिमवंत आदि । पद्मद्रह नांदि जब लगिए ।।
हरती विषय विषाद । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ।।१६।।

गंगा आदि नदी परवाह । जिन बीब अभीषेक जब लगिए ।।
सुरनर आपि उछाह । महावीर वाणी नांदो तब लगिए ।।१७।।

गंगादि महानदी बीच । नदी पर वरी नांदि जब लगिए ।।
प्रतिद्वीपे सुप्रमोद ।महा०।।१८।।

गजदंत गिरि बीस संख्य । जिन भुवन सु नांदि जब लगिए ।।
अपरंपरए असंख्य ।महा०।।१९।।

विदेहादि भरत खंड । धरम सहीत नांदि जब लगिए ।।
म्लेच्छ खंड आदि प्रचंड ।महा०।।२०।।

चक्री हरी बलदेव । प्रगट पराक्रम जब लगिए ।।
सुर नर करें अह सेव ।महा०।।२१।।

जिनवर पंच कल्याण । इन्द्र रचित नांदि जब लगिए ।।
केहेणमात्र जिन वाण ।महा०।।२२।।

प्रतीहरी सा अस्यार । शासन प्रगटि जब लगिए ।।
त्रिभुवन जन सुखकार ।महा०।।२३।।

मुनीवर रुषी निधान । केवल ज्ञानादि जब लहिए ॥
प्रगटि थवे विमान महा०॥२४॥

कर्म हणी मुनी संत । सिव पद पामें जब थकि एह ॥
अनंत सौख्य महुन्त ।महा०॥२५॥

चक्रवर्ती नाभि सुत । वृषभाचल मांहि जब लहिए ॥
योजन विस्तारें अदभुत ।महा०॥२६॥

जीवधानीलोपरि जाण । रवि ससी उदय जब लहिए ॥
ग्रह नक्षत्र सूं वखाण ।महा०॥२७॥

रवि ससी ग्रह नक्षत्र । मेरु प्रदक्षिण जब लहिए ॥
करी दिन रात्रि विचित्र ।महा०॥२८॥

असंख्यात जोतकलोक । चैत्याला मांहि जब लहिए ॥
सुणतां टलि सहू सोक ।महा०॥२९॥

व्यंतर पे असंख्यात । आठप्रकारि मांहि जब लहिए ॥
चैत्याला सुविख्यात ।महा०॥३०॥

भवनवासी दस जाक । चैत्याला सूं मांहि जब लहिए ॥
सात कोड बीहोत्तर लाख ।महा०॥३१॥

सुधर्म ईसान आदि होय । सोल सरग मांहि जब लहिए ॥
कल्पवासी विमान जोय ।महा०॥३२॥

ग्रैवेयक नवोत्तर । पंचोत्तर मांहि जब लहिए ॥
कल्पातीत अमर ।महा०॥३३॥

लाख चोरासी सहस्र । सत्ताणु त्रेवीस संख्य जब लहिए ॥
चैत्यालासु विमान वास ।महा०॥३४॥

गुणती त्रिलोकी चैत्यालय । त्रिभावगाह मांहि जब लहिए ॥
त्रिभुवन विषेय अक्षय ।महा०॥३५॥

वात्सल्य गुरु भेद । त्रिभुवन भरी रही जब लहिए ॥
बहु द्रव्ये वरस्यो अखेद ।महा०॥३६॥

जिनशासन अत्यर्थ । भविकर्ने आदि पद लहिए ॥
शास्वतो आपे अर्थ । महावीर गांधी जब लहिए ॥३७॥

इम पावी ससी राय । श्रेणिक भावी हरख धरयो ए ॥
महावीर पूजवा सुठाय । अष्टप्रकारी सामग्री भरयो ए ॥३८॥

रतन जडीत भृंगार । नीरमल जल पूजा करे ए ॥
वीर आगल दीधि मध्यधार । जनम जरा मरण हरिए ॥३९॥

कुंकुम केसर सार । करी चंदन पूजा भलीए ॥
सुगंधि शरीर उदार । जिनगुण पामवा मन रलीए ॥४०॥

नीरमल मोती सार । तंदुल पंच पुंज करिए ॥
अक्षय पद नीर्वाण । दीयो स्वामी हम भाव करीए ॥४१॥

जाई जुई मचकुंद । चंपा कमल आदि फूल सहीए ॥
तह्मे कीधो काम नीकंद । एह गुण लहिवा पूजिए सहीए ॥४२॥

पंचामृत नैवेद्य । उतारि हेमथाल करीए ॥
नहीं तुझ क्षुधा तृषा खेद । तेह गुण प्राप्त होय करीए ॥४३॥

रतन कपूरना दीप । उतारि जीन आगलिए ॥
तत्त्व प्रकासन रूप । केवल ज्ञान लहिवा भलीए ॥४४॥

कृष्णागुरु आदि धूप । जिन आगलि उखेवितां ए ॥
कर्मदाह करो भूप । तह्म तणो हम मन भावतो ए ॥४५॥

मोच चोच जंबीर । आंबा आदि बहु फल ए ॥
शिव सुख फल दीयो वीर । तह्मे स्वामी गुण आगला ए ॥४६॥

कनक भाजन भरि करी अर्घ । वीर आगलि उतारतु ए ॥
रत्नत्रय जे अनर्घ्य । आपी भव दुःख तारतु ए ॥४८॥

पूजा करी अष्ट भेद । श्री महावीर स्वामी तणी ए ॥
करवा भव उछेद । नृत्य भावना भावी घणी ए ॥४९॥

कुंडलपोर धन धन्य । वीर जनमे जे पवित्र करयो ए ॥
सीधारथ नृप धन धन्य । जेह घर स्वामी [illegible] ए ॥५०॥

धन धनपति यक्ष । षट मास रत्नवर्षयो ए ॥
चउनीकाय असंख्य । देव समूह सही हर्षतो ए ॥५१॥

भगवान महावीर की स्तुति

धन धन्य त्रिसुल्यो मात । जीणीयि वीर जिन जनमयो ए ॥
धन नाथ वंस विख्यात । त्रिभुवन माहि जे उपमयो ए ॥५२॥

धन धन सौधर्म इन्द्र । मेरु सीखर स्नपन कीध ए ॥
धन धन जिन बालचंद्र । दुनिया में धर्म उद्योतीयो ए ॥५३॥

धन जिन तनु सात हाथ । वस्त्र सर्व लंछण संजीत ए ॥
कनक वरण शरीरनाथ । जन्मस्नान करी मंडीयो ए ॥५४॥

कुंडल मुकट मणि हार । इन्द्र निकाय जिन भूखतो ए ॥
नमन करंता अपार । भाल सुरवर मुसतोए ॥५५॥

त्रिस वरस कुमार । वैराग्य लौकांतिक देविस ए ॥
दीक्षा कल्याणक सार । कीयो शीव नमी संयम लीउ ए ॥५६॥

घाति करम क्षय कीध । केवलज्ञान रवि प्रगट्यो ए ॥
लोकालोक कीध प्रसिद्ध । मिथ्यातम विघट्यो ए ॥५७॥

समोसरण आदि होय । अनन्त चतुष्टय भाषीयो ए ॥
तिहुयण भवीयण लोय । तेथि वांछित फल पावीयो ए ॥५८॥

सिंह लांछन जय वीर । वर्द्धमान महावीर सन्मतीय ॥
महती महावीर वीर । जयो जयो जगगुरु जगपती ए ॥५९॥

जयो ब्रह्मा तू ब्रह्मा विष्णु । व्यापक शिवशंकर ए ॥
बुद्ध अलख निःकर्म । हरी हर तु पातक हरो ए ॥६०॥

चोहोत्यर वरस जिन आय । विक्रम देवेन्द्रि पूजीयो ए ॥
जयदेव त्रिभुवन राय । भवीजण जन जय जय कीयो ए ॥६१॥

इम स्तवी जिन वीर । पुष्पांजलीथि वधावतो ए ॥
श्रेणीक साहस धीर । गणधर नमी पुण्य पामतो ए ॥६२॥

हरखीत गुणह समुद्र । वीरनें इन्द्र आरती करें ए ॥
आशीवाद कोड भती मंद । वाजित्र ध्वनी अति विस्तरे ए ॥६३॥

करतो जय जय कार । इन्द्र उतारे आरती ए ॥
नरनारी हरख अपार । दीठथि दुरीतनी वारती ए ॥६४॥

रतन जडीत हेम थाल । रतनदीपि उद्योतनीए ॥
रचना रतन फूल माल । जाणे ज्ञान सुसंतती ए ॥६५॥

चौसठ चमर ढलंत । किन्नर किन्नरी गुण गावती ए ॥
ता था थेई थेई करंत । अपछरा नाचे नमी भावतीए ॥६६॥

करता स्तवन बहु जयमाल । छंद प्रबंध भणि सुरवर ए ॥
आनन्दी संगत विशाल । भवीयण जय जय करीए ॥६७॥

करतां जय जय कार । इन्द्र उतारि आरती ए ॥
नरनारी हरख अपार । दीठे दुरीत नीवारती ए ॥६८॥

जय जीवंत सु देव । वीर जिन जगदीश्वर ए ।।
विक्रम देवेन्द्र करि सेव । जय जय देव सुर दम उचरि ए ।।६१।।

वस्तु

इन्द्र भारती इन्द्र भारती कीध उचार ।
भवतणी भारती भंजती रंजती भवीयां चीत्त दीठीय ।।
दुरित तिमिर निवारती । वंदी सुर नरें नती गरीवीय ।।
हरखीत श्रेणिक नृप तदा । जिन गणधर नमी पाय ।।
चेलणा तथा परिवार सूं आव्यो निजपुर ठाय ।।१।।

भास साहेलडी नी । राग धुल धंन्यासी ।।

प्रशस्ति

नव सहस देस सदा भलो । साहेलडीए । ठांम ठांम बहु गाव ।।
नयर पुर पाटन घणा साहेलडीए । खेडा द्रोण सुनाम ।।१।।

धन कण कणय रयणें भरया ।स०। गोधन तणो नही पार तो ।।
महिसी मोटी दीसि घणी ।सा०। दूध छि तेहनो फारतो ।।२।।

कनक माथ न थोड मेहली ।सा०। दोहला होइ भार नावतो ।।
पंखीयडा त्रासि पापि ।सा०। मोर नाचि सुखे वावतो ।।३।।

सालक्षेत्र सोहि घणा ।सा०। सूडा ताव सोहंत तो ।।
परीमल दहो दस विस्तरे ।सा०। रण झण भमरा करंत तो ।।४।।

अनेक धान्य क्षेत्र भला ।सा०। गीरी समा धान्य अंबार तो ।।
आंबा वन विविध परी ।सा०। ठाम ठाम वन विस्तार तो ।।५।।

नदी कुआ व्यावतणी ।सा०। सरोवर भरयां अपार तो ।।
कमल रातां नीला नीलां ऊजला ।सा०। भमर तणा गुंजार तो ।।६।।

महुआ नगर वर्णन

तेह देस मांहि सोहि ।सा०। महुआ नयरी बसंत तो ।।
धन कण कणय रतने भरी ।सा०। ओहावन बसय महंत तो ।।७।।

ब्राह्मण वेदने अभ्यासे ।सा०। नाहि पुराणी नदी मांहि तो ।।
अवर वरण घणा वसि ।सा०। नित नित होइय उछाह तो ।।८।।

मोटा मंदिर मालीयां ।सा०। तोरण आदि बहु सोभती ।।
मेडी गुखने जालीयां ।सा०। कहोइ नहीं कस सोभती ।।९।।

चहुटा चौटा हाट श्रेणि ।सा०। त्रिगडी बड़ी जालिको ।।
मालीयोनी चौकी भली ।सा०। कमाल तर्णा नहीं पार को ।।१०।।

चंपक बकुल बेल मोगरो ।सा०। मालकेती जहुरी अनेक तो ।।
राय तलाव आंबा आंबु ।सा०। माडी बन सुखीकिलो ।।११।।

सिंहपुर कुल मंडण ।सा०। वहिकाडीया श्रीपाल बसंत तो ।।
दान पूजा व्रत अभिषेक ।सा०। बहु मनी धरम करंत तो ।।१२।।

ते नयरी मांहि ऊनत ।सा०। जिन प्रासाद विशाल तो ।।
तोरण कलश ध्वजा लहिकि ।सा०। ठापका सोहि विकसालसो ।।१३।।

वेदी स्थंभ भला गाखि ।सा०। जाली गोख सुचंग तो ।।
गर्भगृह कंवाड भला ।सा०। चंद्रोपक पंचरंग सो ।।१४।।

रथमंडप मोतीजाली ।सा०। नाटक शाला रसाल तो ।।
भींत चित्राम चतुर चमके ।सा०। ललके बहु फूल माल तो ।।१५।।

मोती फूल तणा चोक ।सा०। चोक मोटी पटसाल तु ।।
कलस भृंगार चमर रूडा ।सा०। भामंडल छाक कमाल तो ।।१६।।

रतन कनक पीतल रूपा ।सा०। पाषाण प्रतिमा अनंत तो ।।
तेजि सूरज जीपता ।सा०। दीठि होय पाप क्षय भंव तो ।।१७।।

ताल कंसाल घंटा घणी ।सा०। भूंगरी झालरी नाद तो ।।
अनेक वली पंडीत जणि ।सा०। दीठि हरख अपार तो ।।१८।।

मूलनायक चन्द्रप्रभ ।सा०। सोम मूरती रूप ठामको ।।
चन्द्रपुरी महासेन नृप ।सा०। धन धन लक्ष्मणा माय तो ।।१९।।

डेढसो धनुष ऊनत वही ।सा०। चन्द्रवरण सोहो देह तो ।।
धन धन चन्द्रप्रभ प्रभु ।सा०। धर्मामृत जाणि मेह तो ।।२०।।

आयु दश लाख पुरब ।सा०। पूरवि पाली राज तो ।।
धन धन चन्द्र लांछन प्रभु ।सा०। धन धन जिन जग तो ।।२१।।

आयु दश लाख पूरब ।सा०। पुरवि पाली राज तो ।।
काम मोह नी सेन की ।सा०। होय तत्काल मोहु नाश तो ।।२२।।

धन धन जिन त्रिभुवन पति ।सा०। धन धन नगर विख्यात तो ।।
धन धन तु जनवीरपुर ।सा०। धन धन श्रीमुख नाम तु ।।२३।।

काढि विमल गेंप तारि ।सा०। विमल ... विलास तो ।।
विमल ... पुरीकल ।सा०। ... कारण तो ।।२४।।

त्रैवीस मो श्रीन अविलीयो ।सा०। पास विघन हर नाम तो ॥
वाराणसी पुरी श्रीस्वेसन प्रभु ।सा०। वाह्मी वनम्यो अभीराम तो ॥२५॥

नीलवरण तनु नव हस्त ।सा०। सुरनर रचीत कल्याण तो ॥
धरणेन्द्र पद्मावती पूजीयो ।सा०। जेह नामि हीय कल्याण तो ॥२६॥

नागसांकल नवनिधी पूरें ।सा०। पूरि श्रीपनतणी रास तो ॥
डाकणी साकिणी व्यंतरा ।सा०। भूत भय जेह नामि नास तो ॥२७॥

पुत्र कलत्र मित्र संपदा ।सा०। मनीवां पूरि आस तो ॥
कवि देवेंद्र पूजीयो ।सा०। जयो जिन विघनहर पास तो ॥२८॥

जिन सासन रक्षा करो ।सा०। जयो जायो श्री खेत्रपाल तो ॥
नागो नाग विभूषणो तो ।सा०। हाथि डमरू जटाल तो ॥२९॥

घूघरी पायें घमघमे ।सा०। नेउर रव झमकार तो ॥
माणीभद्र भरी मदचूरी ।सा०। संघनि करो जयकार तो ॥३०॥

भट्टारक परम्परा

मूलसंघ सरसती गछ ।सा०। बलातकार गण अभिराम तो ॥
पद्मनंद गुरु गछपती ।सा०। देवेंद्रकीरती गुण ठामतो ॥३१॥

विद्यानंदि विद्यानीलो ।सा०। तस पाटि सोहि नीधान तो ॥
मल्लिभूषण महीमा भलो ।सा०। मानीयो जेह सुलतान तो ॥३२॥

ललित अंग लक्ष्मीचंद्र ।सा०। तेहपाटि वसनीधी चन्द्र तो ॥
तप तेजें करीं सोहीयो ।हा०। वीरचंद्र सुमुनींद्र तो ॥३३॥

लाडवंस सोभा कर ।सा०। तेह पटि सार सणगार तो ॥
ज्ञानभूषण ज्ञाने भलो ।सा०। अभिनवो गोयम अवतार तो ॥३३॥

सुमतिकीरती सूरी आचार्य ।सा०। सेवयो जेह अनुदीन तो ॥
रत्नभूषण सूरी थरि स्तव्यो ।सा०। ज्ञानभूषण सूरी धन्य तो ॥३४॥

तेह पाटि धुरंधर ।सा०। वीसा हूंबड वंसतो ॥
प्रभाचंद्र महीमावलो ।सा०। ज्ञान सरोवर हंस तो ॥३५॥

कल्याण कीरती आचार्य ।सा०। सेवयो जेह सुभ मंन तो ॥
वादिराज ब्रह्में स्तव्यो ।सा०। प्रभाचंद्र धन धंन तो ॥३६॥

तेह पाट उदयाचल सूर ।सा०। मिथ्यावादी मदचूर तो ॥
वादिचंद्र वादिस्वर ।सा०। दीठडि होई आणंद तो ॥३७॥

तेहु वखतपती आदेश थी ।सा०। मथुरा नयर मझार तो ॥
चन्द्रप्रभ चैत्यालये ।सा०। रास रच्यो सुखकार तो ॥३८॥

संघवी नागर नंदन ।सा०। संघवि [illegible] तो ॥
सुपास कुल दीहा कर ।सा०। संघवी बाबाई सुखराम तो ॥३९॥

साहा माहो मथुरा [illegible] ।सा०। बाबाई धन धन तो ॥
सघवी जना कुल मंडण ।सा०। [illegible] संघवी उधरतो ॥४०॥

हंसराज सुत साहा कुंवर जी ।सा०। [illegible] सुत [illegible] सुचंग तो ॥
[illegible] आदि संघ सावरणी ।सा०। रास रच्यो मन रंग तो ॥४१॥

जनपुर नगर

जंबावती देस भलो ।सा०। जनपुर नयर सुठाम तो ॥
आंबा वन विविध परी ।सा०। दीसि घणा ठाम ठाम तो ॥४२॥

वाव्य कुआ सरोवर घणा ।सा०। कमल पोयणा बहुभांत तो ॥
नीम दीसि वाव्य तणा ।सा०। इक्षुवाडी विख्यात तो ॥४३॥

इक्षुयंत्र तणा चीत्कार ।सा०। जाणे ए गीत गाय तो ॥
सूर्णि पीडया पंथीया ।सा०। जीवा सकती तेडायतो ॥४४॥

द्राक्ष तणा मंडप बहु ।सा०। पंथीयडा करय विश्राम तो ॥
नागवेल वाडी घणी ।सा०। केल तणा वन अभीराम तो ॥४५॥

उन्नतपण पोल पोली ।सा०। मंदिर मोहन आवास तो ॥
हाट श्रेणी मोहनकारी ।सा०। महाजन वसत मो वास तो ॥४६॥

मणि मुक्ताफल धन घणां ।सा०। हीराहारीया बहुरंग तो ॥
बाहुरसी नवि दीहा भला ।सा०। वेवसायन करी उत्तंग तो ॥४७॥

सोहि प्रासाद जीतीना तणो ।सा०। [illegible] धजा सहीत तो ॥
कनक पीतल बीब भला ।सा०। सुर नर समूह में मोहीत तो ॥४८॥

घंटा तोरण झल्लरी ।सा०। सामंडल शृंगार तो ॥
ताल कंसाल कलश आदि ।सा०। चंद्रूया सोहि उदार तो ॥४९॥
मल वाजन आदि जिन ।सा०। दीठडे होय आनंद तो ॥
सीमसूरत रचीया भला ।सा०। सुख उपनर कंद तो ॥५०॥

मूलसंघ भारती गछ ।सा०। बलात्कारगण शुभ तो ।।
तेह पाटि सोहि दीनकर ।सा०। सकलकीरती गुरु जाण हो ।।५१।।

भुवनकीर्ति मुनि विख्यात ।सा०। तस पाटि सार सहुणगार तो ।।
ज्ञानभूषण ज्ञानसागर ।सा०। गोयम सम आकार तो ।।५२।।

विजय कीरती गुरु गछपती ।सा०। भवनन सिरी मुनिहंस तो ।।
तस पटोधर शुभचंद्र ।सा०। वादीश्वर घर वंस तो ।।५३।।

हूंबड कुल बडे साखी ।सा०। सकल सुधर्मों गुरु नाम तो ।।
वादीयां मानमर्दन ।सा०। षटदर्शन वादी नाम तो ।।५४।।

तेह पाटि सुमतीकीरती सूरि ।सा०। तेह पाटि जयोभाण तो ।।
भवीयां कमल विकासवा ।सा०। गुणकीरती गुण जाणतो ।।५५।।

एह गछपती मणि अन्वय ।सा०। ब्रह्मचारी जिणदास तो ।।
शांतिदास तस पद धर ।सा०। ब्रह्म हंसराज गुणवास तो ।।५६।।

रत्नराज ब्रह्म तेह पाटि ।सा०। सांप्रति श्री शांतिदास तो ।।
तेह उपदेस घनघोर ।सा०। श्री जिनधर्म उल्हास तो ।।५७।।

जैन ब्राह्मण सोहि तीहां ।सा०। श्री संघ अनेक प्रकार तो ।।
सघवी मेघजी प्रमुख बहु ।सा०। करि जिनधर्म उधार तो ।।५८।।

धन धन सकलकीरती गुरु ।सा०। जेहने एह्वा सीष्य निधान तो ।।
धन धन ब्रह्म श्री जिनदास ।सा०। रच्या शास्त्र रास निधान तो ।।५९।।

धन धन जिनदास महावाणी ।सा०। प्रतीबोध्या ब्राह्मण राय तो ।।
अनंत पंचवानर नाम भनू ।सा०। जाणें जेहने राय समान तो ।।६०।।

ताणें आदरयो समकीत रत्न ।सा०। यत्ने जीवदया प्रतिपाल तो ।।
घट सर्पदीप्य करया ।सा०। कुतुलखान सभा विसाल तो ।।६१।।

जैनधर्म तिहां थापीयो ।सा०। थापीयो जस अपार तो ।।
बिंब प्रासाद उद्धार करया ।सा०। तस सुत केशवजी उदार तो ।।६२।।

तस पुत्री जयवन्ती ।सा०। परणी बहु सकंप तो ।।
शोभीत ब्राह्मण कुलि ।सा०। सोहि सहीभरतंग तो ।।६३।।

तस पुत्र थोए पवित्र ।सा०। श्रीसंघ मंगलचार नाम तो ।।
जैनवादी विद्यानिधि ।सा०। समकित रतन सुधाम तो ।।६४।।

मंगलचारें तप उद्धरयो ।सा०। शांति सौभाग्य समुद्र तो ।।
विशालकीर्ति पाटि हुआ ।सा०। देवेन्द्रकीर्ति सुरेन्द्र तो ।।६५।।

अकलंक सुरी सीमालनी ।सा०। कर्नाट देश प्रसीध तो ।।
जिनधर्म दीहा उद्धरयो ।सा०। जैनराजाधि पूजा कीधती ।।६६।।

त्रिविध आगम जाणि भला ।सा०। विक्रमभट्ट विख्यात तो ।।
विद्यादान जीणि दीया ।सा०। महीचन्द्रकीर्ति सुजात तो ।।६७।।

अनवाई तस भामिनी ।सा०। शीलसमकित गुण जाणतो ।।
तसवि पुत्र विशारद ।सा०। देवेन्द्र वासुदेव जाणतो ।।६८।।

जिनवर चरण कमल सेवि ।सा०। करि जिन शास्त्र अभ्यास तो ।।
कवी देवेन्द्रे एह रच्यो ।सा०। राम जसोधर तणों रास तो ।।६९।।

सांभलि सर्व सुख संपजि ।सा०। धर्मबुधी होइ प्रकास तो ।।
पुत्र पौत्र धान्य धन ।सा०। मंगल आनंद उलास तो ।।७०।।

संवत १६ आठमीसि ।सा०। मासो सुद बीज शुक्रवार तो ।।
रास रच्यो नव रस भरयो ।सा०। महुआ नगर मझार तो ।।७१।।

लखे लखाविये भणि ।सा०। भाव सहित सुणि जेह तो ।।
तेह घिर नव्य नव्य संपजि ।सा०। नित मंगल तेह गेह तो ।।७२।।

मुनीसुव्रत जिन वगितीलो ।सा०। विक्रमदेवेन्द्र करि सेव तो ।।
वासुदेव जसीरामे ।सा०। जयदेव कही स्तव्यो देव तो ।।७३।।

पंचकल्याणि पूजीयो ।सा०। देवकीय सुयश प्रकाश तो ।।
श्री जिनवें मंगल करो ।सा०। सो जिन पूरयो आस तो ।।७४।।

वस्तु

जिन चोवीस तणा जिन चोवीस तणा
नमीते पाया । राम जसोहर तेह तणो । रास रच्यो दे सार नीर्मल
सरस्वती माय प्रसाद थी । श्रीगुरुतणो मतिमान उज्वल ।।

अक्षर मात्र पद स्वर, जो कोई चूको होय
आदरजो कवी बुध करी, क्षमा करयो सहु कोय ॥१॥

श्रीरस्तु उत्तमदानशीलगुणभृत् संघरयतुर्यात्मने
नंदत्वे सदनतकीर्त्ति महिमार्हद् भवत् शासनं ॥

जीवंतु च्यलवाक् सुखोक्षितहृता तापी: कवीन्द्रा: सदा
सद्धर्म : किलवर्द्धतां त्रिभुवने जैनो दयालक्षण: ॥१॥

इति श्री यशोधर महाराज चरित्रे रासचूडामणी काव्य—
प्रतिबंधे बुधेशकवि श्रीविक्रमसुतदेवेन्द्र विरचिते
यशोध यशोधर राजादि भवांतर यथाक्रम स्वर्गगमनोनाम
नवमोऽधिकार: । यशोधर रास संपूर्ण ॥ अरहंत: ॥

संवत १६४४ वर्षे भाद्रवा सुदि २ भृगौ । अथेहजकरपुर वास्तव्यं । उदीच
आतीय राउल सोमनाथ सुत विश्वनाथ लीखतं । शुभं भवतु ।
ग्रंथ संख्या पांचीससे पूरा । श्लोक ३५०० । इति शुभम् ।

——